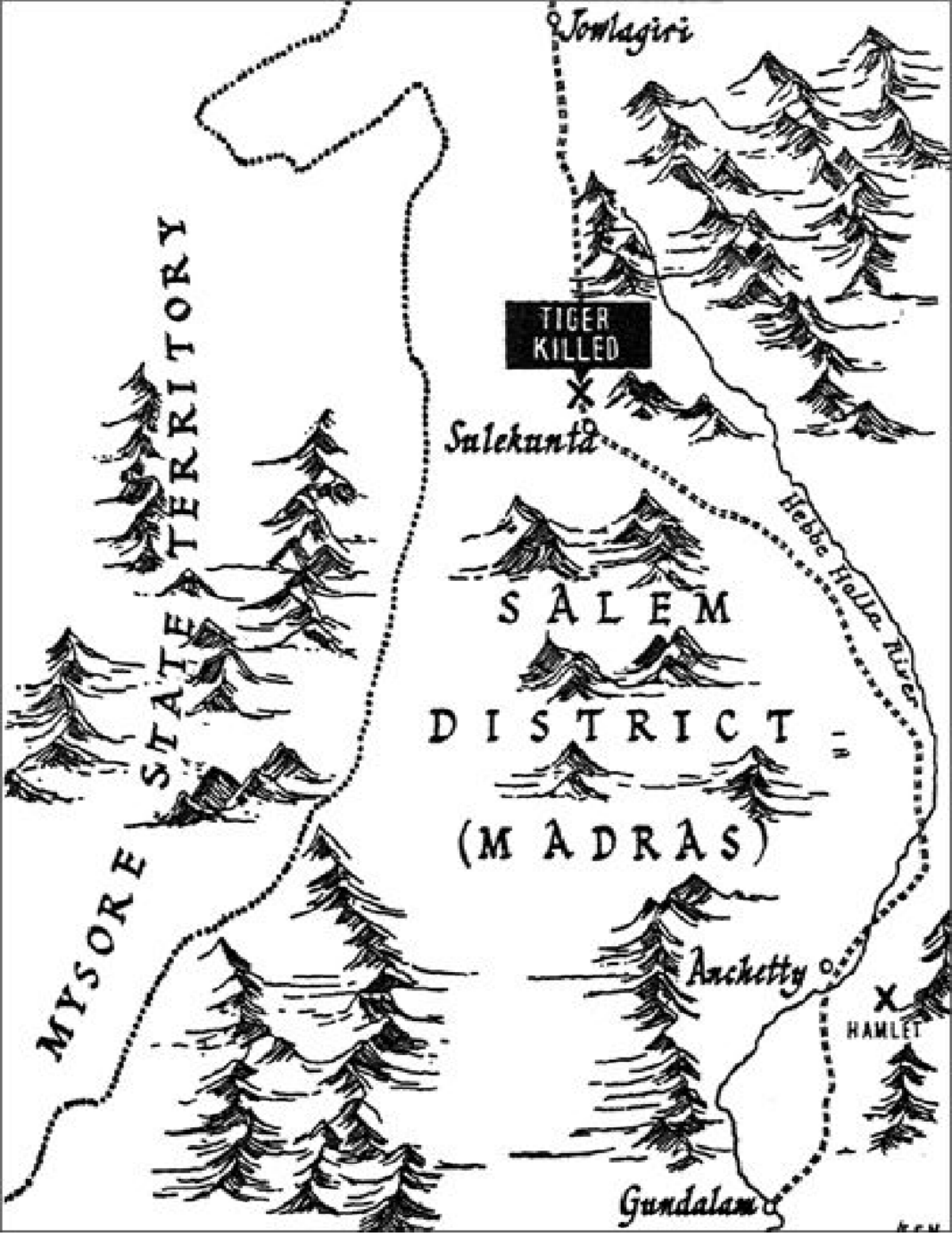
Jowlagiri
TIGER KILLED
Salekanta
Hebbe Holla River
SALEM
DISTRICT
(MADRAS)
MYSORE STATE TERRITORY
Anchetty
HAMLET
Gundalam

Table of Contents

शीर्षक
पुस्तक जानकारी
कॉपीराइट
प्रस्तावना
अंतर्वस्तु
परिचय
1. जोवलागिरी का नरभक्षी
2. गुम्मलपुर का चित्तीदार शैतान
3. चमाला घाटी का धारीदार आतंक
4. होसदुर्गा-होलालकेरे नरभक्षी
5. पनापत्ती का दुष्ट हाथी
6. सेगुर का नरभक्षी
7. येम्मैदोद्दी का नरभक्षी
8. जलाहल्ली का हत्यारा
9 देवरायनदुर्गा का साधु
10 बायरा, पुजारी
11 टैगार्थी के बाघ

नौ नरभक्षी और एक बदमाश

नौ नरभक्षी

और

एक बदमाश

केनेथ एंडरसन

Rupa & Co

टाइपसेटिंग का कॉपीराइट © रूपा एंड कंपनी, 2010

2010 में प्रकाशित
रूपा पब्लिकेशन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
7/16, Ansari Road, Daryaganj,
नई दिल्ली 110 002
बिक्री केंद्र:
इलाहबाद बेंगलुरु चंडीगढ़ चेन्नई
Hyderabad Jaipur Kathmandu
Kolkata Mumbai

सर्वाधिकार सुरक्षित।
इस प्रकाशन का कोई भी भाग प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्य किसी भी प्रकार से पुनरुत्पादित, किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।
लेखक इस कृति के लेखक के रूप में पहचाने जाने के नैतिक अधिकार का दावा करता है।

टाइपसेट द्वारा
माइंडवेज़ डिज़ाइन
1410 चिरंजीव टावर
43 नेहरू प्लेस
नई दिल्ली 110 019
भारत में मुद्रित
बी.बी. प्रेस.
सी-243, सेक्टर 4
डीएसआईडीसी, बावाना
दिल्ली-110 039

दक्षिण भारत के जंगलों, उनके पक्षियों और जानवरों, विशेष रूप से हाथी और तेंदुआ, और उनके वनवासियों चेनसू, शोलागा, करुम्बा और पुजारी की स्मृति में, मैं गर्व और कृतज्ञता के साथ यह पुस्तक समर्पित करता हूं, उन पच्चीस वर्षों के नितांत आनंद के बदले जो उन्होंने मुझे उनके साथ परिचय बनाने और उसे बनाए रखने में दिए हैं।

अंतर्वस्तु

परिचय

1. जोवलागिरी का नरभक्षी
2. गुम्मलपुर का चित्तीदार शैतान
3. चमाला घाटी का धारीदार आतंक
4. होसदुर्गा-होलालकेरे नरभक्षी
5. पनापत्ती का बागी हाथी
6. सेगुर का नरभक्षी
7. येम्मैदोद्दी का नरभक्षी
8. जलाहल्ली का हत्यारा
9. देवरायनदुर्गा का साधु
10. बायरा द पुजारी
11. टैगार्थी के बाघ

परिचय

आदमखोर बाघ एक अपवाद है, क्योंकि सामान्य परिस्थितियों में भारतीय जंगलों का राजा एक सज्जन और नेक स्वभाव का होता है। वह केवल भोजन के लिए ही शिकार करता है, कभी भी अंधाधुंध नहीं, और उसका शिकार जंगल के जंगली जानवर होते हैं, या जब प्रलोभन मिलता है, तो सरकारी अभ्यारण्यों में चरने के लिए भेजे गए गाँव के मवेशी भी होते हैं।

कभी-कभी एक बाघिन अपने अधेड़ शावक या शावकों को शिकार को मारने का तरीका सिखाती है, जैसे बाघ को मारना चाहिए - गर्दन की रीढ़ तोड़कर। ऐसी विशेष परिस्थितियों में, शावकों को अभ्यास कराने के लिए एक साथ तीन या चार मवेशियों को मारा जा सकता है, लेकिन ऐसा वध कोई भी बाघ केवल मारने के आनंद के लिए जानबूझकर नहीं करता। एक बाघिन आमतौर पर एक बार में दो शावकों को जन्म देती है - हालाँकि मैंने व्यक्तिगत रूप से चार शावकों को भी देखा है - और ऐसा कहा जाता है कि नर बाघ बच्चों के जन्म के तुरंत बाद उनमें से आधे को खाकर प्रजाति को नियंत्रित करता है।

शिकारियों के बीच अक्सर इस बात पर बहस होती रही है कि बाघ अपने शिकार की गर्दन तोड़ने में कितना कुशल है, जबकि तेंदुए और पैंथर अपने शिकार का गला घोंटकर मारते हैं। दरअसल, हमला करते समय बाघ अपने शिकार के बगल में खड़ा हो जाता है, आमतौर पर अपना एक पंजा उसके कंधे पर रखता है और जानवर के आकार के अनुसार उसकी गर्दन या गले के पिछले हिस्से को पकड़कर उसके सिर को ज़मीन पर दबा देता है। फिर वह पंजे का इस्तेमाल एक लीवर की तरह करता है जिससे शिकार खुद ही गिर जाता है, जबकि बाघ उसका सिर दबाए रखता है। इस प्रकार, जानवर के शरीर का वजन ही गर्दन तोड़ने का कारण बनता है, न कि बाघ द्वारा उसे मरोड़ने की कोई क्रिया, हालांकि मेरा व्यक्तिगत मत है कि इसमें बाघ की भी कुछ भूमिका होती है। बाघ अपने जबड़े बहुत चौड़ा खोल सकता है, इसलिए कभी-कभी यह तय करना मुश्किल होता है कि शिकार को उसकी गर्दन के पिछले हिस्से से पकड़ा गया था या गले से, क्योंकि दांतों के निशान इस तरह से स्थित होते हैं कि दोनों में से कोई भी हो सकता है।

पैंथर और तेंदुआ व्यावहारिक रूप से एक ही जानवर हैं, हालांकि इनके आकार में भारी अंतर को लेकर काफी विवाद रहा है। इनमें से एक है 'थेंदू' या जंगली पैंथर, जो बाघ की तरह गर्दन तोड़कर शिकार करता है और कभी-कभी उसे बाघ समझ लिया जाता है। वहीं दूसरी ओर, गांवों के बाहरी इलाकों में रहने वाला छोटा तेंदुआ बकरियों और कुत्तों का गला घोंटकर उन्हें मारता है, और यहां तक कि चूहों और घरेलू मुर्गियों का भी शिकार करता है। पैंथर बाघ की तुलना में काफी

कम शक्तिशाली जानवर है, आमतौर पर डरपोक स्वभाव का होता है, फिर भी यह भारतीय प्रायद्वीप, एशिया और अफ्रीका के जंगलों के सबसे आकर्षक निवासियों में से एक है।

दोनों प्रकार के आदमखोर जीव आम तौर पर मानव हस्तक्षेप के कारण ही पैदा हुए हैं। कभी-कभी कोई बाघ या तेंदुआ राइफल या गोली लगने से इतना घायल हो जाता है कि वह जंगल के जंगली जानवरों—या यहाँ तक कि मवेशियों—का शिकार करने और उन्हें मारने में असमर्थ हो जाता है, जो आमतौर पर उसका शिकार होते हैं। इसलिए, मजबूरीवश वह मनुष्य को मारने पर उतर आता है, जो सबसे कमजोर और दुर्बल प्राणी है और निहत्था होने पर अपना बचाव करने में पूरी तरह असमर्थ है। यही असमर्थता कभी-कभी आकस्मिक चोट के कारण भी हो सकती है, जैसे कि पैर में साही का कांटा चुभ जाना; और कभी-कभी नरभक्षी बनने की आदत बाघिन अपने शावकों को दे देती है। कभी-कभी जंगल में फेंके गए शवों को खाने से तेंदुओं में मानव मांस का स्वाद विकसित हो जाता है, जैसा कि उन क्षेत्रों के गांवों में महामारी फैलने पर होता है, हालांकि यह बहुत ही दुर्लभ है। ऐसे उदाहरण भी उतने ही दुर्लभ हैं जहाँ इनमें से कोई भी परिस्थिति इस प्रवृत्ति का कारण नहीं बनती।

आदमखोर बाघ या तेंदुआ, जब भी मौजूद होता है, तो पूरे इलाके के लिए आतंक और दहशत का कारण बनता है। ग्रामीण बेबस हैं और मानो अपनी किस्मत को स्वीकार कर चुके हैं। नियमित रूप से शिकार होते रहते हैं, अगर हत्यारा बाघ हो तो दिन और रात दोनों समय, और अगर तेंदुआ हो तो केवल रात में। बाघ अक्सर एक ही इलाके में बार-बार चक्कर लगाता है। मरने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है, लेकिन अंधविश्वास और मनोबल में कमी ग्रामीणों को अपने दुश्मन के खिलाफ कोई संगठित और सुनियोजित कार्रवाई करने से रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सड़कें सुनसान हैं, गांवों में यातायात रुक गया है, वन कार्य, लकड़ी काटना और पशु चराना पूरी तरह बंद हो गया है, खेत बिना खेती के पड़े हैं, और कभी-कभी तो पूरे गांव ही सुरक्षित क्षेत्रों में चले जाते हैं। ऐसे जानवरों का शिकार करने के प्रयास में सबसे बड़ी कठिनाई आसपास के ग्रामीणों द्वारा दिखाए गए असाधारण असहयोग से होती है, क्योंकि वे आदमखोर से प्रतिशोध के अंधविश्वासी भय से प्रेरित होते हैं, उनका मानना है कि उन्हें रहस्यमय तरीके से पता चल जाएगा कि उन्होंने उसके खिलाफ क्या करने का प्रयास किया है।

एक 'हिंसक' हाथी आमतौर पर 'मस्त' नामक आवधिक बीमारी का परिणाम होता है, जिससे सभी नर हाथी लगभग 90 दिनों तक पीड़ित रहते हैं। आँख के पीछे के छिद्र से तैलीय स्राव इसका बाहरी लक्षण है। इस दौरान वे बेहद आक्रामक और खतरनाक हो जाते हैं, लेकिन बाद में वे आमतौर पर अपने सामान्य, हानिरहित स्वभाव में लौट आते हैं। कभी-कभी यह किसी महत्वाकांक्षी युवा हाथी के झुंड के बड़े हाथियों से मादा हाथी को पाने के लिए लड़ाई करने का परिणाम होता है, जब वह बुरी तरह पिट जाता है और बड़े जानवर उसे भगा देते हैं। तब वह बहुत उदास और चिड़चिड़ा हो जाता है, और अपने रास्ते में आने वाले किसी भी व्यक्ति से बदला लेता है—और फिर से सबसे आसान शिकार मनुष्य ही होता है।

हालांकि, यह सोचना गलत है कि भारत के जंगलों में हमेशा आदमखोर बाघ, तेंदुए या हिंसक हाथी मौजूद रहते हैं। आमतौर पर ऐसा नहीं होता, और इसलिए जंगल किसी भी राजधानी शहर की व्यस्त सड़क की तुलना में घूमने के लिए अधिक सुरक्षित हैं, जहां किसी भी क्षण मोटर वाहन से कुचल जाने का खतरा बना रहता है। इसके अलावा, प्रकृति की सुंदरता, फूलों, कीड़ों, पक्षियों और जानवरों की सुंदरता—भारतीय जंगल की सुबह की भव्यता, चमकते लाल सूर्यास्त, चांदी जैसी चांदनी रात जो लहराते बांसों की चोटियों को नहलाती है—अंधेरी रातों का रहस्य, अनगिनत तारों से जड़ा आकाश—और सबसे बढ़कर, शांतिपूर्ण एकांत और प्रकृति और ईश्वर के

निकट होने का अहसास, यात्री को यह आश्वासन देता है कि उसने अंततः एक घर पा लिया है, जिससे वह आसानी से अलग नहीं होना चाहेगा।

मुझे उम्मीद है कि अगर मैंने अपनी कुछ कहानियों में भौगोलिक और प्राकृतिक वर्णनों और परिस्थितियों पर काफी ध्यान दिया है, और जंगल के पक्षियों और जानवरों की आवाज़ों को अपने लेखन में उतारने की कोशिश की है, तो मुझे क्षमा कर दिया जाएगा। मैंने ऐसा जानबूझकर किया है, ताकि भारत में रह चुके और यहाँ के शानदार जंगलों का भ्रमण कर चुके अपने कुछ पाठकों के लिए उन दिनों और उन जंगलों की यादें ताज़ा कर सकूँ, जिनसे बिछड़ने का उन्हें निश्चित रूप से दुख है। मुझे उस दिन का डर है जब मुझे भी उनसे बिछड़ना पड़ेगा।

अंत में, मैं अपने दिवंगत पिता का हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने सात वर्ष की आयु में मुझे बंदूक चलाना सिखाया था; हालाँकि वे स्वयं जंगल प्रेमी नहीं थे, फिर भी उन्हें बत्तख, तीतर और छोटे जानवरों का शिकार करने में आनंद आता था। मैं बायरा का भी आभारी हूँ, जो एक जंगली पुजारी थे और जिन्हें मैंने सलेम जिले में चिनार नदी के किनारे एक बिल में रहते हुए पाया था; पच्चीस वर्ष से भी अधिक समय पहले, उन्होंने मुझे जंगल और उसके जीव-जंतुओं के बारे में वह सब कुछ सिखाया जो मैं आज जानता हूँ, और मेरे भीतर जंगल में स्थित अपने घर के प्रति गहरा प्रेम जगाया। मैं सलेम जिले के ही अपने वफादार पुराने शिकारी रंगा का भी आभारी हूँ, जिन्होंने कई यात्राओं में मेरा साथ दिया, धैर्यपूर्वक मेरी देखभाल की, मेरा मार्गदर्शन किया, मेरी मदद की और खतरे के सामने निडर और वफादार रहे; उनके सहायक और शिकार में लगभग उनके बराबर माने जाने वाले सौरी का; और मेरे पुराने शिकारी मित्रों, डिक बर्ड और पैट वॉटसन का, जिन्होंने मिलकर मेरी जानकारी में किसी भी अन्य व्यक्ति से अधिक बाघ मारे हैं, जिन्होंने मेरे शुरुआती दिनों में मुझे कई सुझाव और निर्देश दिए।

केनेथ एंडरसन

1

जोवलागिरी का नरभक्षी

जो लोग उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों और जंगलों में जा चुके हैं, उन्हें पहाड़ियों और घाटियों पर चांदनी की सुंदरता के बारे में बताने की आवश्यकता नहीं होगी, जो जंगल की घासों और विशाल पेड़ों के प्रत्येक पत्ते को जीवंत रूप से उजागर करती है, और नीचे की गहरी छायाओं को और भी रहस्यमय बना देती है, जहां चंद्रमा की किरणें नहीं पहुंच पाती हैं, शायद किसी शिकारी जानवर, चौकस हिरण या घात लगाए बैठे सरीसृप को, सभी व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से भोजन की तलाश में।

जोवलागिरी वन क्षेत्र में सब कुछ शांत प्रतीत हो रहा था, लेकिन फिर भी हर तरफ खतरा मंडरा रहा था और हत्याएं होने वाली थीं। तीन शिकारी, जिनके पास दो पुरानी बंदूकें थीं, मांस का शिकार करने के लिए निकले थे। उन्होंने एक जलकुंड के ढलान वाले किनारे पर चतुराई से एक छिपने की जगह बनाई थी और सूर्यास्त से ही उसमें बैठे हुए, हिरणों का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, जो देर-सवेर अपनी प्यास बुझाने के लिए जरूर आएंगे।

समय बीतता गया। पूर्णिमा का चाँद आसमान के मध्य तक पहुँच चुका था और चारों ओर दिन के उजाले जैसा उजाला था। अचानक, बाईं ओर सदाबहार पेड़ों की घनी झाड़ियों से पत्तों के ज़ोर से सरसराने और गहरी गुर्राहट की आवाज़ सुनाई दी। वहाँ क्या हो सकता है? निश्चित रूप से जंगली सूअर! एक स्वादिष्ट भोजन, और साथ ही मांस जिसे बेचा जा सकता है! शिकारी इंतज़ार करते रहे, लेकिन जानवर, चाहे जो भी हों, बाहर नहीं निकले। अधीर होकर, तीनों में से कुशल निशानेबाज़ मुनियाप्पा ने गोली चलाने का जोखिम उठाने का फैसला किया। अपनी बंदूक उठाकर, उसने तब तक इंतज़ार किया जब तक कि आसपास के वातावरण से भी गहरी एक काली छाया स्पष्ट न हो जाए, और फिर गोली चला दी। एक गुर्राहट और झाड़ियों के फड़फड़ाने की आवाज़ आई, उसके बाद खाँसी की कई आवाज़ें आईं और फिर सन्नाटा छा गया।

सूअर नहीं, बल्कि बाघ! तीनों शिकारी डरते हुए और चुपचाप अपने गांव की ओर तेजी से भागे, और वहां उन्होंने अपनी इस हरकत के परिणाम को लेकर चिंता में पूरी रात बिताई।

लेकिन सुबह के समय सब कुछ ठीक निकला, क्योंकि एक जवान नर बाघ मरा पड़ा था, प्राचीन बंदूक से निकली गोली सीधे उसके दिल में जा लगी थी। इस तरह मुनियाप्पा और उसके दोस्त उस दिन गाँव के गुमनाम और दबी आवाज़ में मनाए जाने वाले नायक बन गए।

लेकिन अगली रात कहानी कुछ और ही थी। सूर्यास्त के साथ ही एक बाघिन की तीव्र, क्रोधित पुकार सुनाई दी, जो अपने मृत साथी को खोज रही थी। क्योंकि यह प्रजनन का मौसम था, और

यह बाघिन, जो पिछली रात ही अपने साथी को ढूंढने में सफल हुई थी, उसकी अचानक अनुपस्थिति से बेहद नाराज थी, जिसका कारण उसने बिल्कुल सही ही मनुष्यों के हस्तक्षेप को बताया।

एक सप्ताह तक रात-दर-रात वह बेचैन होकर इधर-उधर घूमती रही, दिन में जंगल की गहराई से पुकारती और अंधेरे में लगभग गांव के बाहरी इलाके में दहाड़ती हुई सुनाई देती।

युवा जैक लियोनार्ड, जो एक ट्रॉफी हासिल करने के लिए उत्सुक था और जिसे एक अत्यावश्यक पत्र द्वारा गाँव बुलाया गया था, आठवें दिन की सुबह पहुँचा और स्थिति का जायजा लिया। उसे बताया गया था कि बाघिन हर जगह घूमती है, और जंगल के बंगले की ओर जाने वाले सुनसान रास्ते पर उसके कई पदचिह्न देखकर, उसने उसी शाम अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया और शाम पाँच बजे तक रास्ते के किनारे बने एक चींटी के टीले के पीछे छिप गया।

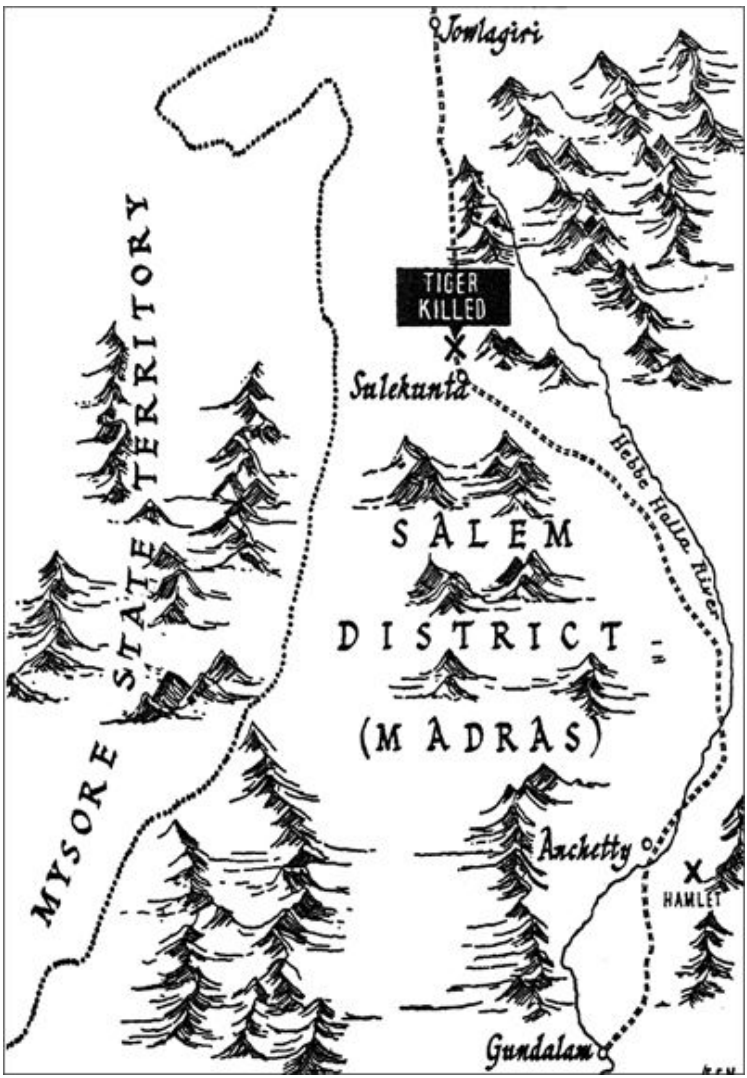

जोवलागिरी के आदमखोर की कहानी में उल्लिखित इलाकों का रेखाचित्र।

मिनट बीतते गए और शाम के 6:15 बजते-बीतते अंधेरा छाने लगा। अचानक पत्तों की हल्की सरसराहट सुनाई दी और एक ढीला पत्थर उसके दाहिनी ओर किनारे से लुढ़क गया। लियोनार्ड ने बाघिन को देखने के लिए अपनी आँखें गड़ा दीं, लेकिन कुछ नहीं दिखा। फिर मिनट बीत गए। और फिर, सड़क के किनारे-किनारे तेज़ी से उसकी ओर, उसी तरफ़, बढ़ती हुई बाघिन की आकृति उसे मुश्किल से दिखाई दी। उसने जल्दी से अपनी राइफ़ल का बट बाएँ कंधे पर रखा और झाड़ी से जितना हो सके बाहर झुक गया ताकि वह जानवर को और अच्छे से देख सके। लियोनार्ड ने बाघिन की छाती पर गोली चलाई, जो अगर थोड़ी सी भी दाहिनी ओर लगती तो जानलेवा साबित होती।

हुआ यूं कि लियोनार्ड की गोली सीधे दाहिने कंधे में जा लगी, जिससे जानवर ज़ोर से दहाड़ा और फिर जंगल में भाग गया। बेहद निराश होकर लियोनार्ड ने सुबह तक उसके निशान का पीछा करने का इंतज़ार किया। चारों ओर खून ही खून था, लेकिन पथरीले और दुर्गम इलाके, घने जंगलों वाली खाइयों और घनी झाड़ियों के कारण वह अपने शिकार को पकड़ नहीं पाया।

कई महीने बीत गए, और दृश्य बदल गया। अब हम सुलेकुंटा गाँव की ओर मुड़ते हैं, जो जंगल के भीतर बसा हुआ है और जोवलागिरी से लगभग सात मील दूर है। यहाँ एक छोटा सा मंदिर था जहाँ आसपास के इलाकों से तीर्थयात्री कभी-कभार दर्शन करने आते थे। इनमें से तीन लोग अपनी पूजा-अर्चना पूरी करके घर लौट रहे थे: एक पुरुष, उसकी पत्नी और सोलह वर्षीय पुत्र। मंदिर से लगभग एक चौथाई मील दूर एक जंगली इमली के पेड़ के नीचे से गुजरते हुए, लड़का कुछ अधपके खट्टे इमली के फल तोड़ने के लिए रुक गया। माता-पिता ने एक धीमी सी गुर्राहट सुनी, जिसके बाद एक तीखी, दर्द भरी चीख सुनाई दी। उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि उनका बेटा बाघ के जबड़ों में जकड़ा हुआ है और वह सुनसान रास्ते के किनारे बह रहे नाले में कूद पड़ा है। बूढ़े दंपति ने हिम्मत जुटाकर पीछे मुड़कर बाघ को जितना हो सके गालियाँ दीं, लेकिन उनके इकलौते बेटे की दो और चीखों ने उनका जवाब दिया, और फिर सब कुछ शांत हो गया।

इसके बाद, उत्तर में स्थित जोलागिरी से लेकर दक्षिण में तीस मील दूर स्थित गुंडालम के पशुशाला तक, और पश्चिम में बीस मील दूर स्थित मैसूर राज्य की सीमाओं से लेकर डेनकाफ्लिकोटा जाने वाली मुख्य सड़क तक, लगभग पैंतालीस मील की दूरी तक फैले एक विस्तृत क्षेत्र में लगातार मौतें होती रहीं। इस भयानक बीमारी का शिकार लगभग पंद्रह लोग हो चुके थे, जिनमें तीन लड़कियां भी शामिल थीं, जिनमें से एक की अभी-अभी शादी हुई थी। तभी मुझे होसुर के उप-कलेक्टर, मेरे मित्र से इस क्षेत्र को इस विपत्ति से मुक्त कराने का तत्काल बुलावा आया।

जोलागिरी की यात्रा करते हुए, जहाँ उप-कलेक्टर ने मुझे बताया था कि समस्या शुरू हुई थी, मैंने कहानी के तथ्यों को जोड़कर यह निष्कर्ष निकाला कि यह बाघ नहीं बल्कि एक बाघिन थी, जिसे शिकारियों ने उसके साथी से छीन लिया था और बाद में लियोनार्ड के साहसी लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण निशाने से घायल हो गई थी। जोलागिरी से मैं सुलेकुंटा की ओर पैदल चला, इस उम्मीद में कि मुझे उस हमलावर के ताज़े पदचिह्न मिल जाएँगे, लेकिन मैं बदकिस्मत रहा, क्योंकि हाल के दिनों में उस स्थान पर कोई शिकार नहीं हुआ था, और जो भी पदचिह्न थे, वे मवेशियों के झुंडों के गुजरने से मिट गए थे। प्रभावित क्षेत्र की दक्षिणी सीमा पर स्थित तेईस मील दूर गुंडालम की ओर बढ़ते हुए, मैंने वहाँ डेरा डालने का फैसला किया, क्योंकि इसी मवेशी बाड़े में अधिकांश शिकार की सूचना मिली थी, पिछले चार महीनों में सात चरवाहों की हत्या हुई थी।

मेरे मित्र, उप-कलेक्टर ने बड़ी समझदारी से तीन मोटे भैंस के बछड़ों को चारे के रूप में

उपलब्ध कराया था; मैंने उन्हें शिकार की उम्मीद में संभावित स्थानों पर बांधना शुरू किया। पहले बछड़े को मैंने गुंडालम की सीमा से लगे नदी के किनारे एक मील नीचे बांधा—उस समय नदी में पानी की एक पतली धारा बह रही थी—उस स्थान पर जहाँ सिगे हाल्ला नामक एक सहायक नदी मिलती थी, जिसके बारे में कहा जाता था कि बाघिन वहीं अपना शिकार करती है; दूसरे बछड़े को मैंने चार मील दूर स्थित पड़ोसी गाँव एंचेटी जाने वाले रास्ते पर बांधा; शेष बछड़े को मैंने जलविभाजक के पास बांधा, जहाँ से चरवाहों और मवेशियों दोनों को पीने का पानी मिलता था।

इन तीनों चारे को सुरक्षित और आरामदेह स्थिति में रखने के बाद, मैंने अगले दो दिन जंगल में हर दिशा में भटकते हुए बिताए, अपने .405 विंचेस्टर से लैस होकर, इस उम्मीद में कि मुझे ताजा पदचिह्न मिल जाएं, या शायद खुद आदमखोर को देख सकूं।

दूसरे दिन सुबह-सुबह मैंने गुंडालम नदी की नरम रेत में बाघिन के पदचिह्न देखे। वह रात में नदी में उतरी थी, नदी के किनारे-किनारे जलविभाजक के पास से गुजरी—और मेरे भैंस के चारे को भी पार किया, जिसे उसके पदचिह्नों से स्पष्ट था कि वह रुककर देखती रही थी, लेकिन छुआ तक नहीं था—और पास की एक पहाड़ी पर चढ़कर अंचेटी की ओर चली गई। यहाँ ज़मीन इतनी सख्त हो गई कि आगे उसका पीछा करना मुश्किल हो गया।

तीसरी सुबह मैं फिर से खोजबीन कर रहा था, और अभी शिविर में लौटा ही था कि गर्म पानी से नहाने और जल्दी दोपहर का भोजन करने की तैयारी कर रहा था कि तभी एंचेटी के मुखिया के साथ कुछ लोग आए और मुझे बताया कि बाघिन ने आज सुबह एंचेटी से मुश्किल से एक मील दक्षिण में स्थित एक छोटे से गाँव में एक आदमी को मार डाला है। जाहिर है, एक ग्रामीण ने अपने बाड़े में बंद मवेशियों की बेचैन आवाजें सुनकर भोर में जाँच करने के लिए बाहर गया था और वापस नहीं लौटा था। इसके बाद उसका भाई और बेटा उसके जाने का कारण जानने के लिए उसके पीछे गए और मवेशी बाड़े के बाहरी इलाके में उन्हें उस आदमी का कंबल और लाठी मिली, और कठोर मिट्टी में बाघिन के पिछले पैरों के अस्पष्ट निशान मिले, जब वह अपने शिकार पर हमला करने के लिए खड़ी हुई थी। डर के मारे वे उसका पीछा नहीं कर पाए और गाँव की ओर भागे और वहाँ से एंचेटी पहुँचे, जहाँ संख्या में वृद्धि होने और मुखिया के साथ वे मुझे ढूंढने के लिए जल्दी से आए।

स्नान को छोड़कर और जल्दी से दोपहर का भोजन करके, हम एंचेटी और उसके गाँव की ओर चल पड़े। जिस स्थान पर बाघिन ने हमला किया था और—जैसा कि इस तथ्य से स्पष्ट था कि उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति ने कोई आवाज़ नहीं की थी—अपने शिकार को मार डाला था, वहाँ से पीछा करना कठिन और धीमा हो गया, क्योंकि ज़मीन कठोर और पथरीली थी। इस मामले में, झाड़ियों के बीच घनी कंटीली झाड़ियों ने हमारी मदद की; क्योंकि चारों ओर खोज करने पर, हमें उस व्यक्ति की धोती के टुकड़े कंटीली झाड़ियों में फंसे हुए मिले, जिन्हें बाघिन उसे ले जा रही थी। यदि परिस्थितियाँ इतनी दुखद न होतीं, तो यह जानना शिक्षाप्रद होता कि उस चतुर जानवर ने कंटीली झाड़ियों और उनसे उत्पन्न होने वाली बाधाओं से बचने के लिए किस प्रकार रास्ता बदला था।

लगभग 300 गज दूर, उसने एक छोटे अंजीर के पेड़ के नीचे झाड़ियों में अपना बोझ गिरा दिया, शायद भोजन शुरू करने के इरादे से। फिर उसने अपना इरादा बदल दिया, या शायद विचलित हो गई, क्योंकि उसने अपने शिकार को फिर से उठा लिया और दक्षिण की ओर बहने वाले एक गहरे नाले की ओर पीछे हट गई, जो लगभग तीस मील दूर मुख्य कावेरी नदी की ओर बहता था।

इसके बाद, पीछा करना आसान हो गया, क्योंकि बाघिन ने आदमी की गर्दन और गले से

अपनी पकड़ बदल ली थी; इसी वजह से खून के निशान नहीं मिल रहे थे। अब उसने उसे पीठ के निचले हिस्से से पकड़ रखा था। खून की बूंदों और झाड़ियों व घनी पत्तियों पर लगे धब्बों की वजह से अब हमें निशान का पीछा करना अपेक्षाकृत आसान हो गया था, और कुछ सौ गज आगे जाकर हमें उस आदमी की धोती मिल गई, जो पूरी तरह से खुल गई थी और एक उभरी हुई कांटेदार झाड़ी से लटक रही थी।

आगे बढ़ते हुए, हम नाले पर पहुँचे जहाँ नरम सूखी रेत में बाघिन के पैरों के निशान स्पष्ट रूप से अंकित थे, साथ ही एक तरफ हल्का सा घसीटने का निशान भी था, जो स्पष्ट रूप से उस व्यक्ति के पैरों में से एक के नीचे की ओर घिसटने के कारण बना था जब उसे ले जाया जा रहा था।

चूंकि किसी ट्रैकर की आवश्यकता नहीं थी, और अधिक संख्या में लोगों के होने से अशांति और अनावश्यक जोखिम पैदा होता, इसलिए मैंने बाकी लोगों को वहीं रुकने का इशारा करके अकेले ही सावधानीपूर्वक आगे बढ़ना शुरू किया। मेरी प्रगति बहुत धीमी थी, क्योंकि मुझे नाले के दोनों किनारों पर घनी झाड़ियों को ध्यान से देखना था, जहां बाघिन घात लगाकर बैठी हो सकती थी और अपने पीछा करने वाले को मार डालने का इंतजार कर रही हो सकती थी। इस प्रकार मैंने नाले के दो मोड़ पार किए, तभी मुझे नाले के तल में उभरी हुई एक छोटी चट्टान दिखाई दी। चट्टान के दूसरी ओर यथासंभव दूरी बनाए रखते हुए, मैंने अपनी गति को और अधिक गुप्त कर दिया। करीब से देखने पर चट्टान के दूसरी ओर एक काली वस्तु दिखाई दी, और यह दुर्भाग्यपूर्ण शिकार का शव निकला।

बाघिन पहले ही अच्छा-खासा भोजन कर चुकी थी, उसने अपने शिकार का लगभग आधा हिस्सा खा लिया था, जिसमें से एक टांग जांघ से और एक हाथ अलग हो गया था। यह सुनिश्चित करने के बाद कि वह आसपास कहीं नहीं है, मैं अपने आदमियों के पास लौट आया, जिन्हें मैंने मौके पर बुलाया ताकि वे मेरे लिए बैठने की कोई जगह बनाने में मदद करें, जहाँ मैं बैठकर उस शिकारी के अपने भयानक भोजन के लिए लौटने का इंतजार कर सकूँ, जिसके बारे में मुझे पूरा विश्वास था कि वह उस दिन सूर्यास्त से पहले लौट आएगी।

बैठने के लिए इससे अधिक अनुपयुक्त स्थान की कल्पना करना मुश्किल था। वहाँ एक भी ऐसा पेड़ नहीं था जिस पर छिपने या मचान बनाने की व्यवस्था की जा सके, और जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि केवल दो ही विकल्प थे। एक था नाले के विपरीत किनारे के पास बैठना, जहाँ से मानव शिकार स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। दूसरा था ढलान वाली चट्टान पर चढ़कर नाले के तल से लगभग दस फीट ऊपर एक ऐसे स्थान पर जाना, जहाँ उसके ऊपरी किनारे से लगभग चार फीट की दूरी पर एक प्राकृतिक कगार बनी हुई थी। मैंने पहली योजना को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि आदमखोर सांप के मामले में यह बहुत खतरनाक थी, और इससे मेरे पास चट्टान के कगार पर बैठने का विकल्प बचा, जहाँ से मैं न केवल शव को देख सकता था, बल्कि नाले की पूरी लंबाई को उस दिशा में उसके मोड़ तक देख सकता था जहाँ से हम आए थे, और दूसरी दिशा में लगभग बीस गज तक, जहाँ वह अचानक दाईं ओर मुड़ जाता था।

नाले से कुछ दूरी पर एक ऐसी जगह पर, जहाँ से पेड़ काटने की आवाज़ सुनाई न दे, वे चुपचाप और तेज़ी से काम करते हुए चट्टान के आस-पास उगने वाली कुछ काँटेदार शाखाएँ काट रहे थे, ताकि कोई अलग पृष्ठभूमि न बने। उन्होंने इन्हें बड़ी कुशलता और चतुराई से चट्टान के नीचे इस तरह लगा दिया कि नाले से मुझे किसी भी दिशा से देखा न जा सके। सौभाग्य से मैं अपना कंबल, पानी की बोतल और टॉर्च साथ लाया था, हालाँकि रात के अधिकांश समय में इनकी ज़्यादा ज़रूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि चाँद लगभग पूरा होने वाला था और अपेक्षाकृत जल्दी

निकलेगा। दोपहर 3 बजे तक मैं अपनी जगह पर पहुँच गया था और वे लोग मुझे छोड़कर चले गए। उन्हें निर्देश दिया गया था कि वे अगली सुबह गर्म चाय की थर्मस और नाश्ते के लिए सैंडविच लेकर लौटें।

दोपहर धीरे-धीरे बीतती गई, चिलचिलाती धूप की गर्मी सीधे खुली चट्टान पर पड़ रही थी और मुझे पसीने से तर कर रही थी। नाले में दोनों ओर देखने पर सब कुछ शांत था और तपती धरती से उठती झिलमिलाती गर्मी की किरणों को कोई विचलित नहीं कर रहा था। गिद्धों की अनुपस्थिति का कारण यह हो सकता था कि बाघिन ने जिस स्थिति में शव को ढलान वाली चट्टान के नीचे छोड़ा था, वह आकाश से छिपा हुआ था। शाम लगभग 5 बजे एक कौवे ने उसे देखा और लगातार कांव-कांव करके जल्द ही अपने साथी को आकर्षित किया। लेकिन दोनों पक्षी मानव गंध से इतने भयभीत थे कि शिकार को नोचने की हिम्मत ही नहीं हुई। समय बीतता गया और दूर जंगलों से ढकी पहाड़ियों के किनारे सूरज एक आग के गोले की तरह डूब गया। कौवे एक-एक करके उड़ गए और कल की प्रतीक्षा में किसी दूर के पेड़ पर घोंसला बनाने के लिए तैयार हो गए, जब भूख से बेहाल होकर वे इंसानों की डरावनी गंध का सामना करने में अधिक सक्षम होंगे। जंगली मुर्गे की बुलंद आवाज चारों दिशाओं में गूंज उठी, मानो ढलते दिन को विदाई दे रही हो, और नदी के सूखे तल से मोर की तीखी 'माऊ' की आवाज सुनाई दी। मैंने उस आवाज का स्वागत किया, क्योंकि मैं जानता था कि पूरे जंगल में मोर से ज्यादा चौकस रखवाला कोई नहीं हो सकता और अगर वह बाघिन को देख भी ले तो मुझे तुरंत आगाह कर देगा। अब वही समय आ गया था, और मैं पूरी तरह सतर्क होकर उस आदमखोर के लौटने का इंतजार कर रहा था। लेकिन कुछ नहीं हुआ, मोर भारी पंखों के साथ उड़ गया और ढलते दिन के बाद तेजी से शाम हो गई।

सौभाग्य से, सुबह का चाँद निकल चुका था और उसकी चाँदी जैसी चमक से मेरी दृष्टि थोड़ी-बहुत वापस आ गई। दिन के पक्षी अब अपने घोंसलों में जा चुके थे और उनकी जगह रात के पक्षियों ने ले ली थी। नाले में नाइटजार पक्षियों की लगातार 'चक-चक-चक' की आवाज़ गूँज रही थी, क्योंकि रात के ये शुरुआती संदेशवाहक ठंडे किनारों पर अपने कीड़े-मकोड़े का शिकार खोज रहे थे। समय फिर से बीत गया और फिर चारों ओर सन्नाटा छा गया। एक झींगुर की आवाज़ भी सन्नाटे को नहीं तोड़ रही थी और मेरे दोस्त, नाइटजार पक्षी, भोजन की तलाश में कहीं और चले गए थे। नीचे मानव अवशेषों पर नज़र डालते हुए, ऐसा लगा जैसे एक हाथ मुझसे विनती कर रहा हो या शायद बदला लेने के लिए पुकार रहा हो। सौभाग्य से सिर दूसरी तरफ मुड़ा हुआ था, इसलिए मैं चेहरे की उस भयानक विकृति को नहीं देख सका, जिसे मैंने उस दोपहर पहले देखा था।

अचानक एक भयभीत सांभर की तीखी आवाज ने सन्नाटा तोड़ दिया और उसके बाद लगभग आधा मील दूर से लगातार वैसी ही आवाजें आती रहीं। फिर चित्तीदार हिरण की तीखी आवाज सुनाई दी और नाले में बेचैन 'ब्रेन-फीवर, ब्रेन-फीवर' पक्षी की अजीबोगरीब आवाज गूंज उठी, जो बढ़ती हुई तीव्रता में बार-बार आ रही थी। मैंने राहत की सांस ली और अंतिम कार्रवाई के लिए अपनी नसों और मांसपेशियों को तैयार किया। मेरे साथी, जंगल के रात्रि रक्षकों ने अपना कर्तव्य पूरी निष्ठा से निभाया था और मैं जानता था कि बाघिन पास आ रही थी और उसे देख लिया गया था।

फिर धीरे-धीरे आवाजें धीमी पड़ गईं। इसका मतलब था कि बाघिन आवाज लगाने वालों की पहुंच से बाहर निकल चुकी थी और अब आस-पास ही थी। मैंने अपनी निगाहें दाईं ओर मुड़े हुए नाले पर टिका दीं, जो बीस गज दूर था, जहाँ किसी भी क्षण मुझे आदमखोर बाघिन के प्रकट

होने की उम्मीद थी। लेकिन कुछ नहीं हुआ। तीस मिनट बीत गए, फिर मेरी घड़ी की सुइयाँ चाँदनी में साफ दिखाई दे रही थीं, जिनमें पैंतालीस मिनट हो गए थे। अजीब बात है, मैंने सोचा; बाघिन को तो बहुत पहले ही प्रकट हो जाना चाहिए था। आधा मील की दूरी तय करने में उसे पैंतालीस मिनट तो नहीं लगेंगे।

और फिर अचानक मुझ पर आसन्न खतरे का भयानक आभास छा गया। इससे पहले भी कई बार, वह रहस्यमयी छठी इंद्री, जो हम सभी में होती है लेकिन कुछ ही लोग विकसित कर पाते हैं, भारत और बर्मा के जंगलों और अफ्रीकी क्षेत्र में मेरी कई यात्राओं के दौरान मेरे काम आई थी। मुझे जरा भी संदेह नहीं था कि किसी तरह, मेरी तमाम सावधानियों, पूरी तरह से छिपने और एकदम शांत रहने के बावजूद, बाघिन को मेरी उपस्थिति का पता चल गया था और शायद वह उस समय मुझ पर अंतिम हमले की तैयारी में मेरा पीछा कर रही थी।

खतरे के क्षणों में, हम जो जंगल को जानते हैं, तुरंत सोचते हैं। यह बहादुरी नहीं है जो मन को इतनी तेज़ी से सोचने के लिए प्रेरित करती है, क्योंकि मैं स्वीकार करता हूँ कि उस समय मैं बहुत डरा हुआ था और मेरे चेहरे से ठंडे पसीने की बूँदें टपक रही थीं। मैं जानता था कि बाघिन नाले पर या मेरे नीचे नहीं हो सकती, वरना मैं उसे बहुत पहले देख लेता। हो सकता है वह सामने वाले किनारे पर घनी झाड़ियों में छिपी हो और मेरी स्थिति पर नज़र रख रही हो, लेकिन किसी तरह मुझे लगा कि वहाँ उसकी उपस्थिति उस बढ़ते हुए खतरे के एहसास का कारण नहीं हो सकती जो मुझे लगातार घेर रहा था। वह केवल मेरे ऊपर और पीछे ही हो सकती थी। अचानक मुझे एहसास हुआ कि मेरे पीछे चार फुट ऊँची चट्टान की दीवार मुझे पीछे देखने से रोक रही थी जब तक कि मैं खुद को आधा झुककर, आधा घुटने टेककर न बैठ जाऊँ, जिससे स्थिर निशाना लगाना लगभग असंभव हो जाता, साथ ही सामने वाले किनारे पर या नाले के तल पर मौजूद किसी भी देखने वाले को मेरी स्थिति का पूरी तरह से पता चल जाता। क्षण भर के लिए, मैंने अपनी इस दूरदर्शिता की कमी के लिए खुद को कोसा, जो अब मेरे लिए घातक साबित होने वाली थी। जैसे ही मैंने एक और पल के लिए संकोच किया, ऊपर से रेत की एक पतली धारा नीचे सरक गई, संभवतः उस हत्यारे द्वारा हटाई गई, जो अब निस्संदेह मेरे बहुत करीब थी, और अंतिम छलांग के लिए खुद को इकट्ठा कर रही थी।

अब मैंने ज़रा भी संकोच नहीं किया; मैंने अपने सुन्न पड़े पैरों को ज़बरदस्ती उठाकर खुद को आधा झुकी हुई स्थिति में लाया, और साथ ही साथ भरी हुई .405 पिस्तौल को घुमाकर तब तक सीधा किया जब तक कि उसका मुंह मेरे चेहरे के सामने न आ गया। फिर मैंने खुद को थोड़ा और ऊपर उठाया, जब तक कि मेरी आंखें और पिस्तौल का मुंह दोनों किनारे से ऊपर न आ गए।

एक भयावह दृश्य सामने आया। बाघिन मुझसे लगभग आठ फीट की दूरी पर पेट के बल लेटी हुई, ढलान वाली चट्टान से मेरी ओर रेंगती हुई आ रही थी। जैसे ही हमारी आँखें आश्चर्य से मिलीं, हमने एक साथ प्रतिक्रिया दी; बाघिन ने दिल दहला देने वाली दहाड़ के साथ मुझ पर झपट्टा मारा, और मैं उसी क्षण फिर से नीचे झुक गया, और अपनी उंगली से ट्रिगर दबा लिया।

राइफल की भारी आवाज, जो मेरे कानों के बिल्कुल करीब और कुछ ही इंच की दूरी पर हुई, उस भयानक गर्जना के साथ मिलकर एक ऐसी ध्वनि उत्पन्न करती है जो आज भी अक्सर मेरे सपनों में मुझे परेशान करती है और मुझे भय से कांपते हुए जगा देती है।

उस क्रूर बाघिन ने उस चट्टान की मौजूदगी का अंदाज़ा नहीं लगाया था जिसके पीछे मैं छिपा हुआ था। राइफल की तेज़ आवाज़ और चकाचौंध भरी चमक सीधे उसके चेहरे पर पड़ी, जिससे वह घबरा गई और उसका निशाना चूक गया। उसका इरादा मारने के बजाय भागने का हो गया। वह मेरे सिर के ऊपर से छलांग लगाकर निकल गई और गुज़रते समय उसके पिछले पैर ने

राइफल की नली पर ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे राइफल मेरे हाथ से छूटकर ढलान वाली चट्टान से नीचे लुढ़कती हुई नरम रेत पर जा गिरी, जहाँ वह अधखाए शव के पास पड़ी रही। राइफल से भी तेज़ी से बाघिन नाले के किनारे पहुँच गई और दो छलांगों और एक और खाँसी भरी दहाड़ के साथ सामने वाले किनारे की झाड़ियों में ओझल हो गई।

सदमे में डूबा हुआ और जो कुछ हुआ था, उससे लगभग बेखबर, मुझे एहसास हुआ कि मैं निहत्था और असहाय था, और अगर बाघिन अपने रास्ते पर वापस लौटी, तो मैं कुछ भी नहीं कर सकता था। साथ ही, राइफल लेने के लिए नीचे उतरने से निस्संदेह मुझ पर हमला हो जाता, अगर जानवर सामने वाले किनारे की झाड़ियों में घायल पड़ा होता। लेकिन अनिर्णय और असहायता से कुछ भी बेहतर लग रहा था, और मैं राइफल लेने के लिए ढलान से नीचे कूदा और वापस चढ़ने की कोशिश करने लगा, हर पल हमलावर बाघिन की भयानक दहाड़ सुनने की उम्मीद कर रहा था। लेकिन कुछ नहीं हुआ, और पलक झपकते ही मैं वापस चट्टान पर पहुँच गया।

जल्दी से जांच करने पर पता चला कि गिरने से हथियार को कोई नुकसान नहीं हुआ था, बट ने झटके को सोख लिया था। खाली कारतूस वापस रखते हुए, मैं सोचने लगा कि क्या मैंने बाघिन को सच में मारा था, या फिर बहुत करीब से गोली चलाने पर निशाना चूक गया था। तभी मेरी नज़र अपने पीछे, लगभग दो फीट की दूरी पर, एक काली-सफेद चीज़ पर पड़ी। उसे उठाकर देखा तो पाया कि वह बाघिन के कान का बड़ा हिस्सा था, जो मेरी गोली से इतनी करीब से टकराकर अलग हो गया था। छूने पर वह अभी भी गर्म था, और ज़्यादातर चमड़ी और बालों का होने के कारण, फटे हुए किनारे से मुश्किल से ही खून बह रहा था।

मेरी निराशा और हताशा को शब्दों में बयां करना मुश्किल है। मैं आदमखोर बाघिन को बिल्कुल करीब से निशाना बनाकर मारने में नाकाम रहा, यहाँ तक कि उसे सचमुच में घायल भी नहीं कर पाया। उसका कान कट जाना उसे कुछ दिनों तक मामूली दर्द से ज़्यादा कुछ नहीं कर पाएगा। दूसरी ओर, मेरी मूर्ख साथी उसे सिखाएगी कि शिकार के बाद दोबारा शिकार पर न लौटना चाहिए। इससे वह और भी चालाक, और भी खतरनाक और और भी विनाशकारी हो जाएगी, क्योंकि अब उसे शिकार करने के बाद खाना होगा और भूख लगने पर दोबारा शिकार करना होगा, जिससे उसकी हत्याओं की संख्या सामान्य से कहीं अधिक बढ़ जाएगी। वह शायद अपना कार्यक्षेत्र भी बदल ले और देश के किसी दूसरे हिस्से में चली जाए, जहाँ के लोगों को आदमखोर बाघिन के आने की जानकारी न हो और वे आसानी से उसका शिकार बन जाएँ। मैंने पूरी रात खुद को कोसता रहा, इस उम्मीद में कि शायद बाघिन फिर से दिखाई दे, लेकिन सब व्यर्थ रहा। सुबह, और मेरे आदमियों के लौटने पर, मैं अंदर तक कांप रहा था, बेहद निराश और हताश था। पिछली सुबह से चले आ रहे मेरे लंबे उपवास के बाद, जो गरमा गरम चाय और सैंडविच वे लाए, और फिर एक पाइप भर तेज़ तंबाकू पीने से, मेरा मनोबल कुछ हद तक बढ़ गया और मैंने स्थिति को थोड़ा कम गंभीरता से लिया, जो कि इससे कहीं ज़्यादा बुरी हो सकती थी। अगर मेरी छठी इंद्री काम न करती, तो मैं निस्संदेह कल के दुर्भाग्यपूर्ण शिकार के बगल में एक अधपका शव पड़ा होता। मेरे पास वास्तव में शुक्रगुज़ार होने के लिए कुछ था।

जिस जगह बाघिन कूदी थी, उसके पास पहुँचकर हमने खून के निशान ढूँढे, लेकिन जैसा कि मुझे उम्मीद थी, कुछ नहीं मिला। बस कभी-कभार उसके घायल कान के निशान झाड़ियों की पत्तियों पर लगे थे, क्योंकि बाघिन उस जगह से पीछे हट गई थी जो उसके लिए बहुत ही चौंकाने वाली साबित हुई थी। कुछ दूरी पर जाकर ये निशान भी गायब हो गए, इसलिए निराश होकर गाँव और एंचेटी, और अंत में गुंडालम लौटकर हमें पूरी तरह से असफल होने की सूचना देनी पड़ी।

मैं दस दिन और गुंडालम में ही रहा, लगातार हर दिन भैंसों को चारा डालता रहा, हालाँकि सफलता की उम्मीद बहुत कम थी। सुबह और दोपहर का पूरा समय मैं जंगल में जानवरों के पदचिह्नों की तलाश में बिताता था, और रातें पानी के गड्ढों, जानवरों के रास्तों और गुंडालम नदी के किनारे बैठकर बाघिन के दिखने की उम्मीद में गुजारता था, लेकिन सब व्यर्थ रहा। दिन के समय कई दल शिकार के बारे में जानकारी लेने के लिए हर दिशा में जाते थे, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। जाहिर तौर पर बाघिन ने अपना ठिकाना छोड़ दिया था और बेहतर जगहों की ओर चली गई थी।

ग्यारहवें दिन मैं गुंडालम से निकलकर पैदल चलकर अंचेटी और डेनकनिकोटा गया। वहाँ से मैं होसुर पहुँचा, जहाँ मैंने अपने मित्र, उप-कलेक्टर को सारी घटना बताई और उनसे वादा लिया कि यदि आगे कोई हत्या होती है, तो वे मुझे तुरंत सूचित करेंगे, क्योंकि अब मैं इस इलाके के लोगों के कल्याण के लिए स्वयं को जिम्मेदार मानता हूँ। फिर होसुर छोड़कर मैं बैंगलोर स्थित अपने घर लौट आया।

पांच महीने बीत गए, इस दौरान मुझे उप-कलेक्टर से तीन पत्र मिले, जिनमें दूर-दराज के स्थानों से बाघों द्वारा मानव वध की अस्पष्ट अफवाहों का जिक्र था, जिनमें से दो कावेरी नदी के पार कोयंबटूर जिले से, एक मैसूर राज्य क्षेत्र से और चौथा उससे भी दूर किसी स्थान से था।

फिर अचानक वह बुरी खबर आई जिसका मुझे डर था, लेकिन उम्मीद थी कि ऐसा न हो। गुंडालम में एक बाघ ने फिर हमला किया था, वहाँ उसने अपना आठवाँ शिकार मार डाला था, और अगली शाम सुलेकुंता के छोटे से मंदिर के द्वार से ही उस बूढ़े पुजारी को अगवा कर लिया था जो पिछले चालीस वर्षों से वहाँ सेवा कर रहा था। पत्र के अंत में तुरंत आने का अनुरोध था।

इस तरह के तत्काल निमंत्रण की कोई आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि मैं सबसे बुरे हालात के लिए तैयार था; दो घंटे के भीतर मैं जोवलागिरी के लिए कार से रवाना हो गया।

वहाँ पहुँचकर मुझे सौभाग्यवश उन तीर्थयात्रियों में से एक से बात करने का अवसर मिला, जो सुलेकुंता मंदिर के वृद्ध पुजारी की मृत्यु के लगभग चश्मदीद गवाह थे। बताया जाता है कि पुरुषों का एक समूह तीर्थयात्रा पर था और जैसे ही वे मंदिर के पास पहुँचे, उन्हें एक बाघ की दहाड़ सुनाई दी, जो लगभग तीस गज दूर उगे एक विशाल पीपल के पेड़ की जड़ों से जंगल में कूद गया। मंदिर में शरण लेने के लिए भागते हुए, वे मंदिर को खाली पाकर आश्चर्यचकित रह गए और बाहर देखने पर वृद्ध पुजारी का शव उनके ठीक सामने स्थित पुराने पीपल के पेड़ की टेढ़ी-मेढ़ी जड़ों के बीच पड़ा देखकर दंग रह गए। कुछ समय बाद, बहुत ही दबे स्वर में, वे समूह में पास गए और पाया कि वृद्ध व्यक्ति पर मंदिर के अंदर या उसके बहुत पास हमला किया गया था और फिर उसे खा जाने के लिए इस स्थान पर लाया गया था। बाघ ने पहले ही अपना भोजन शुरू कर दिया था और दुबली छाती का कुछ हिस्सा खा चुका था, तभी तीर्थयात्रियों के समूह ने उसे परेशान कर दिया।

मैंने विशेष रूप से यह जानने की कोशिश की कि क्या मेरे सूचनादाता या उसके साथियों ने बाघ के कानों में कुछ असामान्य देखा था, लेकिन जाहिर है कि वे सभी इतने भयभीत थे कि किसी भी दोष पर ध्यान नहीं दे पाए।

मैं अपने तीन साथियों के साथ जल्दी से सुलेकुंटा के लिए रवाना हुआ और शाम ढलने के करीब पहुंचा; मुझे यह स्वीकार करना होगा कि यात्रा के अंतिम दो मील बहुत असुविधाजनक रहे, क्योंकि हमें दो खड़ी ढलान वाली पहाड़ियों के बीच की घाटी से गुजरना पड़ा जो घनी बांस से ढकी हुई थी। लेकिन हमें अचानक एक अकेले हाथी की चिंघाड़ के अलावा कुछ भी सुनाई या

दिखाई नहीं दिया, जो कुछ समय से इन इलाकों में रह रहा था और तीर्थयात्रियों के लिए काफी परेशानी का सबब बना हुआ था, जिन्हें वह छोटे समूहों में होने पर दौड़ाना पसंद करता था। लेकिन यह एक अलग कहानी है।

ठीक से शिविर लगाने का समय नहीं था, इसलिए हमने मंदिर के सुनसान सामने वाले हिस्से में ही सोने का फैसला किया। सामान्य परिस्थितियों में तो मैं और मेरे साथी ऐसा बिल्कुल नहीं करते। लेकिन रात होने और आदमखोर भालू के पास होने से सारे संशय और सिद्धांत धराशायी हो जाते हैं। मैं भरी हुई राइफल लेकर पहरा दे रहा था, जबकि मेरे तीनों साथी पास में पड़ी झाड़ियाँ और सड़ी हुई लकड़ियाँ तेज़ी से इकट्ठा कर रहे थे ताकि आग जला सकें, जिससे हमें गर्मी और सुरक्षा मिल सके, क्योंकि उस समय चाँद नहीं था और जल्द ही अंधेरा होने वाला था। ऐसी स्थिति में, मंदिर के पास से आदमखोर भालू के गुजरने की उम्मीद में जागते रहना बेहद खतरनाक और व्यर्थ होता।

जल्द ही हमारे पास एक तेज़ आग जल रही थी, जिसके अंदर की तरफ हम बैठे थे, घने जंगल की रात से दूर, जहाँ हमारे बिना किसी को पता चले, हत्यारा दो फीट की दूरी पर आसानी से छिपा हो सकता था। ध्यान से सुनते हुए, हमें कभी-कभी सांभर की गहरी गड़गड़ाहट सुनाई देती थी, और मैं हिरण की कर्कश आवाज भी पहचान सकता था, लेकिन ये आवाजें लगातार नहीं आ रही थीं, जिससे पता चलता है कि भारतीय जंगल के राजा जैसे किसी बड़े दुश्मन से जानवर बहुत ज्यादा भयभीत नहीं हुए थे। आधी रात के बाद हमने दो-दो के समूह में, एक बार में तीन घंटे के लिए पहरा देने का इंतजाम किया, और मैंने अपने एक साथी के साथ पहली बारी ली। बाकी दोनों जल्द ही सो गए। हालांकि, कुछ भी अप्रिय नहीं हुआ, सिवाय इसके कि अकेला हाथी, जो आग की अचानक झलक पाने के लिए काफी करीब आ गया था, एक बार फिर चिंघाड़ा और भाग गया। रात करीब 2 बजे एक ककुर (भोंकने वाला हिरण) ने तीखी आवाज निकाली, लेकिन चूंकि यह आवाज जारी नहीं रही, इसलिए मैंने अनुमान लगाया कि किसी भटकते हुए तेंदुए ने उसे परेशान किया होगा। तीन बजते ही मैंने सो रहे दोनों आदमियों को जगाया और खुद भी गहरी नींद में सो गया। मेरी नींद एक भूरे रंग के जंगली मुर्गे की तेज आवाज से खुली, जो उगते सूरज को प्रणाम कर रहा था।

पास के कुएँ के पानी से बनी गर्म चाय और कुछ भोजन ने हमें नई ऊर्जा और हिम्मत दी, जिसके बाद मैं विशाल पीपल के पेड़ के पास गया और बूढ़े पुजारी के अवशेषों का निरीक्षण किया। दिन में गिद्धों और रात में लकड़बग्घों और सियार ने उनका बुरा हाल कर दिया था, क्योंकि अब केवल कुछ साफ-सुथरी हड्डियाँ ही बची थीं। उन्हें देखकर मैं उस बूढ़े व्यक्ति को याद करने लगा जिसने पिछले चालीस वर्षों से इस मंदिर की देखभाल की थी, जो प्रतिदिन उसी दृश्य को देखता था जिसे मैं अब देख रहा था, वही सांभर, काकुर और हाथी की रात की आवाज़ें सुनता था जो मैंने उस रात सुनी थीं, और अब वह केवल कुछ हड्डियाँ बनकर उस पुराने पीपल के पेड़ की दरारों में सिमट कर पड़ा था।

अगले एक घंटे तक हमने इस उम्मीद में छानबीन की कि हमें जानवरों के पैरों के निशान मिल जाएं और शायद हत्यारे की पहचान हो जाए, लेकिन हालांकि हमें कुछ पुराने निशान दिखे, मैं निश्चित रूप से यह नहीं कह सकता था कि वे मेरी बाघिन द्वारा बनाए गए थे।

सुबह 9 बजे हम गुंडालम के लिए 23 मील की लंबी यात्रा पर निकल पड़े, जहाँ हम शाम 5 बजे के कुछ देर बाद पहुँचे। यहाँ, हाल ही में हुई हत्या के बारे में पूछताछ करने पर, मुझे हत्यारे के बारे में पहली पुख्ता जानकारी एक चरवाहे से मिली, जो उसी जलसंभर पर अपने मवेशियों की देखभाल कर रहा था जहाँ मैंने अपनी पिछली यात्रा में भैंस का चारा बाँधा था। उस व्यक्ति ने

बताया कि उसका एक साथी था जिससे वह बात कर रहा था, और फिर वह शौच के लिए पास की एक झाड़ी में चला गया। वह जैसे ही बैठा, झाड़ी के पीछे से एक बाघ का भयानक सिर उठा, जिसका केवल एक कान था, और उसके तुरंत बाद एक क्रूर, धारीदार शरीर दिखाई दिया। जैसे ही बाघ के दाँत उसके चेहरे और गले में धँसे, वह व्यक्ति एक बार चीखा, और अगले ही पल बाघ और शिकार जंगल में गायब हो गए।

अंततः मुझे वह जानकारी मिल ही गई जिसका मुझे डर था, लेकिन साथ ही साथ मैं उसे सुनना भी चाहता था। तो, आखिरकार, यह पुष्टि हो गई कि हत्यारा कोई और नहीं बल्कि मेरी पुरानी दुश्मन, वह बाघिन थी, जो अंततः अपने पुराने उत्पातों के स्थल पर लौट आई थी, और जिसकी वापसी और अब पहले से कहीं अधिक चालाकी के लिए मैं स्वयं जिम्मेदार था।

मैंने हर जगह से यही खबरें सुनी थीं कि इस जानवर ने किसी भी गाय या भैंस को नहीं मारा है, इसलिए मैंने पिछली बार की तरह जीवित चारा लगाने में समय बर्बाद नहीं किया, यह जानते हुए कि मुझे एक ऐसे दुश्मन से निपटना है जिसे मैं केवल आमने-सामने की आकस्मिक मुठभेड़ में ही हराने की उम्मीद कर सकता था।

अगले दो दिनों तक मैंने आस-पास के जंगल में फिर से खोजबीन की, इस उम्मीद में कि शायद किस्मत से हत्यारा मिल जाए, लेकिन साथ ही हर पल पीछे से हमले का डर भी सता रहा था। मुझे बहुत सारे पदचिह्न मिले, खासकर गुंडालम नदी की नरम रेत पर, जहाँ जोवलागिरी बाघिन के जाने-पहचाने पदचिह्न स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे, जिससे यह बात और पुख्ता हो गई कि लगभग पाँच महीने पहले मेरे एक गलत निशाने की वजह से कई और मौतें हुई थीं।

तीसरे दिन दोपहर के समय, पुरुषों का एक दल गुस्से में धुत होकर पहुंचा, जो जोवलागिरी से तीस मील की दूरी तय करके मुझे एक और हत्या के बारे में बताने आया था - इस बार जोवलागिरी वन बंगले का चौकीदार - जिसे पिछली दोपहर बंगले से सौ गज के भीतर ही मार डाला गया था और आधा खा लिया गया था।

इस उम्मीद में कि बाघिन सुलेकुंटा और गुंडालम की ओर वापस लौट सकती है, क्योंकि ऐसी अफवाह थी कि वह किसी इंसान का शिकार करने के बाद एक दिन से अधिक एक ही स्थान पर नहीं रुकती, मैं अपने आदमियों के साथ तुरंत निकल पड़ा। जोवलागिरी से आए दल ने भी मेरा साथ दिया, जो हालांकि लगभग तीस मील दौड़कर गुंडालम पहुंचे थे, लेकिन उन्होंने अकेले लौटने के बजाय मेरी राइफल की सुरक्षा में पच्चीस मील पैदल चलकर सुलेकुंटा वापस जाना बेहतर समझा।

जैसे-जैसे दिन ढल रहा था, हम फिर से सुलेकुंता मंदिर पहुँचे और रात अभी भी अंधेरी होने के कारण, हमने मंदिर के अंदर ही अलाव जलाने की अपनी परंपरा दोहराई। अब हमारे दल में मेरे समेत बारह लोग हो गए थे, जो संख्या हमें सुरक्षित तो महसूस करा रही थी, लेकिन मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से बहुत अधिक थी।

लेकिन इस बार हमारी रात चैन से नहीं गुज़री। शाम होते ही सांभर और काकुर बेचैन हो गए, और रात 8:30 बजे हमें एक बाघ की आवाज़ सुनाई दी, जो मुझे लगभग आधा मील दूर लग रही थी। एक घंटे बाद, यह आवाज़ फिर से सुनाई दी, और तब मैं आसानी से एक बाघिन की साथी को पुकारने की आवाज़ पहचान सका। बाघिन ने भी अलाव देख लिया था और इंसानों की मौजूदगी का एहसास कर लिया था, और ज़ाहिर तौर पर भोजन की उम्मीद में, उसने मंदिर के दो चक्कर लगाए, उसकी बार-बार की पुकारों के बीच उसकी उत्सुकता भरी गुर्राहटें भी साफ़ सुनाई दे रही थीं।

इन सब बातों से मुझे एक विचार आया जिससे शायद मैं उसे सुबह होने तक आस-पास रोक सकूँ, और तभी मैं कुछ कर पाऊँगा। मैंने दो बार नर बाघ की पुकार सुनी, और तुरंत ही उस दबंग मादा बाघिन का ज़ोरदार बुलावा मिला। दरअसल, वह खुले मैदान के किनारे तक आई और इतनी ज़ोर से पुकारी कि हम सब लगभग स्तब्ध रह गए। हालाँकि, मैंने सावधानी बरती कि जब वह आस-पास हो तो मैं पुकार न दूँ, क्योंकि इससे उसे शक हो सकता था। साथ ही मैंने आदमियों को थोड़ा ज़ोर से बोलने और पहले से ही भड़क रही आग को और न भड़काने का निर्देश दिया, ये निर्देश निस्संदेह उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं आए। मुझे उम्मीद थी कि इन तरीकों से, संभोग की इच्छा और भूख के बीच, मैं बाघिन को सुबह होने तक आस-पास रोक सकूँगा।

भोर होने से कुछ ही देर पहले उसने फिर फोन किया और अपनी इस चाल पर खुद को बधाई देते हुए, जैसे ही उजाला हुआ, मैं तेजी से जोवलागिरी की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़ा, जहाँ से मात्र एक चौथाई मील की दूरी पर वह इमली का पेड़ खड़ा था जिसके नीचे एक साल पहले उस लड़के की हत्या कर दी गई थी, और जिसे मैंने पहले ही मन ही मन बैठने के लिए एक आदर्श स्थान के रूप में याद कर लिया था, जिसके लिए किसी तैयारी की आवश्यकता नहीं थी।

पेड़ तक सुरक्षित पहुँचकर, मैं लगभग बारह फीट ऊपर एक शाखा पर चढ़ गया, जो काफी आरामदायक थी और दोनों सिरों पर रास्ते का स्पष्ट दृश्य प्रदान करती थी। फिर, मैंने अपनी पूरी ताकत लगाकर नर बाघ की नकल करते हुए ज़ोर से आवाज़ लगाई। मुझे केवल सन्नाटा मिला, और मैं सोचने लगा कि क्या बाघिन भोर में कहीं चली गई थी। एक नई चिंता ने मुझे जकड़ लिया। शायद वह मंदिर के पास हो, और रात में जिन पुरुषों को उसने निशाना बनाया था, उनमें से किसी के बाहर आने का इंतज़ार कर रही हो।

प्रस्थान करने से पहले मैंने अपने साथियों को बहुत सख्ती से हिदायत दी थी कि वे किसी भी हालत में मंदिर न छोड़ें, लेकिन मुझे चिंता थी कि कहीं उनमें से कोई मेरी बात न मान ले, शायद प्राकृतिक क्रिया के लिए या पास ही मौजूद आकर्षक कुएं से पानी लेने के लिए।

मैंने दूसरी बार पुकारा। फिर भी कोई जवाब नहीं मिला। कुछ देर बाद, और जी भरकर, मैंने फिर पुकारा। इस बार मैं कामयाब रहा, क्योंकि मेरी आवाज़ घने जंगल को पार कर गई और बाघिन ने उसे सुन लिया, जिसने तुरंत मंदिर की तरफ से जवाब दिया। मेरा अनुमान सही निकला; वह चालाक जानवर भोजन की तलाश में वहाँ गया था।

कुछ मिनट बाद मैंने चौथी बार पुकारा और फिर से बाघिन ने जवाब दिया; मुझे यह देखकर बहुत खुशी हुई कि वह अपने साथी की तलाश में मेरी दिशा में आ रही थी, जिसे वह अपना इंतजार समझ रही थी।

मैंने दो बार और पुकारा, मेरी आखिरी पुकार का जवाब मुश्किल से सौ गज की दूरी से मिला। राइफल को सीधा करके, मैंने लगभग पच्चीस गज दूर रास्ते पर एक जगह पर निशाना साधा। मैंने अनुमान लगाया कि वह बीच की दूरी तय करने में तीस सेकंड से भी कम समय लेगी। मैंने गिनना शुरू किया, और जैसे ही मैं सत्ताईस पर पहुँचा, बाघिन पूरी तरह से मेरे सामने आ गई, अपने साथी को उत्सुकता से खोज रही थी। पेड़ पर अपनी ऊँची स्थिति से उसका कटा हुआ कान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, और मैं जानता था कि आखिरकार, कई थका देने वाले प्रयासों के बाद, शिकारी मेरे हाथ में था। इस बार कोई चूक नहीं होगी। उसकी आगे बढ़ने की गति को रोकने के लिए, मैंने धीमी आवाज़ में कराह की। वह अचानक रुक गई और आश्चर्य से ऊपर की ओर देखा। अगले ही पल .405 की गोली ठीक उसकी आँखों के बीच जा लगी, और वह लड़खड़ाते हुए आगे की ओर गिर पड़ी और धूल में तड़पने लगी। मैंने उसकी खोपड़ी के ऊपरी हिस्से में दूसरी गोली मारी, हालाँकि ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी; दरअसल, इस दूसरे शॉट से सिर

को काफी नुकसान पहुंचा और इससे टैक्सिडर्मिस्ट को अनावश्यक रूप से बहुत अधिक अतिरिक्त काम करना पड़ा।

जोवलागिरी की खूंखार हत्यारी का अंत एक शांत और अपमानजनक तरीके से हुआ, जो उसके करियर के लायक नहीं था, और हालांकि वह एक हत्यारी थी, खामोश, बर्बर और निर्दयी, फिर भी उसके अंत को अपने कब्जे में लेने की मेरी अनुचित चाल के कारण मेरे अंतरात्मा में एक कशमकश सी पैदा हो गई।

अब और कुछ बताने को नहीं है। मेरे ग्यारह साथी उस मृत बाघिन को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। जल्द ही एक मजबूत पौधा काटा गया, जिस पर बाघिन के पैरों को मजबूत लताओं से बांध दिया गया, और हम बोझ के बोझ तले लड़खड़ाते हुए जोवलागिरी के लिए सात मील की पैदल यात्रा पर निकल पड़े। उस आदमखोर बाघिन की उपस्थिति के कारण, जब तक हम लगभग गाँव में प्रवेश नहीं कर गए, तब तक कोई भी इंसान पैदल नहीं था। फिर खबर फैल गई और भीड़ ने हमें घेर लिया। मैंने लोगों को अपने एक समय के दुश्मन को देखने के लिए एक घंटे का समय दिया, जबकि मैं कुछ दूरी पर एक पेड़ के नीचे चला गया, जहाँ गर्म चाय ने मुझे तरोताजा कर दिया, फिर कुछ खाना खाया और दो पाइप तंबाकू पीकर सुकून पाया। फिर मैं गाँव लौट आया, जहाँ मददगार लोगों ने बाघिन को मेरी दो सीटों वाली स्टडबेकर कार की पिछली सीट पर बांधने में मेरी मदद की, और इस सुकून भरे विचार के साथ घर वापसी की कि मैंने अपनी गलती को सुधार लिया है और कई इंसानों की मौत का बदला ले लिया है।

2

गुम्मलपुर का चित्तीदार शैतान

तेंदुआ लगभग सभी उष्णकटिबंधीय जंगलों में पाया जाता है, और बाघ के विपरीत, यह भारत के जंगलों का मूल निवासी है; जबकि यह स्थापित हो चुका है कि बाघ ठंडे उत्तरी क्षेत्रों से अपेक्षाकृत हाल ही में आया है, वहीं अभिलेखों और अवशेषों से पता चलता है कि तेंदुआ—या पैंथर, जैसा कि इसे भारत में बेहतर जाना जाता है—प्राचीन काल से ही प्रायद्वीप में रहता आया है।

अपने छोटे आकार और अपेक्षाकृत कमज़ोर ताकत के साथ-साथ मनुष्यों के प्रति जन्मजात भय के कारण, पैंथर को अक्सर उपहास का पात्र माना जाता है, और कभी-कभी तो इसके प्रति आश्चर्यजनक लापरवाही भी दिखाई जाती है। इन्हीं दो कारणों से साहसी लेकिन सतर्क बाघ शिकारियों पर हमले हुए हैं और कभी-कभी उनकी मौत भी हो गई है। यहां तक कि किसी इंसान पर हमला करते समय भी पैंथर शायद ही कभी मारता है, बल्कि अपने छोटे लेकिन नुकीले पंजों से तेज़ी से काटने और खरोंचने तक ही सीमित रहता है; दूसरी ओर, बाघ के हमले का शिकार होने के बाद शायद ही कोई जीवित बचता है।

इस सामान्य नियम का एक भयावह अपवाद है, और वह है आदमखोर पैंथर। हालांकि ऐसे जानवरों के उदाहरण अपेक्षाकृत दुर्लभ हैं, लेकिन जब वे दिखाई देते हैं तो पैंथर अपने कहीं अधिक विशाल चचेरे भाई, बाघ के बराबर ही विनाशकारी शक्ति के रूप में सामने आता है। अपने छोटे आकार के कारण वह ऐसी जगहों पर छिप सकता है जहां बाघ नहीं छिप सकता, उसे पानी की आवश्यकता बहुत कम होती है, और अपनी शैतानी चालाकी और साहस के साथ-साथ आत्मरक्षा की अद्भुत क्षमता और खतरे के समय चुपके से गायब हो जाने की क्षमता में उसका कोई सानी नहीं है।

ऐसा ही एक जानवर था गुम्मलपुर का आदमखोर तेंदुआ। इस तेंदुए ने लगभग बयालीस इंसानों की हत्याओं का रिकॉर्ड बनाया था और अपनी असाधारण चालाकी के लिए ख्याति अर्जित की थी, जो लगभग मानवीय बुद्धि से भी कहीं अधिक थी। उससे जुड़ी कुछ भयानक कहानियाँ प्रचलित थीं, लेकिन यह निश्चित था कि लगभग 250 वर्ग मील के उस क्षेत्र में, जिस पर उसका निर्विवाद वर्चस्व था, उस तेंदुए का खौफ बना रहता था।

सूर्यास्त से पहले, इस क्षेत्र के प्रत्येक गाँव की हर झोपड़ी का दरवाजा बंद कर दिया जाता था, कुछ दरवाजों को बक्सों या बड़े पत्थरों के ढेर से मजबूत किया जाता था, जिन्हें इसी उद्देश्य से रखा जाता था। अगली सुबह सूरज पूरी तरह से निकल आने तक डरपोक निवासी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं करते थे। इस स्थिति का असर घरों की स्वच्छता पर तेजी से दिखने लगा, जिनमें से अधिकांश में किसी भी प्रकार के शौचालय नहीं थे, इसके लिए आस-पास की बंजर भूमि का

उपयोग किया जाता था।

जब पैंथर को पता चला कि उसका मानव भोजन मिलना दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा है, तो वह और भी साहसी हो गया। दो बार उसने छोटी झोपड़ियों की छप्पर की दीवारों में छेद करके अपना रास्ता बनाया और अपने चीखते हुए शिकार को उसी रास्ते से बाहर खींच लाया, जबकि पूरा गाँव बंद दरवाजों के पीछे काँपते हुए जागता रहा और शिकार की चीखें सुनता रहा। एक बार, खुरदुरे तख्तों से बनी दीवारों में छेद करके अंदर आने में असफल होने पर, पैंथर ने छप्पर की छत से अंदर घुसने का अनोखा तरीका अपनाया। इस बार वह अपने शिकार को बनाए गए छेद से वापस नहीं ले जा सका, इसलिए क्रोध में आकर उसने झोपड़ी के चारों निवासियों - एक आदमी, उसकी पत्नी और दो बच्चों - को मार डाला और फिर अपने पंजों से खरोंचते हुए बाहर अंधेरे में भाग गया और सुरक्षित हो गया।

ग्रामीणों को केवल दिन के समय ही कुछ राहत मिलती थी। तब भी वे बड़े-बड़े सशस्त्र समूहों में घूमते थे, लेकिन अब तक दिन के उजाले में तेंदुए के हमले की कोई घटना सामने नहीं आई थी, हालांकि उसे अक्सर भोर में गांव की सीमा के भीतर देखा गया था।

जब मैं जिला मजिस्ट्रेट जेप्सन के निमंत्रण पर गुम्मलापुर पहुँचा, तो वहाँ यही स्थिति थी। मुझे उनके क्षेत्र को इस विपत्ति से मुक्त करने का आदेश दिया गया था। कुछ निवासियों से प्रारंभिक बातचीत से पता चला कि वे बेहद निराश थे और पूर्वी नियतिवाद के अनुरूप उन्होंने यह मान लिया था कि यह शैतान, जिससे उन्हें मुक्ति असंभव लगती थी, तब तक उनके साथ रहेगा जब तक कि उनमें से प्रत्येक का वध न हो जाए या उनके पास जिले से भाग जाने के अलावा कोई विकल्प न बचे।

जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि मुझे ग्रामीणों से न के बराबर सहयोग मिलेगा, क्योंकि उनमें से कई खुलेआम कहते थे कि अगर उन्होंने मेरी मदद करने की हिम्मत की तो शैतान को इसकी खबर लग जाएगी और वह उनका अंत कर देगा। दरअसल, वे दबी आवाज़ में बात करते थे, मानो उन्हें डर हो कि ज़ोर से बोलने पर पैंथर उन्हें सुन लेगा और उनसे बदला लेगा।

उस रात, मैं गाँव के बीचोंबीच एक कुर्सी पर बैठा था, मेरी पीठ उस इकलौते घर की ओर थी जिसकी दीवार बारह फुट ऊँची थी। मैंने एहतियात के तौर पर छत को काँटों और झाड़ियों की मोटी परत से ढक दिया था, ताकि अगर कोई तेंदुआ पीछे से मुझ पर कूद पड़े तो मैं उसे देख सकूँ। वह चाँद रहित रात थी, लेकिन साफ आसमान में अनगिनत तारे थे जिनसे मुझे तेंदुए के पास आने पर उसे देखने की पर्याप्त रोशनी मिलने की उम्मीद थी।

शाम छह बजे, निवासी अपने दरवाजों पर ताला लगाए हुए थे, जबकि मैं अपनी कुर्सी पर अकेला बैठा था, मेरी राइफल मेरी गोद में रखी थी, भरी हुई और तैयार, पास में गर्म चाय की एक थर्मस, एक कंबल, एक पानी की बोतल, कुछ बिस्कुट, एक टॉर्च, और निश्चित रूप से मेरा पाइप, तंबाकू और माचिस ही मेरा एकमात्र सहारा थे, जब तक कि सुबह नहीं हो जाती, तब तक लंबे इंतजार के दौरान।

सूर्य अस्त होते ही तीव्र चिंता का दौर शुरू हो गया, क्योंकि तारे अभी तक इतने चमकीले नहीं थे कि दृश्य को हल्का सा भी रोशन कर सकें। इसके अलावा, गाँव के ठीक पश्चिम में दो खड़ी पहाड़ियाँ थीं, जिन्होंने उस धुंधली अनिश्चितता को और बढ़ा दिया जो हाल ही में अस्त हुए सूर्य के कुछ परावर्तन से कम हो सकती थी।

मैंने अपनी राइफल को कसकर पकड़ा और चारों ओर देखा, मेरी आँखें सुनसान गाँव की गली के हर कोने पर दौड़ रही थीं। उस समय मैं जंगल में होना चाहता था, जहाँ जानवरों और पक्षियों

की चेतावनी भरी आवाज़ों से मुझे पैंथर के आने की सूचना मिल जाती। यहाँ सन्नाटा पसरा था, और पूरा गाँव मानो वीरान था, क्योंकि उन अनेक निवासियों में से किसी की भी आवाज़ नहीं आ रही थी, जो मुझे पता था कि बंद दरवाजों के पीछे सुन रहे थे, और उस चीख का इंतज़ार कर रहे थे जो मेरी मौत और पैंथर के एक और शिकार का संकेत देगी।

समय बीतता गया और एक-एक करके तारे दिखने लगे, शाम 7:15 बजे तक उनकी हल्की रोशनी इतनी फैल गई कि मैं पूरे गाँव की सड़क को देख पा रहा था, हालाँकि सब कुछ थोड़ा धुंधला दिख रहा था। मेरा आत्मविश्वास लौट आया और मैं तेंदुए को अपनी ओर आकर्षित करने का कोई तरीका सोचने लगा, अगर वह आस-पास हो। मैंने बीच-बीच में ज़ोर से खांसने की कोशिश की और फिर खुद से बातें करने लगा, इस उम्मीद में कि मेरी आवाज़ तेंदुए तक पहुँच जाएगी और वह जल्दी से मेरे पास आ जाएगा।

मुझे नहीं पता कि मेरे पाठकों में से किसी ने कभी किसी कारण से, चाहे किसी आदमखोर तेंदुए को आकर्षित करने के लिए ही क्यों न हो, ज़ोर-ज़ोर से खुद से बात करने की कोशिश की है या नहीं। मुझे लगता है कि ऐसे लोग बहुत कम होंगे, क्योंकि मैं जानता हूँ कि खुद से बात करने वाले व्यक्ति की क्या छवि बन जाती है। मुझे यकीन है कि गाँव वालों के बीच मेरी भी यही छवि बन गई थी, जिन्होंने उस रात अपने बंद दरवाजों के पीछे से मेरी बातें सुनीं। लेकिन यकीन मानिए, घंटों तक ज़ोर-ज़ोर से खुद से बात करना और साथ ही किसी खूंखार शिकारी के चुपके से आने पर नज़र रखना कोई आसान काम नहीं है।

रात के 9 बजे तक मैं थक गया था और गाँव की गलियों में टहलने का मन हुआ। कुछ देर सोचने के बाद मैंने ऐसा ही किया, खुद से बातें करते हुए मैं सावधानी से एक गली से दूसरी गली में जाता रहा और बार-बार पीछे मुड़कर देखता रहा। लेकिन जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि मैं खुद को बहुत बड़े खतरे में डाल रहा हूँ, क्योंकि पैंथर किसी भी कोने से, कूड़े के ढेर के पीछे से या किसी भी झोपड़ी की छत से मुझ पर हमला कर सकता था। अचानक बातें बंद करके मैं अपनी कुर्सी पर लौट आया, जिंदा वापस आने पर शुक्रगुजार था।

समय बहुत धीरे-धीरे और नीरसता से बीत रहा था, मानो घंटे भारी पहियों पर चल रहे हों। आधी रात हो गई और मुझे ठंड लगने लगी, क्योंकि पास के जंगल से, जो दो छोटी पहाड़ियों के पार शुरू होता था, एक तेज़ हवा चलने लगी थी। मैंने कंबल को अपने चारों ओर कसकर लपेट लिया और ज़रूरत से ज़्यादा तंबाकू का सेवन करने लगा। रात के 2 बजे तक मुझे नींद आने लगी। गर्म चाय और बिस्कुट खाने के बाद, बोतल से ठंडा पानी मुंह पर छिड़का और कुर्सी से आधा दर्जन बार जल्दी-जल्दी उठने-बैठने से थोड़ी राहत मिली, और फिर जागते रहने के लिए मैं खुद से बातें करने लगा।

सुबह 3:30 बजे एक ऐसी घटना घटी जिसने मुझे अगले दो घंटों तक असहनीय परेशानी में डाल दिया। तेज़ हवा के साथ घने बादल उमड़ते चले आए और जल्द ही उन्होंने आसमान को ढक लिया और तारों को भी छिपा दिया, जिससे अंधेरा घना हो गया और एक गज की दूरी पर खड़े पैंथर को देखना लगभग नामुमकिन हो गया था। मैंने खुद को निस्संदेह एक मुश्किल स्थिति में डाल दिया था और अगर वह मुझ पर हमला करने का फैसला करता तो मैं पूरी तरह से उसके रहमो-करम पर था। मैं हर आधे मिनट में गली के एक छोर से दूसरे छोर तक टॉर्च की रोशनी चमकाने लगा, जो बहुत ज़रूरी था अगर मैं पैंथर के आस-पास होने पर अपनी जान बचाना चाहता था, हालाँकि मुझे लग रहा था कि मैं उस जानवर को गोली मारने का मौका गँवा रहा हूँ, क्योंकि टॉर्च की तेज़ रोशनी से वह शायद डरकर भाग जाएगा। फिर भी, एक संभावना थी कि वह रोशनी से न डरे, अगर मैं उसे देख पाता और एक भाग्यशाली निशाना लगा पाता, लेकिन ऐसा नहीं

हुआ, क्योंकि सुबह होने पर भी मैं रात भर की व्यर्थ कोशिश के बाद टॉर्च की रोशनी चमका रहा था।

मैंने कुछ घंटों की नींद ली और दोपहर होते ही गाँव वालों से फिर पूछताछ करने लगा। उस सुबह मुझे ज़िंदा पाकर—जो उनकी उम्मीदों के बिल्कुल विपरीत था—और शायद मुझे आत्माओं से बात करने की शक्ति देने का श्रेय देते हुए, क्योंकि उन्होंने मुझे अपने गाँव में घूमते हुए बातें करते सुना था, वे मुझसे ज़्यादा बात करने लगे और मुझे उस जानवर के बारे में कुछ और जानकारी दी। ज़ाहिर है, तेंदुआ अपने इलाके में बहुत घूमता था, अनियमित रूप से और एक-दूसरे से काफ़ी दूर जगहों पर शिकार करता था, और जैसा कि मुझे पहले ही पता चल चुका था, कभी भी एक ही गाँव में लगातार शिकार नहीं करता था। पिछले तीन हफ़्तों में गुम्मलपुर में किसी इंसान की हत्या नहीं हुई थी, इसलिए इधर-उधर भटकने और तेंदुए को ढूंढने की उम्मीद करने के बजाय, जहाँ मैं था वहीं रहना ज़्यादा फ़ायदेमंद लग रहा था। भटकने के खिलाफ़ एक और कारण यह था कि यह जानवर दिन में शायद ही कभी दिखाई देता था, और इसलिए उससे मिलने की कोई संभावना नहीं थी, जैसा कि आदमखोर बाघ के मामले में हो सकता था। यह बताया गया था कि जानवर के दाहिने अगले पैर में चोट लगी थी, क्योंकि उसे पंजे को बगल की ओर रखने की आदत थी, एक ऐसा तथ्य जिसकी पुष्टि मैं बाद में तब कर पाया जब मुझे वास्तव में जानवर के पदचिह्न मिले।

दोपहर के भोजन के बाद, मैंने उस रात के लिए एक नई योजना बनाई, जिससे मुझे पिछली रात हुई भारी असुविधाओं से निश्चित रूप से मुक्ति मिल जाती। योजना यह थी कि मैं एक झोपड़ी का दरवाज़ा थोड़ा खुला छोड़ दूँ और उसके अंदर एक इंसान की हूबहू दिखने वाली पुतली रख दूँ; इस बीच, मैं उसी झोपड़ी के एक कोने में बक्सों की आड़ में छिपा रहूँगा। इससे मुझे उस दरवाज़े से जानवर के दिखाई देने पर या पुतली पर हमला करने पर भी उसे मारने का मौका मिल जाएगा, जबकि मैं अपनी आड़ में अपेक्षाकृत सुरक्षित और गर्म रहूँगा।

मैंने ग्रामीणों को योजना समझाई, और मुझे आश्चर्य हुआ कि उन्होंने उत्साहपूर्वक इसमें भाग लिया। एक झोपड़ी मुझे उस झोपड़ी के ठीक बगल में दी गई, जिसकी छत से तेंदुआ घुसकर चारों लोगों को मार डाला था। पुआल, एक पुराने तकिए, एक जैकेट और एक साड़ी से एक बहुत ही सजीव दिखने वाला पुतला तैयार किया गया। इसे झोपड़ी के दरवाजे के अंदर बैठने की मुद्रा में रखा गया, और दरवाजा आधा खुला रखा गया। मैं बक्सों की एक नीची दीवार के पीछे बैठ गया, जिसे झोपड़ी के दूसरे छोर पर तिरछे रखा गया था। झोपड़ी का फर्श लगभग 12 फीट लंबा और 10 फीट चौड़ा था। इतनी कम दूरी से, मुझे पूरा भरोसा था कि जैसे ही तेंदुआ दरवाजे पर दिखाई देगा, मैं उसे मार गिराऊंगा। इसके अलावा, अगर वह छत से या छप्पर की दीवारों से अंदर आने की कोशिश करता, तो मेरे पास उससे निपटने के लिए पर्याप्त समय होता। मामले को और भी यथार्थवादी बनाने के लिए, मैंने आस-पास की दोनों झोपड़ियों के निवासियों, विशेष रूप से महिलाओं को, निर्देश दिया कि वे रात में जितना संभव हो सके धीमी आवाज़ में बात करने का प्रयास करें, ताकि हत्यारे को उस क्षेत्र की ओर आकर्षित किया जा सके।

तुरंत आपत्ति उठाई गई कि कहीं तेंदुआ मेरी झोपड़ी के दरवाजे पर रखे पुतले पर हमला करने के बजाय उनकी किसी झोपड़ी में न घुस जाए। यह डर तभी दूर हुआ जब मैंने उनसे वादा किया कि अगर उन्हें जानवर के अंदर आने की कोशिश की आवाज सुनाई दे तो मैं उनकी मदद के लिए आऊंगा। संकेत के तौर पर मैं मदद के लिए सामान्य पुकार लगाऊंगा, जिससे तेंदुआ अच्छी तरह वाकिफ था और जिस पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया। इस योजना से मुझे यह भी भरोसा हो गया कि झोपड़ी में रहने वाले लोग जागते रहेंगे और मेरी हिदायतों के मुताबिक अपनी धीमी

बातचीत को टुकड़ों-टुकड़ों में जारी रखेंगे।

शाम 6 बजे तक सब कुछ व्यवस्थित हो चुका था, उस समय तक गाँव के सभी दरवाज़े बंद कर दिए गए थे, सिवाय उस झोपड़ी के जहाँ मैं बैठा था। धुंधली सी दिखने वाली शाम के बाद तारों की तेज़ रोशनी फैल गई, जिससे खुला दरवाज़ा और कपड़े से ढकी हुई पुतली की झुकी हुई आकृति साफ़ दिखाई दे रही थी। बीच-बीच में मुझे पास की दो झोपड़ियों से बातचीत की धीमी आवाज़ सुनाई दे रही थी।

घंटे भयानक नीरसता में धीरे-धीरे बीतते गए। अचानक छप्पर की छत में सरसराहट से सन्नाटा टूट गया और मैं पूरी तरह चौकन्ना हो गया। लेकिन वह तो बस एक चूहा था, जो सरपट भागा और पास ही ज़मीन पर धड़ाम से गिर पड़ा। वहाँ से वह मेरे सामने रखे बक्सों के ऊपर से दौड़ता हुआ निकला और खुले दरवाजे के अपेक्षाकृत कम रोशनी वाले हिस्से से गुजरते हुए साफ दिखाई देने लगा। जैसे-जैसे सुबह के शुरुआती घंटे करीब आते गए, मैंने देखा कि मेरे पड़ोसियों की बातचीत धीमी होती गई और आखिरकार बंद हो गई, जिससे पता चलता था कि वे सो गए थे, चाहे उन्हें आदमखोर पैंथर का या किसी और चीज़ का खतरा क्यों न हो।

मैं जागता रहा, कभी-कभी अपनी पाइप पीता या फ्लास्क से गर्म चाय की चुस्की लेता रहा, लेकिन अथक चूहों के शोर के अलावा कुछ नहीं हुआ, जो कमरे में इधर-उधर एक-दूसरे का पीछा करते रहे, और यहां तक कि मेरे ऊपर से भी गुजरे, जब तक कि आखिरकार सुबह नहीं हो गई, और एक और थका देने वाली निगरानी के बाद मैं सोने के लिए लेट गया।

अगली रात, बेहतर योजना के अभाव में, और यह महसूस करते हुए कि देर-सवेर आदमखोर प्रकट होगा, मैंने नकली पुतले के साथ वही प्रदर्शन दोहराने का फैसला किया, और मेरा सामना एक ऐसे रोमांच से हुआ जो मेरी स्मृति में मेरी मृत्यु तक अमिट रूप से अंकित रहेगा।

मैं शाम छह बजे तक फिर से अपनी जगह पर पहुँच गया था, और रात का पहला हिस्सा पिछली रात जैसा ही था। चूहों के भागने की सामान्य आवाज़, जो बीच-बीच में पास की झोपड़ियों में लगे लाउडस्पीकरों की हल्की आवाज़ से टूट रही थी, रात की खामोशी को भंग करने वाली एकमात्र आवाज़ थी। रात के 1 बजे के कुछ ही देर बाद तेज़ हवा चलने लगी, और मैं छप्पर की छत से आती हवा की सरसराहट सुन सकता था। यह तेज़ी से बढ़ती गई, यहाँ तक कि आंधी में तब्दील हो गई। आंशिक रूप से खुले दरवाजे से आती रोशनी का आयताकार धब्बा लगभग गायब हो गया क्योंकि आसमान तूफानी बादलों से घिर गया, और जल्द ही बारिश की बूंदों की लगातार लयबद्ध टप-टप की आवाज़, जो तेज़ बारिश में बदल गई, ने मुझे यह एहसास दिलाया कि तेंदुआ, जो अपने परिवार के अन्य सदस्यों की तरह पानी का शौकीन नहीं होता, इस तूफानी रात में बाहर नहीं निकलेगा, और मैं एक बार फिर खाली हाथ लौटूँगा।

अब तक आस-पास की झोपड़ियों से आती धीमी-धीमी आवाज़ें या तो बंद हो चुकी थीं या बारिश की तेज़ आवाज़ में दबकर सुनाई नहीं दे रही थीं। मैंने बड़ी मुश्किल से दिखाई देने वाले दरवाज़े को देखने की कोशिश की, जबकि पुतले की झुकी हुई आकृति बिल्कुल भी नज़र नहीं आ रही थी, और देखते-देखते ही मुझे नींद आ गई, पिछली दो रातों की जागने की थकान से मैं चूर हो गया था।

मैं कितनी देर सोया, यह मैं बता नहीं सकता, लेकिन काफी देर तक सोया होगा। मैं अचानक चौंककर जागा और मुझे लगा कि कुछ ठीक नहीं है। आम तौर पर जागने पर व्यक्ति को होश में आने में थोड़ा समय लगता है, लेकिन जंगल में बिताए मेरे प्रशिक्षण और खतरनाक जगहों पर बिताए वर्षों ने मुझे जागते ही यह याद दिलाने में सक्षम बनाया कि मैं कहाँ हूँ और किन

परिस्थितियों में हूँ।

बारिश रुक गई थी और आसमान थोड़ा साफ हो गया था, जिससे खुला हुआ आयताकार दरवाज़ा अब ज़्यादा साफ़ दिखाई दे रहा था, जिसके नीचे पुतला बैठा हुआ था। तभी, जब मैं देख रहा था, एक अजीब घटना घटी। पुतला हिलता हुआ सा लगा, और जब मैंने और ध्यान से देखा तो वह अचानक एक गुर्राहट के साथ गायब हो गया। मुझे एहसास हुआ कि पैंथर आया था, उसने दरवाज़े में बैठे पुतले को देखा जिसे उसने गलती से इंसान समझ लिया था, और फिर उसका पीछा करने लगा, पेट के बल रेंगते हुए अंदर घुस गया, और ज़मीन से इतना नीचे था कि धुंधली रोशनी में उसकी आकृति उतनी स्पष्ट नहीं दिखी जितनी मैंने उम्मीद की थी। मैंने जो गुर्राहट सुनी थी, वह पैंथर के इस एहसास की थी कि जिस पर उसने हमला किया था वह असल में इंसान नहीं था।

मैंने टॉर्च जलाई और झट से खड़ा होकर बक्सों की बाड़ को पार किया और खुले दरवाजे की ओर भागा, बाहर निकलने के लिए दौड़ा और रास्ते में पड़े पुतले से टकराते-टकराते बचा। मैंने टॉर्च की रोशनी दोनों दिशाओं में डाली, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। यह सोचकर कि शायद पैंथर अभी भी आसपास ही कहीं छिपा हो, मैंने टॉर्च की रोशनी हर कोने में डाली और धीरे-धीरे गांव की गली में चला गया, उसके मोड़ को सावधानी से पार किया और अचानक हमले के डर से कांपते हुए अगली गली में वापस आ गया। लेकिन हालांकि रोशनी ने गली के हर कोने, हर छत और हर संभावित छिपने की जगह को रोशन कर दिया था, मेरे दुश्मन का कहीं कोई निशान नहीं था। तभी मुझे इस जानवर की शैतानी चालाकी की प्रतिष्ठा का असली महत्व समझ में आया। जैसे मेरी छठी इंद्री ने खतरे के समय मुझे नींद से जगाया था, वैसे ही एक छठी इंद्री ने तेंदुए को चेतावनी दी थी कि यह कोई साधारण इंसान नहीं है, बल्कि एक ऐसा इंसान है जो उसे खत्म करने पर तुला हुआ है। शायद टॉर्च की तेज रोशनी ने ही उसे आखिरी क्षण में विचलित कर दिया था; लेकिन, कारण चाहे जो भी हो, आदमखोर जानवर चुपचाप, पूरी तरह से और प्रभावी ढंग से गायब हो गया था, क्योंकि हालांकि मैंने उस रात गुम्मलपुर की सभी गलियों में उसकी तलाश की, लेकिन वह उतनी ही रहस्यमय तरीके से गायब हो गया था जितनी रहस्यमय तरीके से वह आया था।

नींद में सो जाने की निराशा और खुद पर झुंझलाहट पर काबू पाने के लिए मैंने किसी भी कीमत पर इस दरिंदे से बदला लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया।

अगली सुबह, जिस जगह से तेंदुए ने गाँव में प्रवेश किया था और एक कीचड़ भरे नाले को पार किया था, वहाँ उसके पदचिह्न स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। वहीं मैंने पहली बार शिकारी के पदचिह्न और उसके दाहिने अगले पैर का विशिष्ट निशान देखा, जिसका पंजा पदचिह्न के रूप में स्पष्ट नहीं था, बल्कि धुंधला सा था, क्योंकि जानवर की आदत थी कि वह अपने पंजे को किनारे पर रखता था। इस प्रकार मुझे यह स्पष्ट हो गया कि तेंदुए के पैर में कभी चोट लगी थी, जिसके कारण वह आदमखोर बन गया था। बाद में मुझे स्वयं घायल पैर देखने का अवसर मिला, और शायद आदमखोर बनने की उसकी प्रवृत्ति के कारण के बारे में मेरा अनुमान गलत था; क्योंकि मुझे बाद में पता चला कि जानवर को उन शवों को खाने की आदत पड़ गई थी जिन्हें उस क्षेत्र के लोग पिछले वर्ष हैजा महामारी के बाद रीति-रिवाज के अनुसार जंगल में ले जाकर गिद्धों के लिए छोड़ देते थे। आसानी से मिलने वाले इन भोजनों ने पैंथर को मानव मांस का स्वाद चखा दिया था, और उसके पैर में लगी चोट, जिसने सामान्य शिकार और तेज गति से चलने में कठिनाई पैदा कर दी थी, उसे एक भारतीय गांव के लिए सबसे खतरनाक खतरे - एक आदमखोर पैंथर - में बदलने का निर्णायक कारक बन गई थी।

मुझे यह भी एहसास हुआ कि, भले ही पैंथर में लगभग मनुष्यों जैसी अनुमान लगाने की शक्ति थी, लेकिन पिछली रात टॉर्च की रोशनी से उसका पीछा करते हुए मैंने उसे जो डराया था, उसके बाद वह लंबे समय तक गुम्मलपुर में फिर से दिखाई नहीं देगा।

इसलिए यह स्पष्ट था कि मुझे अपने कार्यक्षेत्र को बदलना होगा, और इसलिए, काफी सोच-विचार के बाद, मैंने देवराबेट्टा गांव की ओर बढ़ने का फैसला किया, जो वन पहाड़ियों की एक श्रृंखला के पार तिरछे में स्थित था और लगभग अठारह मील दूर था, जहां पैंथर पहले ही पांच शिकार कर चुका था, हालांकि वहां एक महीने से कोई नहीं गया था।

इसलिए, मैंने उसी दिन सुबह XXX बजे से पहले, जल्दी दोपहर का भोजन करने के बाद, अपना सफर शुरू किया। रास्ता कठिन था, क्योंकि यह दो पहाड़ियों से होकर गुजरता था। उनके बीच स्थित घाटी में एक छोटी सी जंगली धारा बह रही थी, और उसके किनारे मैंने एक बड़े नर बाघ के ताज़े पदचिह्न देखे, जो लगभग 200 गज तक जलधारा का पीछा करने के बाद दूसरी ओर चला गया था। जाहिर है, वह उस सुबह जल्दी ही वहाँ से गुजरा था, जैसा कि नदी की रेत से रिसकर पदचिह्नों में आई नमी की सूक्ष्म बूंदों से स्पष्ट था, जो सुबह की धूप में वाष्पित नहीं हो पाई थीं। हालाँकि, अपने काम पर दृढ़ रहते हुए, मैंने बाघ का पीछा नहीं किया और शाम 5 बजे के ठीक बाद देवराबेट्टा पहुँच गया।

जब मैं वहाँ पहुँचा, तब निवासी अपनी झोपड़ियों में बंद होने की तैयारी कर रहे थे और उनके पास मुझसे बात करने का समय या इच्छा नहीं थी। हालाँकि, मुझे यह समझ में आया कि वे इस बात से सहमत थे कि आदमखोर का आना किसी भी दिन संभव है, क्योंकि उसके आखिरी बार आने के बाद से पूरा एक महीना बीत चुका था और वह इतने लंबे समय तक कभी दूर नहीं रहा था।

समय कम होने के कारण, मैंने जल्दी से सबसे ऊँची दीवार वाली झोपड़ी की तलाश की, जिसके सामने मैं उसी तरह बैठ गया जैसे गुम्मलापुर में अपनी पहली रात बैठा था। मैंने छत पर कुछ सूखी कांटेदार झाड़ियाँ जल्दी से बिछा दीं ताकि पीछे और ऊपर से होने वाले हमले से बचाव हो सके। ये कांटे गाँव से सटे एक खेत की बाड़ से लाए गए थे, और मुझे उन्हें लाने वाले आदमखोर सांप के जल्दी प्रकट होने के डर से अपनी राइफल के साथ उनके साथ जाना पड़ा था।

देवराबेट्टा, गुम्मलपुर की तुलना में काफी छोटा गाँव था और जंगल के बहुत करीब स्थित था, यह एक ऐसा तथ्य था जिसका मैंने स्वागत किया क्योंकि इससे मुझे जंगल के जानवरों और पक्षियों द्वारा दी जाने वाली चेतावनी भरी आवाजों के माध्यम से मांसाहारी जानवरों की गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करने में मदद मिलेगी, बशर्ते मैं उनकी सुनने की सीमा के भीतर रहूँ।

रात बड़ी तेज़ी से छा गई, हालाँकि इस बार आकाश में अमावस्या का पतला सा चाँद दिखाई दे रहा था। पास के जंगल से आती हुई मुर्गे की कभी-कभार सुनाई देने वाली बांग और मोर की धीमी आवाज़ से मुझे पता चल रहा था कि सब ठीक है। और फिर रात हो गई, धुंधली तारों की रोशनी में देवराबेट्टा की मुख्य सड़क, टेढ़ी-मेढ़ी और गंदी गली, मानो किसी सपने में हो, मुश्किल से दिखाई दे रही थी। रात 8:30 बजे जंगल से एक सांभर हिरणी की रंभा सुनाई दी, और अपनी तेज़ आवाज़ के बाद लगातार कई चेतावनी भरी चीखें मारीं। निस्संदेह कोई शिकारी जानवर आसपास था और उसे चौकस हिरणी ने देख लिया था, जो जंगल के बाकी लोगों को अपनी जान बचाने के लिए आगाह कर रही थी। क्या वह तेंदुआ था या कोई बड़ा मांसाहारी जानवर? समय ही बताएगा, लेकिन कम से कम मुझे चेतावनी तो मिल गई थी।

हिरनी ने गुर्राना बंद कर दिया, और लगभग पंद्रह मिनट बाद, जिस दिशा में उसने पहली बार चेतावनी दी थी, उसी दिशा से मुझे एक बाघ की धीमी कराह सुनाई दी, जो लगातार दो बार दोहराई गई, फिर सब कुछ शांत हो गया। यह मिलन की पुकार नहीं थी, बल्कि जंगल के राजा की भोजन की तलाश में की गई सामान्य पुकार थी, जो जंगल के निवासियों को याद दिला रही थी कि उनका स्वामी शिकार की तलाश में निकला है, और उस रात उसकी प्रचंड भूख को शांत करने के लिए उनमें से किसी एक को मरना होगा।

समय बीतता गया, और फिर गली में मुझे कुछ हलचल दिखाई दी। मैंने अपनी राइफल उठाकर उस वस्तु पर निशाना साधा, जो धीरे-धीरे मेरे पास आ रही थी और गली के बीचोंबीच चल रही थी। क्या यह वही पैंथर था, और क्या वह इस तरह खुलेआम, गली के बीचोंबीच, बिना छुपने की कोशिश किए चल रहा था? अब वह लगभग तीस गज दूर था और फिर भी वह निडरता से आगे बढ़ रहा था, बिना किसी आड़ लेने या किसी वस्तु के किनारों पर रेंगने की कोशिश किए, जैसा कि तेंदुआ अपने शिकार का पीछा करते समय करता है। इसके अलावा, वह एक कमजोर और दुबला-पतला जानवर लग रहा था, क्योंकि अब मैं उसे काफी स्पष्ट रूप से देख पा रहा था। बीस गज की दूरी पर मैंने अपनी टॉर्च का बटन दबाया, जिसे मैंने उस रात अपनी राइफल से बांध रखा था।

जैसे ही प्रकाश की शक्तिशाली किरण उस खाली जगह को पार कर गई, उसने एक ग्रामीण कुत्ते को रोशन कर दिया, जिसे भारत में आमतौर पर 'अछूत कुत्ता' के नाम से जाना जाता है। भूखा और अकेला, वह इंसानी साथ की तलाश में आया था; वह तेज रोशनी की किरण को निश्चिंत होकर देखता रहा, और अपनी पतली पूंछ को धीरे से हिलाकर मित्रता का स्पष्ट संकेत दे रहा था।

एक साथी का स्वागत करते हुए, भले ही वह अकेला कुत्ता ही क्यों न हो, मैंने बत्ती बंद कर दी और अंगूठे और उंगली के इशारों से उसे अपने पास बुलाया। वह दबे पांव, अपनी अजीब सी पूंछ हिलाते हुए मेरे पास आया। मैंने उसे कुछ बिस्कुट और एक सैंडविच खिलाया, और तारों से जगमगाते धुंधले आसमान में उसकी आंखें मुझे उस थोड़े से भोजन के लिए कृतज्ञता से देख रही थीं जो मैंने उसे दिया था, शायद पिछले दो दिनों में उसके पेट में पहली बार कुछ गया था। फिर वह मेरे पैरों के पास सिकुड़कर सो गया।

समय बीतता गया और आधी रात हो गई। जंगल के किनारे से एक विशाल सींग वाले उल्लू ने उदास स्वर में 'हू-हू' की लंबी, रहस्यमयी आवाज निकाली, मानो यह किसी मृत्यु की घंटी हो, या रात के उस भयावह हिस्से का पूर्वाभास हो जब अशांत आत्माएं अपने सांसारिक कर्मों के स्थल पर लौट आती हैं, और उन कर्मों को बार-बार दोहराती हैं जो उन्हें धरती से बांधते हैं।

एक बजना, दो बजना और फिर तीन बजना नीरसता में बीत गए, जबकि मैं अपनी थकी और दर्द से भरी आँखों और कानों को हलचल या आवाज़ सुनने के लिए तरसता रहा। सौभाग्य से रात साफ थी और आसमान में बिखरे अनगिनत तारों की चमक से दृश्यता अपेक्षाकृत अच्छी थी, ऐसा नज़ारा हमारे धूल भरे कस्बों या शहरों में देखने को नहीं मिलता।

फिर अचानक, गाँव के ठीक बाहरी इलाके में स्थित कीचड़ भरे तालाब से एक प्लोवर पक्षी, जिसे भारत में 'क्या तुमने किया' पक्षी के नाम से जाना जाता है, की घबराहट भरी चीख सुनाई दी। 'क्या तुमने किया, क्या तुमने किया, क्या तुमने किया, क्या तुमने किया', वह लगातार तेज़ आवाज़ में पुकार रहा था। निस्संदेह पक्षी उत्तेजित और विचलित था, या उसने कुछ देख लिया था। मेरे पैरों के पास बैठा कुत्ता हिला, अपना सिर उठाया, फिर नीचे झुका लिया, मानो उसे दुनिया की कोई परवाह ही न हो। कुछ मिनट बीत गए, और फिर अचानक कुत्ता पूरी तरह जाग

गया। उसके कान, जो उदासी में लटके हुए थे, खड़े हो गए, वह मेरे पैरों से बुरी तरह कांपने लगा, और उसके गले से एक धीमी, लंबी गुर्राहट निकली। मैंने देखा कि वह तालाब के पास से गाँव की ओर जाने वाली गली की ओर देख रहा था।

मैंने उस दिशा में टकटकी लगाकर देखा। काफी देर तक मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया, और फिर ऐसा लगा जैसे कुछ दूरी पर, गली के उसी तरफ एक इमारत के कोने पर कोई परछाई हिली हो। मैंने अपनी नज़रें उस जगह पर टिका दीं, और कुछ सेकंड बाद फिर से एक हल्की-सी हलचल देखी, लेकिन इस बार थोड़ी और करीब।

टॉर्च जलाने वाले बटन पर अपना बायां अंगूठा रखकर मैं सांस रोककर चुपचाप इंतजार करने लगा। कुछ मिनट बीते, ज़्यादा से ज़्यादा पांच या दस मिनट, और फिर मैंने देखा कि एक लंबा-सा शरीर तेज़ी से और बिना आवाज़ किए लगभग बीस गज दूर एक झोपड़ी की छत पर कूद गया। संयोग से, सारी झोपड़ियाँ इस जगह पर एक-दूसरे से सटी हुई थीं, और मैंने अंदाज़ा लगाया कि पैंथर ने खुलेआम मेरा पीछा करने के बजाय, इन सटी हुई झोपड़ियों की छतों पर चलकर पीछे से मुझ पर हमला करने का फैसला किया होगा।

मैं झट से खड़ा हो गया और दीवार से पीठ टिका ली। इस स्थिति में, मेरे सिर के ऊपर छत का किनारा लगभग अठारह इंच तक मेरे ऊपर से गुज़रकर उस सड़क पर जा रहा था जहाँ मैं बैठा था। मैंने राइफल तैयार रखी, उंगली ट्रिगर पर थी, और बाएँ अंगूठे से टॉर्च का स्विच मेरी बगल में दबा हुआ था और ऊपर की ओर इशारा कर रहा था।

कुछ ही सेकंड बाद मुझे हल्की सरसराहट सुनाई दी, जैसे तेंदुआ छत पर सावधानी से बिछाए गए कांटों को पार करने की कोशिश कर रहा हो। जाहिर तौर पर वह इसमें नाकाम रहा, क्योंकि फिर से सन्नाटा छा गया। अब मुझे पता नहीं था कि वह कहाँ है।

अगले पंद्रह मिनट भयानक चिंता में बीत गए, मैं तेंदुए के हमला करने से पहले उसे ढूंढने की कोशिश में हर दिशा में देखता रहा, और ईश्वर का धन्यवाद करता रहा कि रात साफ थी। तभी वह कुत्ता, जो मेरे पैरों के पास बेचैनी से रो रहा था, अचानक गली के बीचोंबीच आ गया, उस झोपड़ी के कोने की ओर मुड़ा जिसके सहारे मैं छिपा हुआ था और जोर-जोर से भौंकने लगा।

इस चेतावनी ने मेरी जान बचा ली, क्योंकि पाँच सेकंड के भीतर ही पैंथर कोने से निकलकर मुझ पर झपटा। मेरे पास टॉर्च का स्विच दबाने और कमर से गोली चलाने का ही समय था, जो सीधे उसके चौड़े खुले, गुर्राते मुँह के ऊपर चमकती आँखों में जा लगी। .405 की गोली सीधे निशाने पर लगी, लेकिन हमले की वजह से जानवर मेरी ओर दौड़ पड़ा। मैं फुर्ती से एक तरफ कूद गया, और जैसे ही पैंथर झोपड़ी की दीवार से टकराया, मैंने मैगज़ीन से दो और गोलियाँ उसके खूंखार, धब्बेदार शरीर पर दाग दीं।

वह गिर पड़ा और स्थिर हो गया, सिवाय उसके खुले हुए जबड़ों और लंबी, फैली हुई पूंछ के रुक-रुक कर हिलने के। और फिर मेरा दोस्त, वह कुतिया, अपने नए मालिक के प्रति अटूट निष्ठा के साथ, दौड़ा और अपने कमजोर दांत उस मरे हुए राक्षस के गले में गड़ा दिए।

और इस तरह गुम्मलपुर का 'चित्तीदार शैतान' गुजर गया, एक ऐसा पैंथर जिसकी घातक चालाकी के बारे में मैंने पहले कभी नहीं सुना था और उम्मीद करता हूँ कि मुझे उससे दोबारा कभी सामना न करना पड़े। अगली सुबह जब मैंने जानवर की खाल उतारी, तो पाया कि दाहिने पंजे पर लगी चोट, जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, किसी पिछली गोली के घाव से नहीं, बल्कि साही के दो कांटों से लगी थी जो उंगलियों के बीच एक-दूसरे से एक इंच की दूरी पर घुस गए थे और फिर टूट गए थे। यह काफी समय पहले हुआ होगा, क्योंकि पैर के अंदर हड्डियों के बीच बनी

एक उपास्थि ने कांटों को ढक लिया था। निस्संदेह, जानवर को सामान्य तरीके से अपना पंजा जमीन पर रखने में दर्द होता था, और उसने किनारे पर चलने की आदत डाल ली थी।

मैं उस कुत्ते को घर ले आया, उसे नहलाया-धुलाया और उसका नाम 'निपर' रख दिया। निपर तब से कई सालों से मेरे साथ है, और मुझे कभी भी उसे कुछ बिस्कुट और सैंडविच देने का पछतावा नहीं हुआ, जिसने उसका दिल जीत लिया और कुछ ही घंटों में मेरी जान बचाकर उस छोटे से एहसान का बदला चुका दिया।

3

चमाला घाटी का धारीदार आतंक

चमाला घाटी मद्रास प्रेसीडेंसी के चित्तूर जिले के उत्तर-पूर्वी छोर का हिस्सा है, जहाँ यह उत्तर में कडप्पा जिले से सटी हुई है। यह अपेक्षाकृत छोटी घाटी है, जिसका मुख्य भाग उत्तर की ओर लगभग सात मील लंबा और पाँच मील चौड़ा है, और इसके अंत में दो शाखाएँ हैं, जो 'Y' अक्षर की तरह उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व की ओर क्रमशः फैली हुई हैं, मुख्य घाटी की तुलना में कुछ संकरी हैं और प्रत्येक लगभग चार मील लंबी है। ये शाखाएँ कडप्पा की दक्षिणी सीमा बनाने वाली एक विशाल चट्टानी ढलान के नीचे समाप्त होती हैं।

कल्याणी नदी उत्तर-पूर्वी घाटी से होकर बहती है, जिसके दो स्रोत ढलान के ठीक नीचे, घने जंगलों से घिरे गुंडलपेंटा और उम्बालमेरु नामक घाटियों में स्थित हैं। इन घाटियों में गर्मियों के सबसे गर्म महीनों में भी पारदर्शी, बर्फीले ठंडे पानी के कुंड हमेशा मौजूद रहते हैं। कल्याणी नदी फिर मुख्य घाटी से होते हुए दक्षिण की ओर बहती है और अंततः नागपतला गांव में एक कृषि क्षेत्र में प्रवेश करती है, जहां एक प्राचीन झील है। चंद्रगिरि के राजाओं और बाद में सर्वविजयी मुस्लिम नायक टीपू सुल्तान ने भीषण गर्मी के महीनों में सूखे ग्रामीण इलाकों को पानी देने के लिए इस झील पर बांध बनाने का प्रयास किया था। वन विभाग ने झील के दक्षिणी किनारे पर, प्राचीन जलसेतु के पास, एक मजबूत लेकिन आरामदायक वन बंगला बनाया है। अरेपल्ली रंगमपेट का शांत गांव लगभग डेढ़ मील दूर स्थित है और यह लगभग हाल ही में बसा है।

चामाला घाटी पूरी तरह से वनों से आच्छादित है और ब्रिटिश शासनकाल में एक वन्यजीव अभ्यारण्य हुआ करती थी। पश्चिम में बखरपेट वन क्षेत्र और पूर्व में तिरुपति वन श्रृंखला स्थित है, जो भारत भर में प्रसिद्ध तिरुपति के महान तीर्थस्थलों पर समाप्त होती है। दक्षिण में प्राचीन शहर चंद्रगिरी स्थित है, जिसमें सदियों पुराना किला है, जो अपने पूर्व राजाओं की महिमा का मूक प्रमाण है।

चंद्रगिरी के पास से एक मीटर गेज रेलवे लाइन तिरुपति और रेनिगुंटा की ओर जाती है, जहाँ यह मद्रास से बॉम्बे जाने वाली मुख्य ब्रॉड गेज लाइन से जुड़ जाती है। चंद्रगिरी रेलवे स्टेशन से लगभग साढ़े तीन मील तक रंगमपेट तक एक संकरा बैलगाड़ी मार्ग जाता है; फिर यह डेढ़ मील उत्तर की ओर नागपतला की ओर मुड़ता है, जहाँ से यह और उत्तर की ओर बढ़ता है और चमाला घाटी के पूरे सात मील तक वन विभाग का मार्ग बन जाता है, जब तक कि यह पुलिबोनू नामक स्थान पर नहीं पहुँच जाता, जिसका अर्थ है बाघ का पिंजरा, जहाँ यह अचानक समाप्त हो जाता है। वन विभाग द्वारा इस स्थान पर दो समतल, वर्गाकार, सीमेंटेड शिविर स्थल और पीने के पानी की निरंतर आपूर्ति के लिए एक कुआँ बनाया गया है।

यह घाटी और इसकी शाखाएँ बेहद खूबसूरत हैं, और जब मैंने अठारह साल पहले पहली बार यहाँ का दौरा किया था, तब यह वन्यजीवों का स्वर्ग था। चीतलों के बड़े-बड़े झुंड मुख्य घाटी में विचरण करते थे, जिनमें से कुछ नर चीतलों के सींग इतने विशाल थे कि मैंने दक्षिण भारत में कहीं और नहीं देखे। पश्चिम में बखरपेट पर्वतमाला और पूर्व में तिरुपति पर्वतमाला की तलहटी, साथ ही पूरे उत्तरी ढलान के निचले हिस्से में शानदार आकार और सींगों वाले सांभर पाए जाते थे। काले भालू हर जगह मौजूद थे, लेकिन ढलान के नीचे घने जंगल में इनकी संख्या विशेष रूप से अधिक और खतरनाक थी। काकर, जिसे 'मंटजैक' या बार्किंगडियर के नाम से भी जाना जाता है, भी बहुतायत में थे। मुख्य घाटी और उसका उत्तर-पूर्वी भाग बाघों का नियमित मार्ग था, जो बखरपेट पर्वतमाला से आते, घाटियों से होते हुए ढलान पार करते, कुड्डापाह के जंगलों में प्रवेश करते, फिर मामंदुर पर्वतमाला और आगे सेट्टीगुंटा की ओर बढ़ते। पैंथर हर जगह दिखाई देते थे, और इस क्षेत्र में मोर, कुटिया और धूसर जंगली मुर्गे बहुतायत में थे, जिनमें से धूसर मुर्गे विशेष रूप से बड़ी संख्या में थे। यह दक्षिण भारत का एकमात्र ऐसा जंगल था जहाँ मैंने जंगली मुर्गों को दोपहर में भी, और नियमित रूप से रात 2 बजे और लगभग 4:30 बजे बांग देते हुए देखा, बेशक सूर्योदय और सूर्यास्त के समय उनके सामान्य गायन के अलावा।

सन् 1937 की शुरुआत में, एक दिन इस शांत इलाके में एक खूंखार धारीदार बाघ आया, जिसके बारे में मैं आपको बताने जा रहा हूँ। वह सामान्य आकार का बाघ था, और उसके पदचिह्नों से ऐसी कोई विकृति नहीं दिखती थी जिससे मानव मांस खाने की उसकी प्रवृत्ति का पता चलता। वह अचानक प्रकट हुआ, किसी को नहीं पता था कि वह कहाँ से आया, और न ही आस-पास के किसी भी जंगल में, चाहे वह दूर हो या पास, किसी आदमखोर बाघ की गतिविधियों की कोई अफवाह फैली थी। उसका अचानक और अप्रत्याशित आगमन जितना विचित्र था, जल्द ही यह बात सबको पता चल गई कि एक आदमखोर बाघ घाटी में घुस आया है, क्योंकि उसने गुंडलपेंटा के तालाबों के पास एक बांस काटने वाले को मार डाला और पूरा खा गया। इसके तीन दिन बाद, उसने चौथे मील के पत्थर के पास नागपतला-पुलीबोनू वन मार्ग पर एक यात्री को लगभग पूरी तरह से खा लिया।

इसके बाद उसकी हत्याएं छिटपुट और अनियमित हो गईं, जो तीनों घाटियों में फैली हुई थीं, जहां उसने लगभग छह महीनों के अंतराल में कुल सात लोगों को मार डाला और खा लिया, या आंशिक रूप से खा लिया।

एक दिन बखरपेट के वन रेंज अधिकारी, जिनके क्षेत्र में चमाला घाटी शामिल है, अपने निरीक्षण दौरों के दौरान नागपतला स्थित वन बंगले में रहने के लिए जा रहे थे। वे बैलगाड़ी से यात्रा कर रहे थे, जिसमें वे नागपतला में दो सप्ताह के प्रवास के लिए राशन, निजी सामान और अन्य आवश्यक वस्तुएं भी ले जा रहे थे।

शाम के पाँच बज रहे थे और बैलगाड़ी अपनी मंज़िल से मुश्किल से दो मील ही दूर थी कि एक बाघ गाड़ी के सामने सड़क पर आ गया। मुझे आपको बताना चाहिए था कि बखरपेट से नागपतला जाने वाली यह सड़क लगभग पूरी लंबाई में आरक्षित वन से होकर गुज़रती है, और आखिरी दो मील चमाला घाटी की शुरुआत से होकर जाते हैं।

सामने सड़क पर बाघ को देखकर, बैलगाड़ी चालक ने अपनी गाड़ी रोक दी और अपने साथ मौजूद रेंज अधिकारी और वन रक्षक को आवाज़ दी। चूंकि गाड़ी ढकी हुई थी और वे अंदर बैठे थे, इसलिए उनमें से किसी ने भी सड़क पर बाघ को नहीं देखा था।

तीनों आदमी चिल्लाने लगे, तभी सड़क के किनारे बने खुले मैदान में चलता हुआ बाघ गाड़ी के पास से गुजरा और अंदर बैठे दोनों आदमियों की नजर में आ गया। इसी क्षण, बिना किसी समझ

में आने वाले कारण के, वन रक्षक गाड़ी से कूद गया और जानवर को डराने के लिए हाथ हिलाने और चिल्लाने लगा। हालांकि, उसने खुद ही अपनी जान जोखिम में डाल ली, क्योंकि लगातार छोटी-छोटी दहाड़ों के साथ जानवर ने उस पर हमला किया, उसे अपने जबड़ों में जकड़ लिया और छिपने के लिए जंगल में वापस भाग गया। यह घटना इतनी अप्रत्याशित और अचानक हुई थी कि रेंज अधिकारी को कुछ भी करने का मौका नहीं मिला, हालांकि वह जो कुछ कर सकता था वह भी मुश्किल था, क्योंकि वह खुद निहत्था था।

इसके बाद गाड़ी को बड़ी जल्दबाजी में नागपटला ले जाया गया, लेकिन अगली सुबह तक ही बंदूकों, कुल्हाड़ियों और लाठियों से लैस एक बड़ा समूह इकट्ठा हो सका, ताकि दुर्भाग्यपूर्ण वन रक्षक को, या यों कहें कि उसके बचे हुए अवशेषों को खोजने का प्रयास किया जा सके।

अंततः अवशेष सड़क से एक फर्लांग से भी कम दूरी पर एक खाई में मिले; केवल सिर, हाथ और पैर, और उसकी खून से सनी और क्षत-विक्षत खाकी वर्दी और हरी पगड़ी ही कहानी बयां करने के लिए बची थी, पगड़ी वहीं पड़ी थी जहां बाघ अपने शिकार को लेकर सड़क के किनारे वाले खुले मैदान को पार करते समय गिरा था।

इस त्रासदी को सरकार की ओर से काफी तवज्जो मिली और देशभर के अखबारों में इसकी खबर छपी। सरकार ने आदमखोर को मारने के लिए इनाम की घोषणा की और मद्रास और स्थानीय इलाकों से कई साहसी शिकारी उस जानवर को मारने के लिए घाटी में पहुंचे। लेकिन आखिरी शिकार के बाद, मानो उसे एहसास हो गया हो कि उसने बहुत ज्यादा ध्यान आकर्षित कर लिया है, कुछ समय के लिए उसका आतंक पूरी तरह गायब हो गया और घाटी में कहीं भी उसका कोई सुराग नहीं मिला। अनुमान लगाया गया कि वह या तो ढलान पार करके उत्तर की ओर कडप्पा जिले में चला गया होगा, या फिर बखरपेट या तिरुपति ब्लॉक में भटक गया होगा। पूरा इलाका सतर्क हो गया था, लेकिन अगले दो महीनों तक उस जानवर के बारे में कोई खबर नहीं मिली।

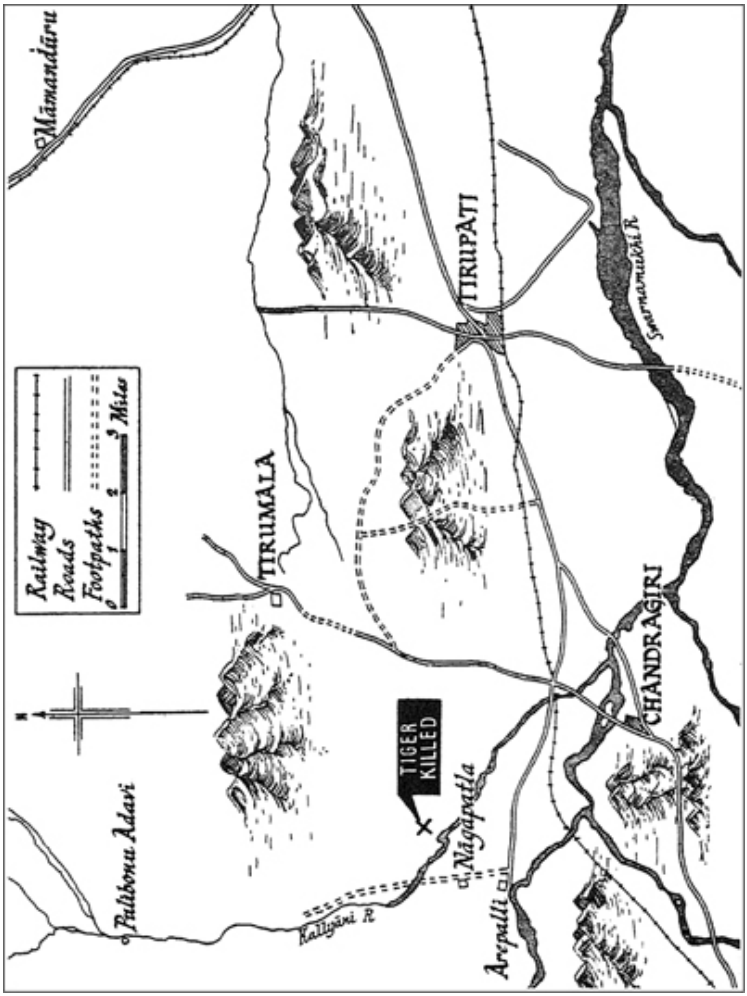

चामाला घाटी के धारीदार आतंक की कहानी में उल्लिखित स्थानों का रेखाचित्र मानचित्र।

फिर एक दिन, मद्रास-मुंबई मुख्य मार्ग पर स्थित मामंदुर स्टेशन के पास ब्रॉडगेज रेलवे ट्रैक पर गश्त कर रहा एक रेलवे कर्मचारी, जो चमाला घाटी से लगभग अठारह मील उत्तर-पूर्व में पहाड़ियों से घिरे एक विस्तृत, घने जंगलों वाले पठार में स्थित है, अपनी गश्त के अंतिम बिंदु पर नहीं पहुंचा। एक-दो दिन तक उसकी अनुपस्थिति पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया, क्योंकि पूर्वी भारत में मामूली कारणों से अचानक अनुपस्थिति आम बात है; लेकिन जब उसके बाद भी वह व्यक्ति नहीं आया, तो मामले को गंभीरता से लिया गया और उसे खोजने के लिए एक दल भेजा गया।

रेलवे ट्रैक के किनारे चलते हुए, लापता व्यक्ति के भाग्य का पहला सुराग वह बड़ा हथौड़ा था जिसका वह इस्तेमाल कर रहा था, जो पटरी के किनारे पड़ा मिला। गैंगर्स को ऐसे हथौड़े इसलिए दिए जाते हैं ताकि वे रेल की पटरियों को उनके सपोर्ट (जिन्हें चेयर कहा जाता है) से टिकाने के लिए इस्तेमाल होने वाले लकड़ी के ब्लॉकों को अपनी जगह पर रख सकें। कठोर, धूप से तपती ज़मीन पर किसी संघर्ष का कोई निशान नहीं था, लेकिन थोड़ी दूर पर खून की कुछ बूँदें थीं जो एक ढलान से नीचे उतरकर पास के जंगल में जा रही थीं। इस निशान का पीछा करते हुए, दल

को लापता गैंगर द्वारा पहनी जाने वाली एक अजीब सी चप्पल मिली, साथ ही झाड़ियों की पत्तियों पर खून के धब्बे भी मिले। थोड़ा आगे बढ़ने पर वे सूखी, मुलायम रेत की एक पट्टी पार कर गए, जिस पर चलते हुए उन्हें स्पष्ट रूप से बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए।

इससे यह साबित हो गया कि लापता व्यक्ति को बाघ ले गया था। पिछले कुछ महीनों में चमाला घाटी के आदमखोर बाघ की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल चुकी थी, और स्वाभाविक रूप से यह निष्कर्ष निकाला गया कि इस जानवर का ही इस ताज़ा त्रासदी के लिए हाथ था। संयोगवश, बाघ के अवशेष कभी नहीं मिले।

इसके बाद, अगले महीनों में दो बार हत्याएं हुईं। पहली घटना मामंदुर से n मील उत्तर-पश्चिम में स्थित सेट्टिगुंटा में और दूसरी घटना उम्बालमेरु में हुई, जो कि, जैसा कि आपको याद होगा, कल्याणी नदी के चमाला घाटी में प्रवेश करने से पहले उसके दो मुख्य स्रोतों में से एक था।

उस समय मैं मद्रास के व्यावसायिक दौरे पर था और सलेम जिले में स्थानीय शिकारियों की गतिविधियों के खिलाफ मैंने जो शिकायत दर्ज कराई थी, उसके संबंध में मुख्य वन संरक्षक से मिलने का अवसर मिला। मुख्य वन संरक्षक से बात करते समय उन्होंने बाघ की गतिविधियों का जिक्र किया—जिसके बारे में मैंने प्रेस में काफी कुछ पढ़ा था—और मुझे उस जानवर का शिकार करने का प्रयास करने का सुझाव दिया।

सौभाग्य से, मैंने पिछले वर्ष विशेषाधिकार अवकाश का लाभ नहीं उठाया था, और चूंकि मेरे पास कुछ महीने शेष थे, इसलिए मैंने उनमें से एक महीने का उपयोग इस कार्य में करने का निर्णय लिया। बैंगलोर लौटकर, मैंने अगले कुछ दिन इस कार्य के लिए आवश्यक सभी चीज़ें जुटाने में बिताए और दस दिन बाद मैं नागपतला वन बंगले में था, जिसे मैंने चमाला नामक आदमखोर सांप के खिलाफ अभियान चलाने के लिए अपना मुख्यालय बनाने का निर्णय लिया था।

सबसे पहले, स्थानीय स्तर पर व्यापक पूछताछ करना, चमाला घाटी में उन स्थानों का दौरा करना जहाँ शिकार हुए थे, और विभिन्न घटनाओं के घटित होने के स्थानों में एक क्रम स्थापित करने का प्रयास करना आवश्यक था, ताकि संभव हो तो बाघ के नियमित मार्ग का पता लगाया जा सके। मैं इसमें पूरी तरह असफल रहा; यह स्पष्ट हो गया कि यह विशेष जानवर एक घुमंतू था, जो कुछ समय के लिए घाटी में आता था, जहाँ भी अवसर मिलता था, किसी मानव को अपना शिकार बना लेता था, और मामंदुर या कडप्पा जिले की ओर ढलान पर चढ़ जाता था।

काफी कठिनाई के बाद, मैंने चार युवा भैंसें खरीदीं। मैंने इन्हें अलग-अलग स्थानों पर बांध दिया; एक गुंडलपेंटा में, दूसरी उम्बालमेरु में, तीसरी नागपटला-पुलिबोनू वन सड़क के चौथे मील के पत्थर के पास नरसिम्हा चेरुवु नामक एक जलकुंड पर, और आखिरी रागिमनकोनार नामक एक पथरीली धारा पर, जो कल्याणी नदी की एक सहायक नदी है और सड़क से लगभग दो मील पूर्व तिरुपति ब्लॉक की पथरीली पहाड़ियों से निकलती है।

दूसरे दिन नरसिम्हा चेरुवु में लगाए गए चारे को एक जानवर ने मार डाला, लेकिन जांच से पता चला कि यह किसी बाघ का काम नहीं था, जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, बल्कि एक बड़े तेंदू (जंगली तेंदुआ) का काम था। चूंकि चारा महंगा होता है और मैं उसे दखल देने वाले तेंदुओं के हाथों खोने का जोखिम नहीं उठा सकता था, इसलिए मैं पानी के गड्ढे के पास इस जानवर का इंतजार करता रहा, और सौभाग्य से शाम 6:45 बजे तक, जब वह शिकार पर लौटा, तब तक दिन का उजाला रहते हुए, मैंने उसे पकड़ लिया।

फिर मैंने पैंथर द्वारा मारे गए चारे की जगह दूसरा चारा खरीदा और उसे नरसिम्हा चेरुवु में उसी

स्थान पर बांध दिया।

अगला सप्ताह जंगल के बंगले में आलस में बीता, सिवाय हर सुबह और शाम जंगल में चारों दिशाओं में लंबी सैर करने के, इस उम्मीद में कि शायद संयोग से बाघ दिख जाए। नौवें दिन की सुबह, जब मैं अपनी स्टडबेकर कार में पुलिबोनू की ओर जा रहा था, जहाँ से मैं जंगलों में एक और सैर शुरू करने वाला था, तो मुझे एक बाघ के पदचिह्न मिले जो छठे मील के पत्थर पर सड़क पर आया था और पुलिबोनू से आगे तक सड़क के बीचोंबीच चला गया था। आदमखोर बाघ के पदचिह्नों में अब तक कोई खास बात नहीं देखी गई थी, इसलिए यह बताना असंभव था कि इन ताजा पदचिह्नों को बनाने वाला जानवर वही शिकारी बाघ था जिसकी मुझे तलाश थी, या बस एक भटकता हुआ बाघ। ये पदचिह्न कहीं-कहीं सड़क के किनारे की नरम रेत में बहुत स्पष्ट थे, और मैं उन्हें बारीकी से देख सका; लेकिन इससे केवल इतना पता चला कि ये एक औसत आकार के नर बाघ के थे, इसके अलावा कोई और खास बात या पहचान चिह्न नहीं मिला।

पुलिबोनू में कार छोड़कर, मैं उत्तर-पूर्वी घाटी में पैदल चला। वन मार्ग कल्याणी नदी को बार-बार पार करता था, जहाँ मैंने देखा कि बाघ मुझसे कुछ दूरी तक आगे निकल चुका था। उस दिन मैंने गुंडलपेंटा और उम्बालमेरु दोनों स्थानों का दौरा किया, इस उम्मीद में कि मेरे चारे में से कोई एक बाघ खा गया होगा, लेकिन मैंने पाया कि दोनों बाघ जीवित थे और शांति से भूसे के बड़े-बड़े ढेरों को चबा रहे थे, जो मैंने उनके लिए आराम और संतुष्टि के लिए छोड़े थे।

उस दोपहर दोपहर के भोजन के बाद मैं वापस लौटा और उस जगह से बाघ के पदचिह्नों का पीछा करने की कोशिश की जहाँ मैंने उन्हें आखिरी बार देखा था। लेकिन मैं पूरी तरह सफल नहीं हो पाया, क्योंकि नदी के ऊपरी हिस्सों में दोनों किनारों पर फैले घने बाँस के झंझावात में पदचिह्न खो गए। उस शाम काफी देर हो चुकी थी जब मैं पुलिबोनू की ओर वापस मुड़ा। आधा मील आगे बढ़ते हुए, और अभी भी घने बाँस के झंझावात में ही, मुझे एक सुस्त भालू दिखाई दिया जो असामान्य रूप से जल्दी प्रकट हुआ था, क्योंकि ये जीव सूर्यास्त के बाद ही घूमना शुरू करते हैं। वह एक बड़े सफेद चींटी के टीले के पास खड़ा था, उसकी नाक और सिर का एक हिस्सा उसके द्वारा बनाए गए छेद के अंदर था, और वह ज़ोरदार साँसों से सफेद चींटियों को अपने मुँह में खींच रहा था। वह देखने में बिल्कुल एक काले, बालों वाले आदमी जैसा लग रहा था, जो चींटी के टीले के पास खड़ा था, और उसकी कोशिशों में निकलने वाली आवाज़ें असाधारण थीं, लाखों मधुमक्खियों की भिनभिनाहट जैसी, और बीच-बीच में तेज़, अधीर सूंघने और सरसराहट की आवाज़ें, जैसे कोई विशालकाय शिकारी कुत्ता शिकार की तलाश में हो।

मैं भालू के काफी करीब पहुँच गया, फिर भी उसने मुझे नहीं देखा, वह अपने काम में इतना मग्न था। मैं और भी करीब जा सकता था, लेकिन इसका मतलब यह होता कि जब उसे मेरी मौजूदगी का एहसास होता, तो वह शायद हमला कर देता और मुझे उसे गोली मारनी पड़ती। मैं ऐसा नहीं करना चाहता था, क्योंकि व्यक्तिगत रूप से मुझे भालुओं से कोई दुश्मनी नहीं है, और दूसरी बात, मेरी गोली की आवाज़ से जंगल में हलचल मच जाती और शायद बाघ भाग जाता। इसलिए मैं लगभग चालीस गज की दूरी पर रुक गया और ज़ोर से खाँसा। भालू ने मेरी आवाज़ सुनी, उसकी भिनभिनाहट और सूंघना बंद हो गया, और वह अपने पिछले पैरों पर घूमकर मेरी ओर मुड़ा, उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव था जो कम से कम हास्यास्पद तो था ही। उसके मिट्टी से सने चेहरे पर झुंझलाहट, डर, नाराज़गी और आक्रोश साफ झलक रहा था। एक पल के लिए उसने मुझे देखा, अपने पिछले पैरों पर और ऊँचा उठता हुआ, और पहले तो मुझे लगा कि वह अंधाधुंध हमला कर देगा, जो सुस्त भालू की आदत होती है जब उसे पास से परेशान किया जाता है। लेकिन मैंने समझदारी से काम लिया; वह चारों पैरों पर बैठ गया और अपनी पूरी ताकत से

भागने लगा, एक काले बालों वाले गोले की तरह उछलता हुआ, बुदबुदाते हुए, 'औफ्ल औफ्ल औफ!'

अगली सुबह तड़के मैं पुलिबोनू वापस पहुँच गया। सड़क पर बाघ के लौटने का कोई निशान नहीं था, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता था कि वह उत्तर-पूर्वी घाटी में कहीं था, या फिर वह ढलान पार करके चला गया था।

गाड़ी छोड़कर मैं पैदल गुंडलपेंटा की ओर बढ़ा, लेकिन वहाँ जाकर देखा तो मेरा चारा ज़िंदा था, घास चबा रहा था मानो दुनिया में और कुछ मायने ही न रखता हो। फिर मैं उम्बालमेरु गया, और जब उस जगह पहुँचा जहाँ मेरा दूसरा चारा बंधा था, तो पाया कि वह गायब था। जाँच करने पर पता चला कि उसे एक बाघ ने मार डाला था, और फिर उसे घसीटकर ले गया था, इससे पहले उसने उस मज़बूत रस्सी को तोड़ दिया था जिससे मैंने उसे बाँधा था।

घसीटने के निशान का पीछा करना आसान था, और लगभग 100 गज आगे बढ़ने के बाद, मेरा ध्यान एक अकेले कौवे की ओर आकर्षित हुआ, जो एक पेड़ की निचली शाखा पर बैठा था और उम्मीद से नीचे की ओर देख रहा था।

इसका केवल एक ही अर्थ हो सकता है—कि बाघ वहाँ मौजूद था और उसने अपना शिकार पकड़ रखा था। यदि वह वहाँ नहीं होता, तो कौआ डाल पर उदास होकर नीचे देखने के बजाय, शव को खाने के लिए नीचे उतर जाता।

जिस पेड़ पर कौआ बैठा था, उसके सामने भाले के आकार की घास से ढकी एक ढलानदार पट्टी थी, जिसके तल पर घनी झाड़ियों से ढका एक छोटा सा गड्ढा था। बाघ और उसका शिकार इसी झाड़ी में कहीं छिपे हुए थे।

इस घनी झाड़ी के पास जाना उचित नहीं था। पहली बात तो यह कि बाघ शायद मेरी आवाज सुन लेता और भाग जाता। दूसरी ओर, और खासकर अगर वह आदमखोर बाघ होता, तो वह निश्चित रूप से हमला कर देता, और आसपास की घनी झाड़ियों और लंबी घास के कारण मेरे लिए उसे रोकने की संभावना बहुत कम थी।

इसलिए मैं लगभग पचास गज पीछे हट गया और एक वैकल्पिक मार्ग खोजने लगा जिससे मैं उस स्थान पर किसी अन्य कोण से, या शायद विपरीत दिशा से पहुँच सकूँ, जहाँ से मैं बाघ को अधिक अनुकूल स्थिति से देख सकूँ।

सौभाग्य से, एक उथला नाला उत्तर-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर तिरछे बहता हुआ कल्याणी नदी के शुरुआती हिस्से में जाकर मिल रहा था। दबे पांव उस नाले पर चलते हुए, मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि मैं उस झाड़ी के ठीक बगल में हूँ जिसमें बाघ छिपा हुआ था। लगभग पच्चीस गज और आगे बढ़ते हुए, मैं सावधानी से दाहिने किनारे पर चढ़ गया और जैसा मैंने अनुमान लगाया था, मैं अब उस झाड़ी से कुछ दूरी पर था। मेरे सामने कुछ गज की दूरी पर एक अधविकसित इमली का पेड़ था, और रेंगते हुए उसके पास जाकर, मैंने खुद को उसकी छायादार शाखाओं में लटका लिया, और फिर झाड़ी में नीचे देखने की उम्मीद में और ऊपर चढ़ गया।

लेकिन मुझे निराशा हुई, क्योंकि मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया। इस जगह से कौआ भी नज़र नहीं आ रहा था, क्योंकि जिस नीची डाल पर वह बैठा था, वह घनी झाड़ियों के कारण मेरी नज़र से ओझल हो गई थी। इसलिए मुझे यह जानने का कोई ज़रिया नहीं था कि बाघ अभी भी वहीं है या कहीं और चला गया है।

मैं लगभग आधे घंटे तक इसी स्थिति में बैठा रहा, इस उम्मीद में कि अगर बाघ झाड़ियों से बाहर आता है तो जंगल—या यों कहें कि उसके जीव-जंतु—उसके आने-जाने का संकेत दे देंगे।

सूरज काफी ऊपर आ चुका था, और मुझे पता था कि बाघ जल्द ही उम्बालमेरु के किसी जलकुंड की ओर चला जाएगा, ताकि भारी भोजन के बाद अपनी प्यास बुझा सके।

तभी मुझे बाईं ओर सौ गज की दूरी से एक भूरे लंगूर बंदर की विचित्र चेतावनी भरी आवाज सुनाई दी, 'हा-आह! हार! हार!' वह लगातार यही आवाज दोहरा रहा था, साथ ही उस समूह की एक मादा बंदर 'चीक आई चीक!' की आवाज भी निकाल रही थी।

अंततः बाघ हिलने लगा और लंगूर चौकीदार ने उसे देख लिया।

मेरे जो पाठक भारतीय जंगलों से परिचित हैं, उन्हें लंगूर बंदरों के बुद्धिमानी भरे तरीकों के बारे में बताने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग परिचित नहीं हैं, उन्हें यह जानकर रुचि होगी कि काले चेहरे और बहुत लंबी पूंछ वाले ये विशालकाय भूरे रंग के वृक्षवासी जंगल में समूहों में रहते हैं, जहां वे पूरी तरह से जंगली फलों, कुछ पत्तियों और निश्चित रूप से विभिन्न प्रकार के इल्लियों और कीड़ों पर निर्भर रहते हैं, जो उनका विशेष भोजन है। लंगूर का मांस बाघों और तेंदुओं के साथ-साथ कुछ जंगली जनजातियों के भोजन का एक प्रमुख आकर्षण है, इसलिए पीढ़ियों के कठिन अनुभव ने उन्हें एक पहरेदार तैनात करना सिखाया है, जो हमेशा सबसे ऊंचे पेड़ पर अपनी जगह लेता है और घात लगाकर बैठे बिल्लियों पर कड़ी नजर रखता है। कुछ मनुष्यों को लंगूर पहरेदार से कुछ सीख लेनी चाहिए, क्योंकि जब वह ड्यूटी पर होता है तो यह लंगूर न तो भोजन करता है और न ही किसी भी तरह से अपना ध्यान अपने काम से भटकने देता है। वह जानता है कि उसके बच्चों, मादाओं और जनजाति के अन्य सदस्यों की सुरक्षा और जीवन पूरी तरह से उसकी सतर्कता पर निर्भर करता है। आप उसे सबसे ऊंचे पेड़ की चोटी पर चौकन्ना बैठा और चारों ओर देखता हुआ पाएंगे। उसकी पैनी, काली आँखों से दिखाई देने वाली हर हलचल पर उसकी नजर रहती है। आखिरकार, और केवल तभी जब कोई दूसरा चौकीदार उसकी जगह ले लेता है, वह अपने भोजन के बारे में सोचेगा।

खेलते समय लंगूरों की सामान्य आवाजें गूंजती हुई 'वूम्प-वूम्प' की एक श्रृंखला होती हैं, जो पहाड़ियों और घने जंगलों में गूंजती हैं। लेकिन जब उसे खतरा दिखाई देता है, तो पहरेदार लगातार 'हा-आह! हार! हार!' की आवाजें निकालता है, और पूरा झुंड सबसे ऊंचे पेड़ों पर शरण लेता है।

अफसोस, चतुर लंगूरों की तमाम बुद्धिमत्ता के बावजूद, बाघ और तेंदुओं ने भी इन बंदरों की चालाकी पर काबू पाने की एक सहज तकनीक विकसित कर ली है, क्योंकि उन्हें भी तो खाना चाहिए। पहरेदार की आवाज़ सुनते ही, झुंड की घात लगाए बैठे बाघ और तेंदुओं को पता चल जाता है कि उनका पता चल गया है और बंदर सबसे ऊँचे पेड़ों पर चढ़ जाएँगे। इसलिए वे अब अपनी रणनीति बदलते हैं और जब उन्हें कोई ऐसा पेड़ मिल जाता है जिस पर कई बंदर बैठे हों, तो वे खौफनाक दहाड़ें मारते हुए उसकी ओर दौड़ पड़ते हैं और संभवतः सबसे निचली शाखा पर छलांग लगा देते हैं, मानो खुद पेड़ पर चढ़ना चाहते हों। सबसे ऊँची शाखाओं पर बैठे लंगूर पूरी तरह सुरक्षित होते अगर वे वहीं बैठे रहते। लेकिन भयानक गुर्राहट और दहाड़ें, साथ ही खुले जबड़ों के साथ उनकी ओर दौड़ता हुआ भयानक धारीदार या धब्बेदार रूप, बेचारे जानवरों को डरा देता है, और वे अपनी सुरक्षित जगहों से बेतहाशा कूद पड़ते हैं, या तो पास के पेड़ों तक पहुँचने की कोशिश में, या फिर ऊँचाई से सीधे ज़मीन पर, जहाँ उनमें से एक हमेशा उस बाघ या तेंदुआ का आसान शिकार बन जाता है जो इस मूर्खतापूर्ण हरकत का अनुमान लगा लेता है।

लेकिन मैं विषय से भटक गया हूँ, और मुझे वापस उस घटना पर लौटना होगा जो लंगूर चौकीदार की 'हा-आह! हार! हार!' की आवाज़ सुनने के बाद हुई थी।

पेड़ से नीचे उतरकर, मैं अपनी राइफल तैयार रखते हुए, लंगूर चौकीदार के चेतावनी देने वाले स्थान की ओर तिरछे रेंगता हुआ बढ़ा। यह जानते हुए कि बाघ ने भरपेट भोजन कर लिया था, मुझे उम्मीद नहीं थी कि वह इस बार बंदरों को परेशान करने की कोशिश करेगा, लेकिन चौकीदार की नज़र पड़ते ही वह किसी तालाब की ओर जा रहा था। इस क्षेत्र में भाला घास और कांटेदार झाड़ियाँ बहुतायत में उगी हुई थीं, इसलिए आगे बढ़ना धीमा और कठिन था।

लगभग आधा फर्लांग (लगभग 10 किमी) बहुत सावधानी से आगे बढ़ते हुए, मैंने जंगली कपास के पेड़ की सबसे ऊपरी शाखा पर बैठे लंगूर रखवाले को देखा, ठीक उसी क्षण जब उसने मुझे देखा। अब उसके सामने दो संभावित दुश्मन थे जिन पर उसे नज़र रखनी थी, और मैं जानता था कि अगर मैं ध्यान से देखूँ तो लंगूर किस दिशा में देख रहा है, यह देखकर मैं बाघ के ठिकाने का अंदाज़ा लगा सकता हूँ। इसलिए मैं लंबी घास में अपने घुटनों के बल बैठ गया और वहीं जम गया।

चौकीदार ने कुछ सेकंड के लिए मेरी ओर देखा, फिर अपनी बाईं ओर देखा, फिर वापस मेरी ओर देखा, फिर वापस बाईं ओर देखा, और अभी भी अपनी चेतावनी दोहरा रहा था।

उसकी निगाहों से मैं समझ गया कि वह मुझे और बाघ दोनों को देख रहा है और उसने अनुमान लगाया कि बाघ मुझसे कम से कम सौ गज आगे है। मैं उठ खड़ा हुआ और कमर झुकाकर जितनी तेज़ी से हो सके, उस दिशा में बढ़ा जहाँ मुझे बाघ के होने का अनुमान था। इससे पहले से ही उत्तेजित लंगूर चौकीदार और भी घबरा गया, क्योंकि वह समझ नहीं पा रहा था कि मैं लंगूरों के समूह पर हमला करने की सोच रहा हूँ या बाघ पर। उसकी चेतावनी भरी आवाज़ और तेज़ हो गई, जिससे मुझे चिंता होने लगी क्योंकि मैं जानता था कि बाघ भी उसे सुन रहा है और इस बढ़ी हुई उत्तेजना से उसे बंदरों के लिए और शायद खुद के लिए भी कोई नया खतरा महसूस हो जाएगा।

और मैं सही था। मैंने सौ गज की दूरी तेज़ी से तय की, और पच्चीस गज और चलने के बाद मुझे लगा कि अब मैं बाघ के काफी करीब हूँ और मुझे अपनी सावधानी दोगुनी कर देनी चाहिए। मैंने क्षण भर के लिए लंगूर चौकीदार की ओर देखा। वह मेरी ओर ध्यान से देख रहा था, जिससे यह पुष्टि हो गई कि बाघ और मैं दोनों अब उसकी दृष्टि के दायरे में थे।

एक बार फिर थमकर, मैंने अपने सामने और दोनों ओर के स्थान को ध्यान से सुना और देखा। वहाँ हमेशा की तरह काँटेदार झाड़ियों के झुंड थे, जिनके बीच-बीच में लगभग चार फुट ऊँची भालाकार घास की छोटी-छोटी घासें थीं। देखते-देखते मुझे अपने बाईं ओर, लगभग तीस गज की दूरी पर घास में हल्की सी हलचल दिखाई दी। बेहतर दृश्य पाने के लिए मैं थोड़ा ऊपर उठा, और तभी बाघ ने मुझे देख लिया। एक धीमी सी गुर्राहट के बाद दो छलांगें लगीं और वह गायब हो गया।

मुझे पता था कि अब उसका पीछा करना व्यर्थ और खतरनाक था, क्योंकि उसने मेरी मौजूदगी और पीछा किए जाने की जानकारी दे दी थी। अचानक हमले से बचने के लिए सावधानी से अपनी पीठ बचाते हुए, मैं उस झाड़ी की ओर रेंगता हुआ वापस गया जहाँ मुझे पता था कि शिकार पड़ा है, और जल्द ही मुझे वह मिल गया। बछड़ा आधा खाया जा चुका था; वह अपनी बाईं ओर लेटा हुआ था, गिद्धों से बचने के लिए घास और झाड़ियों की आड़ में था, और सौभाग्य से एक जंगली आम का पेड़ उस पर नज़र रख रहा था।

अब मुझे तुरंत फैसला लेना था। इस बात की संभावना थी कि बाघ मुझे देखने के बावजूद अपने शिकार के पास लौट जाए, और अगर मैं उसके लिए जागते रहने का यह मौका गंवा देता,

तो मैं वह मौका खो देता। साथ ही, मैं रात भर जागने के लिए पूरी तैयारी के साथ नहीं आया था, और मेरे पास टॉर्च, कंबल या खाना भी नहीं था। अगर मैं जागते रहने का फैसला करता, तो मुझे सुबह तक पेड़ पर ही रहना पड़ता, क्योंकि उस समय रातें अंधेरी होती थीं और चांद भी नहीं होता था। घने अंधेरे जंगल से होते हुए पुलिबोनू में अपनी कार तक वापस लौटना लगभग नामुमकिन था, और इसके अलावा मैं पूरी तरह से आदमखोर बाघ की दया पर निर्भर होता। अगर मैं वहीं रहता, तो मुझे उस बर्फीली ठंडी हवा में असहनीय असुविधा भरी रात गुजारनी पड़ती, जो ढलान से नीचे आती और जिससे मैं खुद को बचा नहीं पाता। मैंने कार तक जाकर जरूरी सामान लाने का सोचा। दूरी लगभग चार मील थी, और मुझे डर था कि मेरी गैरमौजूदगी में बाघ वापस आकर मेरे शिकार को पूरी तरह से ले जा सकता है।

अंततः मैंने व्यक्तिगत असुविधा की परवाह न करते हुए वहीं बैठे रहने का फैसला किया। आम के पेड़ पर चढ़कर मैं उसकी दूसरी शाखा पर बैठ गया, जहाँ मैं एक डाल से पीठ टिकाकर आराम से लेट सका। जूते उतारकर मैंने भारतीय रीति से अपने पैर क्रॉस की तरह मोड़ लिए और राइफल को सामने वाली शाखा पर टिका दिया। इस स्थिति से मुझे बाईं ओर शिकार साफ दिखाई दे रहा था, फिर सामने वाली शाखा से दृश्य बाधित हुआ, फिर दूसरा दृश्य, फिर एक शाखा, फिर मेरे दाहिने कंधे के ऊपर से एक ऐसे कोण से दृश्य दिखाई दिया जहाँ से गोली चलाना असंभव था, और अंत में वह शाखा जिस पर मेरी पीठ टिकी थी। इससे पीछे का दृश्य बिल्कुल भी दिखाई नहीं दे रहा था। साथ ही मैं जमीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर था और बाघ के हमले से सुरक्षित था। मुझ तक पहुँचने के लिए उसे पेड़ की पहली शाखा को पार करना पड़ता, जहाँ वह लगभग बिल्कुल करीब होता।

दोपहर के 12:50 बज रहे थे, और मैं उस रात के लिए तैयार हो गया जिसे मैं अपने पूरे शिकारी करियर की सबसे ठंडी और असहनीय रातों में से एक मान रहा था।

मैं अपने पाठकों को यह बताकर उबाऊ नहीं बनाऊंगा कि शाम 6:30 बजे तक घंटे कैसे धीरे-धीरे बीतते गए, जब जंगल के पक्षी और दिन के पक्षी अपने घोंसलों में चले गए थे, और लंगूर अपने दो दुश्मनों, बाघ और मनुष्य की घृणास्पद उपस्थिति से बहुत पहले ही दूर चले गए थे। मैं अकेला था, सिवाय कभी-कभार चहचहाते हुए मेरे पेड़ के आसपास उड़ने वाले एक चिड़िया के। शाम 6:45 बजे लगभग अंधेरा हो चुका था। चिड़िया अब मेरे नीचे बैठ गई थी, और 'चुकू-चुकू-चुकू' की अपनी चहचहाहट शुरू कर दी थी, तभी मुझे उन विचित्र अनुभवों में से एक का सामना करना पड़ा जो कभी-कभी, लेकिन बहुत कम ही, भारतीय जंगलों में घूमने वाले किसी व्यक्ति के साथ होते हैं।

मैंने जंगल में रहने वाले लोगों से कहानियां सुनी थीं और पढ़ा भी था कि बाघ, कुछ खास इलाकों में ही, सांभर की नकल करते हैं और हिरण की आवाज निकालते हैं, शायद अपनी ही प्रजाति के दूसरे जानवरों, खासकर मादा हिरणों को लुभाने के लिए। मैंने इस कहानी पर कभी ज्यादा भरोसा नहीं किया था और न ही मैंने खुद कभी ऐसा अनुभव किया था। उस शाम, 6.45 के कुछ ही देर बाद, ढलते सूरज की रोशनी में, झाड़ियों के बीच से अचानक एक सांभर हिरण की अकेली 'धंक' की आवाज गूंजी। यह आवाज उस जगह से आई जो अभी भी उस डाल के बीच दिखाई दे रही थी जिस पर मेरी राइफल टिकी हुई थी और ठीक दाईं ओर वाली डाल से। और लगभग उसी समय, उसी झाड़ी से बाघ बाहर निकला।

उस झाड़ी में बाघ के साथ या ठीक आगे कोई सांभर नर हिरण नहीं हो सकता था, क्योंकि भागते समय मुझे उसके खुरों की आहट सुनाई दी थी। कोई सांभर वहां खड़ा होकर बाघ को अपने पास से गुजरने नहीं देता। उस एक 'धंक' की आवाज के अलावा कोई और आवाज नहीं थी,

और जैसा कि मैंने कहा, बाघ खुले में आ गया, और इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह आवाज बाघ ने ही निकाली थी। उसने ऐसा क्यों किया, यह एक रहस्य है, क्योंकि वह शिकार नहीं कर रहा था। उसने उस सुबह भरपेट भोजन किया था और अब दूसरे भोजन के लिए लौट रहा था, इसलिए उसके मन में सांभर की आवाज की नकल करके उसे लुभाने का विचार नहीं आया होगा। मैं केवल वही बता सकता हूँ जो वास्तव में हुआ, जो मैंने अनुभव किया, और यह तथ्य कि जब बाघ बाहर आया, तब उस झाड़ी में कोई सांभर नहीं था। बाकी मैं आपके अनुमान और निष्कर्ष पर छोड़ता हूँ। मैंने इसे स्वयं अपने कानों से सुना है, इसलिए मेरे पास बाघ की इस ध्वनि की नकल करने की क्षमता के बारे में पढ़ी और सुनी पुरानी कहानियों पर विश्वास करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है।

जानवर शिकार की ओर बढ़ा और मेरे सामने वाली शाखा के पीछे ओझल हो गया। मैंने इस मौके का फायदा उठाकर अपनी राइफल को निशाना साध लिया। फिर वह मेरे बाईं ओर दोबारा दिखाई दिया और देखते ही देखते उसने शिकार को अपने जबड़ों में जकड़ लिया और उठा लिया। मेरी गोली ठीक उसके बाएं कंधे के पीछे लगी। वह घूमकर मेरी अगली गोली गर्दन में खाने के लिए तैयार हो गया, फिर गिर पड़ा, एक मिनट तक लात मारता और छटपटाता रहा, और अंत में शांत हो गया।

बाघ के मर जाने के बाद, मुझे लगा कि अब गाड़ी तक पैदल जाना सुरक्षित है, बशर्ते मैं अंधेरे में रास्ता ढूंढ सकूँ। तमाम मुश्किलों के बावजूद, मुझे लगा कि पेड़ पर रात भर ठिठुरते और कांपते हुए, ठंडे पेट खाली बैठे रहने से बेहतर यही होगा। अचानक मन बना कर, मैं बाघ के पास जाए बिना पेड़ से नीचे उतरा और अंधेरा होने से पहले कल्याणी नदी का किनारा ढूंढने के लिए तेज़ी से चल पड़ा, क्योंकि मुझे एहसास हुआ कि अंधेरे में भी सूखी नदी के किनारे-किनारे चलते हुए पुलिबोनू और गाड़ी तक पहुंचना मुमकिन होगा, हालांकि नदी के मोड़ों से होते हुए दूरी लगभग छह मील होगी। अंधेरे में मैं संकरे रास्ते, जो एकमात्र दूसरा विकल्प था, को लगभग निश्चित रूप से खो दूंगा और मुझे रात जंगल में ही बितानी पड़ेगी।

अंधेरे में कल्याणी नदी के पथरीले तल को पार करने का प्रयास किसी बुरे सपने से कम नहीं था। नदी के तल में बिखरे हुए गोल-गोल पत्थरों पर कई बार मेरा पैर फिसल गया, और कहीं-कहीं छिपे हुए पेड़ों के ठूंठों और चट्टानों से टकराकर मेरी टांगें छिल गईं। एक से अधिक बार एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूदते समय मेरा टखना मुड़ने या शायद टांग टूटने का खतरा मंडरा रहा था, और दो बार तो मैं अपनी कीमती राइफल को चट्टानों से टकराने से बचाने के लिए हवा में उठाए हुए ही गिर पड़ा। इस यात्रा के लिए पूर्ण एकाग्रता की आवश्यकता थी, और पुलिबोनू पहुँचने में मुझे चार घंटे लग गए। मैं रात 11 बजकर 10 मिनट पर गाड़ी में बैठा।

आप शायद सोच रहे होंगे कि नागपतला लौटते समय मैं आदमखोर बाघ को मार गिराने पर खुद को बधाई दे रहा था। लेकिन असल में ऐसा नहीं था, क्योंकि कई बातें मेरे दिमाग में कौंध गईं और मुझे अपनी सफलता पर संदेह होने लगा। पहली बात, बाघ ने भैंस का शिकार किया था; दूसरी बात, जब मैंने उसे देखा तो वह वहीं रुका रहा और फिर आराम से पीछे हट गया, मैं उसके पीछे गया; तीसरी बात, मेरी मौजूदगी का एहसास होते ही वह दुम दबाकर भाग गया; चौथी बात, वह भैंस के पास लौट आया; और आखिर में, उसने सांभर की आवाज की हूबहू नकल की। ये सभी बातें, चाहे अलग-अलग हों या सामूहिक रूप से, किसी आदमखोर बाघ के व्यवहार या हरकतों का संकेत नहीं देतीं, बल्कि एक साधारण बाघ, खासकर एक शिकारी बाघ की ओर इशारा करती हैं। जितना ज्यादा मैं इसके बारे में सोचता गया, उतना ही मुझे शक होता गया कि मैंने आदमखोर बाघ को गोली मारी है या नहीं। यह मेरे मन की शांति के लिए अच्छा था कि

कल्याणी नदी के किनारे अंधेरे में अपने संघर्ष पर ध्यान केंद्रित करते समय, मेरे पास इन चीजों के बारे में सोचने का समय नहीं था, या इस बारे में सोचने का समय नहीं था कि अगर वह मुझे उन परिस्थितियों में मिलता तो मैंने खुद को पूरी तरह से असली आदमखोर के हवाले कर दिया होता।

अगली सुबह मैं कुछ आदमियों के साथ लौटा, बाघ को गाड़ी में रखा और नागपतला ले आया, जहाँ आदमखोर बाघ की मौत पर सबने खुशी मनाई। जानवर की खाल उतारने से पहले मैंने उसकी बहुत बारीकी से जांच की और पाया कि वह एक बेदाग वयस्क नर बाघ था, जिसकी खाल सुंदर थी और शारीरिक रूप से वह एकदम स्वस्थ था। इससे मेरा संदेह और भी बढ़ गया कि मैंने सचमुच एक असली आदमखोर बाघ को ही मारा है।

उस शाम मैं बैंगलोर के लिए रवाना हो गया और चित्तूर में कलेक्टर के साथ रात बिताई, जिनसे मैंने अपनी आशंकाओं के बारे में बताया और उनसे यह वादा लिया कि यदि भविष्य में कभी भी किसी इंसान की हत्या की घटना घटती है तो वे मुझे टेलीग्राम द्वारा सूचित करेंगे।

उस तारीख से ग्यारहवें दिन की दोपहर को मुझे उसका तार मिला, जिसमें लिखा था कि चामाला घाटी के आरक्षित वन क्षेत्र की सीमा के भीतर, नागपटला से एक मील की दूरी पर घास काट रही एक महिला को आदमखोर बाघ उठा ले गया है। मैं असफल हो गया था। मैंने गलत बाघ पर गोली चलाई थी, ठीक वैसा ही जैसा मुझे आशंका थी।

अगली सुबह मैं नागपतला वापस जाने के लिए रवाना हुआ और उस दोपहर बाद देर से उस छोटे से वन बंगले में पहुंचा।

अगली सुबह तड़के मुझे वह स्थान दिखाया गया जहाँ बाघ ने अपने नवीनतम शिकार पर हमला किया था। वह महिला घास काट रही थी, जिसे उसने गठ्ठे में बाँधकर अपने सिर पर लादकर ले जाने की तैयारी की थी। उसने उस गठ्ठे को एक पेड़ की छाया के नीचे रखा था और जाहिर तौर पर उसे बाँध ही रही थी कि पास के जंगल से उसका पीछा करते हुए आए बाघ ने उस पर हमला कर दिया। एक अन्य महिला, जो उस समय लगभग सौ गज दूर घास काट रही थी, ने एक तीखी चीख सुनी और ऊपर देखते ही उसने बाघ को अपने साथी को जबड़ों में दबाए जंगल में गायब होते देखा। वह नागपतला भाग गई और उसने सारी कहानी सुनाई, जहाँ से यह खबर रंगमपेट और फिर चंद्रगिरी तक पहुँची, जहाँ तहसीलदार ने तुरंत चित्तूर के कलेक्टर को सूचित करने के लिए कदम उठाए, जिन्होंने बदले में मुझे तार भेजा।

बाघ का पीछा करने या महिला को बचाने का कोई प्रयास नहीं किया गया था। घटना को तीन दिन बीत चुके थे और ज़मीन इतनी सूख चुकी थी कि कोई भी पदचिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे। चारों ओर एक बड़े अर्धवृत्त में खोजबीन करने पर हमें महिला की साड़ी मिली, जो उसके नग्न शरीर से खुल कर लगभग एक चौथाई मील दूर ज़मीन पर पड़ी थी। हमें खून के कोई निशान नहीं मिले, जिससे पता चलता है कि बाघ ने महिला के गले पर अपनी पकड़ नहीं छोड़ी थी, क्योंकि मदद के लिए उसकी पहली चीख के बाद दुर्भाग्यपूर्ण पीड़िता की ओर से कोई और चीख सुनाई नहीं दी थी।

हम उस महिला के अवशेषों का पता लगाने में कभी सफल नहीं हुए।

गांव लौटकर, मैंने बचे हुए तीन भैंस के बछड़ों को इकट्ठा किया, जो पिछली बार मेरे चारे थे और पीछे छूट गए थे; मैंने एक को चौथे मील के पत्थर के पास सड़क किनारे बांध दिया, दूसरे को पुलिबोनू में, और इस बार मैंने तीसरे को नागपतला से केवल दो मील दूर, कल्याणी नदी के तल में, खेती वाले क्षेत्रों में प्रवेश करने से पहले बांध दिया।

अगली सुबह तीनों चारे जीवित थे, लेकिन पुलिबोनू वन मार्ग पर बाघ के पंजों के निशान भी थे। बाघ तीसरे मील से ठीक पहले रास्ते में आ गया था, चौथे मील पर मेरे चारे को बिना छुए आगे बढ़ गया, और छठे मील पर, पुलिबोनू पहुँचने से कुछ ही समय पहले, सड़क छोड़कर पूर्व दिशा में तिरुपति ब्लॉक से निकले एक बड़े, पथरीले पहाड़ की ओर चला गया, जिसे 'बंदर-पहाड़ी' के नाम से जाना जाता है।

पदचिह्न स्पष्ट थे और जानवर में किसी प्रकार की विकृति नहीं दर्शा रहे थे। फिर भी, यह मेरे द्वारा चौथे मील पर सड़क किनारे बांधे गए जीवित चारे के कुछ ही फीट के भीतर से गुजरा, बिना रुके उसे देखे, जैसा कि पदचिह्नों से स्पष्ट रूप से पता चलता है। यह निश्चित रूप से किसी आदमखोर जानवर के व्यवहार जैसा लग रहा था, और मुझे यह सोचकर खुशी हुई कि आखिरकार मैं असली जानवर से भिड़ गया हूँ।

जैसा कि मैंने बताया, बाघ 'बंदर पहाड़ी' की ओर चला गया था। या तो वह उसकी घनी झाड़ियों वाली ढलानों पर शरण लिए बैठा था, या शायद पहाड़ी के निचले हिस्से से होते हुए गुंडलपेंटा और उम्बालमेरु की ओर जाने वाले रास्ते पर वापस आ गया था, और फिर आगे बढ़ते हुए खड़ी ढलान की ओर चला गया था। किसी भी हालत में, इस बात की थोड़ी सी संभावना थी कि वह उस रात सड़क से वापस लौट आए, और चूंकि अब पूर्णिमा के करीब चांद निकला हुआ था, इसलिए मैंने इस रास्ते पर जानवर को गोली मारने का प्रयास करने का निश्चय किया।

चौथे मील के पत्थर पर, मेरे शिकारगाह से लगभग 150 गज की दूरी पर सड़क के किनारे एक विशाल सागौन का पेड़ खड़ा था। अपनी तरह के अधिकांश पेड़ों की तरह, इस पेड़ का तना सीधा था जिस पर चढ़ना लगभग असंभव था, लेकिन मैंने तने की ओर पीठ करके उसके आधार पर बैठकर अपने शिकारगाह, दोनों दिशाओं में सड़क और चारों ओर सौ गज से अधिक का दृश्य देखा, क्योंकि जंगल के उस हिस्से में लगभग एक साल पहले आग लगी थी और इसलिए वहाँ झाड़ियाँ नहीं थीं।

मैंने शाम 5 बजे तक अपनी जगह ले ली। जैसे ही अंधेरा छाने लगा, पूर्व दिशा में पेड़ों के ऊपर से निकल रहे चंद्रमा ने अपनी हल्की, चांदी जैसी रोशनी से शांत जंगल में दृश्यता बहाल कर दी। हालांकि दिन के उजाले में मुझे लगा कि मैंने जो जगह चुनी है वह काफी सुरक्षित है, लेकिन रात का अपना ही असर होता है, और मैं बाघ के पीछे से मेरा पीछा करने की संभावना के बारे में सोचने लगा। लेकिन मेरी बुद्धि ने मेरा साथ दिया और मुझे बताया कि ऐसा होना असंभव है, जब तक कि बाघ मुझे पहले देख न ले या मेरी आवाज न सुन ले, क्योंकि बाघों में सूंघने की शक्ति लगभग न के बराबर होती है। लेकिन दिखने या सुनाई देने के लिए मुझे पहले हिलना-डुलना पड़ता, इसलिए आप यकीन मानिए कि मैं बिल्कुल शांत और बिना आवाज किए उस बड़े पेड़ से पीठ टिकाकर बैठा रहा। मैं न तो धूम्रपान कर सकता था और न ही खाना खा सकता था, लेकिन अगले दिन सुबह होने वाली ठंड से बचने के लिए मैंने गर्म कपड़े पहन लिए थे। मुझे याद है कि उस रात जंगल असाधारण रूप से शांत था, जिससे मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि बाघ आसपास नहीं था। जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, तड़के ही तापमान में अचानक गिरावट आई और परिणामस्वरूप उतनी ही तेजी से ओस गिरने लगी, जिससे मेरे कपड़े पूरी तरह भीग गए और राइफल की बर्फीली ठंडी नली से नमी टपकने लगी।

मैंने कई बार अपने भैंस के बच्चे की ओर देखा, यह देखने के लिए कि वह कैसी प्रतिक्रिया दे रहा है। रात के पहले हिस्से में वह शांति से मेरे द्वारा दी गई कटी हुई घास को चबाता रहा, लेकिन सुबह होते ही वह जमीन पर लेट गया, जाहिर तौर पर आराम करने और ठंड से बचने के लिए जितनी हो सके उतनी गर्मी पाने के लिए।

अंततः भोर हुई और एक बेहद निराश शिकारी को राहत मिली, और मैं चार मील का सफर तय करके नागपतला वापस आ गया। यहाँ नहाने के बाद गरमागरम चाय, बेकन और अंडे खाए और दो घंटे की झपकी ली, जिससे मुझे फिर से नई ऊर्जा मिली और मैं किसी भी परिस्थिति के लिए तैयार हो गया।

मैं पुलिबोनू की ओर जाने वाली सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ा, दोनों ट्रैकर मेरे दोनों तरफ मडगार्ड पर बैठे थे और मैं बहुत धीमी गति से गाड़ी चला रहा था, वे सड़क पर लगातार नज़र रख रहे थे। लेकिन उस रात बाघ सड़क के किसी भी हिस्से से नहीं गुजरा था। पुलिबोनू पहुँचकर, हमने कल्याणी नदी के आसपास दोनों दिशाओं में चक्कर लगाया, साथ ही उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्व की ओर जाने वाले रास्तों पर एक-एक मील तक आगे बढ़े, लेकिन फिर भी हमें बाघ के हाल ही में वहाँ से गुजरने का कोई सबूत नहीं मिला।

दोपहर के करीब हम पुलिबोनू लौट आए, जहाँ मैं जंगल के कुएँ के किनारे बैठकर सिगरेट पीने लगा और उस रात के लिए अपनी कार्ययोजना पर विचार करने लगा।

कल्याणी नदी के उस पार, और जहाँ मैं बैठा था, वहाँ से दो फर्लांग की दूरी पर एक इमली का पेड़ था, जहाँ से जंगल के रास्तों के दो भागों में बँटने का दृश्य दिखाई देता था। एक रास्ता पुलिबोनू की ओर जाता था, और दूसरा उत्तर-पूर्व की ओर उम्बालमेरु और ढलान की ओर मुड़ता था। मैंने सुना था कि हाल के वर्षों में इस पेड़ से कई बाघों का शिकार किया गया है; वास्तव में, लगभग अठारह महीने पहले जब मैं उसी पेड़ पर बैठा था, तब मैंने खुद एक छोटे तेंदुए को अपने नीचे से गुजरते हुए मार गिराया था। इसलिए मैंने अंततः अगले कुछ रातों के लिए, कम से कम जब तक चाँद निकला रहे, उसकी छायादार शाखाओं में ही रहने का फैसला किया, क्योंकि ज़मीन पर बैठने का खतरा हमेशा बना रहता था।

निर्णय लेने के बाद, मैंने अपने दोनों आदमियों को उन्हीं शाखाओं पर मचान बनाने का निर्देश दिया जिन पर मैं पहले बैठा था, और जब वे ऐसा कर रहे थे, मैं पेड़ के नीचे गहरी नींद में सो गया। उन आदमियों को पता था कि वे क्या कर रहे हैं, और लगभग तीस मिनट बाद उन्होंने मुझे जगाकर अपने काम की जाँच की और कुछ आवश्यक अंतिम रूप दिए।

मैं हमेशा स्टुडेबेकर की पिछली सीट पर दो हिस्सों में बनी चारपाई का ढांचा रखता हूँ। अनुभव से मुझे पता चला है कि यह सबसे बढ़िया मचान बनता है। यह हल्का लेकिन मजबूत होता है, इस पर हिलने-डुलने पर भी कोई आवाज़ नहीं करता, बेहद आरामदायक होता है, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसे किसी भी पेड़ पर मचान की तरह आसानी से लगाया जा सकता है, पत्तों की आड़ में आसानी से छिपाया जा सकता है, और घर जाने के समय आसानी से हटाया जा सकता है। इसके अलावा, यह सस्ता और पोर्टेबल भी है।

यह चारपाई दो शाखाओं पर टंगी हुई थी, जिन्हें सूती रस्सी से मज़बूती से बांधा गया था, जिसे मैं ऐसे ही कामों के लिए अपने साथ रखता हूँ। पूरी चारपाई को टहनियों से अच्छी तरह छिपाया गया था, जिन्हें किनारों पर इकट्ठा करके मुझे और अधिक छुपने का इंतज़ाम किया गया था। एक छेद बनाया गया था जिससे मैं ठीक अपने नीचे शाखा के निकलने वाली दरार को देख सकता था, और साथ ही पुलिबोनू और उम्बालमेरु दोनों दिशाओं में लगभग 100 गज तक देख सकता था। मेरे पीछे पत्तों की ओट में बने एक ऐसे ही छेद से मैं नागपतला जाने वाली सड़क को लगभग 200 गज तक देख सकता था।

सब कुछ मेरी संतुष्टि के अनुरूप होने पर, मैंने आदमियों को नागपतला वापस पहुँचाया, भरपेट दोपहर का भोजन किया और शाम 4 बजे तक थोड़ी देर और आराम किया। फिर मैंने आवश्यक

कंबल, पानी की बोतल, टॉर्च, सैंडविच और चाय इकट्ठा की और अकेले पुलिबोनू लौट आया, जहाँ मैंने कुएँ के पास एक जंगल के खुले मैदान में स्टुडेबेकर कार छिपा दी। पेड़ के पास वापस चलते हुए, मैं शाम 6 बजे से पहले ही रात के लिए आराम करने में लग गया।

जंगल की आवाज़ों से लगभग अविचलित होकर घंटे 11 बजे तक धीरे-धीरे बीतते रहे, तभी उम्बालमेरु पथ की दिशा से एक पैंथर ने आरी चलाने जैसी आवाज़ निकाली। 'आह-हा! आह-हा!' की आवाज़ लकड़ी काटने की लगभग सटीक नकल थी, प्रत्येक दोहरी आवाज़ पर सांस लेना और छोड़ना आरी की आगे-पीछे की गति से हूबहू मेल खाता था।

फिर मोड़ के पास से वह तेज़ी से निकला, एक खूबसूरत 'थेंदू' यानी विशाल वन तेंदुआ, जिसकी खाल पर बने धब्बे चमकदार चांदनी में साफ दिखाई दे रहे थे। वह उस पेड़ की ओर बढ़ा जिस पर मैं बैठा था, उसके नीचे सड़क पार की और दूसरी तरफ जंगल में गायब हो गया।

प्रशंसा से भर कर मैंने उस सुंदर दृश्य को देखा, लेकिन जानवर को जाने दिया, इस डर से कि कहीं बाघ को परेशानी न हो जाए, जो अगर आसपास कहीं भी हो तो मेरी गोली की आवाज सुन सकता है।

उस रात और कुछ भी पता नहीं चला, और अगली रात तो बेहद नीरस रही, क्योंकि उस रात मैंने कुछ भी न तो सुना और न ही देखा।

अगली सुबह नागपतला लौटकर मैं सो गया, लेकिन सुबह करीब 10 बजे मुझे इस खबर से जगाया गया कि लगभग आधे घंटे पहले ही एक चरवाहे को बाघ ने मार डाला था।

जल्दी से कपड़े पहनकर और अपनी राइफल लेकर, मैं लापता व्यक्ति के शोक संतप्त भाई और कुछ अन्य लोगों के पीछे-पीछे पुलिबोनू सड़क पर लगभग तीन-चौथाई मील तक चला, जहाँ से हम दाहिनी ओर मुड़े और जल्द ही कल्याणी नदी के किनारे पहुँच गए। वह व्यक्ति इस इलाके में अपनी भैंसें चरा रहा था, तभी नदी के किनारे फैली झाड़ियों से बाघ उस पर झपटा। वह व्यक्ति चीख उठा, और उसका भाई, जो उसी झुंड की देखभाल कर रहा था और पीछे छूटी भैंसों को आगे बढ़ा रहा था, उसने पूरी घटना देखी। इस मामले में बाघ ने अपने शिकार को कंधे से पकड़ लिया था, जिससे वह चीखता रहा क्योंकि उसे उसी झाड़ियों के किनारे घसीटा जा रहा था जहाँ से बाघ झपटा था। उसका भाई फिर खबर फैलाने के लिए गाँव वापस भागा और फिर उस वन बंगले में पहुँचा जहाँ मैं सो रहा था।

जिस जगह से उस आदमी को ले जाया गया था, वहाँ पहुँचकर हम सरकंडों के बीच से होते हुए आगे बढ़े। वहाँ झुके हुए सरकंडों से बाघ के आने की दिशा का पता चल रहा था, जबकि एक स्पष्ट निशान से पता चल रहा था कि वह अपने शिकार को मुँह में दबाकर किस दिशा में गया था। पीड़ित की पगड़ी सरकंडों के बीच पड़ी थी, जिसे पार करने के बाद हम नदी के सूखे तल पर पहुँचे। संभवतः वह आदमी संघर्ष कर रहा था, या उसकी चीखों से बाघ चिढ़ गया था, क्योंकि यहीं उसने आदमी के कंधे से अपनी पकड़ छोड़ दी और शायद उसका गला पकड़ लिया। इस जगह से खून के ताज़े निशान और घसीटने के निशान दिखाई देने लगे, जहाँ बाघ अपने शिकार को नदी के तल पर फैली रेतीली ज़मीन से पार करके नदी के दूसरे किनारे पर फैले जंगल की ओर भागा था और उसके पैर ज़मीन पर घिसट रहे थे।

सावधानी से आगे बढ़ते हुए, हम नदी के दूसरे किनारे पर स्थित घनी झाड़ियों को पार करते हुए एक घास के मैदान में पहुँचे। बाघ अपने बोझ के साथ उस मैदान को पार करते समय घास की पत्तियों को झुका चुका था और उन्हें अभी तक संभलने का समय नहीं मिला था। थोड़ी ऊपर की ओर ढलान वाली ज़मीन पर चलते हुए, मैं एक लंबी पहाड़ी की चोटी पर पहुँचा, जिसके आगे

ज़मीन तेज़ी से एक छोटी सी धारा में गिरती थी जो आगे चलकर कल्याणी नदी में मिल जाती थी। मुझे लगा कि बाघ उस धारा के छिपे हुए कोनों में अपना भयानक भोजन शुरू करने का फैसला करेगा, और संभवतः इस समय वह इसी काम में लगा हुआ था।

सीधे नदी में पगडंडी का पीछा करना व्यर्थ होगा, क्योंकि चाहे मैं कितनी भी सावधानी से चलूँ, कंटीली झाड़ियों में हल्की सी आवाज़ ज़रूर होगी जिससे बाघ सतर्क हो जाएगा और उसे पता चल जाएगा कि उसका पीछा किया जा रहा है। ऐसे हालात में आदमखोर बाघ से निपटना बेहद खतरनाक होता है, और मैं जानता था कि उसे छिपने और आड़ लेने का पूरा फायदा मिलेगा। वह अपने शिकार को छोड़कर भाग सकता है, या उसे अपने साथ ले जा सकता है; वह अपने शिकार के पास रुककर उससे लड़ सकता है; सबसे खतरनाक बात यह है कि वह घनी झाड़ियों में घात लगाकर पीछे से या बगल से हमला कर सकता है। स्थिति का तुरंत जायजा लेते हुए, मैंने फैसला किया कि मैं दाईं ओर तिरछे होकर नदी में लगभग एक चौथाई मील नीचे उतरूँगा, और फिर नरम रेत पर ऊपर की ओर बढ़ूँगा, जिस पर अगर मैं पंजों के बल चलूँ तो कम से कम कोई आवाज़ नहीं होगी। इस तरह मुझे उम्मीद थी कि मैं बाघ को उसके शिकार पर चौंका दूँगा।

जिस छोटी पहाड़ी की चोटी पर मैं अभी पहुँचा था, उसे पार करते हुए, मैं उसके दूसरी ओर झुक गया, जहाँ मुझे पता था कि नाले के तल से मैं नज़रों से ओझल हो जाऊँगा। इस स्थिति में मैं लगभग एक फर्लांग तक यथासंभव तेज़ी से आगे बढ़ा। फिर पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर, मैंने उसके किनारों पर उगी झाड़ियों से नाले की दिशा का अंदाज़ा लगाया और उससे एक फर्लांग आगे जाकर मिलने के लिए आधे दाहिनी ओर झुककर नीचे उतरा। अंततः रेतीले तल पर पहुँचकर, मैं एक मिनट के लिए रुका ताकि अपनी साँसें वापस ले सकूँ। फिर, राइफल को कंधे पर टिकाए हुए, मैं नरम रेत पर दबे पांव चलने लगा, जितना हो सके नाले के तल के बीचोंबीच रहते हुए और उसके किनारों पर उगी घनी झाड़ियों से बचते हुए।

मुझे वो भयानक सफ़र हमेशा याद रहेगा। नदी कहीं-कहीं दस गज तक संकरी हो जाती थी; अपने सबसे चौड़े हिस्से में भी वो तीस गज से ज़्यादा चौड़ी नहीं थी। मैं दबे पांव धीरे-धीरे आगे बढ़ता रहा, हर इंद्री सतर्क थी, दोनों किनारों पर हर झाड़ी और पौधे को ध्यान से देख रहा था, उनके नीचे और चारों ओर, और जहाँ तक मेरी नज़र जा सकती थी। बीच-बीच में मैं रुककर ध्यान से सुनता, लेकिन कोई आवाज़ उस गहरी खामोशी को नहीं तोड़ रही थी, मानो किसी मुर्दालोक की खामोशी हो। मैं किसी भी जीवित आवाज़ के लिए तरस रहा था, किसी कीड़े की चहचाहट या किसी पक्षी की पुकार! चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था, बस मेरे कदमों की हल्की, कर्कश आवाज़ ही सुनाई दे रही थी, जब मैं रेत पर दबे पांव धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था।

मैं इस तरह लगभग आधा फर्लांग ही आगे बढ़ा था कि नदी ने बाईं ओर हल्का सा मोड़ ले लिया। इस मोड़ पर पहुँचने से पहले ही मैं रुक गया और ध्यान से सुनने लगा, और यह अच्छा ही हुआ कि मैंने ऐसा किया, क्योंकि अगले ही पल, बिना किसी आवाज़ के और बिना किसी आहट के, बाघ अपने शिकार को पीठ पर उठाए हुए, मात्र 25 गज की दूरी पर प्रकट हो गया।

आश्चर्य दोनों तरफ से था। जाहिर है, बाघ को पता चल गया था कि कोई उसका पीछा कर रहा है, और उसने ठीक से भोजन करने से पहले ही उसे नदी के किनारे किसी दूरदराज स्थान पर ले जाने का फैसला कर लिया था। मेरी ओर से, हालांकि मैं हर कदम पर बहुत सावधानी से चल रहा था, मैंने वास्तव में अभी बाघ से मिलने की उम्मीद नहीं की थी।

हम दोनों की निष्क्रियता क्षणिक ही थी। अपने शिकार को छोड़कर, बाघ ने अपना सिर अगले पैरों के बीच दबा लिया, पिछले पैर उसके नीचे सिमट गए, पूंछ सीधी खड़ी थी, छलांग लगाने के लिए तनी हुई। उसी समय राइफल चली, गोली जानवर को लगी, जैसा कि मुझे बाद में पता

चला, आँखों के बीच सीधी रेखा के केंद्र से ठीक आधा इंच नीचे। लेकिन यह मामूली चूक उस महत्वपूर्ण मस्तिष्क-गोली को चूकने के लिए पर्याप्त थी जो उसे तुरंत वहीं गिरा देती, और एक गड़गड़ाती दहाड़ के साथ वह आगे बढ़ा, अपने शिकार के ऊपर से लड़खड़ाता हुआ और मुझे पकड़ने के अपने अचेतन प्रयासों में आगे बढ़ता रहा। एक तरफ कूदकर मैंने उस धारीदार जानवर पर लगातार गोलियां चलाईं, जब तक कि मैं अपने पैरों के पास तड़पते हुए राक्षस के सामने खाली मैगज़ीन के साथ खड़ा नहीं हो गया, जिसकी चकनाचूर और क्षत-विक्षत खोपड़ी से खून की एक मोटी लाल धारा बह रही थी।

अगले ही पल मुझे घबराहट और कमजोरी महसूस होने लगी। मैं नदी के किनारे पहुँचा, जहाँ एक पल के लिए मैं लगभग बेहोश हो गया। लेकिन मेरे मजबूत शरीर ने मेरा साथ दिया और मैं कल्याणी नदी की मुख्य धारा पर जिन लोगों को छोड़कर गया था, उनके पास वापस लौट सका; उन्होंने मेरी पाँच गोलियों की आवाज सुनी थी, जिससे उन्हें पता चल गया था कि आदमखोर सांप सचमुच मर चुका है।

आपको यह जानकर शायद दिलचस्पी होगी कि हमने उस बाघ की खाल उतारने से पहले और बाद में बारीकी से जांच की, और शव का पोस्टमार्टम भी किया, फिर भी हमें उसमें कोई भी ऐसी शारीरिक या कार्यात्मक गड़बड़ी या विकार नहीं मिला जिससे वह आदमखोर बन गया हो। वास्तव में, वह एक सुगठित वयस्क जानवर था, जो बाहरी जांच से मिले सभी सबूतों के आधार पर, जंगल के जानवरों का शिकार करके अपना प्राकृतिक भोजन प्राप्त कर सकता था, या गांव के मवेशियों को खाकर भी अपना भोजन बना सकता था। लेकिन उसने जानबूझकर इन दोनों प्रकार के भोजन को त्याग दिया और मानव मांस के प्रति अपनी विकृत लालसा को पूरा किया, जिसके परिणामस्वरूप अंततः उसकी मृत्यु हुई, और संयोग से, मेरी भी मृत्यु होते-होते बची। वह मूल रूप से कहां से आया था, यह कोई नहीं जानता था, लेकिन सभी इस बात से खुश थे कि अब वह उन जंगलों में चला गया है जहां से वापसी नहीं है।

4

होसदुर्गा-होलालकेरे नरभक्षी

ओलल्केरे, चितलद्रूग जिले का दूसरा सबसे बड़ा शहर है। चितलद्रूग जिला स्वयं मैसूर राज्य का सबसे उत्तरी जिला है और उत्तर-पूर्व में मद्रास प्रांत के पड़ोसी बेल्लारी डिवीजन और उत्तर-पश्चिम में बंबई प्रांत से सटा हुआ है। यह लंबे समय से बाघों द्वारा आदमखोरी की छिटपुट घटनाओं का केंद्र रहा है, और इस बात के पुख्ता सबूत हैं कि यह इलाका उन बाघों का निवास स्थान है जिन्हें मानव मांस खाने की आदत विरासत में मिली है।

लगभग दस साल पहले इस क्षेत्र में मानव हत्याओं की कई घटनाएं सामने आईं थीं, जिसे मैसूर गजट में विज्ञापन के माध्यम से बिना किसी बड़े खेल लाइसेंस की आवश्यकता के बाघों के मुफ्त शिकार के लिए खोल दिया गया था।

उस समय बैंगलोर में एंगस मैकटेविश और उनकी पत्नी नाम का एक बहुत ही उत्साही दंपति रहता था, जो बाघ, विशेष रूप से आदमखोर बाघ को मारने के लिए उत्सुक थे, और उन्होंने मुझे सुझाव दिया कि हम तीन लोगों का एक दल बनाएं और इस प्रयास में लगभग चार सप्ताह बिताएं।

तदनुसार, हम मैकटेविश की कार में बैंगलोर से चितलद्रूग के लिए रवाना हुए, जो उसी नाम के जिले की राजधानी है, जहां हमने जिला वन अधिकारी से मुलाकात कर हाल ही में हुई हत्याओं और उनके घटित होने के स्थानों के बारे में सभी संभावित जानकारी प्राप्त की।

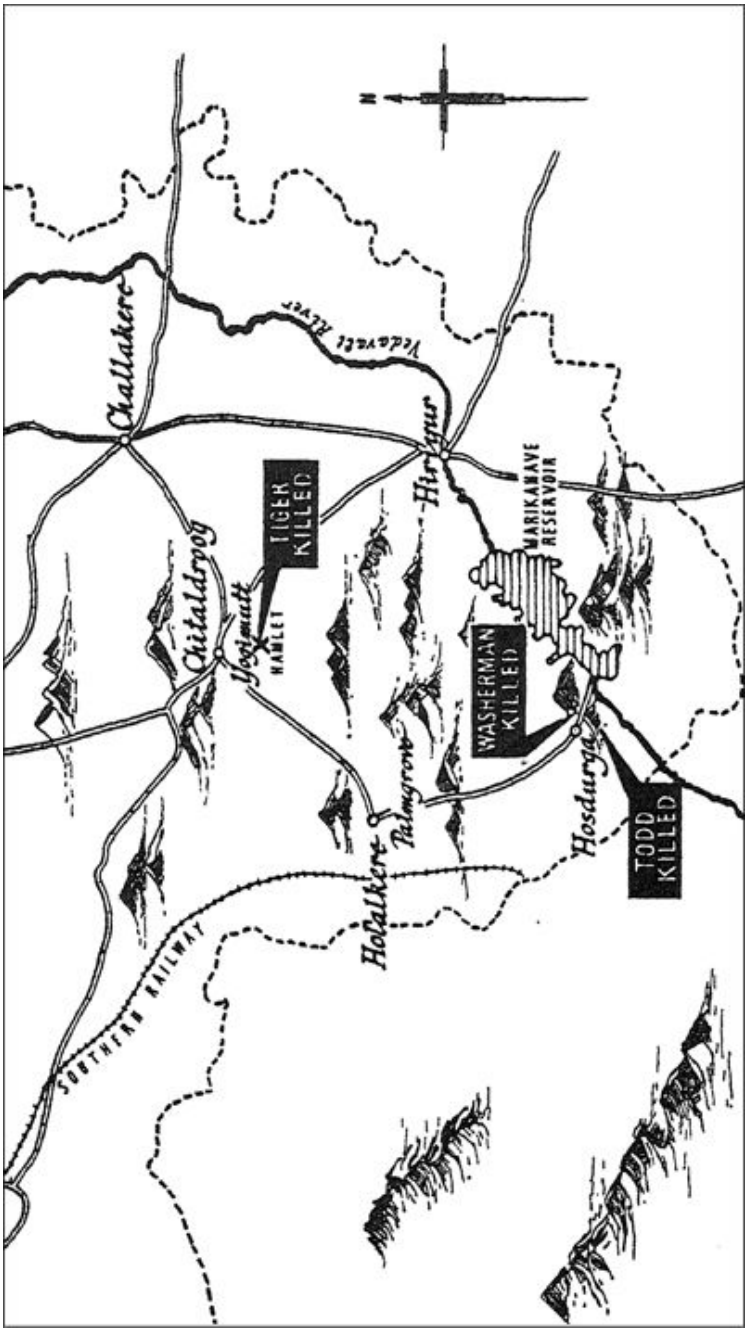

होसदुर्गा-हलालकेरे नरभक्षी की कहानी में उल्लिखित स्थानों का रेखाचित्र मानचित्र।

यह अधिकारी अत्यंत सहयोगी था और उसने हमें बताया कि आदमखोरों का मौजूदा इलाका चितलद्रूग कस्बे के बाहरी इलाके से लेकर दक्षिण-पश्चिम दिशा में लगभग दस मील दूर स्थित होलालकेरे कस्बे तक फैला हुआ है, और वहां से दक्षिण की ओर नौ मील दूर होसदुर्गा नामक छोटे से गांव तक जाता है, जहां हाल ही में दो मानव पीड़ितों को ले जाया गया था।

होसदुर्गा से बाघ की गतिविधियों का मार्ग पूर्व दिशा में पांच मील दूर स्थित विशाल जलाशय मारिकनावे या वाणी विलास (जैसा कि इसे कभी-कभी कहा जाता है) की सीमा तक जाता हुआ बताया गया था। यह एक विशाल झील है जिसमें बड़ी-बड़ी मछलियाँ और मगरमच्छ रहते हैं। इसके बाद बाघ इस झील के किनारे-किनारे उत्तर की ओर लगभग सीधी रेखा में चितलद्रूग कस्बे तक जाता है। उन्होंने हमें आश्वस्त किया कि वास्तव में, बाघ को एक पुराने किले के खंडहरों के बीच देखा गया था, जो योगी मठ नामक एक छोटी पहाड़ी की चोटी पर स्थित है, जो कस्बे के दक्षिण में अचानक ऊपर उठती है।

मुझे पता था कि इस पुराने किले के आसपास के इलाके में लंबे समय से आवारा भालू और तेंदुओं का आना-जाना लगा रहता था, और कभी-कभार बाघ भी दिख जाते थे, लेकिन आगे विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि हम होलालकेरे और होसदुर्गा की ओर बढ़ेंगे, जहां हम स्थानीय रिपोर्टों को सुनने के बाद, परिस्थितियों के अनुसार अपना परिचालन केंद्र स्थापित करेंगे।

अगली सुबह जल्दी निकलकर हम एक घंटे के भीतर होलालकेरे पहुँच गए, जहाँ आदमखोर के दिखने पर हमेशा की तरह घबराहट और डर का माहौल बना रहता है। हमें तरह-तरह की कहानियाँ सुनाई गईं, जिनमें से कुछ तो एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत थीं। इन सभी बातों से हम बस इतना ही समझ पाए कि आदमखोर बहुत चालाक जानवर है, जो हर जगह घूमता है और अप्रत्याशित जगहों पर अचानक प्रकट होने में माहिर है। एक प्रचलित अफवाह यह थी कि वह अक्सर खजूर के विशाल बागान में आता-जाता रहता है, जिसके बीच-बीच में लैंटाना की घनी झाड़ियाँ हैं और जो होलालकेरे से होसदुर्गा जाने वाली सड़क के दोनों किनारों पर फैला हुआ है। यह बागान होलालकेरे के बाहरी इलाके से थोड़ा आगे शुरू होता है। हमें बताया गया कि उसके पदचिह्न लगभग हर दिन सड़क पर देखे जा सकते हैं, और हमें सलाह दी गई कि हम रात भर दोनों जगहों को जोड़ने वाले नौ मील के रास्ते पर गाड़ी चलाते रहें, क्योंकि हम निश्चित रूप से आदमखोर से मिलेंगे, खासकर खजूर के बागान से गुजरते समय।

तदनुसार, हम उस रात 7 बजे रवाना हुए और होलालकेरे को एक मील पीछे छोड़ते ही ताड़ के पेड़ों के ऊंचे, फैले हुए पत्ते दिखाई देने लगे। उनके नुकीले तने घनी झाड़ियों से पूरी तरह से छिपे हुए थे, जो नीचे से लैंटाना की घनी और निरंतर फैली हुई वनस्पति से ढके हुए थे। इस बिंदु से हम बहुत धीमी गति से आगे बढ़े, चारों दिशाओं में स्पॉटलाइट चमकाते हुए, जबकि चमकती हुई हेडलाइट्स हमारे सामने सड़क को चीर रही थीं। इस तरह आधा मील चलने के बाद, हमें एक काले, बालों वाले आदमी जैसा दिखने वाला व्यक्ति दिखाई दिया, जो हमारे दाईं ओर लगभग 15 फीट ऊंचे ताड़ के पेड़ पर चढ़ गया था और नुकीले पत्तों के बीच लटके हुए छोटे, पीले अधपके खजूर के गुच्छों को निगलने में व्यस्त था।

हम पास पहुँचे और गाड़ी रोक दी, तभी एक अजनबी नीचे उतरने लगा। आधा उतरकर वह रुक गया और हमारी तरफ देखने लगा। मेरे साथियों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उनका 'अजनबी' खजूर की दावत में खलल पड़ने से परेशान एक सुस्त भालू था। मुझे शुरू से ही पता था कि यह एक भालू है, लेकिन मैं चाहता था कि मेरे साथी खुद इसे देखें। श्रीमती मैकटेविश ने अपनी .3005 स्प्रिंग फील्ड राइफल से गाड़ी से ही सटीक निशाना लगाया और वह जानवर ज़ोरदार आवाज़ के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा।

फिर हम बिना कुछ देखे होसदुर्गा की ओर चल पड़े, होलालकेरे लौट आए, और फिर दो बार आगे-पीछे दोनों दिशाओं में चक्कर लगाए, लेकिन अपनी अंतिम वापसी यात्रा में भालू के शव के पास एक लकड़बग्घे के अलावा कुछ नहीं दिखा। इसलिए, हमें डर था कि अगर हमने शव को

वहाँ और अधिक देर तक छोड़ दिया तो वह नष्ट हो जाएगा, इसलिए हम तीनों ने बड़ी मुश्किल से उस भारी शरीर को मैक की कार के इंजन और आगे के मडगार्ड के बीच की जगह पर उठाया। भालू के बाल लंबे होते हैं, लेकिन चिकने होते हैं, और जानवर के किसी भी हिस्से को मजबूती से पकड़ना बहुत मुश्किल था, क्योंकि जैसे ही उसका वजन उठाया जाता था, वह उंगलियों से फिसलने लगता था।

अगली सुबह हमने होलालकेरे स्थित ट्रैवलर्स बंगलो में चाय पी, साथ ही गरमागरम दलिया और बेकन-अंडे भी खाए, जिन्हें श्रीमती मैकटेविश ने बेहतरीन तरीके से तैयार किया था। भालू की खाल उतारने के बाद हमने होसदुर्गा जाने का फैसला किया ताकि वहां हुई दो हालिया मानव हत्याओं के बारे में प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त कर सकें।

दिन के उजाले में खजूर के बागान से गुजरने से हमें चारों ओर फैली घनी, हर तरफ फैली लैंटाना की झाड़ियों की सघनता का पूरी तरह से एहसास हुआ, जिसकी कल्पना पिछली रात करना असंभव था, और साथ ही यह भी कि ऐसी जगह पर बाघ को देखने या उसका शिकार करने की कितनी कम उम्मीद थी।

होसदुर्गा में हमें पिछली दो त्रासदियों की कहानी सुनाई गई। पहली घटना लगभग तीन सप्ताह पहले घटी थी। ग्यारह साल की एक लड़की, जो संयोगवश तालुक के अमिलदार की दूर की रिश्तेदार थी, अपने माता-पिता के साथ गाँव के बाहरी इलाके में एक घर में रहती थी। रात 8 बजे वह शायद शौच के लिए बाहर गई थी, और उसके बाद फिर कभी नहीं दिखी, न ही उसकी कोई चीख या आवाज सुनाई दी जिससे उसके जाने का पता चल सके। उसके न लौटने से चिंतित होकर उसके माता-पिता लालटेन लेकर उसके पीछे गए, लेकिन वह कहीं नहीं दिखी, न ही जमीन पर उसके कोई निशान मिले। घबराकर उन्होंने गाँव वालों को जगाया, और लगभग दो घंटे में लगभग पचास लोगों का एक दल, लालटेन, लाठी, कुल्हाड़ी और दो बंदूकों से लैस होकर लड़की की तलाश में निकला। लेकिन उस रात के घने अंधेरे में उन्हें कुछ भी नहीं मिला। अगले दिन और प्रयास किए गए, और आधा मील दूर कंटीली झाड़ियों में फंसे हुए फटे हुए अंडरवियर के कुछ टुकड़े मिले। उस छोटी बच्ची के अवशेषों का कभी पता नहीं चल सका।

दूसरी हत्या बारह दिन पहले घटी थी। मारिकानावे जलाशय पूर्व दिशा में लगभग पाँच मील दूर स्थित था। जलाशय के किनारे से लगभग आधे रास्ते में, और वहाँ जाने वाले रास्ते को पार करते हुए, एक छोटी सी धारा थी जो रास्ते के किनारे एक छोटा लेकिन काफी गहरा कुंड बनाती थी। इस कुंड का उपयोग गाँव के दो भाई करते थे, जो पेशेवर धोबी थे। वे कपड़े धोने के लिए इस सुविधाजनक स्थान का उपयोग करते थे। उनके पास तीन गधे थे, जिनका उपयोग वे कपड़े कुंड तक लाने-ले जाने के लिए करते थे। उस शाम लगभग 5 बजे उन्होंने अपना काम समाप्त कर लिया, गधों पर कपड़े लाद दिए और घर लौट रहे थे। ये जानवर, एक तरह से, उनके एकमात्र सामान थे, इसलिए उनकी विशेष देखभाल की जाती थी। एक भाई आगे चलता था, उसके पीछे तीन गधे कतार में होते थे, और दूसरा भाई सबसे पीछे रहता था। होसदुर्गा से एक मील दूर ही थे कि एक बाघ छिपकर निकला, आगे चल रहे व्यक्ति को पकड़ लिया और उसके कुछ बोल पाने से पहले ही उसे लेकर गायब हो गया। पीछे चल रहे उसके भाई ने यह सब देखकर अपना आपा खो दिया और उस तालाब की ओर भागा जिसे वे अभी-अभी छोड़कर आए थे।

जब रात के 8 बज गए और न तो गधे और न ही भाई होसदुर्गा पहुंचे, तो दोनों पत्नियां घबरा गईं और पूरे गांव में हलचल मचा दी। रात 10 बजे तक लगभग 36 लोगों का एक दूसरा तलाशी दल, लालटेन, लाठियों और दो बंदूकों से लैस होकर, खोज में जुट गया।

कुछ देर बाद उन्हें लापता हुए तीन गधों में से एक गधा रास्ते के बीचोंबीच आराम से बैठा

मिला, उसके पीठ पर कपड़ों का गट्ठा अभी भी बंधा हुआ था। आगे चलकर, तालाब से एक फर्लांग पहले, उन्हें वह आदमी मिला जो दुम दबाकर भाग गया था। अपने भाई के साथ जो हुआ था उसे देखकर जंगल में अकेला पाकर वह डर के मारे बेहोश हो गया था और बुरी तरह गिर पड़ा था। उसके मुँह से झाग निकल रहा था और उसकी आँखें ऊपर की ओर उठी हुई थीं। लगभग एक घंटे बाद वह इतनी धीमी आवाज़ में भयानक खबर सुनाने की हालत में आया। उसके साथ दल फिर उस जगह लौट आया जहाँ हमला हुआ था, और लापता आदमी को खोजने का एक अधूरा प्रयास किया गया। स्वाभाविक रूप से यह असफल रहा और अगले दिन लौटने का निर्णय लिया गया।

सुबह होते ही दल वापस लौट आया, जहाँ गहन तलाशी के बाद फटे-पुराने कपड़ों के टुकड़े, खून के निशान और अंत में उस दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति के अवशेष मिले, जिसका तीन-चौथाई हिस्सा रात भर में खा लिया गया था। उसका केवल सिर, दो भुजाएँ, एक पूरा पैर और बचा हुआ एक पंजा ही रह गया था, जिन्हें विधिवत इकट्ठा करके अंतिम संस्कार के लिए होसदुर्गा वापस लाया गया। रास्ते से एक फर्लांग की दूरी पर बचे हुए दो गधे आराम से चर रहे थे।

अब एक और खबर सामने आई कि चार दिन पहले दोपहर करीब 3 बजे होस्दुर्गा से तीन मील दूर होलालकेरे जा रही बैलगाड़ी पर एक बाघ ने हमला कर दिया था। बैलों से लदी दो जोत वाली बैलगाड़ी पर सवार होकर बैल भाग रहे थे। इस घटना में बैलगाड़ी चालक कूदकर भाग निकला और जंगल से होकर घुमावदार रास्ते से गांव लौट आया। अगली सुबह जब एक दल वहां पहुंचा तो उन्होंने देखा कि बैलगाड़ी, जिसमें एक बैल अभी भी जुता हुआ था, सड़क किनारे खड़ी है। उससे लगभग 50 गज की दूरी पर दूसरे बैल का बचा हुआ हिस्सा पड़ा था, जिसे बाघ ने मार डाला था, जुए से छुड़ाकर इतनी दूर तक घसीट कर लाया था और फिर अपने दुर्भाग्यपूर्ण साथी के सामने ही खा गया था।

इन सभी खबरों के साथ-साथ हमें यह भी बताया गया कि दो शिकारियों का एक प्रतिद्वंद्वी दल होसदुर्गा गांव के उस छोटे से एक कमरे वाले खानाबदोश बंगले पर कब्जा कर चुका था, जिस पर गांव गर्व करता था, और वे लगभग पांच दिन पहले कार से वहां पहुंचे थे।

इससे हमारी योजना में काफी बाधा आई, क्योंकि अन्य शिकारियों के हमसे पहले ही शिकार शुरू कर देने के बाद आदमखोर को गोली मारने का प्रयास करना उचित नहीं होता। इसके अलावा, 'ज्यादा लोग मिलकर काम बिगाड़ देते हैं' वाली पुरानी कहावत के अनुसार, बहुत सारे शिकारी आमतौर पर अपने शिकार को डराकर भगाने के अलावा कुछ हासिल नहीं कर पाते, बशर्ते कि वे इस बीच गलती से एक-दूसरे को गोली न मार दें।

जब तक हमने यह सारी जानकारी जुटाई, तब तक लगभग दस बज चुके थे और हम होलालकेरे लौटने की सलाह पर चर्चा कर ही रहे थे कि तभी वे दोनों शिकारी वहाँ आ गए। वे दोनों युवा थे और अनुभवहीन होने के बावजूद शिकार के प्रति बेहद उत्सुक थे। अपना परिचय देते हुए उन्होंने वही सारी खबरें दोहराईं जो हम पहले ही सुन चुके थे, और बताया कि उन्होंने पिछले दो रातों से उसी जगह के आसपास भैंस का चारा बाँध रखा था जहाँ धोबी को भैंस ने खा लिया था। पहली रात कुछ नहीं हुआ था और उनके कुलियों का दल उस सुबह यह पता लगाने के लिए निकला था कि पिछली रात चारे का क्या हाल रहा।

हमने इन सज्जनों को शुभकामनाएं दीं और उनसे कहा कि हम होलालकेरे लौट जाएंगे ताकि उनके रास्ते में बाधा न बनें। लेकिन वे हमारी बात मानने को तैयार नहीं थे, उन्होंने हमारे इस कदम को व्यक्तिगत अपमान समझा और हमसे अगली सुबह तक बंगले में उनके साथ रहने की विनती की, क्योंकि उन्होंने बताया कि उन्हें बेल्लारी लौटना है, जहां से वे आए थे।

इन दोस्ताना बातचीत के बीच, उनके कुछ मज़दूर वहाँ पहुँचे और बताया कि पिछली रात चारा मारा गया था और आधा खाया जा चुका था। वे दोनों लड़के आतिथ्य सत्कार की मिसाल थे और उन्होंने हमें अपने चारे के पास बैठकर खाने का प्रस्ताव दिया। ज़ाहिर है, हमने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

दोपहर का भोजन करने के बाद, हम उनके साथ शिकार देखने और हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए निकल पड़े। हमने पाया कि लड़कों ने पत्थरों से भरे क्षेत्र में चारा बाँधकर नासमझी की थी। इसके अलावा, उन्होंने जानवर को ठीक से नहीं बाँधा था, जिसके परिणामस्वरूप बाघ ने रस्सी तोड़ दी और अपने शिकार को एक चट्टान के पीछे घसीटते हुए ले गया, और उस पेड़ से पूरी तरह ओझल कर दिया जहाँ उन्होंने अपना मचान बनाने का इरादा किया था।

जिस स्थान पर शिकार को घसीटकर लाया गया था, वहाँ तक आदमखोर के पहुँचने के दो संभावित रास्ते थे, यदि वास्तव में किसी आदमखोर ने ही उसे मारा था; पहला उस रास्ते की दिशा से जहाँ 'धोबी' (जंगली भालू) को मारा गया था, और दूसरा उस पहाड़ी से जो शिकार स्थल से लगभग एक चौथाई मील दक्षिण-पूर्व में स्थित थी। आसपास पड़े कई पत्थरों में से दो अलग-अलग पत्थर इस प्रकार स्थित थे कि उनसे इन संभावित रास्तों के साथ-साथ शिकार और एक-दूसरे का दृश्य भी दिखाई देता था।

इसलिए दोनों खिलाड़ियों ने इन पत्थरों के पीछे-पीछे बैठने का फैसला किया। मैंने सुझाव दिया कि चूंकि उनका दुश्मन आदमखोर भी हो सकता है, इसलिए बेहतर होगा कि वे कांटों की आड़ में पत्थरों के ऊपर बैठें। हालांकि, वे इस बात से सहमत नहीं हुए और उन्होंने पत्थरों की ओर पीठ करके जमीन पर बैठने का फैसला किया।

कुछ कंटीली झाड़ियों के पीछे उन्हें छुपाकर, हम शाम चार बजे तक इन बहादुर लड़कों को वहीं छोड़कर बंगले की ओर लौट गए। मैं उनकी सुरक्षा को लेकर चिंतित था और ज़रूरत पड़ने पर मदद करने के लिए कुछ देर पास ही रुकना चाहता था, लेकिन अंत में मैंने सोचा कि मेरी मौजूदगी से बाघ डरकर भाग सकता है और मेरा इरादा गलत समझा जा सकता है। उस दोपहर हमें यह बिल्कुल भी पता नहीं था कि हमारी शुभ रात्रि की शुभकामनाएँ ही उन बहादुर लड़कों के लिए हमारे दल के आखिरी शब्द होंगे।

हमने शाम बंगले में चाय पीते, सिगरेट पीते और बातें करते हुए बिताई, साथ ही अतिरिक्त जानकारी जुटाने के लिए यथासंभव ग्रामीणों से बातचीत भी की। दक्षिण-पश्चिम से तेज़ हवा चल रही थी, इसलिए एक मील से अधिक दूर मौजूद दोनों लड़कों द्वारा चलाई गई राइफल की गोली की आवाज़ सुनना असंभव था। हमने जल्दी खाना खा लिया और मैकटेविश और उनकी पत्नी सो गए। हालांकि, मैंने बरामदे में बैठकर जंगल की आवाज़ें सुनने का फैसला किया।

लगभग ग्यारह बज रहे थे, गाँव पिछले एक घंटे से शांत था और मैं सोने की सोच ही रहा था कि तभी मुझे एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी, जिसे मैंने तुरंत पहचान लिया कि दूर से आती हुई दौड़ती-लड़खड़ाती कदमों की आहट थी। यह महसूस करते हुए कि उस शाम पहले मुझे जो आने वाली मुसीबत का डर सता रहा था, वह गलत नहीं था, मैंने जल्दी से अपनी राइफल और टॉर्च उठाई और दौड़ने वाले से मिलने के लिए बाहर भागा।

पता चला कि वह इन्स था, दोनों खिलाड़ियों में से बड़ा। उसके कपड़े फटे हुए थे, वह पसीने से लथपथ था और एक शराबी की तरह लड़खड़ा रहा था, आगे बढ़ते हुए लगातार पीछे देख रहा था। मैंने उसे कंधे से सहारा देकर पूछा कि उसके साथी का क्या हुआ। बेचारा लड़का इतना थका हुआ था कि मुश्किल से बोल पा रहा था, लेकिन आखिरकार हांफते हुए उसने भयानक शब्द कहे,

"टाइगर ने उसे पकड़ लिया - उसे उठाकर ले गया, ऊह! ऊह!" और एक बच्चे की तरह मेरे कंधे पर रोने लगा।

मैं उसे जल्दी से बंगले में ले गया, जहाँ मैंने मैकटेविश और उसकी पत्नी को जगाया। हमने इन्स को ब्रांडी की तेज़ खुराक दी, उसे लिटाया और दो कंबल ओढ़ा दिए, क्योंकि वह प्रतिक्रिया के कारण बुरी तरह कांप रहा था। फिर, श्रीमती मैकटेविश उसके हाथों को सहलाते हुए, हम बेसब्री से उसकी कहानी सुनने का इंतजार करने लगे, और वाकई वह एक असाधारण कहानी थी।

वह पगडंडी से आने वाले रास्ते पर नज़र रखने वाली चट्टान के नीचे बैठा था, जबकि उसका साथी टॉड, दूसरी चट्टान के पीछे, छोटी पहाड़ी से आने वाले रास्ते पर नज़र रख रहा था। अंधेरा होने से कुछ देर पहले, इन्स को लगा कि उसने टॉड से काफी दूर झाड़ियों में एक लंबी, लाल रंग की वस्तु को हिलते हुए देखा है, जहाँ पहाड़ी से ज़मीन धीरे-धीरे नीचे की ओर ढलान पर जाती थी। ज़ाहिर है, उसके पास टॉड को यह बताने का कोई साधन नहीं था कि उसने क्या देखा है, और वह जानता था कि टॉड को इसके बारे में पता नहीं था, क्योंकि वह इलाका उसकी नज़र से उस चट्टान के नीचे छिपा हुआ था जिसके नीचे वह (टॉड) बैठा था। इन्स झाड़ियों को देखता रहा, लेकिन उसके बाद उसे कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

फिर अंधेरा छा गया और रात के लगभग 10 बजे तक घंटे थका देने वाले ढंग से बीतते गए। छाया में शिकार दिखाई नहीं दे रहा था, हालांकि तारों की हल्की रोशनी से इन्स अपने आस-पास देख पा रहा था। अचानक इन्स को एक हल्की सी धमक, घसीटने की हल्की सी आवाज और फिर हड्डियों के टूटने की स्पष्ट आवाज सुनाई दी। यह अनुमान लगाते हुए कि बाघ लौट आया है और अपने शिकार को खा रहा है, इन्स ने अपने साथी को गोली चलाने का मौका देने के लिए कुछ देर इंतजार किया, क्योंकि वह जानता था कि शिकार टॉड से लगभग बराबर दूरी पर था, बल्कि शायद थोड़ा पास ही था, क्योंकि टॉड भी बाघ के खाने की आवाज सुन रहा होगा।

हालांकि, कुछ नहीं हुआ, और किसी को पता नहीं चलेगा कि टॉड निष्क्रिय क्यों रहा।

फिर इन्स के मन में ख्याल आया कि शायद उसका साथी सो गया है, और यह सोचकर उसने खुद गोली चलाने का फैसला किया। उसने अपनी राइफल को शिकार की दिशा में तानकर राइफल-टॉर्च का बटन दबाया, और तेज रोशनी से तुरंत एक विशाल बाघ भैंस के अवशेषों को खाते हुए दिखाई दिया।

उसी समय टॉड की चीख सुनाई दी, उस दिशा से एक भयानक गुर्राहट आई, हल्की सी खड़खड़ाहट हुई, एक और दबी हुई चीख सुनाई दी, और फिर सन्नाटा छा गया। इस बीच, इन्स ने अपनी राइफल की टॉर्च की रोशनी बाघ और उसके शिकार से हटाकर उस चट्टान पर डाल दी, जिसके नीचे टॉड उस शाम पहले बैठा था। बाघ की आखिरी झलक उसे तब मिली जब वह भैंस के अवशेषों से दूर झाड़ियों में छिपने के लिए भागा।

टॉड का उसे कोई अता-पता नहीं था। अपने दोस्त को बार-बार पुकारते हुए, इन्स अंधाधुंध उस जगह की ओर भागा जहाँ वह बैठा था। टॉड की राइफल, पानी की बोतल और आधा खाली सैंडविच का पैकेट ज़मीन पर पड़ा था, लेकिन वह कहीं नज़र नहीं आया। यह जानकर कि उसके दोस्त को आदमखोर भालू ले गया है, इन्स बुरी तरह घबरा गया और उसे खोजने के लिए जंगल में इधर-उधर भटकने लगा, लेकिन वह रास्ता ही भटक गया। शोक से पागल और हर मिनट और भी ज़्यादा हताश होता जा रहा, वह इधर-उधर भटकता रहा, तभी किस्मत से वह होसदुर्गा जाने वाले रास्ते पर पहुँच गया, जिस पर वह पूरी तेज़ी से दौड़ा था।

इन्स की कहानी से अब यह स्पष्ट हो गया था कि हमें दो बाघों का सामना करना था: एक कुख्यात पशु-चोर और दूसरा उससे भी अधिक खूंखार आदमखोर। संभवतः वे नर और मादा का जोड़ा थे, हालाँकि ऐसा होना ज़रूरी नहीं था। मैंने अपने जीवन में कभी ऐसा असामान्य संयोजन नहीं देखा था। इस संभावना को खारिज किया जा सकता है कि वे एक ही झुंड के दो वयस्क शावक थे, जिनमें से एक में आदमखोर प्रवृत्ति विकसित हो गई थी, क्योंकि इन्स ने पशु-चोर बाघ का वर्णन 'विशाल बाघ' के रूप में किया था और कहा था कि वह बिल्कुल भी अधेड़ नहीं था। आदमखोर बाघ को किसी ने नहीं देखा था।

पंद्रह मिनट के भीतर हमने गाँव को जगाया और लगभग बीस अनिच्छुक सहायकों को इकट्ठा किया, हालाँकि दोनों पिस्तौल के मालिक लालटेन, लाठियों, डंडों और माचिसों के साथ फिर से आगे आ गए थे। श्रीमती मैकटेविश ने भी आने की ज़िद की, और इन्स भी, हालाँकि वह लगभग थक चुका था। खोज दल, मैकटेविश और मैं, जल्द ही उस चट्टान पर पहुँच गए जहाँ से टॉड को अगवा किया गया था।

चारों ओर खोजबीन करते हुए, थोड़ी ही देर में हमें उसके बाएं पैर से गिरा हुआ एक अजीब सा रबर के तले वाला जूता मिला। जहाँ से वह जूता मिला, वहाँ से हमने अनुमान लगाया कि बाघ अपने शिकार को लेकर उस छोटी पहाड़ी की ओर जा रहा था जहाँ से वह आया था। पूरी तेज़ी से आगे बढ़ते हुए, हम आखिरकार उस जगह पहुँचे जहाँ जानवर ने सबसे पहले अपने शिकार को रखा था। वहाँ से, शायद इन्स के चिल्लाने और छटपटाने से मचे शोर से घबराकर, वह आगे बढ़ गया था। हमेशा की तरह, अब खून के निशान दिखने लगे, जो हमें पहाड़ी की तलहटी तक ले गए, और फिर वह दाहिनी ओर उस निशान का पीछा करने लगा।

मैकटेविश और मैं, अप्रत्याशित हमले के डर से एक-दूसरे के करीब रहते हुए, अपनी खोज में लगे रहे, लेकिन सुबह 3:30 बजे तक हमें बेचारे फ्रेड टॉड का बचा हुआ हिस्सा मिला। बाघ उसका लगभग आधा हिस्सा खा चुका था, और यह एक भयानक दृश्य था। अब इन्स की हालत बिगड़ गई, उसे उल्टी आने लगी, वह रोने लगा और अंत में गिर पड़ा। उस भयानक दिन सुबह 6 बजे के बाद ही हम इन्स के अवशेषों को, जो अब पूरी तरह से लाचार हो चुका था, होसदुर्गा ले जा पाए।

हमने फ्रेड टॉड के बचे हुए हिस्से को मैकटेविश की कार में रखा, जबकि मैं इन्स को उसके बेचारे दोस्त की पुरानी कार में बिठाकर ले गया, और हम सुबह 9 बजे तक चिटलड्रूग पहुँच गए। यहाँ इन्स को स्थानीय निधि अस्पताल में भर्ती कराया गया, और हमने दिन का अधिकांश समय इस तरह की घटना के बाद होने वाली उबाऊ आधिकारिक पूछताछ में बिताया, इसलिए सूर्यास्त होने से पहले हम होसदुर्गा और एक बिल्कुल खाली, शांत खानाबदोशों के बंगले में नहीं पहुँचे। उस रात हम दुखी और निराश होकर सो गए, लेकिन बदला लेने के दृढ़ निश्चय के साथ। श्रीमती मैकटेविश ने विशेष रूप से पिछले बीस घंटों के मानसिक तनाव को वीरतापूर्वक सहन किया था, और पूरे समय उन्होंने हमारी बहुत मदद की।

अगली सुबह तड़के हम त्रासदी स्थल पर वापस पहुँच गए, जहाँ हमने अगले तीन-चार घंटे सबूतों को इकट्ठा करने में बिताए। ज़मीन सख्त थी, क्योंकि कई हफ़्तों से बारिश नहीं हुई थी, और आदमखोर के पैरों के निशान ढूँढना असंभव था जिससे हम उसका आकार और लिंग निर्धारित कर सकें। इन्स द्वारा मवेशी-हत्यारे के वर्णन से हमें लगा कि वह नर था। इसलिए, पूरी संभावना है कि आदमखोर मादा थी, हालाँकि, जैसा कि मैंने पहले कहा है, यह ज़रूरी नहीं था।

आस-पास कुछ भी न मिलने पर, हमने एक बार फिर उस जगह का पीछा किया जहाँ हमें टॉड का शव मिला था, लेकिन हत्यारे के पैरों के निशान कहीं भी नज़र नहीं आए। हमने और भी आगे

देखने की कोशिश की, लेकिन कठोर ज़मीन ने अपना राज़ अच्छी तरह छिपा रखा था, और हमारे तमाम प्रयासों के बावजूद, उस नरभक्षी का आकार और लिंग रहस्य ही बना रहा।

चितलद्रूग में हमारी अनुपस्थिति के दौरान, गिद्धों ने भैंसों के शिकार के बचे-खुचे अवशेषों को पूरी तरह से नष्ट कर दिया था। अब हमें अपने अभियान को नए सिरे से शुरू करना पड़ा।

उचित विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि धोबी की हत्या के मूल मार्ग के निकट ही भैंस के लिए एक ताजा चारा रखा जाए। मैकटेविश उस पर बैठ सकता था, जबकि मैंने टॉड के अपहरण स्थल के निकट एक चट्टान पर लेटने का निश्चय किया। हमारी योजना कुछ इस प्रकार थी: यदि दोनों बाघ एक साथ चलते, तो भैंसा चुराने वाला बाघ चारे को मार डालता, और संभवतः दूसरा बाघ, हालांकि वह आदमखोर था, दावत के लालच का विरोध नहीं कर पाता और वह भी उसमें शामिल हो जाता। इससे मैक को निशाना लगाने का अवसर मिल जाता। दूसरी ओर, यदि वह शामिल नहीं भी होता, तो भी आदमखोर बाघ संभवतः आसपास ही होता; और चूंकि जिस चट्टान पर मैं लेटने वाला था वह टीले के ठीक सामने और पिछली बार उसके आने की दिशा में थी, इसलिए मुझे उम्मीद थी कि यदि वह मेरे पास से गुजरे तो मैं उसे सुन और देख सकूंगा।

मैक को जिस रास्ते पर बैठना था, वहाँ कोई पेड़ नहीं थे, इसलिए हमने ज़मीन में एक उथला गड्ढा खोदकर सुरक्षा की समस्या का समाधान किया। हमने उस गड्ढे के ऊपर एक उल्टा गन्ने का तवा रखने का फैसला किया। ये तवे बड़ी-बड़ी तश्तरियों जैसे दिखते हैं, जिनका व्यास लगभग छह से आठ फीट और गहराई अठारह इंच होती है। ये लगभग एक-आठवें इंच मोटे लोहे की चादर से बने होते हैं। इनका उपयोग पूरे भारत में गन्ने की डंडियों से रस निकालने के लिए किया जाता है, जिसे पहले प्रेस से कुचलकर इकट्ठा किया जाता है। इस रस को तवे में उबाला जाता है और यह सुनहरे भूरे रंग का तरल बन जाता है। फिर इसे ठंडा होने और जमने दिया जाता है, जिसके बाद इसे चार इंच के चौकोर टुकड़ों में काटकर गुड़ या भूरी चीनी बनाई जाती है। दक्षिण भारतीय गाँवों में गुड़ ही चीनी का एकमात्र रूप है, क्योंकि वहाँ सफेद चीनी का कोई नामोनिशान नहीं है। लगभग हर उपजाऊ क्षेत्र के गाँव में गन्ने के बागान होते हैं, जिनमें गन्ने के तवे भी होते हैं। हमने होसदुर्गा में इनमें से कुछ तवे पहले ही देख लिए थे।

कुछ ही देर में हम गाँव से वापस आ गए, हमारे साथ एक तख़्ता था जिसे आधा दर्जन आदमी उठाकर लाए थे, एक तिरपाल का टुकड़ा था जिसे मैक अपनी कार में लाया था, और रात भर रुकने के लिए ज़रूरी बाकी सामान भी था। हमने इस तख़्ते को अपने खोदे हुए उथले गड्ढे के ऊपर उल्टा करके रख दिया और इसे चार जगहों से पत्थरों से ज़मीन से ऊपर उठा दिया, ताकि देखने और हवा आने-जाने के लिए छह इंच का गैप रहे और गोली चलाने के लिए जगह मिल सके। तख़्ते के ऊपर हमने तिरपाल बिछा दिया, फिर उसे उथले गड्ढे से खोदी गई रेत की कुछ बूंदों से ढक दिया, और कुछ कांटे, कटी हुई झाड़ियाँ, पत्ते आदि भी डाल दिए ताकि यह असली लगे। हमने सारा काम अच्छे से किया, ताकि दूर से देखने पर तख़्ता ज़मीन पर एक छोटे से टीले से ज़्यादा कुछ न लगे।

मैक के अंदर जाने ही वाला था कि उसकी पत्नी ने उसके साथ बैठने की ज़िद कर दी, जिससे एक और पेचीदगी खड़ी हो गई। हम दोनों ने उसे समझाने की पूरी कोशिश की, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रही। आखिरकार, मैंने और बाकी आदमियों ने एक तरफ से तवा उठाया, मैक परिवार को अंदर घुसने दिया और फिर सारा इंतज़ाम ठीक किया। असल में, मुझे अंदर काफी सुरक्षित महसूस हो रहा था, क्योंकि उल्टा तवा एक तरह से कवच का काम कर रहा था। फिर चारा बांधा गया और जिस चट्टान पर मुझे लेटना था, वहाँ जाने से पहले यह तय हुआ कि ज़रूरत

पड़ने पर हम एक-दूसरे को तीन तेज़ सीटी बजाकर संकेत देंगे।

मैं शाम 5 बजे तक अपनी चट्टान पर चढ़ गया, आराम से बैठ गया और आगे की घटनाओं का इंतजार करने लगा। मुझे याद है कि दिन भर सीधी धूप में रहने के कारण पत्थर असहनीय रूप से गर्म हो गया था।

जैसे-जैसे घंटे बीतते गए, सन्नाटा पसरा रहा और जंगल में जीवन का कोई नामोनिशान नहीं था। यहाँ तक कि जानी-पहचानी चिड़िया, जो उस समय स्वागत योग्य लगती थी, भी गायब थी। सन्नाटा गहरा और पूर्ण था, और तारे अजीब सी खामोशी में टिमटिमा रहे थे। मैं बेचारे फ्रेड टॉड और उसके साथ जो कुछ हुआ होगा, उसके बारे में सोचने लगा।

आधी रात बीत गई, तभी अचानक मुझे एक तेज़ सीटी की आवाज़ सुनाई दी, जो दो बार दोहराई गई। यह मैक का तय किया हुआ संकेत था, और यह सोचकर कि उसे क्या हुआ है, मैं चट्टान से नीचे उतरा, टॉर्च जलाई और सावधानी से उस जगह की ओर बढ़ा जहाँ वह और उसकी पत्नी मौजूद थे। मैंने उन्हें भैंस के चारे के पास खड़े पाया, जो ज़िंदा था और उसे छुआ भी नहीं गया था। एक तरफ वह बर्तन पड़ा था जो बाहर निकलते समय पलट गया था, और उन्होंने मुझे यही बताया।

आधी रात तक उन्होंने कुछ भी देखा या सुना नहीं था, तभी श्रीमती मैक, जो भैंस की ओर मुंह करके अपने पति के ठीक पीछे बैठी थीं, ने अपने पीछे एक हल्की सी आह या कराहने की आवाज सुनी। धीरे-धीरे चारों ओर देखते हुए और गड्ढे और जमीन के बीच की जगह से देखने की कोशिश करते हुए, उन्होंने पहले तो कुछ भी नहीं देखा। फिर उन्होंने छह फीट की दूरी पर एक चट्टान देखी, जो बाथटब जितनी बड़ी लग रही थी। उन्हें याद आया कि शाम को पहले वहां कोई चट्टान नहीं थी, इसलिए उन्होंने अपना सिर उस छेद के पास ले जाकर देखा और एक बाघ को जमीन पर पेट के बल लेटे हुए, अपने अगले पैर आगे फैलाए हुए, अपनी निगाहें उन पर गड़ाए हुए देखकर भयभीत हो गईं। हैरानी और डर से उनकी सांस अटक गई, लेकिन उन्होंने उसे दबाते हुए अपने पति का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की। मैक ने अपनी जगह से कुछ भी नहीं देखा था, और उनके लिए पीछे मुड़ना लगभग असंभव था, क्योंकि वह गड्ढा, जो मूल रूप से एक व्यक्ति के लिए खोदा गया था, दो लोगों के हिलने-डुलने के लिए बहुत छोटा था।

उसके लगातार इशारों से यह भांपते हुए कि कुछ असामान्य हो रहा है, मैक ने खुद को घुमाने का दृढ़ प्रयास किया, जिसके परिणामस्वरूप उसकी फैली हुई राइफल का मुंह बर्तन के किनारे से टकराया और हल्की सी धातु की खनक सुनाई दी। एक ज़ोरदार 'वूफ़' की आवाज़ आई और धड़ाम से बाघ उस उपकरण के ऊपर से कूद गया। यह जानते हुए कि वे पकड़े जा चुके हैं और अब और देर तक वहाँ रहने का कोई फायदा नहीं है, उन्होंने तय किए गए संकेत से मुझे बुलाया।

वहां ज्यादा देर रुकना बेकार था, इसलिए हमने होसदुर्गा स्थित बंगले में लौटने का फैसला किया और चारा वहीं रात के लिए छोड़ दिया, ताकि किसी अन्य योजना पर निर्णय लिया जा सके।

अगली सुबह मैंने कुछ आदमियों को चारा लाने के लिए भेजा। वे यह चौंकाने वाली खबर लेकर लौटे कि जानवर को मार दिया गया था और पूरी तरह खा लिया गया था। तुरंत मौके पर पहुँचकर हमने पाया कि उनकी बात सच थी। हमारे चारे का लगभग कुछ भी नहीं बचा था, सिवाय उसके सिर और खुरों के। ज़मीन की बारीकी से जाँच करने पर पता चला कि दो बाघों ने उसे खाया था, और वे पास ही पड़े एक उलटे गन्ने के बर्तन और तिरपाल के ढेर के बिल्कुल करीब थे, जो जानवरों को डराने में नाकाम रहे थे।

इस ताजा घटनाक्रम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हमारा आदमखोर बाघ मौका मिलते ही मवेशियों का भी शिकार करता था। या फिर यह भी संभव था कि आसपास तीन बाघ सक्रिय हों; एक आदमखोर और दो मवेशियों के हत्यारे।

अगली रात हमने उसी योजना पर काम करने का फैसला किया। हमने उसी रास्ते पर एक चौथाई मील आगे एक नया चारा लगाया और पहले की तरह उसके बगल में गन्ने का गड्ढा बनाया। इस बार हमने गड्ढा इतना बड़ा बनाया कि उसमें मैक और मैं दोनों समा सकें। श्रीमती मैक बड़ी अनिच्छा से बंगले में रहने के लिए राजी हुईं। गड्ढे के ऊपर छलावरण वाली तिरपाल बिछाई गई, उसके नीचे ढीली रेत और कंकड़ की एक परत थी, साथ ही घास, कांटे और छोटी कटी हुई झाड़ियाँ भी थीं, जिससे पूरा गड्ढा ज़मीन में एक छोटे से उभार जैसा असली लगे। मैक और मैं पीठ सटाकर बैठे, राइफलें तैयार थीं, मैक का मुंह चारे की ओर था। इस बार हमने गड्ढे का छेद थोड़ा बड़ा रखा ताकि गोली चलाने के लिए ज़्यादा जगह मिल सके। इसके लिए हमने गड्ढे के चारों विपरीत सिरों पर बड़े पत्थर रखे।

मैक और मैं लगातार तीन रातों तक इसी तरह बैठे रहे, लेकिन हमें कुछ भी दिखाई या सुनाई नहीं दिया। लेकिन चौथी सुबह लगभग दस बजे, जब हम बंगले में झपकी ले रहे थे, तब खबर आई कि होलालकेरे से एक मील दूर, उसी खजूर के बाग में, जहाँ हमने कुछ दिन पहले भालू को गोली मारी थी, लगभग उसी जगह पर एक आदमी की हत्या कर दी गई है।

कार से जल्दी से वहाँ पहुँचते हुए, हम दोनों यह देखकर बेहद निराश और नाराज हुए कि इस बीच नवीनतम शिकार के परिजनों ने उसके शरीर को दाह संस्कार के लिए हटा दिया था, जिससे हमें उस मानव शिकार को देखने का मौका नहीं मिला, जिसके पास बाघ संभवतः वापस आ सकता था।

फिर हमने होलालकेरे से एक और भैंस का चारा लिया और उसे उस जगह से पचास गज की दूरी पर बांध दिया जहाँ उस आदमी की हत्या हुई थी। इस जगह पर सड़क के किनारे एक सुविधाजनक पेड़ था, और मैंने उस पेड़ पर एक मचान खड़ा किया। मैक थोड़ा अस्वस्थ महसूस कर रहा था और लगातार चार रातों तक जागने के बाद थका हुआ था, इसलिए उसने उस दिन आराम करने का फैसला किया और मैं अकेला जागता रहा।

फिर भी कुछ नहीं हुआ, और सुबह 6 बजे मैं थकावट, निराशा और घृणा की मिली-जुली भावनाओं के साथ होलालकेरे की ओर एक मील का सफर तय कर रहा था। वहाँ पहुँचकर मैंने कुछ आदमियों को चारा लाने के लिए भेजा। वे आधे घंटे में दौड़ते हुए वापस आए और खबर दी कि जैसे ही वे जानवर को खोलने वाले थे, जंगल में कुछ ही गज की दूरी पर एक बाघ ने दहाड़ मारी। फिर वे भैंस को वहीं छोड़कर तेजी से होलालकेरे वापस भाग गए।

गाड़ी में बैठकर हम तुरंत उस जगह पहुंचे और यह देखकर सचमुच हैरान रह गए कि हमारा चारा अभी भी ज़िंदा था। यह बहुत ही अप्रत्याशित था, क्योंकि हमें पूरा यकीन था कि भागते हुए आदमियों के नज़र से ओझल होते ही बाघ या बाघ भैंस को मार डालेंगे। मैंने जोखिम उठाते हुए तुरंत मचान पर चढ़कर मैक को होलालकेरे लौटने का निर्देश दिया। मुझे लगा कि शायद बाघ आ जाए।

कुछ नहीं हुआ, और दोपहर 1 बजे मुझे भूख और नींद दोनों महसूस होने लगी, तो मैं नीचे उतरा, चारा खोला और उसे लेकर होलालकेरे की ओर चल पड़ा।

उस रात, हमने चारा उसी जगह पर दोबारा बांधा, और मैं एक बार फिर जाग गया। मैक और उसकी पत्नी कार से होसदुर्गा गए, और गन्ने के खेत के नीचे, हमारे द्वारा छोड़े गए चारे के पास,

उसी जगह पर एक साथ बैठ गए जहाँ हम दोनों लगातार तीन रातों तक बैठे थे।

फिर कुछ नहीं हुआ, और सुबह 6:30 बजे वे होसदुर्गा से कार में आए, मुझे ले गए और होलालकेरे के बंगले की ओर चल दिए, जहां हम सभी दोपहर के भोजन के बाद सो गए।

शाम चार बजे हम शोरगुल से जाग गए। बरामदे में जमा भीड़ को थोड़ा शांत करते हुए हमें पता चला कि बारह लोगों का एक दल दोपहर से पहले होलालकेरे से मवेशियों के झुंड को बाजार के लिए चितलद्रूग ले जाने के लिए निकला था, और उनका इरादा सूर्यास्त से पहले ही यह दूरी तय करने का था। होलालकेरे से लगभग तीन मील दूर, एक मवेशी मुख्य सड़क से लगभग पच्चीस गज की दूरी पर भटक गया था। उसे वापस लाने गया एक आदमी उस पर एक बाघ ने हमला कर दिया, जो जाहिर तौर पर दल के चारों ओर घात लगाए बैठा था और सड़क के किनारे की झाड़ियों में छिपा हुआ था। सड़क पर मौजूद अपने साथियों से संपर्क टूट जाने के कारण, वह पास ही मौजूद एक चट्टान पर चढ़ गया। यह सारा दृश्य दल के सभी लोगों के सामने हुआ, जो सब एक साथ huddled होकर खड़े थे और डर के मारे किसी भी तरह की मदद नहीं कर पाए।

बाघ उछलकर चट्टान पर चढ़ गया और अपने अगले पंजे से उस आदमी की जांघ को जकड़ लिया, उसे नीचे खींचने की कोशिश करने लगा। मदद के लिए चीखता हुआ वह आदमी, खुद को नीचे गिरने से बचाने के लिए, चट्टान के ऊपर लटकी हुई एक पेड़ की शाखा को दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया।

पहला हमला नाकाम रहा और बाघ पीछे की ओर फिसलकर जमीन पर गिर गया, उसके पंजे आदमी की जांघ से लगभग खाल उतारते हुए निकल गए, जब तक कि वह आंशिक रूप से छिले हुए केले के छिलके की तरह लटकने लगी।

मानव रक्त देखकर क्रोधित होकर, बाघ ने दूसरी बार प्रयास किया। इस बार उसने अपने दोनों अगले पंजे आदमी के शरीर में मजबूती से गाड़ दिए और उसे उसकी कमजोर पकड़ से खींच लिया। जैसे ही वह उसे चट्टान से नीचे लाया, उसने उसकी गर्दन पकड़ ली और जंगल की ओर भाग गया।

गाड़ी से घटनास्थल तक पहुँचने में कुछ ही मिनट लगे। ताज़ा त्रासदी के सबूत प्रचुर मात्रा में मौजूद थे; टूटी हुई शाखा में धँसी मानव त्वचा और नाखूनों के टुकड़े उस आखिरी हताश प्रयास की तीव्रता की गवाही दे रहे थे। चारों ओर खून बिखरा हुआ था, और पीड़ित को घसीटकर ले जाने के स्पष्ट निशान थे।

हम पूरी तेज़ी से उस रास्ते पर आगे बढ़े, जो घने जंगल की घाटी की ओर नीचे जाता था। शाम के 5 बज चुके थे और अंधेरा होने से पहले शव को ढूंढने के लिए हमारे पास ठीक एक घंटा था। जल्द ही हमें फटे-पुराने कपड़ों के टुकड़े मिले, फिर खून का एक गहरा धब्बा जहाँ बाघ ने अपने शिकार को गिराया था, और फिर हम अंधेरी घाटी में नीचे की ओर बढ़ते चले गए।

इस तरह लगभग छह फर्लांग की दूरी तय करने के बाद हम झाड़ियों से घिरी एक नीची चट्टान पर पहुँचे। मुझे आश्चर्य हुआ कि बाघ अभी तक अपना भोजन शुरू करने के लिए नहीं रुका था, क्योंकि यह एक शांत और एकांत स्थान था; लेकिन यह विचार मेरे मन में आया ही था कि एक बड़ी चट्टान के पीछे से एक ज़ोरदार गुर्राहट सुनाई दी, जिसके बाद एक छोटे पत्थर के खिसकने की आवाज़ आई और बाघ हमारे देखने से पहले ही उछलकर भाग गया। मोड़ पर पहुँचकर हमने शव देखा, जो अपने ही खून में लथपथ था और लगभग एक तिहाई खाया जा चुका था।

समय बीत रहा था, आस-पास कोई उपयुक्त पेड़ नहीं था, और बैठने के लिए एकमात्र संभव जगह पास की चट्टानों में से सबसे बड़ी चट्टान की चोटी थी, जो लगभग बारह फीट ऊँची थी। यह

चट्टान तीन तरफ से खड़ी ढलान वाली थी और बाघ की छलांग से काफी हद तक सुरक्षित थी, लेकिन दुर्भाग्य से चौथी तरफ ढलान थी, और उससे भी ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण बात यह थी कि यह ढलान वाली तरफ मृत व्यक्ति की ओर नहीं थी, बल्कि शव की स्थिति से लगभग समकोण पर थी। इसका मतलब यह था कि अगर मैं चट्टान की चोटी पर लेट जाता, तो मुझे दो दिशाओं में सतर्क रहना पड़ता, यानी बाईं ओर नीचे पड़े शव पर और दाईं ओर चट्टान की ढलान वाली तरफ, इस डर से कि बाघ अचानक उस तरफ से मुझ पर हमला कर दे और मुझे पता भी न चले। जैसा कि मैंने कहा, मैंने अपनी पीठ को, जो चट्टान की खड़ी ढलान वाली तरफ थी, अचानक छलांग से काफी हद तक सुरक्षित माना, जिसके लिए बाघ को चट्टान की चोटी तक पूरे बारह फीट की छलांग लगानी पड़ती। अगर वह एक ही छलांग में इतनी ऊंचाई पार नहीं कर पाता, तो उसका कोई सहारा नहीं बचता और वह पीछे की ओर फिसल जाता, जिससे मुझे गोली चलाने का पर्याप्त समय मिल जाता। मेरे विचार से कोई भी बाघ इतनी जोखिम भरी छलांग नहीं लगाएगा।

ढलान वाली तरफ चट्टान के ऊपरी हिस्से को कुछ छोटे पत्थरों और झाड़ियों से ढककर, मैं ऊपर चढ़ गया, इससे पहले मैंने मैक को बताया कि वे रात का कुछ हिस्सा होलालकेरे और होसदुर्गा के बीच गाड़ी चलाते हुए बिताएं, इस उम्मीद में कि शायद सड़क पर बाघ मिल जाए, अगर उसने शिकार छोड़ दिया हो।

मेरे दोस्तों और ग्रामीणों के चले जाने के बाद, मैं अब नीचे ज़मीन पर बिखरे हुए क्षत-विक्षत अवशेषों के बीच अकेला रह गया था। घंटे बीतते गए, और मैं अपनी दाहिनी ओर ढलान वाली चट्टान पर टकटकी लगाए देखता रहा। दूर का जंगल अंधेरे में छिपा हुआ था, और धुंधली पृष्ठभूमि में बस एक धुंधला सा दिखाई दे रहा था, जिसके सामने हाथी से छोटे किसी भी जानवर को पहचानना असंभव था। अंधकार में मेरी बाईं ओर पड़ा शव अब दिखाई नहीं दे रहा था।

लगभग दस बजे, एक मील दूर जंगल में एक सांभर ने रंभाया। इसके बाद एक बाघ की आवाज सुनाई दी, जिसका जवाब कुछ ही देर में उसी दिशा में एक और बाघ ने दिया जहाँ से हम आए थे।

उन मौन घंटों में जब मैं इस मामले पर विचार कर रहा था, तब स्थिति की जटिलता पूरी तरह स्पष्ट हो गई थी। हमारे क्षेत्र में कम से कम दो बाघ सक्रिय थे, संभवतः तीन। इनमें से एक आदमखोर, साहसी, क्रूर और निर्दयी था। दूसरा मवेशी चोर था, स्वभाव से उतना ही साहसी और चालाक। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं था कि अवसर मिलने पर दोनों बाघ अपनी दोनों आदतों को नहीं छोड़ते थे। फिर जिले में एक तीसरे बाघ के सक्रिय होने की संभावना भी थी, जो स्वयं आदमखोर, मवेशी चोर या दोनों हो सकता था। अब तक, शुष्क मौसम और कठोर ज़मीन के कारण, हम इन विभिन्न जानवरों की पहचान करने के लिए कोई विशिष्ट पदचिह्न नहीं ढूंढ पाए थे।

अब बाघों की आवाजें बंद हो चुकी थीं, और आसपास के जंगल में फिर से सन्नाटा छा गया था, सिवाय पेड़ पर रहने वाले झींगुरों की चहचहाहट, कभी-कभार उल्लू की आवाज और विशाल पेड़ों की चोटियों को झुकाने वाली हवा के झोंके की आवधिक ध्वनि के, जो दूर के समुद्र की गर्जना जैसी लगती थी।

फिर अचानक, बिना किसी चेतावनी या पूर्वसूचना के, यह घटित हुआ! मेरे पीछे चट्टान पर एक ज़ोरदार धमाका हुआ, पत्थर पर ज़ोरदार खरोंच और रगड़ की आवाज़ आई, साथ ही एक गुर्राहट भी सुनाई दी, और फिर एक और ज़ोरदार धमाका हुआ जब बाघ पीछे की ओर ज़मीन पर गिर गया। इससे पहले कि मैं मुड़कर चट्टान के किनारे से झाँक पाता, वह गायब हो चुका था। उस आदमखोर ने अप्रत्याशित काम कर दिया था! किसी तरह मेरी उपस्थिति का आभास पाकर, वह मेरे पीछे से आया और बारह फीट की छलांग लगाकर उस चट्टान की चोटी पर पहुँचने की कोशिश

की जहाँ मैं लेटा हुआ था। सौभाग्य से वह कुछ इंच से चूक गया।

मैंने पूरी रात जागते हुए और पूरी तरह सतर्क रहते हुए बिताई, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। अगली सुबह सूरज के काफी ऊपर चढ़ने तक मैंने इंतजार किया, फिर नीचे उतरकर सड़क पर वापस जाने की हिम्मत की, क्योंकि मुझे डर था कि बाघ को मेरी मौजूदगी का पता चल गया होगा और वह मुझ पर हमला करने के लिए घात लगाए बैठा होगा। लेकिन एक बार फिर मेरी किस्मत ने मेरा साथ दिया और मैं सुरक्षित सड़क पर पहुँच गया, जहाँ कुछ ही मिनटों में मैक कार से मुझे लेने आ गया। उसने भी होलालकेरे और होसदुर्गा के बीच इधर-उधर गाड़ी चलाते हुए पूरी रात व्यर्थ बिताई थी।

बंगले पर पहुँचते ही मैंने कुछ लोगों को शव के पास वापस जाकर उसे गिद्धों से बचाने के लिए डालियों से ढकने का आदेश दिया, क्योंकि मेरा इरादा उस रात चट्टान पर फिर से बैठने का था। ये लोग अभी निकले ही थे कि मृतक के रिश्तेदार उसके गाँव से आ गए और शव को दाह संस्कार के लिए माँगने लगे। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि शव को एक और दिन वहीं रहने दिया जाए, लेकिन वे अपनी बात पर अड़े रहे। इस तरह उस रात उस बेचारे आदमी की मौत का बदला लेने का जो भी मौका हमें मिला था, उसके रिश्तेदारों की हठधर्मिता के कारण वह हमसे छिन गया।

दो घंटे बाद, होसदुर्गा से पुरुषों का एक दल आया और हमें सूचित किया कि हमारा चारा, जिसे पिछले एक सप्ताह से गन्ने के खेत के पास बांधकर रखा गया था, आखिरकार मर गया है।

शाम ढलते ही मैं और मैक तवे के नीचे बैठे थे, और लगभग आधी रात को हमें आसपास एक बाघ के घूमने की आवाज़ सुनाई दी, जो बीच-बीच में धीमी गुर्राहट कर रहा था। हम बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे कि वह शिकार के पास आए, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और वह लगभग पौने घंटे तक उस इलाके के चक्कर लगाता रहा। ज़ाहिर सी बात है कि उसे शिकार के पास हमारी मौजूदगी का पता चल गया था। अब मैक के मन में एक साहसी—लेकिन मूर्खतापूर्ण—विचार आया, कि वह उठकर चला जाए ताकि बाघ को लगे कि हम जा चुके हैं और उसका शिकार अकेला है। उसे उम्मीद थी कि तब वह पास आएगा और मैं उससे निपट लूँगा।

यह योजना सफल होने की पूरी संभावना थी, जैसा कि आपको याद होगा कि पिछली बार जब हमने चारा और मछली पकड़ने का जाल छोड़ा था, तब ठीक यही हुआ था। साथ ही, मैक के लिए यह करना बहुत खतरनाक था, क्योंकि पास में मंडरा रहा बाघ खुद आदमखोर हो सकता था, या पहले की तरह उसके साथ कोई दूसरा बाघ भी हो सकता था। उस जिद्दी लेकिन बेहद बहादुर स्कॉटिश व्यक्ति के दिमाग से यह बात निकालने में मुझे पूरे तीस मिनट लग गए कि आदमखोर बाघ के साथ घने जंगल में निकलना अपनी मौत को दावत देने जैसा होगा।

इसी बीच बाघ इधर-उधर घूमता रहा, लेकिन सुबह तड़के वह चला गया, और निराशा भरी एक और रात के बाद हम होसदुर्गा स्थित छोटे बंगले में लौट आए।

अगले दो दिनों तक कुछ भी नहीं हुआ, उन रातों में हमने होसदुर्गा, होलालकेरे और चितलद्रूग के बीच गाड़ी चलाते हुए बिताया, सड़क पर बाघों में से किसी एक से मिलने की उम्मीद में स्पॉटलाइट चमकाते रहे।

तीसरे दिन सुबह तड़के लुंबानी लकड़हारों के एक दल ने सूचना दी कि पिछली रात वे चार मील दूर जंगल में एक विशाल अलाव की आड़ में डेरा डाले हुए थे। उन्होंने अपने पाँचों बैलों को अलाव के चारों ओर एक घेरा बनाकर खड़ा किया था और वे अपने पाँचों बैलों के साथ अलाव के भीतर शरण लिए हुए थे। आधी रात को जब आग धीमी हो गई, तो एक बाघ चुपके से बैलों के

पास से गुजरा और एक बैल पर हमला कर दिया। बाकी बैल इधर-उधर भागने लगे, जिससे वे जाग गए। उन्होंने चिल्लाकर बाघ पर जलती हुई लकड़ियाँ फेंकीं। इसके बाद बाघ भाग गया। बैल की गर्दन पर गहरा घाव था और उसे कई जगह खरोंचें भी आई थीं, लेकिन वह जीवित था। भोर होते ही वे चार बैलों और घायल बैल के साथ होसदुर्गा की ओर चल पड़े, पाँचवाँ बैल वहीं छोड़ दिया क्योंकि बैल उसे खींचने में असमर्थ था।

इन लुंबानी लोगों में से एक, जो बचपन से ही इस इलाके में रहता था और जंगल को अपनी हथेली की तरह जानता था, ने बताया कि छह मील दूर, जंगल के बीचोंबीच, एक छोटी सी धारा बहती है जो ढलानदार चट्टानों से घिरे एक साफ पानी के कुंड में जाकर मिलती है, जिसके नीचे विशाल पेड़ हैं। उसने दावा किया कि बाघों का स्थायी निवास इसी स्थान पर है। अब चूंकि गर्मी का मौसम है, इसलिए वे दोपहर की तेज धूप से बचने के लिए इस ठंडी जगह पर आराम करते हैं, और हर शाम शिकार पर निकलने से पहले या शिकार से लौटने के बाद सुबह तड़के, उनमें से कोई न कोई इस कुंड से पानी जरूर पीता है।

यह आदमी ज़ाहिर तौर पर अपने विषय का जानकार था, क्योंकि उससे हुई बातचीत से पता चला कि वह एक शिकारी और अवैध शराब विक्रेता था, जो जंगल के घने इलाकों में बबूल के पेड़ की छाल से 'अराक' नामक एक बहुत ही तेज़ शराब अवैध रूप से बनाकर खूब पैसा कमाता था। ज़ाहिर है, इस जगह के बारे में बहुत कम लोग जानते थे, और जो जानते भी थे, वे बाघों के डर से वहाँ जाने की हिम्मत नहीं करते थे। बातचीत का नतीजा यह निकला कि मैक और मैं उस दिन दोपहर के भोजन के बाद उसके साथ निकलेंगे और शाम, रात और अगली सुबह इसी तालाब पर बिताएंगे।

दोपहर तीन बजे हम उस स्थान पर पहुँचे, और बाघों के लिए इससे अधिक उपयुक्त स्थान मैंने शायद ही कभी देखा हो। तालाब छोटा था, चारों ओर ढलान वाली चट्टानों से घिरा हुआ था, लेकिन उसमें गिरने वाली छोटी सी धारा के किनारे बाघ की उपस्थिति का स्पष्ट संकेत दे रहे थे, क्योंकि बार-बार बने पदचिह्न नीचे की ओर जाते हुए तालाब को पार कर रहे थे। इन पदचिह्नों के मोटे तौर पर निरीक्षण से दो अलग-अलग जानवरों के पदचिह्नों का पता चला - एक बड़ा नर और एक वयस्क मादा। उसके बड़े आकार की बार-बार मिली रिपोर्टों के आधार पर, यह पूरी संभावना थी कि पहला बाघ ही मवेशियों को चुराने वाला था, जिससे अब यह संदेह करने का पुख्ता कारण बन गया था कि उसकी साथी, मादा बाघ, आदमखोर हो सकती है, जब तक कि दल में कोई तीसरा बाघ न हो।

एक जंगली आम का पेड़ तालाब के ठीक ऊपर, जहाँ से नदी का प्रवाह शुरू होता था, झुका हुआ था। इस पेड़ की निचली शाखाओं पर, लगभग पंद्रह फीट की ऊँचाई पर, हमने अपनी पोर्टेबल चारपाई मचान लगाई, जिसे हम इसी तरह के मौके के लिए अपने साथ लाए थे और लुंबानी उसे उठाकर लाया था। शाम 4:30 बजे हम तीनों उस मचान पर बैठे थे, क्योंकि आदमखोर सांप के डर से लुंबानी को अकेले भेजना खतरनाक था।

ऊपर लटके हुए विशाल पेड़ों के कारण, शाम सात बजे तक घोर अंधेरा हो जाता था, और कोई भी जानवर आसपास नहीं आता था; निस्संदेह वे जंगल के राजाओं की आदतन निकटता के कारण इससे बचते थे। घंटे गंभीर सन्नाटे में धीरे-धीरे बीतते गए, कभी-कभार सांभर और काकुर (या भौंकने वाले हिरण) की दूर से आती आवाजों से यह सन्नाटा टूटता था।

सुबह के 4 बज चुके होंगे जब हमें हल्की सी आह भरने और कराहने की आवाज़ सुनाई दी, और फिर हमारे सामने ढलान वाले किनारे पर गिरे हुए बांस के पत्तों के कालीन पर बाघ के भारी लेकिन धीमी, दबी हुई कदमों की आहट साफ सुनाई दी। मिनट बीतते गए, लेकिन उस घोर अंधेरे

में हमें कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर हमें अंधेरे में, दाईं ओर, नीचे तालाब के किनारे से पानी की लहरों की दूर से आती आवाज़ सुनाई दी।

समय आ गया था, और पहले से तय समझौते के अनुसार, मैंने मैक को धीरे से इशारा किया कि वह गोली चलाए। मैक ने अपनी राइफल आवाज़ की दिशा में तान दी, जबकि मैं ज़रूरत पड़ने पर कवर शॉट के लिए तैयार था। मैक ने टॉर्च का स्विच दबाया और तेज़ रोशनी पानी के किनारे दुबके एक विशाल बाघ पर पड़ी।

जानवर ने ऊपर देखा, उसकी बड़ी-बड़ी चमकती लाल-सफेद आँखों में रोशनी झलक रही थी, और फिर मैक ने गोली चला दी। एक ज़ोरदार दहाड़ के साथ बाघ हवा में उछला और पूरा चक्कर लगाकर पीछे की ओर गिर पड़ा, ज़मीन को दांतों से काटते हुए भयंकर गुर्राहट के साथ इधर-उधर भागने लगा। बाघ के पानी में आधा लुढ़कने से पहले मैक ने दो और गोलियां चलाईं, फिर मौत के करीब पहुँचकर तड़पने लगा और फिर शांत हो गया।

भोर होते ही हम नीचे उतरे तो देखा कि मैक ने दल के नर बाघ को मार गिराया था। वह सचमुच एक शानदार कद-काठी वाला बाघ था और एक अद्भुत शिकार था, लेकिन हम सभी यह जानकर निराश हुए कि आदमखोर बाघ अभी भी फरार था। मैक की पहली गोली जानवर की नाक के ऊपरी हिस्से पर लगी, जिससे उसका ऊपरी जबड़ा और तालू टूट गया और गोली गले में जा घुसी, जिसके कारण हमें उसकी गुर्राहट के साथ वह भिनभिनाहट की आवाज सुनाई दी थी। उसकी दूसरी गोली दाहिने कंधे से होकर पेट में जा लगी। तीसरी गोली चूक गई।

अगले चार दिनों की घटनाओं का मैं संक्षेप में वर्णन करूँगा, इस दौरान कोई सूचना नहीं मिली और स्थानीय लोग आदमखोर बाघ को मारने पर हमें बधाई देने लगे। कुछ लोगों का मानना था कि यही बाघ था जिसने मनुष्य और मवेशी दोनों को मारा था। लेकिन हम बेहतर जानते थे और वहीं रुके रहे, इस विश्वास के साथ कि देर-सवेर हमें किसी और मानव हत्या की खबर जरूर मिलेगी, सिवाय इसके कि अगर आदमखोर बाघ अपने साथी की मृत्यु के बाद इलाका छोड़कर चला गया हो। उन चार दिनों की रातें हमने चितलद्रूग जाने वाली सड़क पर और जंगल के सभी सुगम रास्तों पर घूमते हुए बिताईं, इस उम्मीद में कि शायद हमें आदमखोर बाघ मिल जाए, लेकिन सफलता नहीं मिली।

पांचवें दिन दोपहर से कुछ ही समय पहले वह खबर आई जिसका हमें डर था लेकिन जिसकी हमें उम्मीद भी थी। चितलद्रूग के अमिलदार द्वारा भेजे गए तीन दूतों ने हमें यह सूचना दी कि पिछली शाम को चौदह वर्षीय एक लड़के को तोगी-मठ की पहाड़ी की दक्षिणी ढलानों के तल पर स्थित एक छोटे से गांव से एक बाघ उठाकर ले गया था। मैंने आपको पहले ही बताया है कि तोगी-मठ चितलद्रूग शहर के दक्षिण में स्थित है और इसके शिखर पर एक प्राचीन, परित्यक्त किला है।

कार से वहां पहुंचते हुए, हमने उस छोटे से गांव का दौरा किया और हमें उसके बाहरी इलाके में स्थित वह छोटी सी झोपड़ी दिखाई गई, जिसके दरवाजे से पिछली शाम सूर्यास्त के समय उस लड़के को अगवा कर लिया गया था। चूंकि गांव के दक्षिण का इलाका लगभग बंजर था, इसलिए गांव के निवासियों के साथ-साथ हमें भी यह मानने का ठोस कारण था कि बाघ अपने शिकार को पहाड़ी पर ले गया होगा और संभवतः उस समय किले के खंडहरों में छिपा होगा।

शव की तलाश के लिए कोई संगठित प्रयास नहीं किया गया था और जब हमने आधा दर्जन लोगों का एक दल इकट्ठा किया और पहाड़ी पर चढ़ना शुरू किया, तब तक हमारे पास केवल चार घंटे का दिन का उजाला बचा था।

जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि बाघ अपने शिकार को पहाड़ी की चोटी तक जाने वाले मुख्य रास्ते से नहीं ले गया था। हम आधे से ज़्यादा पहाड़ी चढ़ चुके थे, लेकिन हमें शिकार का कोई निशान नहीं मिला। आगे बढ़ते हुए हम आस-पास की चट्टानों पर चढ़ते गए और मैंने अपने साथियों को निर्देश दिया कि वे हर दिशा में दिखाई देने वाली किसी भी चीज़ की तलाश करें। जब हम लगभग तीन-चौथाई चढ़ाई कर चुके थे, तो उनमें से एक ने बताया कि हमारे बाईं ओर लगभग एक चौथाई मील दूर एक पेड़ पर गिद्ध बैठे हैं। बीच में मौजूद चट्टानों और कंटीली झाड़ियों को पार करते हुए, हम अंततः लड़के के अवशेषों तक पहुँचे, जिन्हें गिद्ध पूरी तरह से खा चुके थे।

हड्डियों के ऊपर बैठे रहने का कोई खास फायदा या उम्मीद नहीं दिख रही थी, खासकर इसलिए क्योंकि हमें अनुभव से पता था कि शिकारी गिद्ध ऐसे भोजन के लिए शायद ही कभी लौटता था। फिर भी, मैक और दो आदमियों ने मेरी मचान को उस पेड़ पर रख दिया जिस पर गिद्ध बैठे थे और वहीं रहने का फैसला किया, जबकि मुझे लगा कि मेरे पास पहाड़ी के बाकी हिस्से पर चढ़ने और खंडहरों के बीच देखने के लिए बस थोड़ा सा समय बचा है।

रास्ता पाकर मैं तेज़ी से ऊपर की ओर बढ़ा और शाम 5 बजे के कुछ देर बाद खंडहरों तक पहुँच गया। किले की दीवारें बहुत पहले ही ढह कर जर्जर हो चुकी थीं और लैंटाना और कंटीली झाड़ियों का घना जंगल पूरे क्षेत्र के साथ-साथ बाहर स्थित पुरानी खाई को भी ढके हुए था। इस समय, दल के शेष चार लोगों ने बाहर ही रुकने का फैसला किया; मेरे लौटने की प्रतीक्षा में वे एक ऊँचे अंजीर के पेड़ की सबसे ऊपरी शाखाओं पर चढ़ गए, जिसकी टेढ़ी-मेढ़ी जड़ें किले की दीवार के मलबे में गहराई तक धँसी हुई थीं।

सावधानीपूर्वक आगे बढ़ते हुए, मैंने गिरी हुई दीवार के ऊपर जितना संभव हो सके रहने का प्रयास किया, ताकि आसपास की घनी झाड़ियों से कुछ ऊंचाई बनाए रख सकूं, जो अगम्य होने के साथ-साथ प्रवेश करने के लिए खतरनाक भी थीं, क्योंकि अगर बाघ मुझसे एक गज की दूरी पर भी होता तो भी मैं उसे उस घनी झाड़ी में नहीं देख पाता।

आगे बढ़ना बेहद मुश्किल और थका देने वाला था, और जब तक मैं किले के दूसरे छोर पर पहुँचा, तब तक मेरी साँस फूल रही थी और मैं पसीने से भीग चुका था। यहाँ पहुँचकर मैंने सूरज को देखा, जो पश्चिम क्षितिज के करीब पहुँच रहा था।

कई साल पहले मैं इसी किले से गुज़रा था, और मुझे पता था कि इस जगह के आसपास दीवारों से घिरे लगभग पूरी तरह से दबे हुए अवशेष हैं, और दूर बहुत पहले यहाँ कालकोठरी हुआ करती थीं। इन संरचनाओं के कारण इस बिंदु पर दीवार का अनुसरण करना असंभव हो गया था। मैं लैंटाना में उतरने से हिचकिचा रहा था, लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि या तो मुझे ऐसा करना होगा और लगभग सौ गज की दूरी तय करके उस जगह तक जाना होगा जहाँ से दीवार फिर से शुरू होती है, या फिर वापस लौटना होगा। समय भी मेरे खिलाफ था; इसलिए देरी से बचने के लिए मैंने अंततः लैंटाना में उतरने का जोखिम उठाने का फैसला किया, और जितना हो सके चुपचाप लैंटाना को हटाते हुए आगे बढ़ने लगा। लेकिन यह जल्द ही असंभव साबित हुआ, क्योंकि कांटों से ढकी लैंटाना की टहनियाँ हर कदम पर मेरे कपड़ों से चिपक जाती थीं और जब मैं आगे बढ़ता था तो काफी शोर होता था।

मुझे पता था कि अब मैं कालकोठरियों और बाड़ों के अवशेषों के ठीक सामने था, और इस वीरान खंडहर में, अगर कहीं और नहीं, तो बाघ के सबसे अधिक छिपे होने की संभावना थी। उसी समय, मेरी प्रतिकूल स्थिति से सचेत होकर, मेरी नसों और इंद्रियों ने खतरे की निकटता का संकेत दिया। मेरी छठी इंद्री ने मुझे बताया कि बाघ पास ही है और मेरा पीछा कर रहा है, हमले के क्षण की प्रतीक्षा कर रहा है, जो बहुत जल्द हो जाएगा यदि मैं लैंटाना से नहीं बच निकला।

मैंने इन चेतावनियों को इतनी बार महसूस किया था कि मैं उन्हें अनदेखा नहीं कर सकता था, इसलिए अपनी सतर्कता को तीन गुना बढ़ाते हुए और सभी दिशाओं में देखते हुए, मैं ऊँची जगह की ओर आगे बढ़ा।

तीस गज आगे—बीस गज आगे—पंद्रह गज आगे—और फिर मेरे बाईं ओर लंतना झाड़ियों से एक दहाड़ता हुआ बाघ का सिर उठा, उसके कान छलांग लगाने की तैयारी में पीछे की ओर झुके हुए थे, उसके जबड़े चौड़े खुले हुए थे जिससे उसके चमकीले नुकीले दांत दिखाई दे रहे थे। मेरी गोली उसके खुले हुए मुंह में जा लगी, और जानवर ने खुद को आगे की ओर उछाल दिया। ऊँची जगह पर पहुँचने के लिए अंधाधुंध भागते हुए, लंतना झाड़ियों में मेरी आँखें लगभग धुंधली हो गईं, कांटों ने मेरे शरीर और कपड़ों को चीर दिया, जबकि मेरे पीछे अफरा-तफरी मच गई।

सिर का पिछला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुका था, फिर भी वह बाघ मुझ पर हमला करने के लिए दौड़ा। जब मैंने बचे हुए पंद्रह गज की दूरी तय की और घूमकर देखा, तो वह मुझसे मात्र दो गज दूर था, उसकी खोपड़ी के आधे हिस्से में एक बड़ा सा लाल छेद था। भय से लगभग बेहाल होकर, मैंने उस जानवर पर दूसरी, तीसरी और चौथी गोली दागी। जैसे ही वह चकनाचूर होकर एक तरफ गिरा, मैं मलबे के एक टुकड़े पर कांपता हुआ, बीमार और बेहोश सा बैठा रहा।

दस मिनट बाद मैं किसी तरह उठ खड़ा हुआ, और अपने सामने पड़े खून से लथपथ ढेर से बचते हुए, किले की बची हुई दीवार का चक्कर पूरा करके उस पेड़ के पास लौट आया जहाँ मैंने उन चार आदमियों को छोड़ा था।

चार गोलियों की आवाज़ और बाघ की दहाड़ सुनकर, उन्होंने मान लिया था कि मैं मारा जा चुका हूँ, और वे आपस में बहस कर रहे थे कि क्या वे अपने पेड़ से नीचे उतरकर अपने गाँव की ओर जल्दी लौट जाएँ या बाकी रात उसकी शाखाओं में ही बिताएँ। यह बिल्कुल स्पष्ट था कि उन्होंने मुझे फिर से जीवित देखने की उम्मीद नहीं की थी।

उन्हें इकट्ठा करते हुए, हम मुश्किल से एक फर्लांग ही आगे बढ़े थे कि मैक और बाकी दो आदमी हमसे मिल गए। जहाँ वह बैठा था, वहाँ से उसने भी मेरी चारों गोलियों की आवाज़ सुनी थी और एक सच्चे दोस्त की तरह, मेरी मदद करने के लिए तुरंत आगे बढ़ गया। लेकिन जब उसने मुझे लंताना झाड़ियों से भागते हुए बुरी तरह घायल, खरोंचों से लथपथ और खून बहता हुआ देखा, तो उसका लाल चेहरा पीला पड़ गया और वह मुझे पकड़ने के लिए दौड़ पड़ा, जैसे उसे लगा कि मुझ पर किसी जानवर ने हमला कर दिया है।

वहाँ बैठकर मैंने उसे सारी घटना बताई, साथ ही अपनी प्रिय पाइप से धुएँ के बादल उड़ाते हुए उसकी हार्दिक शुभकामनाएँ सुनीं। वास्तव में, उस सुकून देने वाले पाइप से तंबाकू पीते हुए मैं यह कहने से खुद को रोक नहीं पाया कि जब मैंने कुछ ही दूरी पर हत्या की लालसा से विकृत उस भयानक चेहरे को देखा था, तो मैंने कभी दोबारा धूम्रपान करने की उम्मीद ही नहीं की थी।

उसी रात हमने बाघ को नीचे उतारा, गाड़ी पर लादा और चितलद्रूग कस्बे ले गए। जैसा कि हमने अनुमान लगाया था, वह मादा निकली और निस्संदेह वही आदमखोर बाघिन थी जिसने लड़के की हत्या की थी। मेरे प्रति उसकी आक्रामकता ने भी इस निष्कर्ष को पुष्ट किया। अगली सुबह, जब हम जानवर की खाल उतार रहे थे, तभी अमिलदार, ज़िला वन अधिकारी और अन्य अधिकारी, तथा सैकड़ों स्थानीय निवासी हमसे मिलने आए। अमिलदार उस बाघ को देखना चाहता था जिसने होसदुर्गा में उसके रिश्तेदार, उस छोटी बच्ची की हत्या की थी। उस शाम काफी देर हो चुकी थी जब हम दो बाघों की खाल लेकर बैंगलोर के लिए रवाना हुए, जिन्होंने एक असाधारण और अनसुना संयोजन बनाया था - मवेशी मारने वाला और आदमखोर एक साथ

शिकार कर रहे थे।

संयोगवश, बाघिन की खाल उतारने पर भी उसके आदमखोर बनने का कोई कारण पता नहीं चला। जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, इस जिले का आदमखोर बाघों का लंबा इतिहास रहा है, जो कई पीढ़ियों से चला आ रहा है, और मेरा मानना है कि यह बाघिन भी आदमखोरों की ही वंशज थी। इस व्याख्या से उसके साथी, उस बड़े नर बाघ के बारे में भी पता चलता है जिसे मैक ने गोली मारी थी, जो एक सामान्य पशु-चोर था और जिसने कभी इंसान का मांस नहीं खाया था।

संभवतः बाघिन की इस नर बाघ से मुलाकात प्रजनन काल के दौरान ही हुई थी, जो अभी-अभी समाप्त हुआ है (नवंबर से जनवरी तक चलता है)। वह उसके साथ इतने लंबे समय तक नहीं रही थी कि उसे अपनी नरभक्षी आदतें सिखा सके। यदि वह बच्चे पैदा करती, तो निस्संदेह वह अपने शावकों को भी मानव मांस का स्वाद सिखा देती, ठीक वैसे ही जैसे उसे सिखाया गया था, और इस प्रकार उस क्षेत्र में नरभक्षी बाघिनों की पीढ़ियों को आगे बढ़ा देती।

जिस तीसरे बाघ के अस्तित्व का हमें संदेह था, वह कभी सामने नहीं आया, क्योंकि जाने से पहले हमने सभी अधिकारियों और लोगों को यह संदेश दे दिया था कि अगर किसी तीसरे बाघ के बारे में कोई खबर मिले तो हमें तुरंत सूचित करें। ऐसा इसलिए था क्योंकि हमें हमेशा यह आशंका थी कि तीसरा बाघ भी आदमखोर हो सकता है। लेकिन कई महीने बीत गए और हमें यह खुशखबरी मिली कि तोगी-मठ की चोटी पर उस बाघिन के मारे जाने के बाद पूरे जिले में आदमखोरी की सभी खबरें बंद हो गई थीं। फ्रेड टॉड और उसके बाकी शिकारों का बदला ले लिया गया था।

5

पनापत्ती का दुष्ट हाथी

वह एक छोटा जानवर था, जैसा कि शरारती हाथियों के मामले में होता है, मोज़े पहने हुए लगभग साढ़े सात फुट लंबा। इसका अनुमान उसके अगले पैर के निशानों से लगाया जा सकता था, जिनकी परिधि दोगुनी होने पर भारतीय हाथी की ऊंचाई लगभग दो इंच के अंतर से आ जाती है। लेकिन कद में कमी को उसने साहस, ठंडे दिमाग से की गई चालाकी और मानव जाति के प्रति अटूट घृणा से पूरा किया, जिसे उसने स्पष्ट रूप से अपना लक्ष्य बना लिया था कि जब भी मौका मिलेगा, वह उसे नष्ट कर देगा।

उसके एक दांत की लंबाई लगभग 18 इंच थी, जबकि दूसरा दांत टूटकर छोटा हो गया था। ऐसा कहा जाता था कि यह टूटा था कावेरी नदी के किनारे और सलेम जिले के वोडापत्ती वन क्षेत्र में रहने वाले झुंड के बड़े सरदार ने तोड़ा था। इसी क्षेत्र में पनापत्ती का पशुशाला स्थित था। यह नौजवान, बदमाश बनने से पहले, जाहिर तौर पर महत्वाकांक्षी और सामान्य से अधिक उत्साही था, क्योंकि उसने झुंड के सरदार की आंखों के सामने ही मादाओं पर अपना अवांछित ध्यान केंद्रित किया था। सरदार की गुस्से और आक्रोश भरी चेतावनी भरी चीख का उस पर कोई असर नहीं हुआ और जब उस हाथी ने उसे भगाने की कोशिश की तो नौजवान ने उससे लड़ाई करने का प्रस्ताव रखा।

इसके परिणामस्वरूप एक भीषण संघर्ष हुआ, जिसमें वर्षों के अनुभव और अधिक वजन ने नेता के पक्ष में भारी जीत दर्ज की। अंततः युवा योद्धा बुरी तरह घायल होकर भाग निकला, उसके शरीर के किनारों पर बड़े नर के शक्तिशाली दांतों से गहरे घाव हो गए थे, जबकि उसका अपना एक दांत लड़ाई में टूटकर अलग हो गया था, जिससे उसे आने वाले कई दिनों तक दांत में तेज दर्द होता रहेगा।

वह उदास और चिड़चिड़ा होकर झुंड के आसपास भटकता रहता था, लेकिन कभी उसमें प्रवेश करने की हिम्मत नहीं करता था। एक दिन, जब वह जंगल के एक बैलगाड़ी मार्ग पर चल रहा था, तो एक मोड़ पर उसका सामना अचानक एक भैंसगाड़ी से हुआ, जो ठेकेदार के लिए काटे गए बांसों से लदी हुई थी। उस क्षण उसे अंधाधुंध क्रोध आ लगा, साथ ही बदला लेने की तीव्र इच्छा भी। वह पागलों की तरह बैलगाड़ी की ओर दौड़ा, और चालक किसी तरह कूदकर अपनी जान बचाकर भाग गया। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण भैंसें भारी भरकम बैलगाड़ी से जुती हुई थीं और हमले के सामने असहाय खड़ी रहीं।

वह बदमाश—क्योंकि अब वह सचमुच बदमाश बन चुका था—ने बैलगाड़ी को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, फिर भैंसों की ओर मुड़ा। एक भैंस को उसने उसके लंबे, घुमावदार सींग से पकड़ा और

उसे रास्ते के किनारे बने टीले से नीचे फेंक दिया, जहाँ वह अगले दिन मिली। उसका सींग जड़ों से उखड़ा हुआ था; उसके एक अगले पैर में गंभीर फ्रैक्चर हो गया था, और टूटी हुई, बाहर निकली हुई हड्डी गिरने के बल से नरम मिट्टी में धंस गई थी, जिससे जानवर के वजन ने उसे वहीं जकड़ लिया था। दूसरी भैंस को उसने अपने एक दांत से घायल कर दिया, लेकिन वह जानवर रास्ते से नीचे भाग गया, बैलगाड़ी के टूटे हुए जुए को अपने पीछे घसीटता हुआ, और इस तरह अपने बदकिस्मत साथी के भाग्य से बच गया।

इसके बाद हाथी की प्रतिष्ठा लगातार बिगड़ती चली गई, और नदी की ओर जाने वाले कई दुर्भाग्यशाली राहगीर या तो उसके विशाल पैरों के नीचे दबकर मर गए या फिर उस भयानक सूंड की चपेट में आकर जंगल के पेड़ के तने से टकराकर चूर-चूर हो गए।

इस जानवर से मेरा पहला सामना संयोगवश हुआ था। मैं सप्ताहांत में महसीर मछली पकड़ने और मौका मिलने पर मगरमच्छ पकड़ने के इरादे से कावेरी नदी के किनारे, पनापत्ती से लगभग चार मील दूर होगेनैकल गया था। अफवाहों के अनुसार, उस समय वह मगरमच्छ उस इलाके में नहीं था, क्योंकि वह ताज़ा चारागाह की तलाश में भटकते हुए हाथियों के झुंड के पीछे-पीछे नदी पार करके कोयंबटूर चला गया था।

दूसरे दिन शाम को, मछली पकड़ने में निराशाजनक अनुभव के बाद, मैं चाय के लिए वन लॉज में लौट आया था, तभी पास ही एक मोर की आवाज ने मुझे उस पक्षी के पीछे जाने के लिए प्रेरित किया, मुझे उम्मीद थी कि वह मुझे उस रात के खाने के लिए एक स्वादिष्ट रोस्ट बना देगा।

मैंने अपनी शॉटगन के ब्रीच में कुछ गोलियां डालीं और जंगल को तिरछे पार करते हुए उस घाटी की ओर बढ़ा जहाँ मोर बोल रहा था। वहाँ पहुँचकर, मैंने अपने शिकार को खोजने के प्रयास में सावधानीपूर्वक आगे कदम बढ़ाया और अंततः चिनार धारा के सूखे तल पर पहुँच गया, जो कावेरी नदी की एक सहायक नदी है और एक मील आगे जाकर उसमें मिल जाती है।

मेरे रबर के तले वाले बूट नरम रेत पर बिल्कुल भी आवाज़ नहीं कर रहे थे। मुझे सामने वाले किनारे पर झाड़ियों के पीछे कहीं मोर के पंखों की सरसराहट सुनाई दे रही थी, जब वह अपनी पूंछ संवार रहा था। मैं दबे पांव नदी पार कर ही रहा था कि एक तीखी, तुरही जैसी आवाज़ ने सन्नाटे को तोड़ दिया, और उसके तुरंत बाद पचास गज दूर झाड़ियों से निकलते हुए एक विशालकाय मोर की गड़गड़ाहट सुनाई दी, जो तेज़ी से मेरी ओर बढ़ा।

भागकर बचने की कोशिश की निरर्थकता को समझते हुए—क्योंकि हाथी अविश्वसनीय गति से दूरी तय कर सकते हैं और मेरे पास उससे आगे निकलने का कोई मौका नहीं था, क्योंकि आसपास के जंगल की नरम रेत और चिपचिपी कांटेदार झाड़ियाँ बाधा बन रही थीं—मैंने अपनी शॉटगन की नज़र में उसकी मुड़ी हुई सूंड को लिया और लगभग तीस गज की दूरी से दोनों बैरल से गोली चला दी।

धमाके की आवाज़ और गोलियों की चुभन ने उसे क्षण भर के लिए रोक दिया, और जब वह क्रोध और विद्रोह से चीख रहा था, मैं अपनी खाली बंदूक लिए उसी रास्ते पर भाग गया जिससे मैं आया था, इतनी तेज़ गति से कि मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं इतनी तेज़ दौड़ पाऊँगा। वन बंगले पर पहुँचकर मैंने अपनी राइफल उठाई और वापस भागा। लेकिन चिनार नदी के सुनसान रेगिस्तान में कुछ भी दिखाई नहीं दिया, और जब मैं उस जगह के पास पहुँचा तो देखा कि वह बदमाश दूसरी तरफ जंगल में चला गया था, जहाँ रात होने वाली थी इसलिए मैंने उसका पीछा करने की ज़हमत नहीं उठाई।

अगले दिन मुझे व्यापारिक उद्देश्य से बैंगलोर लौटना था और मेरे लिए अपना प्रवास बढ़ाना

संभव नहीं था, इसलिए मैंने पहले दौर का पूरा जिम्मा पनापत्ती के उस बदमाश पर छोड़ दिया।

अपनी कुख्याति के कारण इस प्राणी को सरकार द्वारा अवांछनीय या 'बदमाश' हाथी घोषित कर दिया गया था, और वन विभाग द्वारा आधिकारिक अधिसूचना प्रिंट माध्यमों और स्थानीय स्तर पर ढोल बजाकर प्रसारित की गई थी, जिसमें इसके विनाश के लिए 500 रुपये (लगभग 34 पाउंड) का सरकारी इनाम देने की पेशकश की गई थी।

फिर उस इलाके के एक भारतीय सज्जन ने बड़ी बहादुरी से हाथी को मौत के घाट उतारने और इनाम पाने का निश्चय किया। बाद में मैंने जो जानकारी जुटाई, उसके अनुसार उनके इस प्रयास का विवरण इस प्रकार था।

एक जर्जर हालत में मौजूद .500 डबल बैरल वाली ब्लैक-पाउडर एक्सप्रेस राइफल से लैस होकर वह पनापत्ती पहुंचा और उसे बताया गया कि हाथी पास के वोडापत्ती वन ब्लॉक में घूम रहा है। वही चिनार नदी, जिसके तल पर होगेनैकल के पास मैं उस विशालकाय हाथी के पैरों तले लगभग मरते-मरते बचा था, पनापत्ती से होकर खूबसूरती से मुड़ती है और जंगल से होकर बहती है, जिसका उत्तर-पश्चिमी किनारा वोडापत्ती रिजर्व की सीमा बनाता है, और उसका विपरीत किनारा पेन्नाग्राम ब्लॉक की सीमा बनाता है।

जिस भारतीय सज्जन की मैं बात कर रहा हूँ, उन्होंने दो दिन तक उस हाथी से मिलने की असफल कोशिश की, इसलिए तीसरे दिन की रात उन्होंने पेन्नाग्राम ब्लॉक के भीतर लगभग दो मील दूर स्थित अपने तंबू में बिताई। यह तंबू चिनार नदी और वोडापत्ती पर्वतमाला से काफी दूर था, जहाँ से हाथी कभी बाहर नहीं निकलता था। लेकिन एहतियात के तौर पर उन्होंने अपने साथियों से अपने दोनों तंबुओं के चारों ओर आग का घेरा बनवाया और उन्हें निर्देश दिया गया कि रात की पहरेदारी के दौरान आग को जलाने और हवा देने के लिए पर्याप्त मात्रा में लकड़ी बचाकर रखें।

तब सब कुछ शांत होने पर, वह जाहिर तौर पर गहरी नींद में सो गया; और जाहिर है, उसके अनुयायी भी सो गए।

भोर होते ही वह दुष्ट हाथी इस शांत दृश्य पर आ पहुँचा। आग शायद धीमी पड़ चुकी थी, बस उसके अंगारे ही सुलग रहे थे। सामान्यतया, कोई हाथी या कोई अन्य जानवर आग के पास नहीं जाता। लेकिन सफेद तंबू को देखकर और उसे नष्ट करने की तीव्र इच्छा ने उस जानवर को इतना उत्तेजित कर दिया कि वह सावधानी से उस जगह से होकर गुजरा जहाँ आग नहीं थी और क्रोध से चीखते हुए तंबू पर टूट पड़ा।

शिविर में मौजूद लोग शोर-शराबे से जाग उठे और जब उन्हें एहसास हुआ कि कोई राक्षस उन पर टूट पड़ा है, तो वे इधर-उधर भागने लगे। सफेद तंबू में रहने वाले उस बदकिस्मत व्यक्ति को अपने पुराने एक्सप्रेस का इस्तेमाल करने का मौका ही नहीं मिला। तंबू उसके सिर के पास गिर पड़ा और हाथी के भारी-भरकम शरीर के नीचे कुचलकर चूर-चूर हो गया। फिर हाथी ने उसे नोंच-चूर कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। इसी दौरान हाथी की नज़र उस शिकारी पर पड़ी, जो उस समय ज़िंदा था या मरा हुआ, यह कोई नहीं जानता। अपनी भयानक सूंड से उसे जकड़कर हाथी उसे विजयी भाव से पास ही से गुज़रने वाली जंगल की सीमा रेखा के खुले मैदान में ले गया। वहाँ उसने उसे अपने विशाल पैरों से ज़मीन पर तब तक रगड़ा, जब तक कि मानव शरीर का केवल खून से लथपथ मांस और कुचली हुई हड्डियों का एक गूदेदार ढेर ही नहीं बचा, जो जंगल की सीमा रेखा की रेत से मिला हुआ था। अंत में, खून की गंध पसंद न आने पर हाथी ने उस खून से लथपथ ढेर को दूर फेंक दिया और वोडापत्ती ब्लॉक के दुर्गों में लौट गया।

इस घटना के परिणामस्वरूप, सरकार द्वारा दिया जाने वाला इनाम दोगुना करके 1000 रुपये कर दिया गया, जबकि मैंने हाथी के खिलाफ अपना दूसरा दौर शुरू करने का निश्चय किया।

पनापत्ती पहुँचकर मैंने हाल ही में हुई त्रासदी के स्थल का दौरा किया, जहाँ मैं उस रक्तपिपासु हाथी की धृष्टता पर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सका, जिसने आग के घेरे को भी भेद दिया था। पास ही वह स्थान भी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था जहाँ उसने अपने शिकार को ज़मीन पर रगड़ा था, हालाँकि उसके अवशेषों को गिद्धों ने बहुत पहले ही नष्ट कर दिया था।

पनापत्ती लौटकर, मैंने पास के गौशाला के एक पशुपालक से मदद मांगी, जो जानवरों को ढूंढने में माहिर था। चिनार नदी के किनारे रेत में कई पदचिह्न थे, लेकिन समस्या यह थी कि कोई ताजा पदचिह्न ढूंढकर उसका पीछा कैसे किया जाए। यह असंभव था, क्योंकि हाथी जाहिर तौर पर उस इलाके से निकल चुका था और या तो वोडापत्ती ब्लॉक के भीतर कहीं था, या फिर निचली पहाड़ियों को पार करके मुख्य कावेरी नदी की ओर चला गया था, जो जैसा कि मैंने बताया है, लगभग चार मील दूर बहती थी।

वोडापत्ती नदी का किनारा, चिनार नदी के किनारे कुछ मील तक, एक प्रकार की लंबी फूलों वाली घास से ढका हुआ था। इस घास की जड़ें मिट्टी की नमी से पोषित होती थीं और कुछ जगहों पर यह दस फीट तक ऊंची हो जाती थी। इसके ऊपर सुंदर फूलों के गुच्छे होते थे जो गन्ने के फूलों के गुच्छों से मिलते-जुलते थे, लेकिन लंबाई में बड़े और बनावट में कहीं अधिक महीन थे। सुबह-सुबह, इन फूलों के गुच्छों पर रात भर जमा हुई ओस की बूंदें उगते सूरज की किरणों में चमकती थीं, जिससे इन सुंदर पत्तियों को एक जादुई रूप मिलता था और सुंदरता और शांति का ऐसा नजारा दिखाई देता था जो घास के मैदान में प्रवेश करने पर मंडरा रहे खतरे को पूरी तरह से झुठला देता था। ये गुच्छे इतने ऊंचे और घने हो गए थे कि एक गज से ज्यादा आगे देखना मुश्किल था, और घास में चलने के लिए एक हाथ से गुच्छों को हटाना पड़ता था और दूसरे हाथ में राइफल पकड़नी पड़ती थी। हो सकता है कि हाथियों का एक झुंड अंदर छिपा हो, और जब तक वे लगभग छूने की दूरी पर न आ जाएं, तब तक उनका कुछ भी दिखाई नहीं देता था। उस बदमाश द्वारा अपनी पिछली यात्राओं में बनाए गए पदचिह्न कुचले और मुड़े हुए तनों से चिह्नित थे, और ये भी तेजी से अपनी सीधी स्थिति में वापस आ रहे थे।

घास की पट्टी की चौड़ाई 100 से 200 गज तक भिन्न थी। इस बिंदु पर पहाड़ियाँ चिनार नदी से सटी हुई थीं, और जंगल में विशाल बांस के पेड़ थे, जिन्हें पार करना लगभग उतना ही खतरनाक था जितना कि फूलों वाली घास को पार करना। गिरे हुए बांस चारों ओर बहुतायत में बिखरे पड़े थे, जिनके नुकीले सिरे आगे बढ़ने और पीछे हटने दोनों में बाधा डाल रहे थे। पंखनुमा पत्तियों से ढकी लंबी शाखाएँ ऊपर की ओर सुंदर ढंग से झुकी हुई थीं, और जंगल की हवाओं के साथ झुककर चरमराहट की आवाज़ कर रही थीं।

हमने हाथी की तलाश में पूरे चार दिन बिताए, घास के मैदानों और बांसों को पार करते हुए, पहाड़ियों की श्रृंखला को पार करते हुए और उनकी ढलानों से नीचे उतरते हुए, कावेरी नदी का कलकल करता पानी हमारे पैरों के पास से बहता हुआ होगेनैकल के झरनों और जलप्रपातों की ओर, लगभग 35 मील नीचे स्थित विशाल मेट्टूर बांध की ओर, फिर इरोड के पूर्वी मैदान और त्रिचिनोपोली शहर की ओर, और अंत में दूर स्थित बंगाल की खाड़ी की ओर बढ़ गया। इस पूरे समय में, हमें उस दुष्ट हाथी का कोई ताजा निशान नहीं मिला।

पाँचवें दिन की दोपहर को मैं और मेरा मार्गदर्शक एक बार फिर कावेरी नदी के किनारे थे। मैंने अपने लक्ष्य का पता लगाने की उम्मीद में नदी के किनारे-किनारे ऊपर की ओर जाने का फैसला किया। हम बड़ी मुश्किल से लगभग तीन मील आगे बढ़े, नदी के किनारे उगे ऊँचे-ऊँचे हाथी के

पेड़ों की विशाल जड़ों को पार करते हुए, जो पानी में उतरकर अपना पेट भरती थीं और जिनके बीच-बीच में ऊँची-ऊँची फूलों वाली घास उगी थी। तभी हमें एक हाथी के ताज़े पदचिह्न दिखाई दिए, जो स्पष्ट रूप से उसी सुबह कोयंबटूर जिले के दूसरे किनारे से नदी पार करके आया था। मोटे तौर पर नापने पर पता चला कि वे पदचिह्न उस हाथी के पदचिह्नों से मेल खाते थे।

अब पीछा करना आसान हो गया था, क्योंकि हमारे पास अनुसरण करने के लिए एक निश्चित निशान था, और हाथी के पदचिह्न और भारी शरीर ने घास, बांस और झाड़ियों के बीच एक स्पष्ट रास्ता बना दिया था।

पदचिह्न एक छोटी पहाड़ी की ओर ऊपर की ओर जाते हुए हमें गोबर के ढेर तक ले गए, जिसके शिखर के पास हमें गोबर का ढेर मिला। यद्यपि यह काफी ताजा था, फिर भी छूने पर उसमें वह गर्माहट नहीं थी जिससे पता चलता कि इसे अभी हाल ही में निकाला गया था। इसलिए हम आगे बढ़े और एक गहरी घाटी में उतर गए। यहाँ हमें और भी ताजा गोबर मिला, लेकिन छूने पर गर्माहट नहीं थी, जिससे पता चला कि हमारा लक्ष्य अभी कुछ दूरी पर ही था।

हम किसी तरह पास की ढलान पर चढ़े और दो और छोटी पहाड़ियों को पार किया, और फिर हमने देखा कि रास्ते अचानक घूमकर कावेरी नदी की सामान्य दिशा में वापस जाने लगे।

हमें डर सताने लगा कि कहीं जानवर कावेरी नदी पार करके हमसे बच न निकला हो। तेज़ी से आगे बढ़ते हुए, हम गोबर के एक और ढेर के पास पहुँचे, जिस पर पेशाब के निशान थे जो ज़मीन में समा गए थे। लेकिन इस बार रेत में झाग के बारीक निशान दिखाई दे रहे थे और गोबर छूने पर गर्म था। आखिरकार, हमारा शिकार ज़्यादा दूर नहीं था, और न ही कावेरी नदी!

हमारी आगे की यात्रा लगभग एक दौड़ में बदल गई, ताकि हम हाथी के साथ ही नदी तक पहुँच सकें और उसके राइफल की मारक क्षमता से बाहर निकलने से पहले ही वहाँ पहुँच जाएँ। गिरी हुई शाखाओं से, जिनसे ताजा रस रिस रहा था, हम देख सकते थे कि हाथी नदी की ओर बढ़ते हुए आराम से चर रहा था।

अंत में, ज़मीन में एक तेज़ ढलान और एक हल्की सी आवाज़ ने हमें बताया कि हम नदी के किनारे के लगभग पास पहुँच चुके हैं, और जल्द ही पेड़ों के बीच से पानी की चमक ने हमें पुष्टि कर दी कि हम वहाँ पहुँच गए हैं। चुपचाप और सावधानी से हम आगे बढ़े। रेत नरम हो गई। तभी हमने देखा कि हाथी, जैसा कि हमें डर था, नदी पार करने के बजाय अपना इरादा बदल चुका था और नदी के विपरीत दिशा में घास के किनारे पर चला गया था। यहाँ यह स्पष्ट था कि उसके पदचिह्न अभी हाल ही के थे, क्योंकि घास की कोमल पत्तियाँ नम कीचड़ में मजबूती से धँसी हुई थीं, जिसमें से हवा के बुलबुले हमारी आँखों के सामने फूट रहे थे।

हम लगभग 150 गज और आगे बढ़े ही थे कि हमें सामने एक छोटी नदी दिखाई दी, और जैसे ही हम उसके पास पहुँचे, हमें पानी के छपछपाने की आवाज़ और हाथी की सूंड से हवा निकलने की खोखली आवाज़ सुनाई दी। हमारा शिकार नहा रहा था।

सौभाग्य से, जो हल्की हवा चल रही थी वह हमारी दिशा में थी, और जैसे ही हमने बीच में मौजूद घास की टहनियों और तनों को हटाया, हमने पानी में एक हाथी को एक तरफ लेटे हुए देखा, लेकिन उसका चेहरा हमसे दूर था।

इस स्थिति में यह बताना असंभव था कि वह जानवर कोई शरारती हाथी था या नदी के दोनों किनारों पर रहने वाले कई हाथियों के झुंडों में से भटककर आया हुआ हाथी। इसलिए हम बैठकर उसे देखने लगे।

लगभग पाँच मिनट तक ज़ोर-ज़ोर से साँस लेने, फूँकने और पानी उछालने के बाद, जानवर

अचानक उठा और धीरे-धीरे नाले के पार चलने लगा। इस पूरे समय में उसने अपना सिर नहीं दिखाया था, और न ही हम यह देख पाए थे कि उसके दो दाँत थे या एक तरफ टूटा हुआ ठूंठ था।

अब स्थिति ऐसी थी कि तुरंत फैसला लेना जरूरी था, क्योंकि एक बार हाथी नाले के दूसरी तरफ घनी हरियाली में पहुँच जाता तो वो नज़रों से ओझल हो जाता। इसलिए मैंने जल्दी से दो बार अंगूठा और उंगली चटकाई। वह आवाज़, चाहे कितनी भी धीमी रही हो, हाथी के तेज़ कानों तक पहुँच गई। पानी के छींटे और भंवर के साथ वो घूमा और हमारे सामने 'पनापत्ती का बदमाश' खड़ा था, उसके टूटे हुए बाएँ दांत का ठूंठ साफ दिखाई दे रहा था, जबकि दायाँ दांत, छोटा होने के बावजूद, ऊपर की ओर गुस्से से मुड़ा हुआ था। एक ही पल में उसकी छोटी आँखों ने हमें देख लिया, उसकी सूंड अंदर की ओर मुड़ी हुई थी, और सिर ऊपर उठाकर और अपनी छोटी पूंछ को बेतुके ढंग से बाहर निकालकर, जीत और नफरत से चीखते हुए, वो बीच के पानी को पार करते हुए एक और शिकार करने के लिए दौड़ पड़ा।

मेरी .405 राइफल से एक ही गोली चली, भारी ठोस गोली सीधे अपने लक्ष्य पर जा लगी, मुड़ी हुई सूंड के नीचे से होते हुए गले में जा लगी। जानवर वहीं रुक गया, और कटी हुई गर्दन की नस से खून की एक धार फूट पड़ी। भागने की कोशिश में वह एक तरफ मुड़ा, तभी दो और गोलियां लगीं, दोनों ही महत्वपूर्ण अंगों पर, एक कनपटी के कोमल गड्ढे में और दूसरी उसके बड़े कान के पीछे, जब वह आगे की ओर फड़फड़ाया।

वह विशालकाय आकृति स्थिर खड़ी रही, फिर भयंकर बुखार से व्याकुल होकर कांप उठी, और अंत में जैसे किसी ने उसे कुल्हाड़ी से मार डाला हो, वैसे ही नाले के उथले पानी में गिर पड़ी, जो तेजी से खून से लाल हो गया, क्योंकि दोपहर ढलते सूरज की किरणें कोयंबटूर तट पर स्थित माउंट पोनाची मलाई की विशाल चोटी के नीचे गायब हो गईं, जिससे नारंगी आकाश में लाल रंग की लकीरें फैल गईं।

6

सेगुर का नरभक्षी

दक्षिण भारत में प्रसिद्ध नीलगिरी पर्वतमाला (जिसे 'नीली पर्वतमाला' भी कहा जाता है) की उत्तर-पूर्वी ढलानों की तलहटी में सेगुर गांव बसा हुआ है। इस खूबसूरत पर्वतमाला के शिखर पर, समुद्र तल से लगभग 7,500 फीट की ऊंचाई पर, ऊटाकामंड का सुंदर स्वास्थ्य रिसॉर्ट स्थित है। 'पहाड़ी स्टेशनों की रानी' के नाम से मशहूर यह स्थान भारत के कोने-कोने से आने वाले पर्यटकों का आकर्षण केंद्र है। ऊटाकामंड की अपनी एक अलग ही खूबसूरती है, जहां की जलवायु सभी प्रकार के अंग्रेजी फूलों और सब्जियों के उत्तम विकास के लिए अनुकूल है। आस-पास के बागानों से स्टेशन तक फैली ऊंचे नीलगिरी के पेड़ों की सर्वव्यापी सुगंध, देवदार और चीड़ के पेड़ों की सुगंध के साथ मिलकर, ऊटी की यादों को अविस्मरणीय बना देती है, और इसकी ठंडी जलवायु आगंतुकों को नीचे स्थित उमस भरे मैदानी इलाकों की गर्मी और थका देने वाले तापमान से एक सुखद बदलाव प्रदान करती है।

ऊटाकामंड से एक खड़ी ढलान वाली सड़क निकलती है, जिसकी लंबाई 12 मील है। यह सड़क सुंदर, घुमावदार पहाड़ियों से होकर गुजरती है, जहाँ कभी अंग्रेज़ निवासियों का शौक लोमड़ी का शिकार करना हुआ करता था (जहाँ लोमड़ी की जगह स्थानीय सियार का इस्तेमाल होता था)। इसके बाद यह सड़क सेगुर की ओर तेज़ी से नीचे उतरती है, जो पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित है और जहाँ घने उष्णकटिबंधीय वन फैले हुए हैं। सड़क कुछ जगहों पर इतनी खड़ी है कि लगभग अनुपयोगी है, केवल उच्च शक्ति वाली मोटर कारों के लिए ही उपयुक्त है। सेगुर में सड़क दो भागों में बँट जाती है। एक शाखा उत्तर-पश्चिम की ओर घने जंगल से होकर, महवनहल्ला और मासिनीगुडी गाँव से गुजरती हुई, तिप्पकाडु की वन चौकी पर मुख्य सड़क से मिलती है, जो बैंगलोर और मैसूर शहरों को ऊटाकामंड से जोड़ती है। दूसरी शाखा पूर्व की ओर, उतने ही घने जंगल से होकर, नीले पहाड़ों की तलहटी के साथ-साथ, नौ मील दूर स्थित अनाइकुट्टी के वन बंगले तक जाती है। इस क्षेत्र में दो बारहमासी नदियाँ बहती हैं: सेगुर नदी और अनाइकुट्टी नदी। दोनों ही नीलगिरी पर्वतमाला से चांदी की तरह चमकते झरनों के रूप में नीचे आती हैं। यहाँ इनका जल विशाल उष्णकटिबंधीय जंगलों से होकर बहता है और लगभग पंद्रह मील दूर स्थित मोयार नदी में मिल जाता है। मोयार नदी, जिसे 'मैसूर खाई' के नाम से भी जाना जाता है, उत्तर में मैसूर राज्य, उत्तर-पूर्व में कोयंबटूर जिले और दक्षिण में नीलगिरी पर्वतमाला और उसकी तलहटी के बीच सीमा बनाती है। कोयंबटूर और नीलगिरी दोनों मद्रास प्रांत का हिस्सा हैं। पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम में मालाबार-वायनाद के सदाबहार वन फैले हुए हैं।

उल्लेखित सभी क्षेत्र घने जंगलों से आच्छादित हैं, मैसूर, मालाबार और नीलगिरी की ओर

वन्यजीव अभ्यारण्य हैं, और बड़ी संख्या में जंगली हाथी, बाइसन, बाघ, पैंथर, सांभर, चित्तीदार हिरण और अन्य जानवरों का निवास स्थान हैं।

अनाइकुट्टी का वन-बंगला एक छोटी पहाड़ी पर बना है, जिसके किनारे अनाइकुट्टी नदी का उफनता पानी बहता है। गर्मियों में यह जगह मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों से भरी होने के कारण अस्वस्थ रहती है और कई घातक 'काले पानी' के बुखार का कारण भी बनती है। सर्दियों में यह स्वर्ग समान होता है। सुबह ताज़ी और धूप से भरी होती है, जो जंगल में लंबी पैदल यात्रा के लिए आदर्श है। दोपहर हल्की ठंडी होती है। शामें सर्द होती हैं, और रात होते ही पहाड़ों की चोटियों से बर्फीली ठंडी हवा नीचे आती है और आसपास के जंगलों से उठने वाली गर्म हवा की जगह ले लेती है। रातें इतनी कड़ाके की ठंड से भरी होती हैं कि व्यक्ति को बंगले में ही रहना पड़ता है, जिसके सभी कमरों में चिमनी की व्यवस्था की गई है। यहाँ क्रिसमस का माहौल छा जाता है, जंगल की लकड़ियों की जलती हुई आग के सामने बैठकर लोग 'भयानक हिममानव' की ताज़ा कहानियों पर चर्चा करते हैं या भूत-प्रेतों की कहानियाँ रोंगटे खड़े कर देने वाले विस्तार से सुनाते हैं। इस बंगले के परिसर के भीतर भी हाथी, बाघ और तेंदुआ घूमते हैं, उनकी चीखें, दहाड़ें और गुर्राहटें नींद में डूबे हुए व्यक्ति को, जो दोहरी चादरों के नीचे आराम से लेटा हुआ है और जिसके बिस्तर के पास आग की रोशनी है, यह याद दिलाती हैं कि वह अभी भी एक उष्णकटिबंधीय जंगल के बीच में है।

ये जंगल मेरे पसंदीदा स्थलों में से एक हैं, और इनमें मुझे कई छोटे-छोटे रोमांच का अनुभव हुआ है जो इतने वर्षों बाद भी यादगार हैं।

एक उदाहरण के तौर पर बताऊं तो, भारत में जंगली कुत्ते झुंड में शिकार करते हैं, जिनकी संख्या तीन से तीस तक होती है। ये कभी-कभी मैसूर और कोयंबटूर की सीमाओं से इन जंगलों में घुस आते हैं, जहां इनकी संख्या बहुत अधिक है, खासकर कोयंबटूर में। ये झुंड सभी प्रकार के हिरणों, विशेष रूप से सांभर और चित्तीदार हिरणों के लिए बेहद घातक होते हैं। ये उनका बेरहमी से शिकार करते हैं और जिंदा रहते हुए ही उनके टुकड़े-टुकड़े कर देते हैं। कई बार, इन और अन्य जंगलों में, मैंने सांभर को इन कुत्तों द्वारा पीछा करते हुए देखा है। इनका तरीका यह है कि कुछ कुत्ते जानवर का पीछा करते हैं, जबकि अन्य कुत्ते किनारे से निकलकर अपने शिकार से आगे दौड़ते हैं और जैसे ही वह उनके पास से गुजरता है, उस पर घात लगाकर हमला करते हैं। शिकार करते समय, वे बहुत तेज आवाज में लगातार भौंकते हैं, जो कुत्ते की आवाज की बजाय किसी पक्षी की सीटी जैसी लगती है। इन हमलावरों के हमले के बाद शिकार ज़मीन पर गिर पड़ता है। ये शिकारी उसकी आँखें नोच लेते हैं, उसके पेट को चीर देते हैं, उसकी टांगें तोड़ देते हैं या उसे नपुंसक बना देते हैं। एक बार मैंने एक सांभर को जंगली कुत्तों से पीछा छुड़ाते हुए देखा, जो खुद को बचाने के लिए पानी के एक कुंड में कूद गया। उसके पेट को चीर दिया गया था और उसकी आँतें बीस फीट तक उसके पीछे घिसटती रहीं। सांभर असाधारण रूप से सहनशील होते हैं, और कभी-कभी तो ये कुत्ते उन्हें मारने से पहले सचमुच जिंदा ही खा जाते हैं।

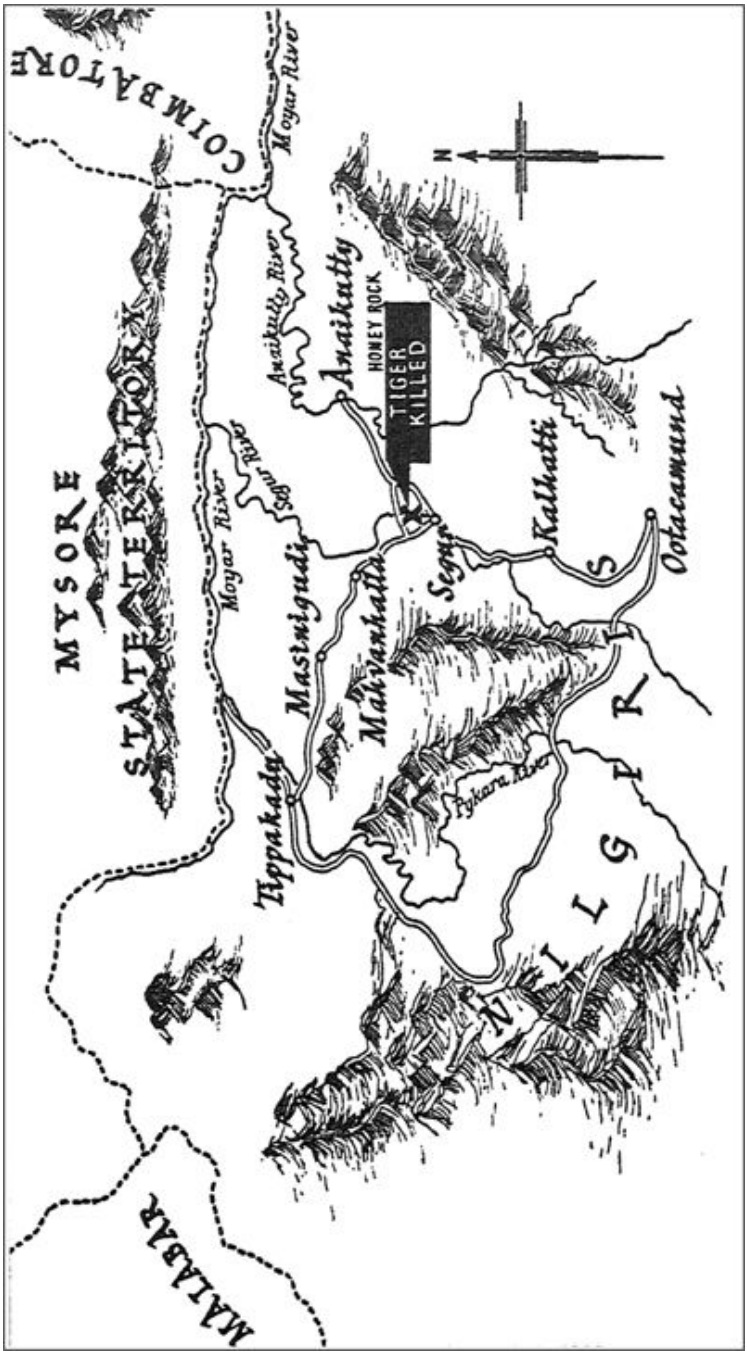

सेगुर के आदमखोर की कहानी में उल्लिखित स्थानों का रेखाचित्र।

एक शाम, लगभग 5 बजे, मैं बंगले से एक मील दूर था और ज़मीन पर उगने वाले एक अनोखे प्रकार के ऑर्किड को देख रहा था, जो छोटे-छोटे तारे के आकार के फूलों के गुच्छे के रूप में ज़मीन से निकल रहा था। अचानक मुझे कई तरह की आवाज़ें सुनाई दीं, जिनका स्रोत मैं पहले

समझ नहीं पाया। चीखें, भौंकना और लंबी-लंबी आवाज़ें थीं, जिनके बीच-बीच में गुर्राहट और खुरों की आवाज़ें आ रही थीं, जो मुझे हैरान कर रही थीं। फिर मुझे पता चला कि ये जंगली कुत्तों की आवाज़ थी, जो शायद किसी सूअर या भालू पर हमला कर रहे थे। मैंने अपनी राइफल उठाई और शोर की दिशा में दौड़ पड़ा। शायद एक फर्लांग ही चला होगा कि कोने से एक बाघिन निकली, जिसके चारों ओर आधा दर्जन जंगली कुत्ते थे। एक पेड़ के तने के पीछे छिपकर मैं उस अनोखे दृश्य को देखता रहा।

कुत्ते बाघिन के चारों ओर फैल गए थे, जो भयंकर रूप से गुर्रा रही थी। बीच-बीच में कोई कुत्ता पीछे से आकर उसे काट लेता। तब वह उस छोटे से हमलावर को चीर-फाड़ करने की कोशिश करती, तभी कुछ और कुत्ते दूसरी दिशा से झपट पड़ते। इस तरह वह लगातार लड़ती रही, और मैं देख सकता था कि वह बहुत थक चुकी थी।

इस पूरे समय कुत्ते ज़ोर-ज़ोर से शोर मचा रहे थे, जिसका कारण मुझे जल्द ही पता चल गया, जब लड़ाई में थोड़ी देर की शांति के दौरान मैंने मुख्य झुंड की सीटी जैसी आवाज़ सुनी, जो अपने अग्रिम दल की सहायता के लिए सरपट दौड़ रहा था। बाघिन ने भी वह आवाज़ सुनी होगी, क्योंकि अचानक और नए गुस्से में आकर उसने दो कुत्तों पर हमला कर दिया, जिनमें से एक की पीठ पर उसने अपने पंजे से ज़ोरदार प्रहार किया, जिससे उसकी रीढ़ की हड्डी टूटी हुई टहनी की तरह चटक गई। दूसरा किसी तरह खतरे से बच निकला। बाघिन ने अपने क्षणिक लाभ का फायदा उठाते हुए छलांग लगाई और तुरंत ही बाकी पाँच कुत्ते उसके पीछे-पीछे भाग गए। वे अभी नज़रों से ओझल ही हुए थे कि मुख्य झुंड, जिसमें मैंने तेईस कुत्ते गिने, मेरे सामने से सरपट दौड़ते हुए निकल गए, मानो मेरी उपस्थिति में कोई दिलचस्पी न दिखा रहे हों। जल्द ही पीछा करने की आवाज़ें शांत हो गईं, और वहाँ केवल एक मरा हुआ कुत्ता ही रह गया।

उस घटना के दौरान मैं इतना मग्न था और कुत्तों के साहस की प्रशंसा में इतना डूबा हुआ था कि न तो बाघिन पर और न ही उसके हमलावरों पर गोली चला सका।

अगली सुबह मैंने घटना का पता लगाने के लिए कुछ जासूस भेजे। वे दोपहर करीब लौट आए और अपने साथ बाघ की खाल के कुछ टुकड़े लाए। उन्होंने बताया कि कुत्तों ने आखिरकार लगभग पाँच मील दूर अपने थके-हारे शिकार को घेर लिया था और बाघिन के टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे। जहाँ तक उन्हें पता चला, अंतिम लड़ाई में पाँच कुत्ते मारे गए थे, जिसके बाद विजयी कुत्तों ने बाघिन को खा लिया था, और यहाँ तक कि अपने मरे हुए साथियों के भी बड़े हिस्से खा लिए थे।

इन क्षेत्रों में तीन अलग-अलग जनजातियों के लोग निवास करते हैं। इनमें से एक हैं बडागा, जो मैसूर राज्य से आए प्राचीन आक्रमणकारियों के वंशज हैं, जो स्वयं उत्तर से आए मोहम्मदियों से भागकर यहाँ आए थे। ये बडागा अब समृद्ध हो चुके हैं; उनके पास ज़मीनें, मवेशियों के विशाल झुंड और अर्ध-जंगली भैंसें हैं, जिनके सींग बेहद लंबे और घुमावदार होते हैं। इसके बाद आते हैं केशव, जो संख्या में सबसे अधिक हैं लेकिन स्वभाव से सबसे आलसी हैं, और बडागाओं के अधीन चरवाहे और किसान के रूप में काम करते हैं। अंत में आते हैं करुम्बा, जो संख्या में अपेक्षाकृत कम हैं, इस भूमि के मूल निवासी हैं और अब पूरी तरह से वनवासी हैं; वे जंगली शहद, कंद, शिकार और छोटे जानवरों और पक्षियों को फंसाकर अपना जीवन यापन करते हैं। ये करुम्बा कुशल शिकारी होते हैं, और कोयंबटूर जिले के शोलागा और सलेम के पुजारियों की तरह, प्रकृति के सच्चे बच्चे हैं, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक जंगलों में ही रहते हैं।

जिस देश में यह रोमांचक घटना घटी, उसके बारे में पाठक को थोड़ी जानकारी देने के बाद, मैं अब और समय बर्बाद किए बिना 'सेगुर के नरभक्षी' की कहानी सुनाऊंगा।

बताया जाता है कि यह बाघ मूल रूप से मालाबार-वायनाद जिले के साइलेंट वैली वन ब्लॉक के जंगलों से आया था, जो नीलगिरी पर्वतमाला के बिल्कुल विपरीत या दक्षिण-पश्चिमी हिस्से के नीचे स्थित है। यह क्षेत्र हाथियों से भरा हुआ है, जिनमें से कुछ को 'बदमाश' माना जाता है, और यहाँ बाइसन भी पाए जाते हैं। आमतौर पर यहाँ बाघों की संख्या कम ही होती है। साइलेंट वैली में कुछ बाघों ने इंसानों को मारा था, लेकिन फिर यह सिलसिला पूरी तरह से बंद हो गया। इसके बाद यह सिलसिला गुडालूर (टिप्पकाडु से लगभग बीस मील दूर), मासिनीगुडी और अंत में सेगुर और अनाइकुट्टी के बीच के सभी क्षेत्रों में फिर से शुरू हो गया। बाघ अपने मूल स्थान से इतनी दूर कैसे और क्यों आया, और ऐसा करने में उसने नीलगिरी पर्वतमाला के अधिकांश हिस्से का चक्कर कैसे लगाया, यह कोई नहीं जानता।

ग्रीष्म ऋतु का मध्य था और बाघ विशेष रूप से सक्रिय था, उसने सेगुर में और एक सप्ताह के भीतर अनाइकुट्टी में शिकार किया था, जब मैं वहाँ पहुँचा। अंतिम शिकार एक केशव चरवाहा था, जो अनाइकुट्टी से लगभग दो मील दूर नदी के निचले हिस्से में, मोयार की ओर बहने वाली नदी के किनारे, अपने अर्ध-जंगली भैंसों के झुंड की देखभाल कर रहा था। इस घटना में, आदमखोर बाघ ने आसपास चर रही भैंसों की बिल्कुल अनदेखी करते हुए उस व्यक्ति का पीछा किया और उस पर हमला कर दिया। उसने उसे मार डाला था और शायद उसे ले जा रहा था, तभी भैंसों को उसकी उपस्थिति का आभास हो गया।

जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, ये जानवर केवल अर्ध-पालतू हैं और किसी अजनबी के लिए बेहद खतरनाक हैं, खासकर अगर वह यूरोपीय लोगों की तरह असामान्य पोशाक में हो, क्योंकि ऐसे में वे अक्सर देखते ही हमला कर देते हैं। बाघ को देखकर, उन्होंने जाहिर तौर पर उस पर सामूहिक रूप से हमला किया और उसे भगाने में सफल रहे, और मृत व्यक्ति को वहीं छोड़ दिया जहाँ उसे गिराया गया था।

उस रात न तो भैंसें लौटीं और न ही चरवाहा बाड़े में, इसलिए अगली सुबह जल्दी ही एक खोज दल उनकी अनुपस्थिति का कारण पता लगाने के लिए निकल पड़ा। उन्हें जल्द ही मृत चरवाहा मिल गया, जो शांति से चर रही भैंसों के झुंड से घिरा हुआ था। इन भैंसों ने बाघ को अपने शिकार तक वापस जाने से रोक दिया था। शव, बाघ के पदचिह्नों और दौड़ती हुई भैंसों के खुरों के निशानों की जांच से घटनाक्रम का पता चला, जैसा कि मैंने बताया है।

एक सप्ताह पहले सेगुर में जो शिकार हुआ था, वह एक महिला का था, जो अपने परिवार के लिए पानी लाने के लिए पानी का घड़ा लेकर सेगुर नदी गई थी। इस मामले में बाघ अपने शिकार को ले जाने में सफल रहा था। घटना के एकमात्र सबूत टूटे हुए पानी के घड़े, नदी के किनारे की नरम मिट्टी में बाघ के पैरों के निशान, खून की कुछ बूँदें, फटी हुई साड़ी और झाड़ियों में उलझे हुए कुछ बाल थे, जो बाघ के शिकार को ले जाते समय वहीं फंस गए थे।

मैंने दोनों स्थानों का दौरा किया और सेगुर में नदी के किनारे स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाले पगों के सावधानीपूर्वक माप और परीक्षण के बाद यह निर्धारित किया कि बाघ एक छोटे आकार का नर था जिसकी उम्र वयस्क से काफी कम थी।

खबरों के मुताबिक, बाघ अक्सर सेगुर और अनाइकुट्टी के बीच दस मील लंबे वन मार्ग से गुजरता था, और उसके पंजों को इस रास्ते पर, खासकर दोनों स्थानों के आसपास देखा जाता था। इसलिए, मैंने प्रारंभिक तौर पर इस मार्ग पर अलग-अलग चुनिंदा स्थानों पर बैठने का फैसला किया, और पाठक को अधिक विवरणों से उबाऊ बनाए बिना, इस योजना को अमल में लाया। इस तरह मैंने पूरा एक सप्ताह सेगुर और अनाइकुट्टी के आसपास बारी-बारी से बिताया, लेकिन बाघ का कोई निशान नहीं दिखा।

सातवीं रात मैंने सेगुर से डेढ़ मील दूर एक पेड़ पर बिताई। अगली सुबह अनाइकुट्टी वन बंगले में लौटने पर, जहाँ मैंने अपना मुख्यालय स्थापित किया था, मुझे सूचित किया गया कि करुम्बा नाम का एक व्यक्ति, जो पिछली सुबह नीलगिरी की निचली पहाड़ियों से लगभग चार मील दूर 'हनी रॉक' नामक स्थान के आसपास सैकड़ों की संख्या में पाई जाने वाली विशाल चट्टानी मधुमक्खियों के छत्तों से जंगली शहद इकट्ठा करने के लिए निकला था, अभी तक नहीं लौटा था।

बीस लोगों का एक खोज दल बनाकर, मैं उनके साथ इस जंगली और घने जंगल वाले इलाके में गया। आदमखोर सांप के संभावित हमले से बचाव के लिए दल को पाँच-पाँच लोगों के चार समूहों में बाँटकर, हमने दोपहर तक खोजबीन की। तभी एक व्यक्ति ने नाले में मृत करुम्बा का शव देखा और मुझे यह सूचना दी। मैं वहाँ गया और पाया कि उस व्यक्ति को गले पर काटकर मारा गया था। उसके पास ही उसकी खाली मिट्टी के तेल की डिब्बी पड़ी थी, जिसमें वह शहद इकट्ठा कर रहा था। सारा शहद ज़मीन पर फैल गया था, जिससे काली चींटियों का एक झुंड दावत बन गया था और डिब्बी काली होकर एक ढेर में बदल गई थी।

पहले तो हमें लगा कि बाघ ने उसे मार डाला है, और हम यह सोचकर हैरान थे कि उसने उसे उस शांत, एकांत जगह पर क्यों नहीं खाया। हमने चारों ओर पैरों के निशान खोजने शुरू किए, लेकिन जल्द ही पता चला कि हत्यारा एक मादा स्लॉथ-भालू थी, जिसके साथ उसका बच्चा भी था। नाले की तलहटी में बिछी नरम रेत पर माँ के पैरों के मानव जैसे निशान और बच्चे के छोटे-छोटे निशान साफ दिखाई दे रहे थे।

ऐसा प्रतीत होता है कि मादा भालू अपने बच्चे के साथ सो रही थी, या शायद नाले को पार करने ही वाली थी, तभी शहद की तलाश में निकला करुंबा अचानक उसके सामने आ गया। सुस्त भालू का स्वभाव वैसे भी बहुत अनिश्चित होता है, क्योंकि उसकी दृष्टि और श्रवण शक्ति कमजोर होती है, इसलिए मनुष्य अक्सर पकड़े जाने से पहले ही उसके बहुत करीब पहुँच जाते हैं, जब वे भय और उत्तेजना में आकर बिना किसी उकसावे के हमला कर देते हैं। निस्संदेह यही हुआ होगा, जब मादा भालू, आश्चर्यचकित, भयभीत और चिढ़कर, और अपने बच्चे की रक्षा में, जिसे वह खतरे में समझ रही थी, करुंबा पर झपटी, उसका गला काट दिया, उसकी गर्दन की नस को चीर दिया, और फिर जितनी तेजी से हो सके भाग गई।

मैं उस भालू का शिकार करने में समय बर्बाद नहीं करना चाहता था, जिसने अपने बच्चे की रक्षा में ही मारा था। मैं अनाइकुट्टी स्थित बंगले पर लौट रहा था, तभी दल में शामिल चार करुम्बा लोगों ने मुझसे उस जानवर का पीछा करके उसे गोली मारने का आग्रह किया। उनका मानना था कि जब वे शहद लेने उसी स्थान पर आएंगे, तो वह जानवर उनके लिए खतरा बन सकता है। इसलिए, मैंने उन्हें खुश करने के लिए, न कि अपनी इच्छा से, बाकी दल को वापस भेज दिया और उन चार आदमियों के पीछे-पीछे मादा भालू के निशान की ओर चल पड़ा।

पगडंडियाँ नाले के किनारे-किनारे जाती थीं और फिर एक धारा में मिल जाती थीं, जिसके किनारे श्रीमती ब्रुइन और उनका बच्चा कुछ दूर तक टहलते हुए जंगल में वापस आ गए थे। वहाँ से वे ऊपर की ओर उन अनेक चट्टानों और गुफाओं की ओर चढ़ गईं जहाँ उन्हें आश्रय मिला हुआ था। वहाँ हर संभव चट्टानी उभार से सैकड़ों चट्टानी मधुमक्खी के छत्ते लटके हुए थे, जो लंबे, काले पिंडों के रूप में थे, जिनकी लंबाई कभी-कभी पाँच फीट से अधिक, चौड़ाई एक गज और मोटाई एक फुट से अधिक होती थी।

जिस ज़मीन पर हम चल रहे थे, वह कठोर और पथरीली थी, और मेरी अनुभवहीन आँखों को वहाँ भालुओं के आने-जाने का कोई निशान नहीं दिख रहा था। लेकिन करुम्बा लोग शायद ही कभी गलती करते थे, और लंबी और थका देने वाली पैदल यात्रा के दौरान उनकी निशानेबाज़ी

वाकई देखने लायक थी। दो घंटे से अधिक समय तक वे मुझे पहाड़ी पर चढ़ाते, घाटी में उतारते, गहरी घाटियों और पथरीली चोटियों को पार कराते रहे। एक पलटा हुआ पत्थर, एक उखड़ा हुआ पत्ता, या खरोंचने या खोदने के हल्के से निशान भी उन्हें बता देते थे कि भालू कहाँ-कहाँ गए थे।

अंततः हम एक गुफा के प्रवेश द्वार के पास पहुँचे, जो एक उभरी हुई चट्टान के ऊपर स्थित थी, जिससे तेईस अलग-अलग चट्टानी मधुमक्खी के छत्ते लटके हुए थे। उन्होंने बताया कि यह गुफा मादा भालू और उसके बच्चे का घर थी।

प्रवेश द्वार से दस गज की दूरी पर, एक तरफ खड़े होकर, मैंने आदमियों को गुफा के अंदर पत्थर फेंकने का निर्देश दिया, जिसे उन्होंने लगभग बीस मिनट तक बिना रुके पूरे जोश के साथ किया। लेकिन हमें कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। फिर करुम्बा लोगों ने घास की मशाल बनाई, जिसे हमने जलाकर गुफा में फेंक दिया, लेकिन फिर भी कुछ नहीं हुआ। अंत में उन्होंने पाँच ऐसी ही मशालें बनाईं। इनमें से एक को जलाकर, मैं उस करुम्बा के पीछे गुफा में चला गया जो उसे ले जा रहा था, जबकि बाकी तीन करुम्बा हमारे पीछे-पीछे घास की चार अतिरिक्त मशालें लेकर आए।

गुफा अंदर से अपेक्षाकृत छोटी थी और स्पष्ट रूप से खाली थी, क्योंकि हमारे आने की आहट सुनते ही या उससे पहले ही उसमें रहने वाली जीव और उसका बच्चा वहां से चले गए थे। लेकिन मुझे इस बात की खुशी थी, क्योंकि जैसा कि मैंने कहा, मुझे इस जानवर से कोई झगड़ा नहीं था, और अगर मुझे उसे गोली मारनी पड़ती और बच्चे को अनाथ छोड़ना पड़ता तो मुझे बहुत दुख होता।

हमने अपनी तीसरी मशाल जला ली थी और निकलने ही वाले थे कि करुम्बा समुदाय के एक व्यक्ति को भारतीय जंगल की एक रोचक अनोखी चीज दिखाई दी, जिसके बारे में मैंने सुना तो था लेकिन कभी देखा नहीं था, और इसलिए मुझे उसके अस्तित्व पर कभी विश्वास नहीं था।

उसे एक कोने में वह चीज़ मिली जिसे स्थानीय लोग 'भालू की रोटी' या तमिल में 'कराडी रोटी' कहते हैं। यह लगभग गोलाकार, दस इंच चौड़ी और एक इंच मोटी, चिपचिपी और गंदी काली-पीली सी थी। मादा भालू 'कटहल' के फल, जो बड़े आकार के और खुरदुरे, कांटेदार होते हैं; जंगली 'लौह-सेब' के फल, जो बड़े टेनिस बॉल के आकार के और सख्त छिलके वाले होते हैं; और मधुकोश के टुकड़े, जिनमें मधुमक्खियाँ, छत्ता और शहद शामिल होते हैं, की तलाश करती हैं। इन सभी चीज़ों को पहले मादा भालू बारी-बारी से खाती है, फिर पूरे मिश्रण को गुफा में उल्टी के रूप में निकाल देती है, जिसे मादा भालू अपने बच्चों के लिए आरक्षित भोजन के रूप में सख्त होने देती है।

संभवतः अपने लंबे बालों के कारण, भालू चट्टानी मधुमक्खी के डंक से आश्चर्यजनक रूप से अप्रभावित रहता है, जो मनुष्यों के लिए बड़ी संख्या में होने पर घातक साबित हो सकता है। यह जंगली फलों और शहद के छत्तों की तलाश में आश्चर्यजनक कुशलता से पेड़ों और चट्टानों पर चढ़ सकता है। एक गुफा, जिसमें एक मादा भालू अपने बच्चों के साथ रहती है, में कभी-कभी ऐसे एक दर्जन केक मिलने की बात कही जाती है। इस मामले में हमें केवल एक ही मिला, लेकिन चूंकि मैंने इसे पहले कभी नहीं देखा था, इसलिए मुझे इसमें बहुत दिलचस्पी थी। इस 'रोटी' की पौष्टिकता के प्रमाण के रूप में, चारों करुम्बाओं ने इसे मुझे तुरंत खाने के लिए दिया, लेकिन मैंने धन्यवाद के साथ मना कर दिया। फिर उन्होंने इसे आपस में बराबर बाँट लिया और बड़े चाव से खाया।

हम अब गुफा के प्रवेश द्वार पर बैठे थे। पता नहीं मशाल की लौ, धुआँ या इंसानों की आवाज़

ने उन्हें विचलित किया या नहीं, लेकिन अचानक कुछ काली वस्तुएँ हमारे चारों ओर भिनभिनाने लगीं, और जैसे ही हम भागने के लिए उछले, ठीक ऊपर स्थित छत्ते से चट्टानी मधुमक्खियाँ, बेहद घबराई हुई और क्रोधित होकर, हम पर टूट पड़ीं।

वहाँ हर कोई अपनी जान बचाने में लगा था, और जैसे ही मैंने अपनी राइफल उठाई और पहाड़ी से नीचे भागा, फुर्तीले करुम्बा मुझसे बहुत जल्दी आगे निकल गए। हालाँकि, कपड़ों में होने के कारण मेरी गति में जो कमी थी, वह पूरी हो गई। मधुमक्खियाँ मेरी गर्दन, हाथों और शरीर के अन्य खुले हिस्सों पर लगभग बीस डंक मार चुकी थीं, जबकि करुम्बाओं की नंगी त्वचा पर मैंने लगभग चालीस डंक गिने, जब हम आधा मील दूर जाकर धीमे हुए। यह वाकई एक दुखद लेकिन दिलचस्प सुबह का हास्यास्पद अंत था, और हम अनाइकुट्टी लौट आए, पहले से कहीं अधिक समझदार, लेकिन बहुत दर्द और तकलीफ से जूझते हुए।

उस रात मैं रात 8 बजे अपनी स्टडबेकर कार में धीरे-धीरे सेगुर की ओर चल पड़ा। मेरे बगल में एक करम्बा (एक प्रकार की कार) सहायक की तरह चल रही थी और दोनों ओर जंगल में मेरी 'सील्ड-बीम' स्पॉटलाइट की रोशनी चमका रही थी। कुछ भी न मिलने पर हम उत्तर-पश्चिमी सड़क पर छह मील आगे बढ़े, महवनहल्ला और मासिनीगुडी से होते हुए अंत में तिप्पाकाडु स्थित वन चौकी तक चार मील का सफर तय किया। यहाँ हमने एक घंटा आराम किया और फिर वापस लौटे। इस बार तिप्पाकाडु से तीन मील दूर सड़क किनारे हमें बाइसन का एक झुंड दिखाई दिया।

जैसे ही गाड़ी पास पहुंची, ये जानवर भाग निकले। मासिनीगुडी और सेगुर के बीच हमें कई चित्तीदार हिरण मिले, और अनाइकुट्टी की ओर मुड़ते ही सड़क के बीचोंबीच एक विशाल नर हाथी दिखाई दिया, जिसकी दाँतें स्पॉटलाइट की तेज़ रोशनी में चमक रही थीं। सींग की हल्की सी आवाज़ ही उसे भगाने के लिए काफी थी, और आखिरकार हम अनाइकुट्टी बंगले पर पहुँच गए, बिना उस आदमखोर हाथी का कोई निशान देखे।

अगली सुबह मौसम सुहाना और चमकदार था, और मैं अपने करुम्बा गाइड के साथ जंगल पार करते हुए मोयार नदी की ओर चल पड़ा, जो उत्तर दिशा में नौ मील दूर थी। एक बार फिर हमें बाघ का कोई निशान नहीं मिला, लेकिन जैसे ही ज़मीन मोयार नदी के बेसिन की ओर ढलान पर जाने लगी, हमें एक असाधारण रूप से बड़े जंगली तेंदुआ के पैरों के निशान दिखाई दिए। उसके पैरों के निशान देखकर लग रहा था कि वह वाकई एक बड़ा जानवर था, लगभग एक छोटी बाघिन के आकार का, और अगर मेरे पास उसका पीछा करने का समय होता तो वह एक शानदार ट्रॉफी बन सकता था। अपनी लंबी और निष्फल सैर के बाद, हम दोपहर बाद थके-हारे और कुछ निराश होकर बंगले पर लौट आए।

उस रात हम फिर से टिप्पाकाडु के लिए मोटर से गए और वापस आए, और लौटते समय अनाइकुट्टी वन बंगले से पहले नदी पार करते समय हमें केवल एक अकेला सांभर ही दिखाई दिया।

भोर होते ही मैंने अपने करुम्बा (एक प्रकार का बैल) के साथ एक और पैदल यात्रा शुरू की, इस बार दक्षिण-पूर्व दिशा में नीलगिरि की ओर। चार मील दूर झाड़ियों में हमें एक मृत मादा-बाइसन मिली। शव की जांच से पता चला कि जानवर की मृत्यु रिंडरपेस्ट रोग से हुई थी। वन विभाग ने लगभग दो महीने पहले बताया था कि यह महामारी बडागा जनजाति के मवेशियों से फैली थी, जिनके झुंडों में यह संक्रामक और महामारी के रूप में फैल गई थी, और जंगली जानवरों, विशेष रूप से बाइसन में फैल गई थी। यहाँ इस कथन का प्रमाण मिला।

उसी दोपहर महावनहल्ला से खबर आई कि बाघ ने उस पुल के पास एक महिला को अपना

शिकार बना लिया है, जहाँ से तिप्पाकाडु जाने वाली मुख्य सड़क महावनहल्ला नाले को पार करती है और फिर सेगुर नदी में मिल जाती है। गाड़ी से घटनास्थल पर जाते समय मुझे वह जगह दिखाई गई जहाँ पिछली शाम को नाले के किनारे घात लगाए बैठे बाघ ने उस महिला पर हमला किया था। वह महिला महावनहल्ला में बाड़े में बंद बड़ी संख्या में मिश्रित गायों और भैंसों को पानी पिलाने वाले चरवाहों में शामिल थी।

ऐसा प्रतीत होता है कि घटना का प्रत्यक्षदर्शी कोई नहीं था। महिला पुल के पास एकत्रित लोगों से थोड़ी दूर, सड़क के नीचे से गुजरने से ठीक पहले छोटी सी धारा के मोड़ पर छिपी हुई थी। उसने चीख मारी और उसके बाद सन्नाटा छा गया। शेष पाँच चरवाहे जल्दी से महवनहल्ला गए, वहाँ से छह अन्य लोगों को इकट्ठा किया, जिनमें उस दुर्भाग्यपूर्ण महिला का पति भी शामिल था, और उसकी तलाश में वापस उसी स्थान पर लौट आए। उन्हें वह टोकरी मिली जो वह ले जा रही थी, और पास ही नरम मिट्टी में बाघ के पदचिह्न मिले; फिर पूरा दल महवनहल्ला लौट आया। अगले दिन भोर में, जिन चार लोगों ने अब अपनी पहचान बताई थी, वे पैदल मार्ग से अनाइकुट्टी तक दस मील की दूरी तय करने और मुझे घटना की सूचना देने के लिए निकल पड़े, क्योंकि यह ज्ञात हो गया था कि मैं बाघ का शिकार करने के लिए उस क्षेत्र में था।

हम उस जगह गए जहाँ महिला पर हमला हुआ था, और मेरे करुम्बा ट्रैकर की कुशल सहायता से हम जल्द ही बाघ और उसके शिकार के पदचिह्नों का पता लगाने में सफल रहे। पीछा करने से पहले मैंने महावनहल्ला से दल को विदा किया, साथ ही मृतक के पति को भी, जिसने मुझसे वादा लिया कि मैं उसकी प्रिय पत्नी की कम से कम कुछ हड्डियाँ अवश्य वापस लाऊँगा ताकि अंतिम संस्कार की रस्में पूरी हो सकें।

लगभग बिना रुके, मेरे करुम्बा गाइड ने बाघ द्वारा छोड़े गए उस अदृश्य निशान का पीछा किया जो मुझे बिल्कुल दिखाई नहीं दे रहा था। आदमखोर बाघ स्पष्ट रूप से एक ऊँची पहाड़ी की ओर बढ़ रहा था, जो नीलगिरी पर्वतमाला की एक शाखा थी और पश्चिम में सड़क के समानांतर लगभग दो मील की दूरी पर स्थित थी। वर्षों पहले मैं एक अच्छे बाइसन के सिर की तलाश में इसी पहाड़ी पर आंशिक रूप से चढ़ा था, और जानता था कि इसकी मध्य ढलानें लंबी भाला घास के विशाल आवरण से ढकी हुई थीं, जो ऊपर और अधिक पथरीले स्तरों पर पहुँचने पर धीरे-धीरे कम होती जाती थीं। उस क्षेत्र में, मुझे लगा कि बाघ या उसके शिकार को खोजने की हमारी संभावना बहुत कम थी।

फिर भी, मेरा छोटा सा साहसी मार्गदर्शक बिना किसी गलती के आगे बढ़ता रहा, और पहाड़ी की तलहटी से एक मील की दूरी पर झाड़ियों में फंसी महिला की साड़ी मिली। कुछ ही देर बाद बाघ ने अपना इरादा बदल लिया, क्योंकि उसका रास्ता दाहिनी ओर, पहाड़ी के समानांतर मुड़ गया, जो अब काफी पास थी, और फिर से महावनहल्ला नदी के तल की ओर चला गया। उसका पीछा करते हुए, हम अंततः नदी तक पहुँच गए, जो यहाँ एक गहरी घाटी से होकर बह रही थी। इस ढलान पर बिखरे हुए बांस के झुंडों की संख्या बढ़ती जा रही थी, और गिद्धों की तीखी चीख और उनके पंखों की भारी फड़फड़ाहट ने जल्द ही हमारी खोज के अंत की घोषणा कर दी। महिला के अवशेष बांस के एक झुंड के नीचे पड़े थे, जिन्हें बाघ खा गया था, और गिद्धों ने उसके भोज से बचा हुआ हिस्सा चट कर लिया था। हमें सिर अलग पड़ा मिला, बड़ी चिड़ियों ने उसकी आँखें निकाल ली थीं, और चेहरे का अधिकांश मांस भी खा लिया था। हमने उसके हाथों और पैरों, कांच की चूड़ियों और चांदी की पायल समेत उस भयानक अवशेष को इकट्ठा किया और घास में लपेट दिया। अपने वादे के मुताबिक, करुंबा ने बड़ी अनिच्छा से उस गठ्ठे को अपने पति के पास पहुंचाया। वहीं बैठे रहना समय की बर्बादी लग रहा था, क्योंकि बाघ ऐसे बिखरे हुए

अवशेषों के पास वापस नहीं आएगा।

उस रात मैंने कार से शिकार जारी रखा, लेकिन सफलता नहीं मिली। अगले दिन मुझे एक जवान भैंस मिली, जिसे मैंने महवनहल्ला में नदी के मोड़ के पास बांध दिया, जहाँ उस महिला पर हमला हुआ था। बाघ के उसी स्थान पर आने की संभावना बहुत कम थी, इसलिए मैंने जीवित भैंस के पास बैठकर शिकार होने का इंतज़ार करने का फैसला किया।

मेरा यह अनुमान गलत निकला, क्योंकि अगले दिन दोपहर से पहले ही संदेशवाहक अनाइकुट्टी पहुँचकर यह सूचना देने आए कि भैंस को बाघ ने मार डाला है और उसका कुछ हिस्सा खा लिया है। दोपहर 3 बजे तक मेरा मचान तैयार हो गया था और मैं लगभग पंद्रह फीट की ऊँचाई से मृत भैंस को देखते हुए बैठ गया।

नीलगिरी की निचली ढलानों पर रहने वाली नेवले की एक बड़ी प्रजाति, एक विशाल लाल मार्टिन, शिकार स्थल पर सबसे पहले दिखाई दी। वह शाम लगभग 5:30 बजे आई, पहले तो उसने सावधानी से थोड़ा-थोड़ा खाया, और फिर कच्चे मांस के बड़े-बड़े टुकड़े चट करने लगी। शाम 6 बजे तक उसका पेट पूरी तरह भर चुका था, और वह रात भर या तो बिना सपने देखे संतुष्टि से या फिर बदहजमी से जूझते हुए बिताने के लिए चली गई।

जैसे ही शाम ढलने लगी, तीन सियार दबे पांव आगे बढ़े। बड़ी हिम्मत से वे मरे हुए जानवर के पास पहुँचे, उसे सूंघा और चारों ओर आशंका से देखते हुए भाग निकले, लेकिन भूख और तीव्र भूख के कारण वे हर बार लौट आते थे। लगभग चौथी कोशिश में वे खाने के लिए बैठे, लेकिन कुछ ही निवाले खा पाए थे कि तभी एक हलचल मच गई और वे गायब हो गए।

मुझे लगा कि यह निश्चित रूप से बाघ का आगमन है, और सचमुच एक दबे पांव, भूरे रंग की आकृति खुले में प्रकट हुई और सावधानी से अपने शिकार की ओर बढ़ी। हालांकि, कोई बाघ इतनी शर्मिंदगी से अपने ही शिकार के पास नहीं जाता, और लकड़बग्घा—आखिरकार वह लकड़बग्घा ही था—अपने छोटे चचेरे भाइयों, सियार की तरह सतर्क और भयभीत होकर शिकार के पास जाने लगा।

कई बार उसने मांस को सूंघा, और साथ ही इधर-उधर चुपके से देखता रहा। कई बार वह लड़खड़ाते हुए दूर चला गया, चारों ओर चक्कर लगाकर यह देखने के लिए कि आसपास कोई है या नहीं, फिर सावधानी से वापस आकर जल्दी से एक निवाला भर लेता। फिर वह एक और चक्कर लगाता ताकि यह सुनिश्चित कर सके कि शिकार का असली मालिक आसपास तो नहीं है और उसे रंगे हाथों पकड़ न ले। यह सिलसिला लगभग आधे घंटे तक चलता रहा, फिर लकड़बग्घा गंभीरता से भोजन करने बैठ गया।

वह दस मिनट से खाना खा रहा था कि पास ही एक बाघ ने पुकारा, 'आ-ऊंघ, आउंघ-हा, उगा-उघ, ओ-ओ-ओ-न-ओ-ओ-न', यह आवाज शांत रात की हवा में चार बार दोहराई गई, और लकड़बग्घा मानो जादू से उड़ गया और वापस नहीं लौटा।

मैं तल्लीन बैठा रहा, पल भर के लिए जंगल के राजा के आने की उम्मीद कर रहा था। लेकिन घंटे बीतते गए और वह नहीं आया। कारण चाहे जो भी रहा हो, उस रात उस बाघ ने अपने शिकार से दूरी बनाए रखी, और सुबह होते ही मैं भीषण ठंड से कांपने लगा, जो गर्मी के मौसम के बावजूद शुरू हो चुकी थी। मैं सुबह होने तक वहीं बैठा रहा, फिर अपनी मचान से नीचे उतरा, जकड़ा हुआ और अकड़ा हुआ, दुनिया से और खासकर उस बाघ से पूरी तरह निराश और हताश। उस रात वह अपने शिकार के इतने करीब आकर भी क्यों नहीं आया, यह हमेशा एक रहस्य ही रहेगा।

अगले दिन मैंने आराम किया और अपनी रोज़ की रात की दिनचर्या के अनुसार तिप्पाकाडु जाने और वापस आने के लिए गाड़ी चलाई, लेकिन बाघ का कोई निशान नहीं दिखा। इस बार अनाइकुट्टी जाने वाली सड़क के मोड़ पर ही एक छोटा सा पैंथर सड़क किनारे बने पुलिया से कूद गया और खाई में दुबक गया। गाड़ी के गुजरते समय उसकी चमकीली आँखें स्पॉटलाइट की ओर टकटकी लगाए देख रही थीं। मैंने उस नन्हे जानवर को अकेला छोड़ दिया, ताकि वह उन खूबसूरत जंगलों में खुशी से अपने दिन बिता सके जहाँ वह सही मायने में रहता था।

अगला सप्ताह बिना किसी घटना के बीत गया, और मैंने खोज छोड़ कर बैंगलोर लौटने का विचार करना शुरू कर दिया, लेकिन अंततः मैंने प्रस्थान करने से पहले तीन और दिन रुकने का फैसला किया। इन तीन दिनों में से एक दिन बिना किसी घटना के बीता, जब दूसरे दिन दोपहर के समय, सेगुर के एक धनी पशुपालक के बेटे, बडागा लड़के को, जो अपने पिता के लिए दोपहर का भोजन लेकर जा रहा था, बाघ उठाकर ले गया। उसके पिता मवेशियों और अन्य केशव चरवाहों के साथ थे।

मैं अपने करुम्बा (एक प्रकार का चाकू) के साथ तुरंत उस स्थान पर पहुँच गया, ताकि बाघ के निशानों का पीछा कर सकूँ। बाघ लड़के को सेगुर नदी के पार उत्तर की ओर जंगल में ले गया था। हमने फिर बिना देर किए उसका पीछा किया और इस बार हमें नाले में छिपा हुआ, आधा खाया हुआ शव मिला। दुर्भाग्य से, पिता वहाँ पहुँच गया और शव को हटाना चाहता था, और उसे शव को वहीं रहने देने और मुझे थोड़ा आराम करने का मौका देने के लिए मनाने में एक घंटा बर्बाद हो गया।

शव के आसपास कोई उपयुक्त पेड़ या चट्टान नहीं थी जिसमें मैं छिप सकूँ, इसलिए अंततः शव को लगभग पचास फीट दूर बाँस के झुंड की ओर ले जाने का निर्णय लिया गया, जिसके ऊपर एक अस्थिर मचान खड़ा था। वहाँ पहुँचने के लिए मुझे बाँस के कटे हुए तनों पर चढ़ना पड़ा, और मैंने पाया कि वह मचान मेरे जीवन में अब तक के सबसे खराब मचानों में से एक था। हवा के हर झोंके से वह बुरी तरह हिल रहा था, और मेरे जरा से हिलने पर भी बाँस नीचे से कर्कश आवाज कर रहे थे। इसके अलावा, मुझे शव ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था, जो तीस गज से अधिक दूर था। मेरे चारों ओर उग रहे बाँस के तनों ने पास से देखने में पूरी तरह बाधा डाल रखी थी।

मेरी निगरानी की शुरुआत बेहद नीरस थी, और एक मोर के अलावा कोई भी जीवित प्राणी नज़र नहीं आया। वह मोर उस जगह से थोड़ा ऊपर नाले के किनारे पर आकर बैठा जहाँ शव पड़ा था। वहाँ से वह धीरे-धीरे नीचे की ओर चलने लगा, जब तक कि अचानक उसकी नज़र नाले में पड़े उस मानव शरीर पर नहीं पड़ी जहाँ हमने उसे छोड़ा था। फिर वह अपने पंखों को ज़ोर से फड़फड़ाते हुए मेरे सिर के ऊपर से उड़ गया। डूबते सूरज की किरणों में उसकी लहराती पूंछ हरे-लाल रंग की चमक रही थी, मानो कोई धूमकेतु जंगल में उड़ रहा हो।

रात 9 बजे, मुझे बाघ की धीमी सी कराह से उसकी मौजूदगी का एहसास हुआ, जो उस जगह के पास से आ रही थी जहाँ उसने पहले शव छोड़ा था। मैंने शव को वहाँ से हटाने के लिए खुद को कोसा, लेकिन मुझे एहसास हुआ कि ऐसा करना ज़रूरी था, क्योंकि उस जगह पर मेरे लिए छिपने की कोई जगह नहीं थी।

अपने शिकार को हटाए जाने पर बाघ कई बार गुर्राया। आख़िरकार, हमने उसे केवल पचास फ़ीट ही खिसकाया था, और जहाँ वह खड़ा था, वहाँ से बाघ निस्संदेह उसे उसकी नई स्थिति में देख लेगा और उसकी ओर आ जाएगा; कम से कम मुझे यही उम्मीद थी। लेकिन शिकार को हटाना घातक साबित हुआ, जिससे बाघ के मन में गहरा संदेह पैदा हो गया कि जिस व्यक्ति को

उसने मृत छोड़ दिया था और जिसका कुछ हिस्सा खा लिया था, वह अब वहाँ से क्यों चला गया। यह आश्चर्यजनक है कि हर आदमखोर जानवर, चाहे वह बाघ हो या पैंथर, अभ्यास से कितना सतर्क और कायर हो जाता है। वह हमेशा केवल एक अकेले व्यक्ति पर ही हमला करता है, और वह भी लंबे समय तक सावधानीपूर्वक घात लगाकर पीछा करने के बाद, यह सुनिश्चित करने के बाद कि आस-पास कोई और इंसान नहीं है। मेरा मानना है कि ऐसा शायद ही कोई मामला दर्ज है जहाँ किसी आदमखोर जानवर ने लोगों के समूह पर हमला किया हो, जबकि ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं जहाँ समय पर हस्तक्षेप, या किसी दृढ़ मित्र या रिश्तेदार की सहायता से, आदमखोर जानवर अपने शिकार को छोड़कर घोर भय से भाग गया। ऐसा प्रतीत होता है कि इन जानवरों में एक तीक्ष्ण छठी इंद्री भी होती है और वे निहत्थे इंसान और जानबूझकर उनका पीछा कर रहे हथियारबंद आदमी के बीच अंतर कर सकते हैं, क्योंकि ज्यादातर मामलों में, वे बाद वाले पर हमला करने का साहस तभी करते हैं जब वे घिर जाते हैं, जबकि वे निहत्थे आदमी का पीछा करने और उस पर हमला करने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं।

इस बाघ में वाकई असाधारण बुद्धि थी, क्योंकि उसे कुछ गड़बड़ का आभास हो गया था। जैसा कि मैंने उम्मीद की थी, वह अपने शिकार के पास खुलेआम जाने के बजाय, पूरे इलाके में चक्कर लगाने लगा और बीच-बीच में कराहता रहा, मानो भाग्य की क्रूरता पर शिकायत कर रहा हो कि उसने शिकार को वहाँ से हटा दिया है। वह लगभग एक घंटे तक चक्कर लगाता रहा, जब तक कि उसने आखिरकार यह तय नहीं कर लिया कि शिकार अब उसके लिए वर्जित है, और आखिरी बार मैंने उसकी कराहने की आवाज़ सुनी जो दक्षिण की ओर दूर जाती हुई पहाड़ियों की ओर बढ़ रही थी।

इस आखिरी घटना और उससे मिली असफलता ने मुझे इस सबसे चतुर जानवर को पकड़ने के अपने संकल्प को और भी मजबूत करने के लिए प्रेरित किया, और ऐसा करने में सक्षम होने के लिए, यदि आवश्यक हो, तो मैंने अपनी यात्रा को दो सप्ताह के लिए स्थगित करने का भी निर्णय लिया।

करुम्बा समुदाय के लोगों से मिली जानकारी के अनुसार, बाघ मुख्य सड़कों पर नहीं, जिन पर मैं कई रातों से गाड़ी चला रहा था, बल्कि अनाइकुट्टी, सेगुर और महवनहल्ला से जंगल में जाने वाले कई बैलगाड़ी के रास्तों पर रात में मिल सकता था। चूंकि ये बैलगाड़ी के रास्ते चलने लायक नहीं थे, इसलिए मैंने अगले सप्ताह के लिए एक बैलगाड़ी किराए पर ली और तीनों स्थानों के आसपास के हर संभव रास्ते पर घूमते हुए हर रात उसी में बिताने का निश्चय किया। इस बैलगाड़ी का चालक, एक केशव, असाधारण रूप से साहसी था, और मेरे दो करुम्बा जासूस सबसे संभावित रास्तों का सुझाव देने के लिए मेरे साथ जाने वाले थे।

अगली तीन रातें हमने इसी तरह बिताईं, इस दौरान हमें केवल सांभर और चित्तीदार हिरण ही दिखाई दिए, और तीसरी रात एक हाथी दिखा, जिससे हमें कुछ पल के लिए चिंता भी हुई। गाँव से दो मील दूर, जहाँ पगडंडी अनाइकुट्टी नदी को पार करती थी, वहीं हमारी उससे पहली मुलाकात हुई। वह एक विशाल 'मुठी' पेड़ के नीचे पत्थर की तरह स्थिर खड़ा था, और हमारी नज़र उस पर बिल्कुल नहीं पड़ी। गाड़ी में हमने कार की बैटरी रखी हुई थी, जिसे मैंने 'सील्डबीम' स्पॉटलाइट के साथ अलग कर दिया था, ताकि इसे केवल आपात स्थिति में ही इस्तेमाल किया जा सके। सामान्य रोशनी के लिए, और जंगल में किसी की नज़र पड़ने पर, हम दो टॉर्च का इस्तेमाल कर रहे थे, एक सात सेल वाली और एक पांच सेल वाली।

जैसा कि मैं बता रहा था, हम नदी पार कर रहे थे और गाड़ी नदी के बीचोंबीच थी। बैल नरम रेत में से विशाल पहियों को खींचने के लिए बड़ी ताकत से संघर्ष कर रहे थे। तभी, मशालों की

रोशनी से घबराकर और चिढ़कर एक तीखी चीख निकली, मानो विनाश का आखिरी बिगुल हो, और वह पानी में से छपछपाते हुए हमारी ओर दौड़ा। मैंने सील्ड-बीम चालू किया और लगभग तीस गज की दूरी पर उसकी तेज रोशनी में उसे देखा। तेज रोशनी से वह रुक गया, फिर पानी में अपने पैर पटकने लगा और अपने भारी शरीर और सूंड को इधर-उधर हिलाने लगा, यह तय नहीं कर पा रहा था कि हमला करे या भाग जाए। तब हम सब एक साथ चिल्लाए और सारी बत्तियाँ उस पर केंद्रित कर दीं। गुस्से में चीखते हुए वह घूमा और घने जंगल में चला गया, सचमुच एक बहुत ही क्रोधित और नाराज हाथी।

हमने अगले तीन रातों तक बैलगाड़ी से ये खोजबीन जारी रखी, लेकिन कोई सफलता नहीं मिली।

सातवें दिन सुबह, बाघ ने अनाइकुट्टी में तैनात वन रक्षक के अठारह वर्षीय बेटे को मार डाला। सुबह नौ बजे, तेज धूप में, वह गाँव में अपनी झोपड़ी से निकला और नदी की ओर जाने वाले रास्ते पर थोड़ी दूर चला गया, जहाँ से वह उस बंगले तक पहुँचा जहाँ मैं बैलगाड़ी में रातें बिताने के बाद सोता था। वह अपने कुत्ते को बुलाने गया था, जो गाँव और बंगले के बीच, जो एक मील से भी कम दूरी पर था, अक्सर भटकता रहता था, क्योंकि मैं उसे हर भोजन के बाद कुछ जूठा दाना देता था। उस लड़के को फिर कभी जीवित नहीं देखा गया।

उसके पिता, जो वन रक्षक थे, यह सोचकर कि वह बंगले में मेरे साथ है, उसकी अनुपस्थिति को स्वाभाविक मान लिया। जब दोपहर हुई और दोपहर के भोजन का समय हुआ, तब भी वह युवक नहीं आया था, इसलिए रक्षक ने बंगले में आकर उसे लाने का फैसला किया। नदी से एक फर्लांग की दूरी पर, सड़क के किनारे, उसे अपने बेटे की टोपी मिली। इससे वह घबरा गया और उसने लड़के को जोर से पुकारा। कोई उत्तर न मिलने पर, वह दौड़कर बंगले तक पहुँचा और मुझे जगाकर बताया कि उसे क्या मिला है।

मुझे लगा कि लड़के के साथ कुछ बुरा हुआ है, इसलिए मैंने राइफल उठाई और चिंतित पिता के साथ उस जगह गया जहाँ टोपी पड़ी थी। चारों ओर देखने पर हमें उसकी चप्पल दस गज दूर एक झाड़ी के नीचे मिली और तब हमें एहसास हुआ कि सबसे बुरी घटना घटित हो चुकी है। वहीं रुककर मैंने रोते हुए गार्ड से कहा कि वह जल्दी से गाँव वापस जाए और करुंबा के खोजकर्ताओं को बुलाए।

पंद्रह मिनट के भीतर ये लोग मेरे साथ आ गए और हम रास्ते पर चल पड़े।

लड़के ने संघर्ष किया होगा और शायद ज़ोर-ज़ोर से रोया भी होगा, हालाँकि उसे सुनने वाला कोई नहीं था, क्योंकि जहाँ हमें चप्पल मिली थी, उससे कुछ ही गज की दूरी पर बाघ ने उसे नीचे गिरा दिया और बेरहमी से काट डाला। लगभग एक वर्ग गज के क्षेत्र में फैली सूखी घास पर खून की अचानक बौछारों से यह बात स्पष्ट हो गई। बाघ अपने शिकार को लेकर आगे बढ़ गया, ज़मीन पर खून के निशान छोड़ता हुआ, जो खून के जमने के साथ धीरे-धीरे गायब हो गए।

यहां नदी उत्तर-पश्चिम की ओर मुड़ गई और हमने देखा कि बाघ उसी दिशा में जा रहा था। आगे बढ़ते हुए, हम जल्द ही नदी के किनारों को ढकने वाले घने जंगल में पहुँच गए, जहाँ बाघ द्वारा अपने शिकार को मुँह में दबाए हुए झाड़ियों के पत्तों पर जगह-जगह खून के धब्बे दिखाई देने लगे।

नदी किनारे की नरम मिट्टी में हमें हत्यारे के ताज़े पदचिह्न दिखाई दिए, जो उथले पानी को पार करके दूसरे किनारे पर चले गए थे। यहाँ से वे ढलान पर चढ़कर जंगली बेर की झाड़ियों के झुंड की ओट में पहुँचे, जिसके सामने हमें लड़के के अवशेष मिले। उसे लगभग आधा खा लिया गया

था और वह एक भयानक दृश्य था। जिस रास्ते पर हम चले थे, उस पर अचानक खून के फव्वारे दिखने का कारण अब स्पष्ट हो गया। जैसा कि हमने पहले ही अनुमान लगाया था, लड़का बाघ द्वारा उठाए जाने के समय स्पष्ट रूप से जीवित था और उसने खुद को छुड़ाने के प्रयास में चीख-पुकार मचाई होगी। क्रोधित होकर बाघ ने उसे नीचे गिरा दिया और अपने अगले पंजे से उसकी खोपड़ी पर ज़ोरदार प्रहार किया। माथा पिचके हुए अंडे के छिलके की तरह अंदर की ओर मुड़ गया था, जबकि नुकीले पंजों ने खोपड़ी की आधी परत फाड़ दी थी, जिससे खोपड़ी की हड्डी दिखाई दे रही थी। एक आँख भी पंजे से निकाल दी गई थी और सॉकेट से लटक रही थी।

उस बेचारे पिता का दुःख देखना सचमुच दिल दहला देने वाला था। वह अपने इकलौते बेटे के पैरों में गिर पड़ा, उसके क्षत-विक्षत शरीर को चूमने लगा और ज़मीन-आसमान से बदला लेने की गुहार लगाने लगा, साथ ही सूखी ज़मीन से धूल खुरचकर अपने सिर पर मलने लगा। उसे होश में लाने के लिए हमने उसे ज़ोर से हिलाया और समझाया कि जितना ज़्यादा शोर मचाएगा और जितना ज़्यादा समय बर्बाद करेगा, बाघ को गोली मारने की हमारी संभावना उतनी ही कम होती जाएगी। आखिरकार, हम उसकी चीखों को सिसकियों में बदलने में कामयाब हो गए।

एक मध्यम आकार का जुमलम का पेड़ उस बेर की झाड़ी पर छाया कर रहा था जिसके नीचे लड़का लेटा हुआ था, और मैंने इसी पेड़ पर अपना मचान लगाने का निश्चय किया। मैंने पिता और दोनों करुम्बाओं को बंगले में वापस भेज दिया और करुम्बा को मेरा पोर्टेबल चारपाई मचान लाने का निर्देश दिया। उनके लौटने तक मैं जुमलम के पेड़ पर चढ़ गया, अपनी सुरक्षा के लिए भी और अगर बाघ अचानक प्रकट हो जाए तो गोली चलाने के लिए भी।

दोनों करुम्बा एक घंटे से भी कम समय में मचान लेकर वापस आ गए, जिसे उन्होंने जुमलुम पेड़ की निचली शाखाओं में पंद्रह फीट से थोड़ी अधिक ऊंचाई पर सुरक्षित और कुशलतापूर्वक बांध दिया। निर्देशानुसार वे मेरी पानी की बोतल, टॉर्च और कंबल भी लाए थे, और दोपहर के कुछ ही समय बाद मैं एक अच्छा निशाना लगाने की उम्मीद में मचान पर चढ़ गया।

शाम ढल गई और रात हो गई, बाघ का कोई अता-पता नहीं था। फिर अचानक तेज़ बारिश शुरू हो गई, जैसी कभी-कभी भारत में शुष्क गर्मी के मौसम में होती है। बिजली की कड़क से जंगल दिन के उजाले की तरह जगमगा उठा, जिससे नीचे बेर के पेड़ के नीचे पड़ा शव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा; गरज की आवाज़ आसपास की पहाड़ियों में गूंज उठी; और बारिश मूसलाधार बरसने लगी, उससे पहले ओलों की तेज़ बौछार हुई थी।

एक मिनट के भीतर ही मैं पूरी तरह भीग गया, और जैसे-जैसे बारिश जारी रही, मेरी आंखों के सामने ही आसपास की पहाड़ियों से बहकर आने वाले पानी के विशाल प्रवाह से नदी का जलस्तर इतना बढ़ गया कि मुझे लगा कि इसे पार करना असंभव है।

यह भयावह स्थिति आधी रात के बाद तक जारी रही, जब तक कि बारिश हल्की, ठंडी बूंदा-बांदी में बदल गई। फिर नीलगिरि से भीगे हुए जंगल की ओर एक भयानक ठंडी हवा चलने लगी। बूंदा-बांदी आखिरकार रुक गई, हवा चलती रही और जैसे ही मेरे भीगे हुए कपड़ों और कंबलों में वाष्पीकरण शुरू हुआ, ठंड असहनीय और तीव्र हो गई।

मैं खुशी-खुशी एक दर्जन आदमखोरों का सामना करके बंगले में लौट आता, लेकिन उफनती नदी के कारण यह असंभव था, जिसे पार करना अभी भी नामुमकिन था। पानी उफनता हुआ बह रहा था, अपने साथ उखड़े हुए पेड़ों के तने, सूखी डालियाँ और हर तरह का मलबा बहाकर ले जा रहा था, जिनमें नदी किनारे सालों से पड़े सूखे लट्ठे भी शामिल थे। घोर अंधेरे में उस उग्र धारा को पार करने की कोशिश करना डूबने से मौत को दावत देने जैसा था, या फिर बहते हुए पेड़ के तने

से सिर पर चोट लगने से।

मेरी मुश्किलों में इजाफा करते हुए, भीषण सर्दी, खुले में रहना, पर्याप्त नींद न मिलना और मेरी पहले से ही थकी हुई हालत ने मलेरिया का एक गंभीर दौरा ला दिया। शुरुआत में मुझे सामान्य बुखार हुआ, जिससे मेरे दांत बजने लगे और एक घंटे के भीतर ही मुझे तेज बुखार आ गया, जिससे मैं बेहोशी की हालत में पहुँच गया। शिकार और बाघ के शिकार में मेरी सारी दिलचस्पी खत्म हो गई, और उस अविस्मरणीय रात का बाकी समय मैंने मचान से गिरे बिना कैसे बिताया, यह मैं कभी नहीं जान पाऊंगा।

अगली सुबह आठ बजे से भी ज़्यादा देर हो चुकी थी जब मेरी करुम्बा (दादी) वापस लौटीं और उन्होंने मुझे लगभग बेहोश और तेज़ बुखार में पाया। किसी तरह वे मुझे नदी पार कराकर बंगले तक ले गईं, जहाँ मैंने अगले अड़तालीस घंटे मलेरिया के कारण होने वाली ठंड और बुखार के लगातार दौरों से जूझते हुए बिस्तर पर बिताए, जो तीसरे दिन पैलुड्रिन के लगातार इस्तेमाल से ही कम हुए।

इस भयानक अनुभव के बाद मुझे निमोनिया कैसे नहीं हुआ, यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर केवल ईश्वर ही जानता है।

तीसरे दिन, जब मैंने जीवन में थोड़ी और रुचि लेना शुरू किया, तो मेरे साथियों ने मुझे बताया कि बाघ भयंकर तूफान के दौरान या उसके बाद लौट आया था और जब मैं बीमार अवस्था में उसके ऊपर पेड़ पर दुबका हुआ था, तब उसने अपने शिकार को उठा लिया। इससे मुझे ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का एक और कारण मिल गया, क्योंकि यदि मैं बेहोशी की हालत में उस पेड़ से गिर जाता, तो मैं आसानी से उसका एक और शिकार बन सकता था।

अगले दो दिन मैंने आराम किया ताकि बुखार से पूरी तरह उबर सकूँ और किसी नए शिकार की खबर का इंतज़ार कर सकूँ, जो देर-सवेर होना ही था। तीसरे दिन मैंने तीन भैंसों के लिए चारा जुटाया और अनाइकुट्टी, सेगुर और महवनहल्ला में एक-एक चारा बाँधा। अगली सुबह सभी भैंसें ज़िंदा थीं, इसलिए अगले दिन मैंने अपनी यात्रा फिर से शुरू की। मैं सुबह अनाइकुट्टी के आसपास के जंगल में बाघ से अचानक मुलाक़ात की उम्मीद में घूमता था और फिर कार से तिप्पाकाडु जाकर रात को वापस आता था।

दो दिन बाद, पिछले तीन हफ्तों से चल रही मेरी बदकिस्मती अचानक बदल गई। उस सुबह, मैंने कुछ मील नीचे की ओर सेगुर नदी के किनारे चलने का फैसला किया; अपने करुम्बा बैग के साथ सेगुर गाँव तक गाड़ी चलाते हुए, मैंने एक बड़े केले के बागान में गाड़ी खड़ी की और अपनी योजना पर अमल करना शुरू कर दिया।

नदी के बहाव की दिशा में लगभग एक मील नीचे दलदली इलाका है, जहाँ वर्षों पहले बाइसन बड़ी संख्या में रहते थे और जिसे आज भी स्थानीय लोग 'बाइसन दलदल' के नाम से जानते हैं। इससे आधा मील आगे, नदी के दोनों किनारों पर घने बांस के जंगल का एक बड़ा हिस्सा फैला हुआ है। ये बांस हमेशा से हाथी और सांभर का पसंदीदा ठिकाना रहे हैं, और बाघ कभी-कभी पहाड़ियों से नीचे आते समय यहाँ से गुजरते हैं।

सुबह के 8:30 बज रहे थे और हम अभी-अभी बांस के जंगल में दाखिल ही हुए थे कि नदी के दूसरी ओर से एक हिरणी ने ज़ोर से आवाज़ लगाई, और उसके तुरंत बाद ही एक नर हिरण की कर्कश आवाज़ सुनाई दी। करुम्बा परिवार और मैं नदी के किनारे उगने वाली घनी सरकंडों के बीच ज़मीन पर बैठ गए। दोनों सांभरों ने जल्दी-जल्दी आवाज़ें निकालीं, और यह स्पष्ट था कि किसी बात ने उन्हें डरा दिया था।

पहले तो मुझे लगा कि उन्होंने हमें देख लिया है या हमारी आहट सुन ली है, लेकिन यह सोचकर मैंने यह विचार त्याग दिया कि जो भी हवा चल रही थी वह सांभर से हमारी ओर, ऊपर की ओर बह रही थी। साथ ही, वे हमें देख भी नहीं सकते थे, क्योंकि वे बांस के घने जंगल में काफी दूरी पर थे, जहाँ से हम बिल्कुल ओझल थे। हमारी यात्रा बहुत शांत और सतर्कता से चल रही थी, इसलिए सांभर की लगातार तेज आवाजों से यही निष्कर्ष निकाला जा सकता था कि उन्होंने किसी बाघ या तेंदुआ को देख लिया है या उसकी आहट सुन ली है, क्योंकि आदमखोर जानवर के डर से इतने सुनसान इलाके में कोई और इंसान मौजूद नहीं होगा।

हम लगभग दस मिनट तक सरकंडों में लेटे रहे, तभी नदी के तल में बिखरे पत्थरों पर तेज आवाज के साथ एक सांभर हिरण, जिसके पीछे एक हिरणी भी थी, तेजी से नदी पार करके उसी किनारे पर मौजूद बांसों के बीच गायब हो गया, जहां हम छिपे हुए थे।

चिंता भरे क्षणों के बीतने के दौरान हममें से कोई भी हिल नहीं सका, और फिर चुपचाप, शालीनता और साहस के साथ, एक बाघ सामने के बाँसों की आड़ से निकला और नदी के ढलान पर सरकते हुए नदी के किनारे तक पहुँच गया। बिना किसी झिझक के वह नदी में उतर गया, पत्थरों की परवाह किए बिना, और जब पानी उसके सीने तक पहुँच गया, तो वह रुक गया और पानी चाटने लगा।

मैंने सावधानीपूर्वक निशाना साधते हुए उसके बाएं कंधे के पीछे गोली चलाई। वह खांसते हुए पीछे की ओर उछला और फिर करवट लेकर एक तरफ लेट गया, उसका चेहरा मुझसे दूर उस किनारे की ओर था जहाँ से वह अभी आया था। छिपने की जगह से बाहर निकलकर मैं लगभग चालीस गज आगे बढ़ा, जहाँ से मुझे उसके चेहरे का एक हिस्सा ही दिखाई दे रहा था, बाकी का हिस्सा पानी में डूब चुका था। यहाँ मैं पूरे पंद्रह मिनट तक रुका रहा, ज़रूरत पड़ने पर एक और गोली चलाने के लिए, लेकिन इसकी ज़रूरत नहीं पड़ी, क्योंकि बाघ मर चुका था।

मैंने पहले भी बताया है कि मैंने आदमखोर सांप के पंजों का सावधानीपूर्वक माप लिया था, जिसकी तुलना मैंने अपने सामने मौजूद सांप के पंजों से की और पाया कि वे बिल्कुल मेल खाते हैं। इस प्रकार मुझे पता चला कि अंततः, कई थका देने वाले प्रयासों और निराशाजनक असफलताओं के बाद, मैंने सेगुर के आदमखोर सांप को मार गिराया था।

उसके नरभक्षी स्वभाव का कारण भी स्पष्ट हो गया, क्योंकि उस जानवर की केवल एक ही आँख थी। बची हुई आँख की पुतली सिकुड़कर लगभग गायब हो गई थी। इस बाघ की खाल उतारते समय मैंने उस आँख के गायब होने के कारण की जाँच करने में विशेष सावधानी बरती, और चाकू से आँख के बचे हुए हिस्से को खोदकर निकालते समय मुझे सॉकेट में एक गोली का छर्रा धँसा हुआ मिला।

इस बात का स्पष्ट कारण था कि वह जानवर आदमखोर क्यों बन गया था। संभवतः किसी शिकारी ने, जो बंदूक से लैस था, मालाबार-वायनाद की सुदूर शांत घाटी में उस जानवर के चेहरे पर गोली चलाई थी। गोली उसकी आंख में घुस गई और उसे अंधा कर दिया। दर्द से कराहते और आंख खोने से लाचार होकर, बाघ को अपने सामान्य शिकार का शिकार करने में कठिनाई हो रही थी, इसलिए उसने उसी प्रजाति से बदला लिया जिसने उसकी आंख छीन ली थी।

7

येम्मैदोद्दी का नरभक्षी

एम्मेदोड्डी दक्षिण भारत के मैसूर जिले के कादुर में स्थित एक वन क्षेत्र है। यह पहाड़ियों की एक श्रृंखला से घिरा हुआ है, जिनमें से सबसे ऊँची पहाड़ी का नाम होगर खान है। ये पहाड़ियाँ बाबा बुदंस नामक विशाल पर्वत श्रृंखला की पूर्वी शाखा का निर्माण करती हैं, जिसकी ऊँचाई 6,500 फीट तक है। 'मडक' नामक एक भव्य झील, जो पूरी तरह से वन से ढकी पहाड़ियों से घिरी हुई है, इस क्षेत्र की दक्षिणी सीमा बनाती है। इस झील से एक संकरी जलधारा, जिसके समानांतर एक संकरी वन सड़क है, दस मील उत्तर-पूर्व की ओर बहती है, और बिरूर नामक छोटे कस्बे से लगभग तीन मील उत्तर में स्थित एक छोटी झील में मिल जाती है।

यह क्षेत्र वन्यजीवों से समृद्ध है, और उससे भी अधिक समृद्ध है मवेशियों के विशाल झुंडों से, जिन्हें दिन के समय चरने के लिए जंगल में ले जाया जाता है और प्रत्येक शाम को बिरूर वापस लाया जाता है।

इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आसपास के इलाके बाघों से भरे पड़े हैं। ये बाघ सबसे पहले शिकार करने के लिए आते हैं, ताकि प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाले सांभर, चित्तीदार हिरण और जंगली सूअर का शिकार कर सकें, लेकिन जल्द ही वे मवेशी चुराने लगते हैं, क्योंकि मवेशियों को मारना बहुत आसान होता है और स्थानीय चरवाहे अपने पशुओं की देखभाल में पूरी तरह से लापरवाह और उदासीन रहते हैं। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि शायद ही कोई दिन ऐसा गुजरता हो जब किसी बाघ के जबड़ों में कोई अच्छी गाय या बैल न मर जाए, जबकि बिरूर के बाहरी इलाकों में पैंथर द्वारा बछड़ों, बकरियों और गांव के कुत्तों का शिकार करना भी लगभग उतना ही आम है।

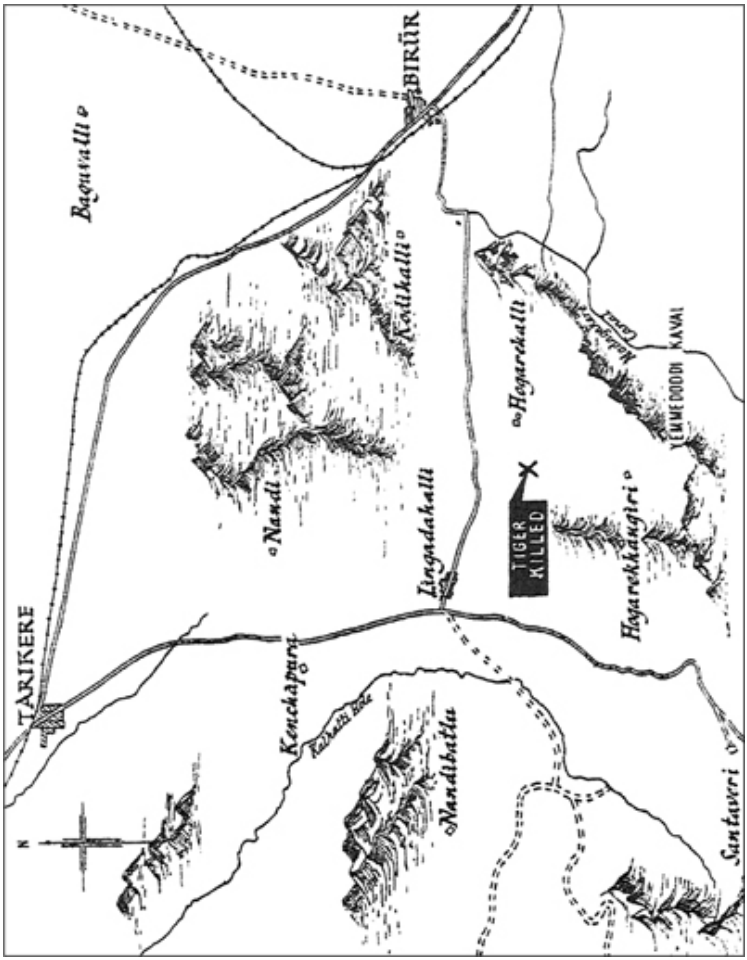

येम्मैदोद्दी के आदमखोर की कहानी में उल्लिखित स्थानों का रेखाचित्र बनाइए।

दरअसल, ये छोटे मांसाहारी जानवर अपने बड़े चचेरे भाइयों की तुलना में संख्या में कम हैं, और खुद को शहर के बाहरी इलाकों तक ही सीमित रखते हैं, बाघों के क्षेत्र से काफी दूर, क्योंकि वे उस बड़े जानवर से डरते हैं जिसके वे कभी-कभी शिकार बन जाते हैं।

सन् 1946 की शुरुआत में, इस इलाके में एक छोटा नर बाघ प्रकट हुआ, जिसकी आदतें बिल्कुल अलग थीं। उसने बिरूर के बाहरी इलाके के पास, शाम के समय लौट रहे झुंडों से बछड़ों और बकरियों को छीनकर मारना शुरू किया। उसके शिकार को पहले तो किसी तेंदुआ का शिकार समझा गया, सिवाय इसके कि वह बड़े बछड़ों की गर्दन तोड़ देता था। शिकार करने का यह तरीका लगभग हमेशा बाघों द्वारा ही अपनाया जाता है, और कभी-कभी जंगल के बड़े तेंदुओं द्वारा भी, जिन्हें हिंदुस्तानी में 'थेंदू' कहा जाता है। इसलिए, हमलावर को उनमें से एक समझने की काफी संभावना थी, जब तक कि एक बार एक डरे हुए चरवाहे ने सचमुच एक छोटी गाय को मरते हुए नहीं देखा, जिसके बाद संदेह दूर हो गया।

यह युवा जानवर इलाके में तेजी से वयस्क हो गया, चमत्कारिक रूप से विभिन्न शिकारी जानवरों, चाहे वे स्थानीय हों या विदेशी, के हमलों से बचता रहा, और चालाक और साहसी भी

होता चला गया, यहाँ तक कि अठारह महीनों में यह मवेशी चराने वालों के लिए एक बड़ा खतरा बन गया, सप्ताह में दो बार, और कभी-कभी तीन बार भी शिकार करता था, और हमेशा हर बार एक विशेष रूप से बढ़िया नमूने का चयन करता था।

1948 के अंत में, मैं अपने कुछ मित्रों के साथ येम्मैदोड्डी गया, ताकि उनमें से एक, अल्फी रॉबर्टसन के लिए एक ट्रॉफी प्राप्त कर सकूँ, जो जल्द ही इंग्लैंड लौटने वाला था। मुझे बाघ के बारे में कई बार खबरें मिली थीं और मुझे पूरा विश्वास था कि मेरे साथी के लिए उस जानवर का शिकार करना काफी आसान होगा, बशर्ते हम बिरूर में कुछ दिनों तक डेरा डाले रहें और फिर शिकार की खबर प्राप्त करें।

हम बैंगलोर से 134 मील की दूरी तय करने के लिए निकले थे। दुर्भाग्यवश, मुझे अपने कार्यालय में रुकना पड़ा और हम देर शाम को निकले। सड़कें बेहद खराब थीं और बैंगलोर से 86 मील दूर टिपटूर नामक स्थान के पास हमारा एक्सीडेंट हो गया। हम अपने दोस्त की कार का इस्तेमाल कर रहे थे और वही गाड़ी चला रहा था। पिछला पहिया एक दिखने में सपाट पत्थर पर चढ़ गया, जो पहिया के एक सिरे से गुजरने पर अपने किनारे पर खड़ा हो गया, और दूसरे सिरे ने कार के पीछे स्थित पेट्रोल टैंक में नौ इंच का छेद कर दिया। इसके परिणामस्वरूप आठ गैलन पेट्रोल सड़क पर फैल गया और गाड़ी रुक गई।

हमारे पास अतिरिक्त पेट्रोल नहीं था, लेकिन हमारे पास प्राइमस स्टोव था, जिसके लिए हम पैराफिन तेल की दो बोतलें लाए थे। हमने फुट पंप के रबर लीड के एक सिरे को पैराफिन की बोतल में डाला और साइफन फीड शुरू करने के बाद दूसरे सिरे को कार्बोरेटर में जाने वाले पाइप से जोड़ दिया। इस तरह हम टिपटूर तक की बची हुई थोड़ी दूरी तय करने में कामयाब रहे। वहां हमने कस्बे के इकलौते मैकेनिक को जगाया, ईंधन टैंक खोला और किसी सोए हुए निवासी के घर के बाहर मिले पैराफिन के डिब्बे के एक हिस्से से उस छेद को किसी तरह ठीक कर दिया।

इसके बाद आगे की यात्रा के लिए ईंधन की बड़ी समस्या सामने आई। हम गाड़ी को शहर के एकमात्र पेट्रोल पंप तक धकेलते हुए ले गए, लेकिन हमें बताया गया कि पेट्रोल का स्टॉक पिछले दिन ही खत्म हो गया था और अगले दिन दोपहर तक, या उससे भी कम समय में, इसकी आपूर्ति नहीं हो पाएगी।

ऐसा लग रहा था कि हमें टिपटूर में लंबे समय तक रुकना ही पड़ेगा। कस्बे में एक-दो ट्रक खड़े थे। हमने सो रहे ड्राइवरों को जगाया और उन्हें एक गैलन पेट्रोल के लिए बहुत कम दाम की पेशकश की ताकि हम सोलह मील दूर अगले कस्बे अरसिकेरे तक पहुँच सकें, जहाँ बर्मा शेल का पेट्रोल पंप था और हमें उम्मीद थी कि वहाँ से हमें पेट्रोल मिल जाएगा। लेकिन सभी ड्राइवरों ने यही कहा कि उनका पेट्रोल खत्म हो गया है और वे अगले दिन दोपहर तक आने वाले नए स्टॉक का इंतज़ार कर रहे हैं।

हालात बेहद निराशाजनक थे, जब तक कि मैंने कुछ सख्त कदम उठाने का फैसला नहीं किया। सुबह के करीब 3:30 बज रहे थे, और नैतिकता और विवेक, टिपटूर शहर की तरह, बहुत पहले ही सो चुके थे। मैंने अल्फी को पैराफिन का डिब्बा लाने के लिए कहा, जिसमें से हमने ईंधन टैंक के लिए पैच काटा था, और खुद फुट-पंप का रबर का तार लेकर, हम टिपटूर की सुनसान गलियों में चुपके से आगे बढ़ने लगे। एक गली में हमें एक जर्जर 'ए' मॉडल फोर्ड दिखाई दी। मैंने अल्फी को निर्देश दिया कि वह मालिक के जागने से पहले उस पर कड़ी नजर रखे। मैं गाड़ी के दूसरी तरफ से धीरे-धीरे आगे बढ़ा। बोनट तक पहुँचकर, मैंने इंजन के पीछे ईंधन टैंक का ढक्कन हटाया, रबर की नली का एक सिरा टैंक में डाला, और कीमती ईंधन का एक चौथाई से थोड़ा अधिक हिस्सा उस डिब्बे में निकाल लिया, जिसे मैंने अपने घुटनों के बीच संतुलित कर रखा था।

दूसरी बार कोशिश करने पर हमें एक और चौथाई ईंधन मिल गया। बचे हुए पैराफिन तेल की बोतल में ईंधन मिलाकर, हम जल्दी से अरसिकेरे के लिए रवाना हुए, जहाँ से हमें तेल की एक नई आपूर्ति मिली।

नतीजतन, हम सुबह करीब 7:30 बजे तक अपने गंतव्य, बिरूर नामक छोटे कस्बे में नहीं पहुँच पाए। हम कस्बे से गुज़रे और जंगल की ओर लगभग दो मील आगे बढ़े ही थे कि हमें एक खुला मैदान दिखाई दिया जहाँ कई गिद्ध जमा थे। मेरे दोस्त ने एक तस्वीर खींची, जबकि मैं इस जमावड़े का कारण जानने के लिए नीचे उतरा और यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि जिस सड़क से हम अभी गुज़रे थे, उसके किनारे लगी बाड़ के ठीक पास एक अधेड़ बैल पड़ा था, जिसे एक पैंथर ने मार डाला था।

इसमें कोई शक नहीं था कि शिकार एक पैंथर ने किया था, क्योंकि मृत जानवर के गले पर मौजूद दांतों के निशान से पता चलता था कि उसे गला घोंटकर मारा गया था। गर्दन की हड्डियां साबुत थीं और टूटी नहीं थीं, जबकि अगर हत्यारा बाघ होता तो ऐसा नहीं होता। इसके अलावा, जानवर का निचला हिस्सा खाया जा चुका था, जबकि आंतें अभी भी शव के अंदर थीं, जिससे यह बात पक्के तौर पर साबित होती है कि यह काम एक पैंथर ने ही किया था। बाघ साफ-सफाई का ध्यान रखता है और भोजन शुरू करने से पहले अपने शिकार के पिछले हिस्से में एक छेद बनाता है, जिसके जरिए वह आंतों और पेट को दस फीट दूर फेंक देता है, ताकि उसका भोजन मल-मूत्र से दूषित न हो।

हमें शुरुआती सफलता से बेहद खुशी हुई, और शिकार को गिद्धों से बचाने के लिए हमने झाड़ी से कुछ दूरी पर शाखाएँ तोड़ दीं। फिर मैंने झाड़ी में ही एक छिपने की जगह बनाई, जहाँ से शिकार पर सीधी नज़र रखी जा सकती थी। हमने यह छिपने की जगह बहुत अच्छी तरह बनाई, और अल्फी को लगा कि पिछली रात उसकी कार के साथ हुई परेशानी का उसे पूरा मुआवज़ा मिल गया है, क्योंकि उसे पूरा यकीन था कि शाम को जब पैंथर अपने शिकार के पास लौटेगा तो हम उसे मार गिराएँगे।

फिर हम कुछ दूर चले गए, खाना खाया और रात के रोमांच के लिए तैयार होने के लिए सो गए। शाम 5 बजे तक, हम शिकार और अपने छिपने की जगह पर लौट आए, उस आवरण को हटा दिया जिसने प्रभावी रूप से गिद्धों को मृत जानवर से दूर रखा था। अल्फी राइफल, टॉर्च, कंबल और पानी की बोतल के साथ छिपने की जगह पर बैठ गया, और मैं कार से बिरूर वापस जाने की तैयारी कर रहा था, तभी एक हांफता हुआ चरवाहा दौड़कर आया और हमें बताया कि उसकी एक बड़ी दुधारू गाय को अभी-अभी एक बाघ ने मार डाला है, लगभग आधा घंटा पहले और एक मील से भी कम दूरी पर।

मैंने फैसला अल्फी पर छोड़ दिया। क्या वह पैंथर को निश्चित शिकार के रूप में पसंद करेगा, या बाघ को संभावित शिकार के रूप में? मेरे अपने फैसले के अनुरूप, उसने बाघ पर हमला करने का विकल्प चुना। तदनुसार, हमने सारा सामान छुपने की जगह से निकालकर कार में रखा, आधा मील तक तेज़ी से गाड़ी चलाई, जब तक कि चरवाहे ने हमें रुकने के लिए नहीं कहा, फिर हमने सामान बाहर निकाला और उसके पीछे जंगल में शिकार की ओर चल पड़े।

हमें ज्यादा दूर नहीं चलना पड़ा, और तीन फर्लांग चलने के भीतर ही हमें मृत जानवर मिल गया - एक सुंदर काली दुधारू गाय। उसकी गर्दन स्पष्ट रूप से टूटी हुई थी और नाक से अभी भी झाग निकल रहा था। लेकिन बाघ ने एक निवाला भी नहीं खाया था, जाहिर है कि चरवाहे ने उसे परेशान किया था, या शायद भैंसों ने, जो मवेशियों के साथ चर रही थीं।

शाम के छह बज चुके थे और अंधेरा तेजी से बढ़ रहा था। दुर्भाग्यवश, उस स्थान पर कोई पेड़ नहीं था, और कुछ मिनटों की खोज के बाद यह स्पष्ट हो गया कि हमें या तो शिकार को छोड़ना होगा या बाघ के लौटने पर उस पर गोली चलाने का जोखिम उठाना होगा।

अल्फी शिकार को छोड़ने की बात सुनने के लिए भी बहुत उत्सुक था, इसलिए चरवाहे की मदद से मैंने पास की झाड़ियों से कुछ शाखाएँ तोड़ीं और एक बहुत ही कच्ची सी छिपने की जगह बनाई, जिसमें हम सभी शाम 6.30 बजे के कुछ ही देर बाद घुस गए।

अब लगभग अंधेरा हो चुका था, और पंद्रह मिनट के भीतर पच्चीस गज दूर पड़ी मृत गाय की आकृति धुंधली पड़ गई। हालांकि चांद नहीं था, लेकिन तारों की रोशनी से इतना प्रकाश छनकर आ रहा था कि हम आस-पास देख पा रहे थे, लेकिन शिकार हमारी पहुंच से थोड़ा बाहर था।

एक घंटा बीत गया, और फिर लगभग आधा मील दूर से मुझे अकेले सियार की अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। जंगलों में पाए जाने वाले इस अनोखे सियार के बारे में बहुत कुछ लिखा जा चुका है और कई सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं। सियार आमतौर पर कस्बों और गांवों के बाहरी इलाकों के पास झुंड में घूमते हैं, जिनके इलाकों में वे रात में जानवरों के अवशेषों की तलाश में घुस जाते हैं। उनका सामूहिक स्वर, जिसका नेतृत्व एक नेता करता है, विशिष्ट है, भारत के लोगों के लिए परिचित है, और कुछ इस तरह सुनाई देता है: 'ऊऊऊऊह! ऊऊ-कहाँ? ऊऊ-कहाँ? ऊऊ-कहाँ-कहाँ-कहाँ? यहाँ! यहाँ! यहाँ!

थोड़ी ज़्यादा चली गई। बाघ के लिए यह चेतावनी काफ़ी थी, और 'ब्र्र-ऊफ़! ब्रूफ़' की कर्कश आवाज़ के साथ वह झाड़ियों की ओट में वापस भाग गया।

हम एक घंटा और वहीं रुके रहे, लेकिन मुझे पता था कि समय व्यर्थ है और बाघ वापस नहीं आएगा। इस समय के अंत में, हमें एक धीमी सी आवाज़ सुनाई दी, 'आ-ऊंग! आउंग-हा! ओ-ओ-ऑन-ओ-ओ-ऑन!' जैसे ही बाघ एक मील से अधिक दूर एक पहाड़ी को पार कर गया, और हमें वहीं छोड़कर चला गया।

अफसोस के साथ हमने अपना सामान समेटा और कार में वापस लौटे, तभी पता चला कि अल्फी चाबी कहीं खो बैठा था। चाबी ढूंढते-ढूंढते, लिंगधल्ली कस्बे से बिरूर जा रही यात्रियों को ले जा रही रात की बस हमारे पास से गुजरी। तभी अल्फी को चाबी मिल गई और हम बस के पीछे-पीछे चल दिए।

जिस जगह हमने पैंथर के लिए अपना छिपने का ठिकाना बनाया था, वहाँ पहुँचकर हम यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि हमारे आगे चल रही बस की हेडलाइट्स की रोशनी में तेंदुए की आँखें प्रतिबिंबित हो रही थीं, जो अब लौट आया था और अपने शिकार को खा रहा था। उसी समय बस के चालक ने भी उन आँखों को देखा और भारी भरकम बस को ब्रेक की तेज़ आवाज़ के साथ रोक दिया, जिससे हमारे पीछे धूल का एक दम घोंटने वाला बादल छा गया।

मैं और अल्फी नीचे उतरे, बस के साथ-साथ चलने लगे और बीच के खेत के आधे हिस्से में छिपकर भागते हुए पैंथर को देखा। उसने गोली चलाई और जानवर 'अर्र-अर्रह!' की तेज़ आवाज़ के साथ हवा में उछला और फिर बिजली की तरह खेत में दौड़ पड़ा।

बहुत देर बाद हमें एहसास हुआ कि हमने गलती की थी। अल्फी को वापस अपने छिपने की जगह पर चले जाना चाहिए था और मुझे बस के पीछे-पीछे गाड़ी चलाकर निकल जाना चाहिए था। दोनों गाड़ियों के जाने के कुछ ही मिनटों में तेंदुआ निस्संदेह अपने शिकार के पास लौट आता और अल्फी को आसानी से निशाना लगाने का मौका मिल जाता। हालात ऐसे थे कि मैंने सही सलाह नहीं दी थी, और अब हमारे हाथ में एक घायल तेंदुआ था।

लेकिन बीती बातों पर पछताने का कोई फायदा नहीं था, इसलिए हम बिरूर लौट आए और रात यात्रियों के बंगले में बिताई। अगली सुबह हम फिर उसी जगह पर थे, और चारों ओर छानबीन करने पर मुझे खून का एक हल्का निशान मिला जो खेत के बिल्कुल आखिरी छोर पर जाकर ही दिखाई देने लगा और घनी झाड़ियों में घुसते ही बढ़ता गया। यहाँ हमारे सामने एक कठिन चुनौती थी। तेंदुए को स्पष्ट रूप से उसके पार्श्व भाग में चोट लगी थी, और खून को जानवर के शरीर से बहकर जमीन पर टपकने में समय लगा था, इसीलिए वह खून का निशान केवल खेत के आखिरी छोर पर ही दिखाई दिया। उसके बाद खून लगातार टपकता रहा, जबकि जानवर घनी झाड़ियों में रेंगता हुआ चला गया, जिसमें लैंटाना और 'वेट-ए-बिट' झाड़ियाँ थीं, जहाँ हाथों और घुटनों के बल रेंगने के अलावा उसका पीछा करना असंभव था। एक पुराना जंगली सूअर का रास्ता इसी झाड़ियों से होकर गुजरता था, और तेंदुआ उसी रास्ते से गुजरा था, जैसा कि उसके द्वारा छोड़े गए खून के निशान से स्पष्ट था।

हाथों और घुटनों के बल रेंगते हुए, और अपनी भरी हुई .405 विन चेस्टर पिस्तौल को आगे धकेलते हुए, मैं घायल जानवर के पीछे-पीछे चल रहा था। अल्फी पीछे-पीछे चल रहा था, ताकि बगल से या पीछे से होने वाले हमले से बचाव हो सके। इस तरह हम लगभग पचहत्तर गज आगे बढ़े ही थे कि अचानक, रास्ते के अगले मोड़ पर घात लगाए बैठा तेंदुआ अचानक हमला करने के लिए तैयार हो गया। चूकने की कोई गुंजाइश नहीं थी, और मैंने लगभग बंदूक की नोक से उसे

गोली मार दी। नरम नोक वाली गोली ने उसकी खोपड़ी को चकनाचूर कर दिया और मस्तिष्क के पिछले हिस्से को पूरी तरह से अलग कर दिया। वह मेरे सामने ही मर गया, उसके मस्तिष्क का तरल पदार्थ उसकी टूटी हुई खोपड़ी से रिस रहा था।

हम बिरूर में पूरे दस दिन रहे, लेकिन इस पूरे समय में केवल एक और शिकार हुआ, और वह सातवें दिन सुबह यम्मैदोड्डी नहर से छह मील नीचे एक जगह पर हुआ। जब तक हमें घटना की सूचना मिली और हम घटनास्थल पर पहुँचे, तब तक काफी शाम हो चुकी थी और हमने देखा कि गिद्धों ने शिकार को पूरी तरह से नष्ट कर दिया था, उसे पत्तों से ढकने का कोई उपाय नहीं किया गया था। लगभग चालीस गज की दूरी पर एक पेड़ अवशेषों पर नजर रख रहा था, और अल्फी आधी रात तक एक पेड़ की शाखाओं में बैठा रहा, लेकिन बाघ दिखाई नहीं दिया।

उसके बाद जैसा कि मैंने कहा, कुछ नहीं हुआ और ग्यारहवें दिन की सुबह हम बैंगलोर के लिए रवाना हो गए।

समय बीतता गया। फिर एक अंधेरी रात को लिंगधल्ली से बिरूर जाने वाली सड़क पर चार 'कार-शिकारी' (कार-शिकारी) सवार हुए। ये लोग जंगल से गुजरते समय अपनी कार से ही स्पॉटलाइट की मदद से शिकार करते हैं और कभी ज़मीन पर पैर नहीं रखते। उन्हें न तो ट्रैकिंग का ज्ञान है, न ही शिकार के विज्ञान का, न ही जंगल और प्रकृति की सुंदरता का। उनके लिए खेल का सबसे ऊँचा रूप यही है कि वे अपनी सीलबंद स्पॉटलाइट से जंगल में तेज़ रोशनी डालें और जो भी आँख उनकी रोशनी की चमक को देख पाए, उस पर राइफल और बंदूक की गोलियों की बौछार कर दें। वे किस जानवर पर गोली चला रहे हैं, नर, मादा या बच्चा, उन्हें इसकी परवाह नहीं, क्योंकि वे केवल मारने या घायल करने की लालसा से भरे हुए हैं। कहने की ज़रूरत नहीं है कि ऐसी गतिविधियाँ सभी मौजूदा नियमों के खिलाफ हैं, लेकिन फिर भी अक्सर होती रहती हैं।

और फिर हुआ यूं कि बिरूर से लगभग चार मील दूर, उन्होंने सड़क के किनारे एक टीले पर चढ़ते हुए एक बाघ की बड़ी-बड़ी धधकती हुई सफेद आंखें देखीं।

दो गोलियों की आवाज सुनाई दी और बाघ उछल पड़ा, राइफल की एक गोली से उसका निचला जबड़ा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था, जबकि दूसरी गोली लक्ष्य से चूक गई थी। कहने की जरूरत नहीं है कि कार शिकारी जांच करने के लिए नहीं रुके, न ही वे अगली सुबह घायल जानवर का पीछा करके उसे उसकी पीड़ा से मुक्ति दिलाने के लिए वापस आए। वे बस अपने रास्ते पर चल पड़े, गोली चलाने के लिए अन्य लोगों की तलाश में।

घायल बाघ को अगले दो महीनों तक असहनीय पीड़ा सहनी पड़ी होगी, और वह ठीक से खा भी नहीं पा रहा था। बुरी तरह से क्षतिग्रस्त जबड़े के ठीक से न जुड़ने के कारण वह अपने शिकार पर पकड़ बनाए रखने में असमर्थ था, और शिकार या मवेशियों के रूप में अपना सामान्य भोजन प्राप्त करने में भी असमर्थ था।

लगभग तीन महीने बाद, एक दिन उसने जंगल में चरने के लिए लाए गए बकरियों के झुंड से एक बकरी चुराने की कोशिश की। अत्यंत सावधानी से वह झुंड का पीछा करता हुआ एक मोटी बकरी पर झपटा और उसे जबड़े से गर्दन तोड़ने की सामान्य प्रक्रिया के बजाय अपने पंजों के जोरदार प्रहार से मारने ही वाला था कि पास ही खड़े साहसी चरवाहे ने अपनी लाठी फेंक दी। इस बार उसका निशाना सटीक निकला और लाठी बाघ को बगल से लगी। क्रोधित होकर उसने चरवाहे पर हमला कर दिया, और पंजे का प्रहार फिर से बेहद कारगर साबित हुआ और उसने बेचारे आदमी की खोपड़ी को लगभग पूरी तरह से नोच डाला। उसकी दहशत और पीड़ा की चीख अगले पंजे के एक और जोरदार प्रहार से रुक गई, जिसने इस बार आदमी की खोपड़ी को ऐसे

कुचल दिया जैसे वह कोई अंडा हो।

वह आदमी गिर पड़ा, जिससे बाघ के पास खाने के लिए दो शिकार बचे - बकरी या इंसान। बाघ ने इंसान के शव के पास कुछ देर रुककर उसकी कुचली हुई खोपड़ी से रिसते खून को चाटा। मानो तुलना करने के लिए, वह बकरी के पास गया, उसकी गर्दन पकड़कर उसे घने जंगल में ले जाने लगा। लेकिन कुछ ही कदमों पर, बिना किसी स्पष्ट कारण के, वह रुक गया, बकरी को वहीं छोड़ दिया, मरे हुए चरवाहे के पास गया और उसका कंधा पकड़कर आसपास के घने जंगल में गायब हो गया।

इस प्रकार येम्मैदोड्डी नामक खूंखार आदमखोर का जन्म हुआ और उसके आतंक का राज शुरू हो गया। इसके बाद, इस राक्षस के कारण होने वाली मौतें लगभग 250 वर्ग मील के क्षेत्र में घटित हुईं, जो उत्तर में बिरूर, लिंगधल्ली से लेकर भगवदकट्टे तक, पश्चिम में बाबा बुदन पर्वत पर स्थित संतावेरी तक और दक्षिण में आयरनकेरे झील से होते हुए सक्रेपटना और फिर बिरूर तक फैला हुआ था।

हालांकि मानव वधों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी, लेकिन वे एक निश्चित अंतराल पर हो रहे थे और उनमें यह विशिष्ट चिह्न था कि प्रत्येक शिकार को पंजे के जोरदार प्रहार से मारा गया था, न कि जबड़े की सामान्य घातक पकड़ से। इसके अलावा, विभिन्न शवों की जांच से यह स्पष्ट हो गया कि बाघ अपने निचले जबड़े का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में असमर्थ था, और किसी भी शव पर यह आदमखोर दोबारा भोजन करने नहीं लौटता था। मांस को एक विशेष तरीके से खुरच कर निकाला गया था, जाहिर तौर पर ऊपरी जबड़े द्वारा अकेले ही मानव मांस की पट्टियों पर काम करके, जिन्हें यह जानवर अपने शक्तिशाली पंजों से खुरच कर खाने के कठिन कार्य को आसान बनाता था।

आदमखोर बाघ के आगमन के साथ ही, यम्मयदोड्डी और लिंगधल्ली मार्गों पर सक्रिय रहने वाले, पहले बेहद फुर्तीले और मवेशी-शिकारी बाघ की गतिविधियाँ अचानक थम गईं। इससे यह निष्कर्ष निकला कि यही मवेशी-शिकारी बाघ अब आदमखोर बन गया था। 'कार-शिकारियों' की कहानी कुछ समय तक अज्ञात रही, जब तक कि उनमें से एक ने, अपनी किताब '160 नाइन मैन-ईटर्स एंड वन रॉग' में, शेखी बघारते हुए मज़ाक में खुलासा नहीं किया कि उन्होंने बिरूर-लिंगधल्ली रोड पर एक बाघ पर गोली चलाई थी और उसे घायल कर दिया था। बाद में इन तथ्यों को जोड़कर जो कहानी सामने आई, वह आज भी वैसी ही है जैसी हम जानते हैं।

जैसा कि मैंने बताया, आदमखोर जानवर एक निश्चित क्षेत्र में घूमता था, और मेरे द्वारा बताए गए स्थानों से सटे गांवों और बस्तियों के बाहरी इलाकों में नियमित रूप से शिकार करता था। ये तथ्य मैंने प्रेस में प्रकाशित जानवरों की गतिविधियों से संबंधित रिपोर्टों को पढ़कर और अपने वन मानचित्र पर इन स्थानों के नाम और लोगों की हत्या की तारीखें अंकित करके जुटाए हैं।

इस क्षेत्र का केंद्र, जिसे बाघ ने नियमित गश्ती क्षेत्र के रूप में चुना था, पहाड़ी श्रृंखला की तलहटी की पथरीली और घने जंगलों से ढकी ढलानों से बना था, जिसकी चोटी पर लगभग 4,500 फीट ऊँची होगर खान नामक पहाड़ी थी। मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि ये दुर्गम क्षेत्र, जहाँ आबादी लगभग न के बराबर थी, बाघ को आश्रय देते थे, और यहीं से वह नियमित रूप से अधिक आबादी वाले क्षेत्रों में घुसपैठ करता था। पिछले शिकारों की तारीखों के अध्ययन से पता चला कि जानवर लगभग हर तीसरे या चौथे महीने अपने गश्ती क्षेत्र में लौट आता था। इस समय तक शिकारों की कुल संख्या सत्ताईस तक पहुँच चुकी थी।

इस जानवर का शिकार करने के अपने प्रयास में, मैंने होगारेहल्ली गाँव को चुना, जो बिरूर

और लिंगधल्ली के लगभग मध्य में स्थित था और माउंट होगार खान के आधार से ढलान वाले झाड़ीदार जंगल से होकर केवल साढ़े तीन मील दूर था। मैंने इस क्षेत्र को मुख्य रूप से इसलिए चुना क्योंकि मैं आसपास के जंगल के भूगोल से अच्छी तरह परिचित था और वहाँ के निवासियों से भी अच्छी तरह परिचित था, जिनसे मुझे उचित सहयोग की उम्मीद थी। इसके अलावा, जैसा कि मैंने कहा, होगारेहल्ली गाँव होगार खान की तलहटी के पास था, जहाँ मुझे पूरा विश्वास था कि बाघ का मुख्यालय है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि जब भी बाघ अपने चक्कर लगाता था, इस गाँव में किसी न किसी की जान चली जाती थी। दूसरे शब्दों में, यह लगभग उसके लिए एक निश्चित बुलावा था।

मैं तीन महीने के चक्र की समाप्ति से पूरे दो सप्ताह पहले, यानी अगली प्रस्तावित यात्रा से दो से छह सप्ताह के भीतर, होगारेहल्ली पहुँच गया। इस प्रकार, मुझे विभिन्न हत्याओं के विवरण और प्रकृति की जाँच-पड़ताल करने और यदि संभव हो तो इस क्रूर अपराधी से बचने की योजना बनाने के लिए पर्याप्त समय मिल गया।

यह गाँव काफी बड़ा है और यद्यपि यहाँ जनसंख्या घनत्व बहुत अधिक नहीं है, फिर भी यहाँ पक्के मकान हैं जो आसपास बहुतायत में पाए जाने वाले लाल रंग के पत्थरों से बने हैं। ये पत्थर छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में मिलते हैं और इनका आकार हथेली से लेकर कई वर्ग फुट तक भिन्न होता है। होगारेहल्ली भी प्राचीन है; यह प्राचीन काल से अस्तित्व में है और इसमें दो प्राचीन और सुदृढ़ मंदिर हैं। यह पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में घनी झाड़ियों से घिरा है जो होगार खान की ओर जाती हैं, और दक्षिण में एक बड़ी और सुंदर झील है जो सर्दियों के महीनों में हंस, जंगली बत्तख और टील पक्षियों से भरी रहती है। इसके दक्षिण में लगभग तीन मील दूर येम्मैदोड्डी जलमार्ग की ओर जाने वाला एक रास्ता है। दक्षिण-पूर्व में नारियल और केले के पेड़ों के घने बागान हैं, जिनके बीच सुपारी के लंबे पतले तने दिखाई देते हैं, और नीचे का पूरा क्षेत्र पान के पत्तों से घना ढका हुआ है, जिन्हें प्रायद्वीप भर के भारतीय लोग बड़े चाव से चबाते हैं। यह इलाका बेहद नम भूमि से बना है, जो प्राकृतिक रूप से नीचा है और गांव के दक्षिण में स्थित झील से आने वाली नहर द्वारा सिंचित है। होगारेहल्ली के दक्षिण में कुछ बिखरे हुए धान के खेत हैं, और फिर दक्षिण-पूर्व, पूर्व और उत्तर की ओर मानसून की बारिश से सिंचित शुष्क फसलों के खेत हैं, जो लगभग डेढ़ मील दूर बिरूर-लिंगाधल्ली सड़क तक फैले हुए हैं।

जैसा कि आप समझ गए होंगे, अधिकांश शिकार पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पश्चिम के झाड़ीदार इलाकों में हुए, जबकि दो शिकार नारियल के बागान के बीचोंबीच हुए, जिनमें से एक मालिक का चचेरा भाई था। आदमखोर बाघ ने बाकी खुले इलाकों से दूरी बनाए रखी थी। इसके अलावा, अधिकांश मामलों में शिकार दोपहर बाद हुए थे, क्योंकि हत्याएं शुरू होने के बाद से निवासियों ने सूर्यास्त से पहले घर के अंदर रहने की अच्छी आदत अपना ली थी। बाघ के पदचिह्नों से कई बार पता चला था कि वह सुबह-सुबह गांव के बाहरी इलाके में घुस गया था, लेकिन मजबूत बने घरों और ठोस लकड़ी के दरवाजों ने उसे, कम से कम अभी तक, रात में अंदर आने से रोक रखा था।

इन परिस्थितियों में कार्ययोजना बनाना कठिन था। मुझे पता था कि बाघ के शिकार करने के बाद वह आगे बढ़ जाएगा और अगले तीन-चार महीनों तक दोबारा होगारेहल्ली नहीं आएगा। साथ ही, मेरे लिए यह अनुमान लगाना भी असंभव था कि अगला हमला कहाँ होगा और किस पर हमला करके उसे मार डाला जाएगा। इसलिए, एकमात्र स्पष्ट उपाय यही बचा था कि मैं बाघ को चारा बनाकर अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करूँ, एक ऐसी प्रक्रिया जिसे अपनाने में मुझे बहुत हिचकिचाहट हो रही थी। फिर भी, यही एकमात्र रास्ता प्रतीत हो रहा था।

होगारेहल्ली पहुंचने के बाद से एक सप्ताह इन सभी जानकारियों को जुटाने, विभिन्न हत्याओं की परिस्थितियों का अध्ययन करने और उन स्थानों का दौरा करने में बीत चुका था जहां ये घटनाएं वास्तव में घटी थीं। अब वह समय तेजी से नजदीक आ रहा था जब आदमखोर सांप अगली बार आएगा।

मैंने पाया कि पश्चिम की ओर झाड़ियों वाले इलाके में शिकार हुए लोग या तो लकड़हारे थे या मवेशी चराने वाले चरवाहे। आदमखोर बाघ ने किसी भी मवेशी को नुकसान नहीं पहुँचाया था, हालाँकि कभी-कभार भटकते हुए तेंदुए ने कुछ मवेशियों को मार गिराया था। तभी मेरे मन में एक विचार आया, जो मुझे लगा कि काफी कारगर है। इस झाड़ी के अंदर लगभग आधा मील दूर एक पेड़ चुनकर, मैंने उसकी शाखाओं में ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट ऊपर एक कुर्सी बाँध दी, ताकि बाघ उस तक न पहुँच सके। फिर मैंने लगभग छह फीट लंबा और तीन इंच व्यास का एक मोटा लकड़ी का टुकड़ा लिया, जिसका एक सिरा मैंने एक मोटी रस्सी से एक शाखा से लटका दिया, जबकि दूसरा सिरा मेरे नीचे पेड़ की एक शाखा पर तिरछा टिका दिया। इस सिरे पर मैंने एक और डोरी बाँधी, जिसे मैंने अपने जूते के अगले हिस्से पर बने एक लूप से गुजार दिया। इस प्रकार, मैं आराम से कुर्सी पर बैठा, हथियारबंद और तैयार रहता था, और केवल अपने पैर की एड़ी को ऊपर-नीचे हिलाकर नीचे लटकी लकड़ी को डाल से टकराता था, जिससे लकड़हारे की आवाज जैसी ध्वनि निकलती थी, हालांकि, निश्चित रूप से, ध्वनि काफी कम होती थी। जब एक पैर थक जाता, तो मैं रस्सी को दूसरे पैर पर लगा लेता। मैंने इस रस्सी को इतना लंबा रखा था कि इसे हाथ से चलाया जा सके, और फिर खींच की लंबाई बढ़ाकर लकड़ी के झूलने की गति और परिणामस्वरूप प्रहारों की आवाज को बढ़ाया जा सके। धूप से बचने के लिए, मैंने पेड़ के पत्तों को बिना काटे ही अपने सिर के ऊपर एक छतरी बना ली थी। यह जानकर भी सुकून मिलता था कि मैं बिना किसी तंग जगह में छिपे, अपनी कुर्सी पर बैठकर धूम्रपान कर सकता था, खा सकता था, पी सकता था, खांस सकता था और इधर-उधर घूम सकता था। दरअसल, चूंकि मैं खुद चारा बन रहा था, इसलिए जितनी अधिक मैं अपनी उपस्थिति का संकेत देता, बाघ द्वारा मेरा पीछा करने या मुझ पर हमला करने की संभावना उतनी ही अधिक होती।

होगारेहल्ली गाँव के मुखिया मूडलागिरी गौड़ा ने मुझे पूरा सहयोग दिया। मैंने उन्हें अपनी योजना समझाई और इस बात पर ज़ोर दिया कि मेरे वहाँ से काम शुरू करने के बाद, हर हाल में यह उनकी ज़िम्मेदारी होगी कि कोई भी झाड़ीदार जंगल या नारियल के बागान में न जाए, ताकि बाघ को मुझ पर हमला करने के अलावा कोई और चारा न मिले। उन्होंने ऐसा करने का वादा किया और तुरंत गाँव और आसपास के इलाकों में चेतावनी जारी कर दी कि दोपहर के बाद कोई भी बाहर न निकले, खासकर झाड़ीदार जंगल और बागान की तरफ। गाँव के आसपास मवेशियों को दो से तीन सप्ताह तक खिलाने के लिए पर्याप्त भूसा और सूखी घास थी, तब तक मुझे उम्मीद थी कि बाघ दिखाई देगा। पटेल के निर्देश इसलिए भी ज़्यादा असरदार थे क्योंकि कोई भी बाघ के पंजों के नीचे मरना नहीं चाहता था और इससे ग्रामीणों को अगले तीन सप्ताह तक पूरी तरह से खाली रहने का आकर्षक अवसर भी मिल गया था।

होगारेहल्ली पहुँचने के ठीक दसवें दिन, मैंने अपनी योजना को परखना शुरू किया। दोपहर का भोजन करने के बाद, मैं सुबह कुछ ही देर पहले पानी की बोतल, सैंडविच, पाइप और अपनी .405 पिस्तौल लेकर पेड़ के पास पहुँचा और पहले दिन की निगरानी शुरू की। पैर हिलाकर टैपिंग की आवाज़ निकालना, मुझे जल्द ही पता चला, एक नीरस और थका देने वाला काम था। दोपहर के सूरज की परावर्तित किरणें मुझे बहुत असहज कर रही थीं और आँखों को बेहद थका रही थीं, क्योंकि मुझे चिलचिलाती गर्मी की धुंध के बीच से अपने चारों ओर झाड़ियों वाले जंगल

को देखना पड़ रहा था। मैं सूर्यास्त तक वहीं बैठा रहा और अगले एक हफ्ते तक वहीं बैठा रहा, लेकिन बाघ के लौटने का कोई संकेत न तो सुनाई दिया और न ही दिखाई दिया। इस समय तक मैं अपनी दृष्टि सीमा के भीतर मौजूद प्रत्येक बड़ी झाड़ी की स्थिति से पूरी तरह परिचित हो चुका था, और उपलब्ध आवरण के अनुरूप, बाघ द्वारा मेरे पेड़ पर मेरा पीछा करने के लिए अपनाए जाने वाले विभिन्न संभावित मार्गों की मानसिक रूप से रूपरेखा तैयार कर चुका था, यानी, जब और यदि वह वापस आता।

पहले सप्ताह के निरर्थक बीतने के बाद, और उस भयानक नीरसता से राहत पाने के लिए, मैंने बिरूर रेलवे स्टेशन के छोटे से पुस्तक स्टॉल से कुछ सस्ते उपन्यास खरीदे, जिन्हें मैं अपनी जगह पर बैठकर पढ़ता था। मैं लकड़ी को हिलाने वाली रस्सी को अपने आप चलाता रहता था, और पढ़ते समय आसपास होने वाली किसी भी घटना को सुनने के लिए अपनी सुनने की शक्ति पर निर्भर रहता था। इस तरह मैं दूसरे सप्ताह के अंत तक पहुँच गया, और बाघ के लौटने का कोई संकेत नहीं मिला।

यह समझना आसान होगा कि इस समय तक मैं अधीर हो रहा था; वास्तव में, मैं अपनी जबरन निष्क्रियता से बहुत तंग आ चुका था। मैंने बेहतर योजना सोचने के लिए बहुत दिमाग खपाया, लेकिन मैं किसी ऐसे निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सका जो मेरे मौजूदा रास्ते से अधिक कारगर हो।

अब चौथा महीना शुरू हो चुका था और बाघ की वापसी किसी भी समय तय थी, बशर्ते वह अपने क्षेत्र में ही घूम रहा हो। मैंने जिले के मुख्यालय चिकमगलूर के उपायुक्त से व्यवस्था कर रखी थी कि वे मुझे क्षेत्र में होने वाली सभी मानव हत्याओं की सूचना अपने अधीनस्थ, कादुर के अमिलदार के माध्यम से देते रहें, जो बिरूर से केवल चार मील दूर था। जैसे ही किसी शिकार की खबर मिलती, एक संदेशवाहक को मेरे पास भेजा जाना था, और वास्तव में, दो दिन बाद अमिलदार का संदेशवाहक आया और उसने मुझे बताया कि बाघ ने चार दिन पहले चिकमगलूर-सक्रेपटना मार्ग पर स्थित एक छोटे से गाँव में शिकार किया था। अगले ही दिन संदेशवाहक फिर आया और मुझे आयरनकेरे झील के उत्तरी तट पर एक चरवाहे की हत्या की सूचना दी। यह स्थान मदक झील से पाँच मील दूर था, जो कि होगरेहल्ली से लगभग नौ मील दूर था।

अब तक की रिपोर्टें संतोषजनक थीं, क्योंकि उनसे स्पष्ट रूप से संकेत मिल रहा था कि बाघ अभी भी अपने नियमित क्षेत्र में ही है और अंतिम शिकार के समय, यानी खबर मिलने से दो दिन पहले, वह लगभग चौदह मील दूर था। इसलिए मैं उम्मीद कर सकता था कि इस समय तक बाघ होगारेहल्ली के बाहरी इलाके के बहुत करीब पहुँच गया होगा, या शायद पहले से ही वहाँ पहुँच चुका होगा, और चूंकि कल उसके भोजन किए हुए तीसरा दिन होगा, इसलिए पूरी संभावना थी कि वह नए शिकार की तलाश में होगा।

उस शाम मैंने मूडलागिरी गौड़ा से कहा कि वे होगारेहल्ली और आसपास के इलाकों के निवासियों को चेतावनी दें कि हत्यारा आसपास ही है, और किसी भी कीमत पर झाड़ीदार क्षेत्र और बागान से दूर रहें।

अगली सुबह मैं हमेशा की तरह जल्दी अपनी जगह पर बैठा था। इस बार मैं कोई उपन्यास नहीं लाया था, बल्कि लकड़ी के टुकड़े को जितना हो सके ज़ोर से पीटने, खांसने और पेड़ की डाल पर इधर-उधर हिलने-डुलने में लगा हुआ था ताकि खुद को ज़्यादा से ज़्यादा दिखा सकूँ। उस शाम गाँव लौटते समय मैंने अचानक हमले से बचने के लिए पूरी सावधानी बरती, लेकिन दो दिन और बीत गए और कुछ नहीं हुआ। न ही मुझे आगे किसी के मारे जाने की कोई खबर मिली।

अब मेरे मन में यह विचार आया कि बाघ होगर खान रिज में स्थित अपने गढ़ों में लौट आया होगा, या शायद होगारेहल्ली को छोड़कर उत्तर-पश्चिम दिशा में लिंगधल्ली और बागवडकट्टे की ओर चला गया होगा, या फिर पश्चिम की ओर संतावेरी की ओर चला गया होगा।

मौसम अपेक्षाकृत गर्म था और आधा चाँद निकल आया था, इसलिए मैंने अगले दो दिनों की पूरी दोपहर और रात पेड़ पर बिताने का निश्चय किया, इस उम्मीद में कि शायद मुझे बाघ को आकर्षित करने का मौका मिल जाए, जो निस्संदेह अंधेरा होने के बाद बाहर निकलेगा। पंद्रह दिनों तक व्यर्थ बैठे रहने से मैं पहले ही थक चुका था, इसलिए इससे मुझ पर और भी अधिक दबाव पड़ेगा। फिर भी, मैंने सफलता की एक हताश कोशिश में इस कठिन परीक्षा को सहने का निश्चय किया।

अगली सुबह मैं फिर से वापस आ गया, इस बार मेरे साथ एक टोकरी थी जिसमें मेरा रात का खाना, गर्म चाय की थर्मस, कंबल, पानी की बोतल, टॉर्च और अन्य सामान थे जो रात में पेड़ पर लंबे, तंग घंटों तक पहरा देने वाले व्यक्ति के पास होते हैं। मैं अपने साथ बेंजेड्रिन की तीन गोलियां भी लाया था ताकि मुझे नींद न आ जाए।

मैंने दोपहर भर वही काम दोहराया, बार-बार थपथपाता रहा और देर रात तक करता रहा। जंगल में सन्नाटा छाया हुआ था, सिवाय एक सींग वाले उल्लू की आवाज़ और दूर से आती हुई काकर या जंगली भेड़ की भौंकने की आवाज़ के। रात 1:30 बजे चाँद डूब गया और चारों तरफ़ घना अंधेरा छा गया और बहुत ठंड भी हो गई। लगभग 3 बजे मुझे नींद आने लगी और मैंने बेंजेड्रिन की तीन में से दो गोलियाँ निगल लीं। आधे घंटे बाद मुझे सरसराहट सुनाई दी, और फिर एक लकड़बग्घे की उत्तेजित हंसी सुनाई दी, जैसे उसने मुझे सूंघा हो या देखा हो। 'हा! हा! हा! हा! हा! ये क्या है यहाँ? हा! हा!' उसने कहा और फिर अंधेरे में अपने रास्ते चला गया।

फिर सन्नाटा छा गया, जब तक कि झूठी सुबह की हल्की रोशनी ने सूर्योदय से एक घंटा पहले का संकेत नहीं दिया। वह घंटा बीत गया, और फिर, 'व्ही-ई-ई-ईव! कुक-काया-काया-खुक्कम', भूरे रंग के जंगली मुर्गे ने उगते सूरज का स्वागत करते हुए बांग दी, और मैं थका हुआ अपने ठिकाने से नीचे उतरा, होगारेहल्ली वापस जाने के लिए संघर्ष कर रहा था ताकि चार घंटे की नींद ले सकूँ।

सुबह ग्यारह बजे मैं थका देने वाली निगरानी जारी रखने के लिए फिर से पेड़ पर लौट आया। मैं इस निष्कर्ष पर पहुँच चुका था कि अब मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता। दोपहर हमेशा की तरह गर्म रही, हरे बारबेट की 'टोक-टोक-टोक-टोक' और कोयल परिवार से संबंधित भारतीय क्वील की 'को-एल! को-येल' की आवाज़ें ही सुनाई दे रही थीं। शाम ढलने लगी और पास की एक झाड़ी के नीचे सूखे पत्तों में से कुछ चुनता हुआ एक स्पूरफाउल 'कुकुर्रुकावाक। कुकुर्रुका-वाक' चिल्लाया। पक्षियों का एक समूह, जिसे बोलचाल में 'सात बहनें' कहा जाता है, रात के लिए अपने घोंसले में जाने की तैयारी कर रहा था, उनकी चहचहाहट सुनाई दी, और जैसे ही सूरज होगर खान की ढलानों के नीचे डूबा, एक मोर ने अपनी विदाई की आवाज़ निकाली, 'मिया-आ-ऊ- आहू-आओ-आह-ह-ओ-ओ-तार-ह-ऊ'।

फिर रात के पक्षियों ने चहचहाना शुरू किया। 'चीसे-चीसे!' नाइटजार चहचहाते हुए ऊपर उड़ते रहे, और फिर पास के पेड़ों की शाखाओं या जमीन पर बैठते ही उनकी आवाज बदलकर 'चुकू-चुकू-चुकू' हो गई।

दस बज गए, और कुछ ही देर बाद चित्तीदार हिरणों के झुंड से लगातार 'आओ! आओ! आओ!' की आवाजें सुनाई देने लगीं। वे चेतावनी देते हुए लगातार 'आओ! आओ!' दोहरा रहे थे।

निस्संदेह कोई मांसाहारी जानवर हरकत में था, और चौकस हिरणियों ने उसे देख लिया था या उसकी गंध महसूस कर ली थी, लेकिन क्या वह पैंथर था, साधारण बाघ था, या खुद आदमखोर बाघ था, यह सवाल अनुत्तरित था। मैंने लकड़ी को और ज़ोर से और बलपूर्वक थपथपाना शुरू कर दिया, इस उम्मीद में कि बाघ यह न सोचे कि यह रहस्यमय लकड़हारा रात में काम करने कैसे आया।

मिनट धीरे-धीरे बीतते गए, और फिर अचानक आधे मील से भी कम दूरी पर एक भयभीत सांभर हिरण की तीखी आवाज सुनाई दी: 'पोंक!-व्ही-ओंक!-व्ही-ओंक!' वह बार-बार दोहराता हुआ होगर खान की ओर बढ़ रहा था।

फिर सन्नाटा छा गया! मैंने झाड़ियों को थपथपाना जारी रखा और अर्धचंद्र में दिखाई देने वाली हर झाड़ी को ध्यान से देखा, मन ही मन उन विभिन्न आवरण रेखाओं की समीक्षा की जिनका उपयोग बाघ पेड़ का पीछा करते समय कर सकता था। इनमें से किसी भी रेखा पर कुछ भी नहीं हिला, और सब कुछ स्थिर था, सिवाय दूर से सांभर की एक आखिरी 'पोंक!' की आवाज के।

मुझे अजीब सा एहसास होने लगा कि किसी भी पल कुछ हो सकता है, और मुझे ऐसा लगा जैसे कोई मुझे देख रहा हो, फिर भी सन्नाटे में कोई आवाज़ या खड़खड़ाहट नहीं हुई। मैं धीरे-धीरे पैर थपथपाते हुए खाँसा, फिर हिला और आखिर में अपनी सीट से उठ खड़ा हुआ, बिल्कुल भारतीय अंदाज़ में खाँसते और थूकते हुए। फिर भी कोई आवाज़ नहीं हुई, और फिर, जैसे आसमान से बिजली गिरी हो, वह आ गया!

'वूफ़! वूफ़!' वह दहाड़ा, और एक विशालकाय भूरा जीव, जो पंखों वाले शेटलैंड टट्टू जितना बड़ा था, लगभग दस गज दूर एक झाड़ी के पीछे से जादू की तरह प्रकट हुआ, और पेड़ के तने पर झपटा और मेरे नीचे की ओर बढ़ गया।

मेरे ठीक नीचे, महज तीन गज की दूरी पर एक विशाल भूरे रंग का सिर दिखाई दिया; मैंने टॉर्च का स्विच दबाया और उसकी चमकती आँखों के बीचोंबीच गोली चला दी। राइफल की धमाके के साथ ही बाघ एक भयानक दहाड़ मारते हुए पीछे की ओर ज़मीन पर गिर पड़ा। मैंने दूसरी गोली चलाई। उसने एक और दहाड़ के साथ इसका भी जवाब दिया, और अगले ही पल वह गायब हो गया। सौ गज दूर झाड़ियों से मुझे आखिरी बार 'वर्र-उफ़!' की आवाज़ सुनाई दी और फिर सन्नाटा छा गया।

मुझे पता था कि मेरे दोनों निशाने चूके नहीं थे, फिर भी मैंने खुद को कोसते हुए कहा कि कम से कम दूसरे निशाने से ही जानवर को न गिरा पाया। फिर भी मुझे यकीन था कि वह बुरी तरह घायल हो गया था और ज्यादा दूर नहीं जा सकता था। मैंने रात भर झपकी ली और सूरज उगते ही सावधानी से होगारेहल्ली लौट आया, ताकि घायल जानवर का पीछा करने की योजना बना सकूँ।

मूडलागिरी गौड़ा ने शानदार तरीके से खुद को संभाला, और जब मैंने थोड़ी देर आराम किया, जिसके बाद गर्म चाय, टोस्ट और बेकन का आनंद लिया, तो उन्होंने भैंसों के झुंड के मालिक के साथ व्यवस्था की कि वह घायल बाघ के पीछे झाड़ियों के बीच से अपने जानवरों को ले जाए, इस उम्मीद में कि जब भैंसें पास आएंगी तो वह अपना ठिकाना बता देगा।

सुबह 9 बजे तक मैं मूडलागिरी, दो स्काउट्स, पंद्रह भैंसों और उनके मालिक के साथ अपने पेड़ पर वापस आ गया था। सबसे पहले मैं पेड़ की चोटी पर चढ़ा और बाघ को खोजने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। पेड़ के नीचे, छाल पर, उसके चेहरे या सिर से खून के छींटे पड़े थे, क्योंकि मेरी पहली गोली उसे लगी थी। झाड़ी के पीछे, जहाँ वह छिप गया

था, हमें खून के कई निशान मिले, जिससे पता चला कि मेरी दूसरी गोली भी उस पर लगी थी।

इसके बाद हमने भैंसों को धीरे-धीरे उस दिशा में ले जाना शुरू किया जिधर बाघ पीछे हट रहा था, और उन्हें यथासंभव दूर-दूर तक एक सीधी रेखा में फैला दिया। मैं भैंसों के पीछे-पीछे चल रहा था, और दोनों स्काउट मेरे ठीक पीछे थे। मूडलागिरी और भैंसों का मालिक उसी पेड़ पर बैठे रहे जहाँ मैं बैठा था।

हम लगभग 200 गज ही आगे बढ़े थे कि हमें एक गहरी गुर्राहट सुनाई दी। उसी समय भैंसों का झुंड रुक गया और उन्होंने अपने सिर नीचे कर लिए, सींग फैलाकर उस दिशा की ओर मुँह कर लिया जहाँ से गुर्राहट आई थी।

मेरे बाईं ओर थोड़ी दूर एक पेड़ उगा था, और मैंने एक जासूस से फुसफुसाकर कहा कि वह उस पर चढ़कर देखे कि क्या उसे बाघ दिखाई देता है। उसने ऐसा किया, लेकिन मुझे इशारा करके बताया कि उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। इस बीच भैंसें उस जगह से पीछे हट गई थीं, और हम उन्हें आगे नहीं बढ़ा पा रहे थे। उन्हें वहीं छोड़कर, और उस जासूस को पेड़ पर ही छोड़कर, मैं और बाकी जासूस चुपके से मूडलागिरी वापस गए और उसे निर्देश दिया कि वह गाँव लौटकर कुछ गाँव के कुत्तों को हमारे लिए लाने की कोशिश करे। वह इसके लिए तैयार हो गया, लेकिन डेढ़ घंटे बाद वह लौटा, और अपने साथ केवल दो आवारा कुत्ते लेकर आया, और कहा कि वह केवल इतने ही कुत्ते ला पाया है। अब हमने भैंसों को आगे बढ़ाने के लिए कुत्तों को उन पर छोड़ दिया, और पच्चीस गज आगे बढ़े ही थे कि बाघ ने भयानक गुर्राहट शुरू कर दी। भैंसें तुरंत रुक गईं, जबकि कुत्ते ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगे।

आगे चल रही दो भैंसों के पीछे छिपने के लिए रेंगते हुए, मैंने उनके पैरों के बीच से झाँकने की कोशिश की ताकि झाड़ियों को भेदकर बाघ की एक झलक पा सकूँ, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। फिर मैंने जानवरों को आगे बढ़ने के लिए उकसाने का प्रयास किया, लेकिन उनमें से एक अचानक मुझ पर झपटा और मैं बाल-बाल उसके लंबे सींगों के वार से बच गया।

मेरी स्थिति बेहद नाजुक थी, मेरे सामने एक घायल बाघ था जो किसी भी क्षण हमला कर सकता था, और आसपास घबराई हुई भैंसें थीं जो बाघ या मुझ पर, जो भी उन्हें पहले उकसाता, अपने सींगों से हमला करके अपना बचाव करतीं। कुछ कदम पीछे हटकर, मैंने पेड़ पर मौजूद स्काउट को नीचे उतरने का इशारा किया। उसकी और अन्य स्काउटों की मदद से, मैंने भैंसों के ऊपर से झाड़ियों में उस जगह पर पत्थर फेंकना शुरू किया जहाँ से गुर्राहट की आवाज आ रही थी। इस पर बाघ ने फिर से गुर्राहट की, लेकिन हम कुछ भी कर लें, वह बाहर नहीं निकला और न ही पीछे हटा, और इससे संकेत मिला कि उसकी हालत खराब थी।

आगे पत्थरबाजी बेकार साबित होने पर, मैंने दोनों जासूसों को वापस बुला लिया और भैंसों को वहीं छोड़ दिया। उनकी मदद से और दो कुत्तों के साथ, मैंने जंगल का लंबा चक्कर लगाया और बाघ के पीछे, लगभग 300 गज आगे पहुँच गया। यहाँ से हम बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़े। मेरे निर्देशों पर जासूस हर पेड़ और ऊँची जगह पर चढ़ते गए, ताकि बाघ को देख सकें। इस तरह हमने लगभग 200 गज की दूरी तय की, तभी एक जासूस ने इशारा किया कि जिस डाल पर वह चढ़ा था, वहाँ से उसे कुछ दिखाई दिया। नीचे उतरते हुए उसने फुसफुसाकर बताया कि उसने लगभग पचास गज दूर एक झाड़ी के नीचे एक सफेद और भूरे रंग की वस्तु देखी है, जो भैंसों के खड़े होने की जगह से लगभग आधे रास्ते पर थी।

उसके साथ शाखा पर चढ़ते हुए, उसने झाड़ियों के एक झुंड की ओर इशारा किया, जिसे मैंने पहले व्यर्थ ही घूर कर देखा, फिर मुझे उस झुंड के ठीक पीछे एक धुंधला भूरा और सफेद धब्बा

दिखाई दिया। उस वस्तु पर निशाना साधते हुए, मैंने गोली चलाई, और बाघ ने हमारे आने की दिशा को गलत समझकर, छोटी-छोटी दहाड़ों के साथ भैंसों पर हमला कर दिया। सबसे नज़दीकी भैंसा बाघ के अचानक उस पर कूदने से चौंक गया। बाकी भैंसें एक साथ आईं और सींग नीचे करके आगे बढ़ीं। इस बीच, जिस भैंसे पर हमला हुआ था, वह दर्द और डर से दहाड़ रही थी और अपने दुश्मन को झटकने की कोशिश कर रही थी। बाघ भैंसे पर बैठा रहा, ज़ोर-ज़ोर से गुर्राता और दहाड़ता रहा।

पेड़ पर स्थित मेरी सुविधाजनक स्थिति से दृश्य मेरे लिए स्पष्ट था, लेकिन भैंस को या तेजी से पास आ रहे झुंड के किसी सदस्य को मारने के डर से मैंने गोली चलाने का जोखिम नहीं उठाया।

फिर बाकी भैंसें भी वहाँ पहुँच गईं और चारों ओर सींगों के उछाल और छटपटाते भूरे शरीरों का अफरा-तफरी मच गई। अपनी स्थिति को असुरक्षित पाकर बाघ भैंस से कूद गया और पच्चीस गज दूर एक झाड़ी के पीछे छिप गया। मैं उसे साफ देख सकता था, वह दुबका हुआ भैंसों को देख रहा था। बाएं कंधे के पीछे एक गोली ने उसे मार डाला। बाद में, बाघ की जांच करने पर मैंने पाया कि पिछली रात चलाई गई मेरी पहली गोली उसके दाहिने गाल पर, उसकी आंख से लगभग दो इंच नीचे और दाहिनी ओर लगी थी, जो उसके मांस को भेदते हुए उसकी गाल की हड्डी को चकनाचूर कर गई थी। मेरी दूसरी गोली उसके पेट को चीरते हुए निकली थी और बाहर निकलते समय एक बड़ा छेद बना दिया था जिससे उसकी आंतें बाहर निकल रही थीं। मेरी तीसरी और हाल ही की गोली उसके दिल में लगी थी। महीनों पहले 'कार शिकारियों' द्वारा तोड़ा गया उसका जबड़ा ठीक से नहीं जुड़ा था, जिससे यह स्पष्ट होता है कि जानवर ठीक से काट क्यों नहीं पा रहा था और परिणामस्वरूप आदमखोर क्यों बन गया था।

हमला की गई भैंसा अपने शक्तिशाली पंजों से बुरी तरह घायल हो गई थी, लेकिन उसने काटा नहीं था। मुआवज़े से मालिक संतुष्ट हो गया; मुझे पूरा यकीन है कि जानवर घाव से उबर गया होगा, क्योंकि भैंसा आम तौर पर गायों की तुलना में कहीं अधिक मजबूत होती है और गंभीर शारीरिक चोटों से भी बच सकती है।

इस प्रकार 'येम्मैदोड्डी नरभक्षी' के करियर का अंत हुआ, और यद्यपि जिले को एक क्रूर और निर्दयी हत्यारे से छुटकारा मिल गया, यह याद रखना चाहिए कि 'कार शिकारियों' द्वारा की गई गैरजिम्मेदार और अनुचित गोलीबारी ही सारी परेशानी की जड़ थी, और इसके लिए उन अट्ठाईस निर्दोष लोगों की जान को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए जो इस हमले में मारे गए।

8

जलाहल्ली का हत्यारा

यह कहानी न तो आदमखोर बाघ की है, न ही आदमखोर तेंदुआ की, बल्कि एक साधारण, औसत आकार के तेंदुए की है, जिसने अपने जीवन की रक्षा में बहादुरी से लड़ाई लड़ी, चतुराई और प्रभावी ढंग से लड़ते हुए तीन लोगों को मार डाला और ग्यारह अन्य को घायल कर दिया, और अंत में कई दिनों की पीड़ा के बाद, अजेय रहते हुए, साहसपूर्वक मर गया।

सन् 1938 में, द्वितीय विश्व युद्ध के शुरू होने से पहले, बैंगलोर से लगभग सात मील उत्तर-पश्चिम में, तुमकुर जाने वाली सड़क के पास स्थित जलाहल्ली गाँव एक छोटा सा कस्बा था, जिसमें शायद 150 घर थे, जिनमें से कुछ ईंटों के और कुछ फूस के बने थे। बैंगलोर शहर मैसूर सरकार का मुख्यालय होने के कारण, उस राज्य का वन विभाग, जो सदाबहार और मानसूनी दोनों प्रकार के वनों से समृद्ध है, का मुख्यालय बैंगलोर में था। कीटों और अन्य कीटों द्वारा विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक वनों के व्यवस्थित विनाश और नुकसान पर सरकार का विशेष ध्यान था, और जलाहल्ली से एक मील के दायरे में लगभग चार वर्ग मील भूमि पर वन पौधों का एक वृक्षारोपण किया गया था, जिसमें चंदन, गुलाब की लकड़ी, लाल गुलाब की लकड़ी और अन्य वृक्षों को प्राकृतिक क्रम में उगाया गया था, ताकि बैंगलोर की प्रयोगशालाओं के निकट विभिन्न कीटों (जिन्हें वहाँ लाया गया था) की क्रिया का अध्ययन किया जा सके। ये पौधे औसतन दस फीट की ऊंचाई तक बढ़ गए थे, जबकि भाला घास, लैंटाना और कभी-कभार वेट-ए-बिट कांटेदार झाड़ियों की सामान्य निचली वनस्पति ने जमीन को घनी तरह से ढक लिया था, जिससे घनी झाड़ियाँ बन गई थीं जो अनगिनत साँपों, काफी संख्या में खरगोशों, कभी-कभार दिखने वाले मोर और निश्चित रूप से काफी मात्रा में तीतर और बटेरों का घर बन गई थीं।

एक दिन भटकता हुआ तेंदुआ बीस मील दूर स्थित मगदी की पथरीली पहाड़ियों से इस इलाके में आ पहुँचा। उसने अपना जीवन खरगोशों, चूहों और जंगल के अन्य छोटे जीवों को खाकर शुरू किया, लेकिन जल्द ही उसे पता चल गया कि पास के जलाहल्ली गाँव में बकरियों और गाँव के कुत्तों के रूप में उसका भरपूर भोजन उपलब्ध है, जिन्हें वह लगातार और कष्टदायक तरीके से खाने लगा।

सब कुछ ठीक चल रहा था, जब तक कि एक दिन तेंदुए ने जलाहल्ली के मोटे पुलिस-दफ्फेदार (या सार्जेंट) की बकरी को मार डाला। इस कृत्य को उस अधिकारी ने अपने मान-सम्मान और पद का अपमान समझा और उसने तेंदुए को मारकर बदला लेने की कसम खाई।

स्थानीय पुलिस बल को .303 राइफलें दी गई थीं, जिनमें से मैगज़ीन हटा दी गई थीं, ताकि एक बार में केवल एक ही गोली चलाई जा सके। यह एहतियाती उपाय के तौर पर किया गया था

ताकि स्थानीय दंगों के दौरान, जो कभी-कभी मामूली उकसावे पर भी आम हो जाते हैं, अति उत्साही पुलिसकर्मियों द्वारा भीड़ पर अंधाधुंध गोलियां न चलाई जाएं।

तो दाफेदार अपनी मरी हुई बकरी के ऊपर एक पेड़ पर बैठ गया, उसके पास एक सिंगल-शॉट .303 पिस्तौल थी। सूर्यास्त के समय, अचानक एक तेंदुआ आया और उसके बाएं अगले पैर में घाव हो गया, क्योंकि दाफेदार का निशाना अजीब तरह से कांपते हाथों के कारण अस्थिर हो गया था।

पैंथर गुर्राते हुए भाग गया, मोटा दाफेदार रात भर अपने पेड़ पर कांपता रहा, अगली सुबह नीचे उतरा, ज़मीन पर खून के निशान देखे लेकिन कुछ नहीं मिला, और उसने निष्कर्ष निकाला कि वह बड़े सौभाग्य से तेंदुए से बच गया था। खैर, उसने सोचा कि उसे सबक मिल गया है और भविष्य में वह उसकी बकरियों को बिल्कुल अकेला छोड़ देगा।

यह घटना शुक्रवार की रात को घटी। अगला दिन, शनिवार, शांतिपूर्वक बीता और उसी शाम ग्रामीणों ने अगले दिन सुबह बड़े पैमाने पर खरगोश पकड़ने का अभियान चलाने का फैसला किया। वन विभाग के बागान के किनारे और उससे सटे लगभग तीन एकड़ में फैले कैसुरिना के पेड़ों के चारों ओर दो फुट ऊंचे खरगोश पकड़ने के जाल बिछा दिए गए। अगले दिन सुबह लगभग सौ ग्रामीणों को कुत्तों के साथ मिलकर और लकड़ी के छोटे डंडों से लैस होकर खरगोश पकड़ने का अभियान चलाना था। खरगोश जालों में फंस जाते और खुद को छुड़ाने के लिए संघर्ष करते हुए डंडों से पीट-पीटकर मार डाले जाते।

सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा था जब तक कि कैसुरिना झाड़ियों के झुंड तक नहीं पहुँच गए, जहाँ आसपास के सभी लोगों के आश्चर्य और भय के बीच, एक हानिरहित खरगोश के बजाय एक तेंदुआ कूद पड़ा। उसने पास में मौजूद शिकारी दल पर झपट्टा मारा और जितनी देर में यह लेख लिखा जाता है, उससे भी कम समय में उसने उनमें से छह को अलग-अलग तीव्रता से घायल कर दिया, कुछ को मामूली खरोंचें आईं, कुछ को दांतों से काटा गया, और कुछ को अपने तेज पंजों से गहरे घाव दिए गए।

शिकारी चारों दिशाओं में बिखर गए और पैंथर वापस कैसुरिनास में लौट आया।

पास ही में ह्यूगी प्लंकेट और उनकी मां रहते थे। अपने समय में वे एक प्रसिद्ध शिकारी थे, जिन्होंने मद्रास प्रेसीडेंसी के कुरनूल जिले के दिगुवामेटा के वन क्षेत्रों में लगभग एक दर्जन बाघ और शायद उससे दोगुने तेंदुओं का शिकार किया था। इधर-उधर भटक रहे शिकारी तेंदुए की खबर लेकर उनके पास पहुंचे और मदद की गुहार लगाई। ह्यूगी सुबह देर तक बिस्तर पर थे और पायजामा पहने हुए थे। उन्होंने पुलिस दफ्फेदार द्वारा तेंदुए को घायल करने की घटना के बारे में नहीं सुना था और उन्हें यकीन ही नहीं हो रहा था कि ऐसा कोई जानवर बैंगलोर शहर से सात मील की दूरी तक भटक सकता है। खैर, चिंतित ग्रामीणों को शांत करने के लिए उन्होंने अपनी .12 बोर की शॉटगन में एक एल.जी. कारतूस और एक गोली डाली और उनके साथ कैसुरिना बेल्ट की ओर चल दिए।

यहां उसने बुरी तरह घायल जानवरों को देखा और पहली बार उसे एहसास हुआ कि वास्तव में आसपास कोई पैंथर मौजूद है।

कैसुरिना झाड़ियों के बीच से सावधानीपूर्वक आगे बढ़ते हुए, लगभग आधा दर्जन आदमियों का एक छोटा समूह उसके पीछे-पीछे झुंड बनाकर चल रहा था। ह्यूगी पेड़ों के बीच से आधे से ज़्यादा रास्ता पार कर चुका था कि पैंथर ने एक आड़ से दूसरी आड़ में छलांग लगाकर खुद को दिखाने की गलती कर दी। ह्यूगी के तेज़ी से बाएँ और दाएँ मुड़ने से वह गिर पड़ा और जानवर करवट

लेकर तड़पने लगा।

ह्यूगी अपने साथियों के साथ तेज़ी से आगे बढ़ा, और फिर उसने वह गलती कर दी जिसकी कीमत उसे अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। उसने अपने पैर से उस बेजान शरीर को छू लिया। जानवर हरकत में आ उठा, हरकत में आ गया। उसने प्लंकेट पर झपट्टा मारा, अपने नुकीले दांत उसकी दाहिनी बांह में गड़ा दिए, जिससे वह अपने हथियार का इस्तेमाल नहीं कर सका, जबकि उसके पिछले पंजों ने उसे बुरी तरह नोंच डाला और खून की लाल धारियाँ बना दीं। आसपास के लोग इधर-उधर भाग गए, उनमें से केवल एक ने अपने बेतुके खरगोश के डंडे से जानवर को भगाने की कोशिश की। फिर पैंथर ने ह्यूगी को छोड़ दिया और उस आदमी पर झपट्टा मारा, जिसे उसने चार अन्य लोगों के साथ नोंच डाला और काट डाला, फिर अपने खून के निशान छोड़ते हुए वापस झाड़ियों की ओर भाग गया।

प्लंकट को केंद्र मानकर उस भयावह मंजर की कल्पना करना आसान है। बेहोश पड़े ह्यूगी, जिसका दाहिना हाथ सिर्फ एक पतली सी नस से लटका हुआ था, को उसके फार्महाउस तक ले जाने में उन लोगों को लगभग साठ मिनट लग गए। इस यात्रा के दौरान उसका बहुत खून बह गया, और दो दिन बाद जब मैं उस रास्ते पर चल रहा था, तो मुझे आश्चर्य हुआ कि कोई इंसान इतना खून बहाकर भी कैसे जीवित रह सकता है।

श्रीमती प्लंकेट ने सूझबूझ दिखाते हुए उन्हें और चार अन्य गंभीर रूप से घायल लोगों को कार में बिठाया और बैंगलोर के बोरिंग अस्पताल के लिए रवाना हो गईं। शेष सात घायल ग्रामीणों को बैंगलोर स्थित विक्टोरिया अस्पताल ले जाया गया।

ह्यूगी को रक्त चढ़ाया गया और उसकी बांह बचाने का प्रयास किया गया, लेकिन अगले दिन गैंग्रीन के लक्षण दिखने पर बांह काटनी पड़ी। सदमे और रक्त की कमी ने उसकी सहनशीलता को असहनीय बना दिया और अगले दिन तेज बुखार के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

यह सब एक रविवार की सुबह हुआ था। उसी दोपहर एक चरवाहे ने वन विभाग के वृक्षारोपण क्षेत्र के बाहरी इलाके में, कैसुरिना के पेड़ों को छोड़कर, तेंदुए के खून के निशान देखे और इसकी सूचना जलाहल्ली गांव में रहने वाले दो भाइयों, कलाइया और पापाइया को दी।

अगली सुबह—सोमवार को—ये दोनों भाई बड़ी हिम्मत से, हालांकि थोड़ी नादानी से, तेंदुए का पीछा करने का निश्चय कर बैठे। बड़े भाई, कलाइयाह के पास पुराने डिज़ाइन की .12 बोर की पिस्तौल थी। छोटे भाई, पापाइयाह के पास एक बैरल वाली मजल-लोडर पिस्तौल थी।

सामान लादकर, ये दोनों बहादुर आदमी कंधे से कंधा मिलाकर, खून के निशानों का पीछा करते हुए बागान की झाड़ियों में घुस गए।

इस तरह भटकते-भटकते वे अलग हो गए, और पलक झपकते ही तेंदुए ने कलाइया पर झपट्टा मारा, उसे ज़मीन पर पटक दिया और बेरहमी से उसके मूत्राशय और अंडकोष को नोंच डाला। हमले की ज़ोर से उसकी .12 बैरल की पिस्तौल उसके हाथों से गिर गई, और जब वह जानवर के ऊपर पड़ा चीख रहा था, तभी उसका छोटा भाई मदद के लिए दौड़ा और कलाइया के ऊपर पड़े तेंदुए पर अपनी पिस्तौल से गोलियां चला दीं। यह एक रहस्य ही है कि उसने अपने भाई को गोली क्यों नहीं मारी।

और भी बुरी तरह घायल तेंदुआ, कलाइयाह को छोड़कर पापाइयाह पर झपटा। पापाइयाह मुंह के बल गिर पड़ा, उसके दांत पीठ को चीरते हुए फेफड़े तक पहुंच गए, जबकि पिछले पैरों के पंजे उस बेचारे आदमी के नितंबों और जांघों के पिछले हिस्से को खरोंचते रहे। फिर जानवर भाग गया।

उस दिन मैं दोपहर का खाना खा रहा था कि पसीने से तरबतर एक आदमी मेरे दरवाजे पर

खबर देने आया। मैंने झटपट राइफल, शॉटगन और टॉर्च उठाई और गाड़ी में बैठ गया। मेरी पत्नी भी आखिरी समय में पीछे न रहने के इरादे से मेरे साथ आने को तैयार हो गई। जैसे ही मैं अपने बंगले के गेट से निकलकर मुख्य सड़क पर आया, मेरी मुलाकात स्थानीय पुलिस बल के एरिक न्यूकोम्ब से हुई, जो मुझसे मिलने आ रहे थे। मैंने उन्हें सारी घटना बताई और माफी मांगते हुए वहां से जाने की कोशिश की, लेकिन एरिक भी पीछे नहीं रहना चाहते थे और गाड़ी में बैठ गए।

हमें जलाहल्ली पहुँचने में ज़्यादा समय नहीं लगा, और वहाँ का नज़ारा बेहद हास्यास्पद था। सबसे छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, हर निवासी बाहर आ चुका था। तेंदुए की एक झलक पाने की उम्मीद में लोगों की भारी भीड़ बागान के किनारे तक पहुँच गई थी। ये सभी अपनी जान बचाने के लिए पेड़ों की शाखाओं पर चढ़ गए थे, यहाँ तक कि आसपास के पेड़ इतने भार से लगभग टूट ही गए थे। लेकिन कोई भी कलैया और पापायाह को बचाने के लिए आगे नहीं आया, जो चार घंटे पहले जहाँ गिरे थे, वहीं बागान में पड़े मदद के लिए धीमी आवाज़ में चिल्ला रहे थे।

सबसे पहला काम तो ज़ाहिर तौर पर इन लोगों की मदद करना था, इसलिए हमने एक दर्जन सामान ढोने वालों को भर्ती किया और जंगल में प्रवेश किया। हमें कलाइयाह बहुत बुरी हालत में और असहनीय पीड़ा में मिला। पापायाह के फटे फेफड़े से खून के बुलबुले निकल रहे थे।

हमने उन्हें गाड़ी तक पहुँचाया, और मैंने उन्हें अस्पताल ले जाने के लिए इंजन चालू कर दिया था, तभी एक ग्रामीण दौड़ता हुआ आया, जिसके हाथ में अब तक का सबसे लंबा भाला था जो मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा था (बारह फीट से अधिक लंबा होने के कारण इसका व्यावहारिक उपयोग कहना असंभव है) और उसने बताया कि उसने अभी-अभी 300 गज दूर एक बड़ी झाड़ी में पैंथर को छिपते हुए देखा है, जहाँ अगर हम उसके साथ चलें तो हम उसे आसानी से मार सकते हैं।

मुझे पता है कि इसके बाद जो कुछ भी हुआ, वह मेरी ही गलती थी, क्योंकि मैं घायलों को अस्पताल पहुंचाने के अपने कर्तव्य में विफल रहा। हालांकि, मैं यह स्वीकार करता हूं कि उस समय की उत्तेजना और पैंथर को आसानी से पकड़ने के इस अवसर के लालच ने मेरे विवेक पर हावी होकर मुझे जानवर के पीछे जाने के लिए मजबूर कर दिया। एरिक न्यूकोम्ब ने मेरे साथ चलने की जिद की, इसलिए मैंने उसे अपनी .12 बोर की शॉटगन दे दी, जिसके बाएं बैरल में एल.जी. और दाएं में घातक कारतूस भरे थे, साथ ही कुछ अतिरिक्त कारतूस भी दे दिए, जबकि .405 राइफल मैंने अपने इस्तेमाल के लिए रख ली। यह भी एक और गलती थी, जैसा कि आगे की घटनाओं से साबित हुआ। मुझे शॉटगन से लैस होना चाहिए था। हमारे साथ केवल वह व्यक्ति था जिसके पास एक बड़ा सा भाला था, बाकी सभी लोग गायब हो गए थे। मेरी पत्नी एक दर्शक के रूप में, कुछ दूरी पर पीछे-पीछे चल रही थी।

हम झाड़ियों के उस बड़े हिस्से से पच्चीस गज की दूरी तक पहुँच गए, न कि उस खास झाड़ी तक जैसा कि भालाधारी ने बताया था, जिसमें पैंथर को रेंगते हुए देखा गया था। मैंने एरिक को अपने दाहिनी ओर लगभग तीस गज आगे बढ़ने को कहा, ताकि हम एक-दूसरे की गोलीबारी की चपेट में न आएँ और जानवर के भागने के हर संभव रास्ते को पूरी तरह से बंद कर सकें। फिर मैंने भालाधारी को झाड़ियों पर पत्थर फेंकने का निर्देश दिया, जिसे उसने लगभग बीस मिनट तक बहुत अच्छी तरह से किया। हालाँकि, हमें कुछ भी सुनाई या दिखाई नहीं दिया। मैं स्वीकार करता हूँ कि तब मुझे बहुत संदेह होने लगा कि क्या पैंथर वास्तव में आस-पास भी था। थोड़ी देर बाद एरिक ने चिल्लाकर कहा कि वह झाड़ियों के अंदर तक देख सकता है और पैंथर वहाँ नहीं है।

तब तक भीड़ में से कुछ साहसी लोग हमारे साथ आ गए थे। उनमें से एक के साथ एक कुत्ता भी था, जिसे हमने झाड़ियों में जाने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की, इस उम्मीद में कि

उसकी सूंघने की शक्ति से तेंदुए का पता चल जाएगा। लेकिन कुत्ते ने हमारी बात मानने से इनकार कर दिया और किनारे पर ही झाड़ियों में भौंकता रहा।

इससे पैंथर के अनुपस्थित होने के बारे में मेरी राय बदल गई। हालांकि, तब तक एरिक अधीर हो चुका था और झाड़ियों के कुछ गज करीब पहुँच गया, जहाँ उसने अपने दम पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। उसके पहले कुछ पत्थर गिरने पर कुछ नहीं हुआ।

फिर उसने एक बड़ा गोला फेंका, जो ज़ाहिर तौर पर सीधे पैंथर पर या उसके बहुत पास जाकर लगा। ज़ोरदार 'आउच! आउच!' की आवाज़ आई और पीले प्रकाश की एक लकीर की तरह जानवर झाड़ियों से बाहर निकला। उसके पास शॉटगन उठाने का समय नहीं था, लेकिन घबराहट के मारे उसने ट्रिगर दबा दिया और शायद अपनी जान बचा ली। बंदूक चल गई, जिससे उसके सामने ज़मीन में एक छेद हो गया और पैंथर निस्संदेह बुरी तरह डर गया। अगले ही पल वह उस पर आ गिरा और बंदूक उसके हाथ से छीन ली, जबकि एरिक और पैंथर एक-दूसरे को गले लगाए हुए, खुद की एक छोटी, ढलान वाली ढलान से लुढ़कते हुए पास के एक छोटे नाले को ढकने वाली लंबी भाला घास में जा गिरे।

इस पूरे समय एरिक मुझे गोली चलाने के लिए चिल्ला रहा था और तेंदुआ भयानक रूप से गुर्रा रहा था। मुझे केवल भालाकार घास की हिंसक हलचल दिखाई दे रही थी। मैं तेजी से आगे बढ़ा, इस डर से कि इतनी नज़दीक से अपनी भारी राइफल से गोली चलाने का जोखिम न हो, क्योंकि गोली तेंदुए और एरिक दोनों को भेद सकती थी, जो आपस में उलझे हुए थे।

फिर पैंथर न्यूकोम्बे से निकलकर खुद के किनारे उगी लैंटाना झाड़ियों में कूद गया। मैंने गोली चलाई, और जैसा कि बाद की घटनाओं से साबित हुआ, गोली जानवर की गर्दन के ऊपरी हिस्से पर एक गहरा घाव ही कर पाई।

मुझे उम्मीद थी कि उस मुठभेड़ के बाद एरिक ज़मीन पर लेट जाएगा, लेकिन उसे फुर्ती से उठकर मैराथन की रफ्तार से विपरीत दिशा में भागते देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। उस दिन के बाद से मैं अक्सर उसकी दौड़ने की क्षमता पर उसे ताना मारता रहा हूँ, और यह बात उसे बहुत चुभती है। उसके पेट में गहरा घाव हो गया था, एक पसली दांत से टूट गई थी, जबकि उसकी जांघें और बाहें नुकीले और ताकतवर पंजों से बुरी तरह घायल हो गई थीं।

हमने वहीं अपना काम रोक दिया और बोवरिंग अस्पताल के लिए निकल पड़े। जब तक हम तीनों घायलों को वहाँ पहुँचाए, तब तक कार की सीटें खून से लथपथ हो चुकी थीं। उस शाम का बाकी समय हमने पुलिस के लिए बयान लिखने और अनगिनत सवालों के जवाब देने में बिताया, जिनमें से कुछ बेतुके थे।

बेचारे कलाइया की उसी रात असहनीय पीड़ा से मृत्यु हो गई। उनके भाई पापाइया एक महीने बाद स्वस्थ हो गए, फेफड़े की चोट से बाल-बाल बचे। ईश्वर की कृपा और अच्छे स्वास्थ्य के कारण एरिक न्यूकोम्ब को जरा सा भी बुखार नहीं आया और वे दो सप्ताह में पूरी तरह से ठीक हो गए।

अगले दिन, मंगलवार को, कई शिकारी घायल जानवर की तलाश में निकले। इनमें टोबैको फैक्ट्री के लॉयड्सवर्थ भी थे, जो एक प्रसिद्ध शिकारी थे और कई बाघों और तेंदुओं का शिकार कर चुके थे, और बेक भी, जो उतने ही प्रसिद्ध निशानेबाज और बड़े जानवरों के शिकारी थे। लेकिन हमें उसका कोई सुराग नहीं मिला। खून के सारे निशान मिट चुके थे, और तेंदुआ मानो हवा में गायब हो गया था।

उस शाम उसने लगभग बारह साल के एक चरवाहे लड़के को मार डाला, जो उस जगह के

बहुत करीब चला गया था जहाँ उसे पता नहीं था कि वह जानवर लेटा हुआ है। संयोगवश, यह जगह उस इलाके से एक मील से भी ज़्यादा दूर थी जहाँ पहले की घटनाएँ घटी थीं। लड़के की मौके पर ही मौत हो गई; पैंथर ने उसका गला पकड़ लिया था और उसकी गर्दन की नस और श्वास नली को काट डाला था।

पाँचवें दिन, बुधवार की सुबह, मैं उस जगह पर था जहाँ चरवाहे की हत्या हुई थी। हमने घायल जानवर का पीछा करने की पूरी कोशिश की, जो बुरी तरह घायल होने के बावजूद, खून जमने के कारण, कम से कम बाहरी तौर पर, अब तक बहना बंद हो चुका था। मैं घनी घास और लैंटाना में भटक रहा था, जो ढलान पर उतरते ही और घनी हो गई थी। ढलान के आधे रास्ते में, तेंदुए ने मुझे आते हुए सुना या देखा और आगे न बढ़ने की चेतावनी देते हुए गुर्राना शुरू कर दिया। यह सौभाग्य की बात थी, वरना शायद मैं आज आपको यह कहानी सुनाने के लिए यहाँ नहीं होता। घनी झाड़ियाँ लगभग अभेद्य होने के कारण, मैंने आगे बढ़ना रोक दिया, जो आत्मघाती होता, और आगे बढ़ने का इंतज़ार करने का फैसला किया, जिसके बारे में मुझे लगभग यकीन था कि एक-दो दिन में तेंदुए की उसके कई गंभीर घावों से मौत हो जाएगी।

उसी दिन बाद में एक रोचक घटना घटी। बेंगलुरु से भारी संख्या में पुलिस बल तैनात था। लगभग तीस पुलिसकर्मी, सिंगल-शॉट सर्विस राइफलों से लैस, एक पुलिस वैन में ठूंस-ठूंस कर भरे हुए थे। वैन को चारों ओर से धातु की जाली से सुरक्षित किया गया था ताकि दंगे के समय भीड़ द्वारा पत्थरबाजी से बचा जा सके। इस अस्थायी बख्तरबंद गाड़ी के चालक को निर्देश दिया गया था कि वह बागान में तब तक खोजबीन करे जब तक कि राइफलधारियों द्वारा दुश्मन का पता लगाकर उसे पकड़ न लिया जाए। उसने अपनी पूरी क्षमता से ऐसा करने का प्रयास किया, लेकिन घनी झाड़ियों और उलझी हुई घास में रास्ता न जानते हुए, अंततः उसने गाड़ी को एक छिपी हुई, झाड़ियों से भरी खाई में आधा पलट दिया। चालक और उसके साथी अंदर फंस गए और मदद के लिए जोर-जोर से चिल्लाने लगे। उनमें से कोई भी बाहर निकलने की हिम्मत नहीं कर रहा था, क्योंकि क्या वहाँ कोई खूंखार तेंदुआ खुला नहीं घूम रहा था जो सबसे पहले उतरने वाले को मार कर खा जाता?

दूर से चीखने की आवाज़ सुनकर हम मौके पर पहुँचे और कानून के बंधक प्रतिनिधियों को रिहा कर दिया। उन्होंने किसी तरह अपनी गाड़ी को सीधा खड़ा किया और अपने बैरक में लौट आए। इस घटना से उन्हें ज़रा भी नुकसान नहीं हुआ था। जाने से पहले उन्होंने बताया कि झाड़ियों में से उन्हें गुर्राहट की आवाज़ें सुनाई दी थीं, लेकिन मैंने इसे सामूहिक घबराहट का नतीजा मान लिया।

मैंने तय कर लिया था कि मैं प्रतिदिन सुबह 7 बजे से सूर्यास्त तक बागान में रहूंगा, और छठे दिन, जो गुरुवार था, दोपहर के आसपास मैंने आकाश में गिद्धों को इकट्ठा होते देखा। दूरबीन से देखते हुए, मैंने उन्हें बागान को विभाजित करने वाली छोटी घाटी के बीचोंबीच उतरते देखा, वास्तव में वही घाटी जिसमें मैंने पिछले दिन जबरदस्ती घुसने की कोशिश की थी।

मुझे पता था कि इन समझदार पक्षियों को कुछ मरा हुआ मिला है। या तो वह खुद पैंथर था, या फिर पैंथर द्वारा मारा गया कोई जीव। सावधानी से मैं घनी लैंटाना और काँटेदार झाड़ियों से होते हुए आगे बढ़ा, इस उम्मीद में कि किसी भी क्षण तेंदुए की कर्कश खाँसी सुनाई देगी और वह मुझ पर हमला कर देगा। लेकिन कुछ नहीं हुआ, और आखिरकार, काँटों से घायल होकर मैं घाटी में पहुँचा। मैं लगभग पचास गज ही चला था कि चार गिद्ध अपने पंख फड़फड़ाते हुए ज़मीन से उड़ उठे। आगे बढ़ते हुए, मैं एक छोटे से पानी के कुंड के पास पहुँचा, जिसके किनारे पैंथर मरा पड़ा था, पानी पी रहा था।

उस बेचारे जानवर के शरीर में बहुत खून बह गया था और वह प्यास और बुखार से तड़प रहा था। पानी तक रेंगने और पीने की कोशिश में खून बहना और बढ़ गया होगा, क्योंकि मरने से पहले उसने पानी में गाढ़ा खून उगल दिया था, जिससे तालाब का आधा हिस्सा गहरे लाल रंग का हो गया था। मेरे पहुँचने पर गिद्ध वहाँ बैठ ही गए थे और सौभाग्य से उन्हें उसकी खाल को नष्ट करने का समय नहीं मिला था।

जलाहल्ली लौटकर, मुझे जल्द ही कुछ लोग मिल गए जो मृत जानवर को एक खंभे से बांधकर मेरी कार तक ले गए। मैंने उसे यशवंतपुर पुलिस स्टेशन ले जाकर आधिकारिक रिपोर्ट दर्ज कराई। यहाँ मुझे आवश्यक अधिकारियों के आने का तीन घंटे तक इंतज़ार करना पड़ा, जिससे मुझे बहुत झुंझलाहट हुई, क्योंकि मुझे डर था कि शव से खाल न उतारे जाने के कारण वह खराब हो सकती है।

अंततः मुझे मृत जानवर को ले जाने की अनुमति मिल गई, और आप निश्चिंत रहें कि मैंने ऐसा करने में जरा भी देर नहीं की। खाल उतारते समय मुझे उन घटनाओं के क्रम को समझने का भरपूर अवसर मिला जिनके कारण तीन व्यक्तियों की मृत्यु हुई और कई लोगों पर हमला हुआ।

तेंदुए के बाएं अगले पैर में, मोटे पुलिस वाले की .303 कैलिबर की गोली से लगा घाव, कीड़ों से भरा हुआ था और पूरी तरह से गैंग्रीन से ग्रस्त था। ह्यूगी प्लंकेट की शॉटगन की गोली जानवर के आर-पार निकल गई थी, पेट को चीरते हुए, लेकिन तुरंत जानलेवा घाव नहीं किया। दूसरे बैरल से निकली एक एल.जी. गोली माथे की हड्डी में धंस गई थी, और जाहिर तौर पर जानवर को पूरी तरह से बेहोश कर दिया था, जिससे प्लंकेट उसके पास जाकर उसे छू सका। पापायाह की मस्कट से निकली पांच गोलियां उसकी बगल में धंस गई थीं, लेकिन इतनी पीछे थीं कि तुरंत असर नहीं कर सकीं। अंत में, जब जानवर न्यूकॉम्ब से दूर भाग रहा था, तब मेरी राइफल की गोली पूरी तरह से बेअसर रही, और उसने जानवर की गर्दन के पिछले हिस्से पर सिर्फ एक गहरी लकीर बनाई।

मैंने कलाइया के परिवार द्वारा अपने परिवार के मुखिया की मृत्यु के कारण हुए नुकसान की भरपाई के लिए और उनके भरण-पोषण के लिए एक भूखंड दान में देने की मांग के समर्थन में अदालत में यह चमड़ा प्रस्तुत किया था। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि समय के साथ, उस मृत व्यक्ति के साहस को मान्यता मिली।

द्वितीय विश्व युद्ध के आगमन के साथ, जलाहल्ली में आमूलचूल परिवर्तन हुआ। वन विभाग के वृक्षारोपण और कैसुरिना के पेड़ काट दिए गए और हजारों इमारतें खड़ी हो गईं, पहले इतालवी युद्धबंदियों को रखने के लिए, फिर बर्मा और मलेशिया पर संभावित आक्रमण के लिए सबसे बड़े अस्पताल अड्डों में से एक के रूप में, और बाद में वायु सेना कर्मियों को रखने के लिए, जो भारत में उसकी तेजी से विस्तारित हो रही वायु सेना के मुख्य प्रशिक्षण अड्डों में से एक था।

इस पैंथर की खाल अब मेरे बंगले के हॉल की शोभा बढ़ा रही है। मैं इस जानवर के प्रति अपने गहरे आदर और प्रशंसा को व्यक्त किए बिना नहीं रह सकता। क्योंकि जहाँ दूसरे तेंदुए छुपकर, अचानक शिकार को पकड़ लेते हैं, वहीं इस तेंदुए ने गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, विपरीत परिस्थितियों में भी, अपनी जान बचाने के लिए बहादुरी और साहस से लड़ाई लड़ी।

9

देवरायनदुर्गा का साधु

उन्हें 'सन्यासी' कहा जाता था, क्योंकि वे कई मायनों में एक साधु से मिलते-जुलते थे, चाहे वह उनके निवास स्थान का चुनाव हो या उनकी विलक्षण आदतें।

वह एक असाधारण बाघ था। हालाँकि वह आदमखोर नहीं था और न ही उसने कभी इंसान का मांस खाया था, फिर भी उसका स्वभाव बेहद क्रूर और मानव जाति के प्रति घोर शत्रुतापूर्ण था। उसने पाँच दिनों के भीतर तीन लोगों—दो पुरुषों और एक महिला—को मार डाला, और वह भी क्षणिक आवेश और आक्रामकता में आकर। इसके अलावा, उसकी आदतें बाघों से बिल्कुल अलग थीं, क्योंकि वह बकरियों और गाँव के कुत्तों को खाता था, जो बाघ, विशेषकर कुत्तों को, बहुत कम खाते हैं। फिर अचानक वह तुमकुर कस्बे से छह मील दूर और बैंगलोर शहर से पचास मील की दूरी पर स्थित देवरायंदुर्गा पहाड़ी की झाड़ियों में प्रकट हुआ। देवरायंदुर्गा में कई दशकों से कोई बाघ नहीं था, वहाँ केवल कुछ जंगली सूअर और मोर ही पाए जाते थे। उस क्षेत्र में कोई घना जंगल नहीं था, बल्कि लैंटाना और वेट-ए-बिट कंटीली झाड़ियों से ढका हुआ था। इसके अलावा, पहाड़ी की चोटी बहुत पथरीली थी और उसमें कुछ छोटी गुफाएँ भी थीं। इन गुफाओं में कभी-कभार कोई छोटा पैंथर अपना डेरा जमा लेता था और पहले रहने वाले जीव, आमतौर पर साही, को खाकर उसे भगा देता था। लेकिन ये गुफाएँ बाघ जैसे बड़े जानवर के लिए पर्याप्त आश्रय तो दूर, छिपने की जगह भी नहीं देती थीं। पूरा इलाका समतल, खेती वाले खेतों के बीच झाड़ियों का एक छोटा सा द्वीप मात्र था, जिसे कोई भी सामान्य बाघ दिन हो या रात, पार करने का जोखिम नहीं उठाता था।

लेकिन ठीक यही वह काम था जो 'सन्यासी' ने किया, क्योंकि उसे इन खेतों को पार करना पड़ा होगा, ताकि वह देवरायंदुर्गा पहाड़ी द्वारा प्रदान किए गए संदिग्ध और सीमित आश्रय तक पहुंच सके।

पहले तो किसी को पता ही नहीं चला कि कोई बाघ प्रकट हुआ है। आस-पास बिखरे हुए कुछ गांवों में बकरियों और कुत्तों की असामान्य रूप से बड़ी संख्या में कमी आने लगी। इसका कारण एक तेंदुआ माना गया, जब तक कि एक सुबह इन्हीं गांवों में से एक के पास एक जोते हुए खेत में बाघ के पदचिह्न नहीं मिले। अगले दो दिनों के भीतर एक बड़ी गाय मारी गई, जिसे रात भर गांव के अब तक सुरक्षित बाहरी इलाके में चरने के लिए छोड़ा गया था। इस गाय की मालकिन, एक बूढ़ी औरत, अपने जानवर से बहुत लगाव रखती थी। अगली सुबह जब उसे पता चला कि गाय मारी गई है, तो वह घटनास्थल पर पहुंची, जो एक चौथाई मील दूर था। वहां वह अपनी मरी हुई गाय के पास बैठ गई और जोर-जोर से रोने लगी, मानो ईश्वर को अपने गहरे दुख और अपनी

प्यारी गाय की मृत्यु से हुए गहरे नुकसान का साक्षी बना रही हो। परिवार के अन्य सदस्य भी उस बूढ़ी औरत के साथ घटनास्थल पर गए थे और कुछ देर चुपचाप बैठकर उसके रोने-धोने को सुनते रहे। लेकिन जल्द ही वे इससे ऊब गए, इसके अलावा उनके पास करने के लिए और भी काम थे, और एक-एक करके वे गांव लौट गए, बूढ़ी औरत को उसकी मरी हुई गाय के पास अकेला छोड़ दिया, जो अभी भी पूरे जोश से रो रही थी।

सुबह के 11 बज रहे थे और तेज़ धूप पड़ रही थी। कोई साधारण बाघ इतनी तेज़ धूप और गर्मी में, और इतनी शोरगुल भरी जगह पर अपने शिकार के पास वापस नहीं आता, लेकिन 'सन्यासी' बाघ साधारण नहीं था। यह बाघ वापस आया और उसने बूढ़ी औरत को शिकार के पास देखा, जो ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए खुद को हिला रही थी। जानवर ने सोचा कि यह शोर असहनीय है और इसे रोकना होगा। इसलिए वह बूढ़ी औरत पर झपटा और अपने पंजे के एक ही वार से उसकी जान ले ली। फिर वह गाय को कुछ गज दूर घसीटकर ले गया और भरपेट खाया। बूढ़ी औरत का शरीर अछूता था, और बाघ मानो उसे भूल ही गया था।

जब वह शाम चार बजे तक नहीं लौटी, तो उसके परिवार ने यह सोचकर कि वह रोते-रोते थक गई होगी और सो गई होगी, उसे घर ले जाने के लिए वहाँ पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्हें यह देखकर गहरा सदमा और भय हुआ कि उसकी हत्या कर दी गई थी, जबकि बाघ ने मरी हुई गाय को बड़े चाव से खा लिया था और झाड़ियों में वापस चला गया था। वे हड़बड़ी में गाँव की ओर भागे और सबको यह दुखद खबर सुनाई। कुछ ही देर में मुखिया, एक भारी बंदूक से लैस और अपने साथ लगभग दो दर्जन बहादुर सैनिकों को लेकर वहाँ पहुँचा। उन्होंने बाघ के पदचिह्नों का पीछा करने का प्रयास किया, लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं, क्योंकि जानवर पास ही घनी झाड़ियों में घुस गया था। झाड़ियों में जाने से डरकर, वे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने और पत्थर फेंकने लगे, और मुखिया ने हवा में दो गोलियाँ चलाईं। कुछ नहीं हुआ और वे शव को गाँव ले जाने के लिए वापस मुड़ गए, तभी बाघ अचानक बाहर निकला और दल के आखिरी आदमी, दुर्भाग्य से मुखिया पर झपट पड़ा, जो संयोगवश समूह का एकमात्र सदस्य था जिसके पास बंदूक थी। उसे कुछ पता चलने से पहले ही उसकी मौत हो गई।

दल तितर-बितर हो गया और गाँव की ओर भाग गया, और अगली सुबह देर से ही वे भारी संख्या में वापस लौटे ताकि दोनों शवों को बरामद कर सकें, जो रात भर अछूते रहे थे। हालाँकि, बाघ ने गाय को खा लिया था।

अगले दो दिनों तक चारों ओर दहशत का माहौल छाया रहा। तीसरे दिन सुबह, एक यात्री तुमकुर से दो गधों पर लदे सामान को आगे-आगे ले जाते हुए गाँव की ओर बढ़ा। गाँव से एक मील आगे सड़क पर बाघ ने पहले गधे पर झपट्टा मारा, जो हमलावर के नीचे गिर पड़ा। दूसरा गधा वहीं खड़ा रहा, जबकि यात्री डर के मारे चीखता हुआ उसी रास्ते पर भाग गया जहाँ से वह आया था। ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी इस हरकत ने उस असाधारण बाघ को उकसा दिया, क्योंकि उसने उसका पीछा किया और उसे मार डाला, फिर मरे हुए गधे के पास लौट आया, जिसे वह उठाकर ले गया और खा गया। आदमी का पीछा करते हुए और लौटते हुए, वह दूसरे गधे के पास से गुजरा, जिसे उसने छुआ तक नहीं। आदमी का शरीर बिना खाए पड़ा रहा।

बैंगलोर के इतने करीब घटी इन घटनाओं को स्थानीय समाचार पत्रों में प्रमुखता से छापा गया; अगली सुबह मैं कार से देवरायंदुर्गा के लिए रवाना हुआ और दो घंटे से कुछ अधिक समय में घटनास्थल पर पहुंच गया।

भयभीत ग्रामीणों से पूछताछ करने पर मुझे वही कहानी बताई गई जो मैंने अभी बताई है। मौसम शुष्क और सड़कें धूल भरी होने के कारण, अब तक सभी पदचिह्न गायब हो चुके थे, और

कुछ समय के लिए मुझे यह मानने में संदेह हुआ कि हमलावर बाघ था, मुझे लगा कि यह कोई बड़ा और अजीब तरह से आक्रामक पैंथर हो सकता है। हालाँकि, मुखिया के साथ आए और उसके हमले और मृत्यु के प्रत्यक्षदर्शी लोगों ने मुझे आश्वस्त किया कि यह वास्तव में एक बाघ ही था। फिर भी, ग्रामीणों की बातों को बढ़ा-चढ़ाकर बताने की आदत को जानते हुए, मुझे अभी भी संदेह था।

दोपहर के भोजन के बाद, मैंने दोपहर का समय, एक स्पष्ट रूप से घबराए हुए गाइड के साथ, आसपास के क्षेत्र की छानबीन करने, गुफाओं में छानबीन करने और 'सन्यासी' की तलाश में खुद को पूरी तरह से थका देने में बिताया; लेकिन मुझे न तो उसका कोई सुराग मिला, न ही कोई पदचिह्न।

शाम चार बजे मैं गाँव लौटा और बड़ी मुश्किल से एक अधेड़ बैल का इंतजाम किया, क्योंकि इस इलाके में भैंसें उपलब्ध नहीं थीं। मैंने इस बैल को गाँव से लगभग तीन-चौथाई मील दूर, उस जगह बाँध दिया जहाँ सड़क एक बेहद पथरीले और कंटीले नाले से मिलती थी। अब लगभग छह बज चुके थे और मचान लगाने का समय नहीं था, इसलिए मैंने छह मील दूर तुमकुर स्थित यात्रियों के बंगले में रात बिताने का फैसला किया और अगली सुबह लौटने का सोचा। मुझे उम्मीद थी कि तब तक बाघ बैल को मार चुका होगा।

मैंने ऐसा ही किया, सुबह 5 बजे उठकर लगभग 5:30 बजे उस जगह पहुँच गया जहाँ मैंने चारा बाँधा था। जब हल्की रोशनी होने लगी, तो मैंने सड़क पर आधा मील आगे जाकर गाड़ी रोक दी, ताकि अगर 'सन्यासी' ने शिकार किया हो तो उसे परेशान न करूँ। सावधानी से उस जगह के पास पहुँचकर मैंने देखा कि मेरा चारा गायब था। करीब से देखने पर पता चला कि जानवर को मार दिया गया था और बाँधने वाली रस्सी काट दी गई थी, जाहिर तौर पर मारने वाले ने जानबूझकर और बहुत ज़ोर से खींचकर ऐसा किया था। पैरों के निशान भी दिखाई दे रहे थे, जिनसे पहली बात तो यह पता चला कि मारने वाला बाघ नहीं बल्कि एक बाघिन थी, और दूसरी बात यह कि यह एक वयस्क जानवर था और एक बाघिन के हिसाब से काफी बड़ा था। इस जानवर के विचित्र स्वभाव और अचानक हमला करने की प्रवृत्ति के बारे में मुझे जो कहानियाँ सुनाई गई थीं, उन्हें याद करते हुए, मैं बहुत सावधानी से निशानों का पीछा करता रहा, हर कदम पर आगे और चारों ओर के क्षेत्र को बहुत ध्यान से देखता रहा, और थोड़ी-थोड़ी देर में पीछे भी देखता रहा। प्रगति बहुत धीमी थी, लेकिन खिंचाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था, और 150 गज की दूरी पर मुझे मेरा मरा हुआ चारा मिल गया। बाघिन जाहिरा तौर पर वहां से जा चुकी थी।

युवा बैल को बाघों के सामान्य तरीके से मारा गया था, उसकी गर्दन तोड़ दी गई थी। बाघिन उसे उठाकर उस जगह ले गई जहाँ वह अब पड़ा था, और वहाँ उसने उसकी गर्दन की नस से खून चूसा था, जैसा कि गले में गहरे दाँतों के निशान और सतह पर सूखे खून से स्पष्ट था। हो सकता है कि वह शिकार को वहीं छोड़कर रात में वापस आई हो, या तुरंत ही भोजन करने बैठ गई हो। शिकार की पूंछ शरीर से जुड़ने वाली जगह से काट दी गई थी और लगभग दस फीट की दूरी पर छोड़ दी गई थी; यह अधिकांश बाघों और आमतौर पर बड़े तेंदुओं की आदत होती है। अंत में, पेट और आंतें भी बड़े करीने से लगभग दस फीट की दूरी पर हटा दी गई थीं, लेकिन उस जगह के पास नहीं जहाँ पूंछ छोड़ी गई थी। फिर बाघिन ने बाघों के सामान्य तरीके से पिछले हिस्से से अपना भोजन शुरू किया और लगभग आधा शिकार खा लिया।

इन सभी तथ्यों से यह स्पष्ट था कि बाघिन वास्तव में उतनी विचित्र और सनकी नहीं थी जितनी उसके बारे में बताया जा रहा था। वह बस कुछ ज्यादा ही गुस्सैल स्वभाव की प्रतीत होती थी।

इस उम्मीद में कि वह लौट आएगी, मैं लगभग बीस गज दूर उगे एक पतले से पेड़ पर चढ़ गया, जो मेरे उद्देश्य के लिए एकमात्र आश्रय स्थल था। मैं सुबह 9:30 बजे तक वहीं रुका रहा। कोई बाघिन तो नहीं दिखी, लेकिन इसके विपरीत, ऊपर उड़ते हुए तेज निगाहों वाले गिद्धों ने शिकार को देख लिया, और जल्द ही मुझे उनके पंखों से टकराती हवा की सरसराहट सुनाई दी, क्योंकि वे उस दावत के लिए धरती पर झपट्टा मार रहे थे।

शिकार को खाए जाने से बचाने के लिए, मुझे नीचे उतरना पड़ा और पास की झाड़ियों से तोड़ी गई शाखाओं से उसे ढकना पड़ा। इसके बाद मैं गाड़ी में वापस आया और गाँव की ओर चल पड़ा। वहाँ मैंने चार आदमियों की मदद ली और पेड़ के पास लौट आया, जहाँ मैंने उन्हें मेरी पोर्टेबल चारपाई-मचान लगाने का निर्देश दिया, जिसे मैं गाड़ी में अपने साथ लाया था। दोपहर तक सब कुछ तैयार था। फिर उनमें से एक आदमी ने सुझाव दिया कि, चूंकि 'सन्यासी' को बकरियों से विशेष लगाव था, इसलिए अगर मैं आस-पास एक जीवित बकरी बाँध दूँ तो उसे पाने की मेरी संभावना काफी बढ़ जाएगी। उसने कहा कि बकरी की मिमियाहट उसे उस जगह पर अवश्य खींच लाएगी, भले ही उसने आधा खाया हुआ बैल छोड़ दिया हो। मुझे यह विचार कुछ सही लगा, इसलिए मैं गाड़ी से वापस गाँव गया और जल्द ही एक अधविकसित बकरी लेकर लौटा, जो आमतौर पर जोर से मिमियाती है।

कुछ बिस्कुट और चाय के बाद, मैंने मचान पर चढ़ते हुए आदमियों को निर्देश दिया कि वे बकरी को तभी बांधें जब मैं अपनी जगह पर बैठ जाऊं; इससे बकरी को लगेगा कि वह अकेली है और उनके जाते ही जोर से मिमियाएगी। दोपहर करीब 2 बजे आदमियों ने आखिरकार विदा ली, और उसके तुरंत बाद बकरी बहुत ही शानदार ढंग से मिमियाने लगी।

यह सिलसिला शाम करीब 5:45 बजे तक रुक-रुक कर चलता रहा, जब मैंने बाघिन की धीमी, कराहने जैसी आवाज़ से उसके पास आने का आभास किया। बकरी ने भी यह आवाज़ सुनी, मिमियाना बंद कर दिया और आवाज़ की दिशा में मुँह करके खड़ी हो गई। उसके चेहरे पर भयंकर भय साफ झलक रहा था, क्योंकि वह सिर से पैर तक बुरी तरह काँप रही थी।

दुर्भाग्यवश, बाघिन मेरे पीछे से आ रही थी। हालाँकि मेरी चारपाई-मचान पर घूमने के लिए पर्याप्त जगह थी, लेकिन पेड़ का तना और पास में उगी जंगली बेर की घनी झाड़ियाँ मेरी दृष्टि को पूरी तरह से अवरुद्ध कर रही थीं। इसके अलावा, जिस दिशा से बाघिन आ रही थी, उस दिशा से ज़मीन लगातार नीचे की ओर ढलान वाली थी, और शायद इसी वजह से उसने मेरी चारपाई को दूर से ही देख लिया, क्योंकि वह ऊँची ज़मीन से नीचे की ओर आ रही थी और मेरी चारपाई उसकी आँखों के सामने थी।

या फिर शायद उसकी असाधारण छठी इंद्री, जो मैंने कुछ मांसाहारी जानवरों में देखी है, ने उसे सतर्क कर दिया हो। जो भी हो, उस बाघिन ने आसपास कुछ संदिग्ध महसूस किया और उसे लगा कि खतरा पास ही मंडरा रहा है, क्योंकि उसने एक भयानक दहाड़ लगाई और पूरे इलाके का चक्कर लगाने लगी, थोड़ी-थोड़ी देर में दहाड़ती और गुर्राती हुई। बेचारी बकरी डर से लगभग मर ही गई, और अंधेरा होने पर आखिरी बार मैंने उसे ज़मीन पर दुबका हुआ, कांपता हुआ देखा।

उस असाधारण बाघिन ने रात को 9 बजे तक अपनी दहाड़ों से भयानक बना दिया, फिर एक आखिरी गुर्राहट के साथ वह चली गई। उसके बाद कुछ नहीं हुआ, सिवाय सुबह के शुरुआती घंटों में तापमान में अचानक गिरावट के, जब कड़ाके की ठंड पड़नी शुरू हो गई। पेड़ पर मेरे दांत किटकिटा रहे थे, जबकि मेरे नीचे बकरी के दांत धीमी गति से, लेकिन अधिक स्पष्ट रूप से किटकिटा रहे थे—या कम से कम मुझे ऐसा ही लगा।

कड़ाके की ठंड में बिना सोए रात बिताने के बाद सुबह होते-होते हम दोनों थक चुके थे। इसके अलावा, पिछली रात लगातार मिमियाने और ठंड में ठिठुरने के कारण बकरी की आवाज इतनी बैठ गई थी कि मुंह खोलने की कोशिश करने पर भी कोई आवाज नहीं निकली।

दोपहर के समय मैंने दो घंटे बाघिन को ढूंढने में बिताए, लेकिन उसका कोई सुराग नहीं मिला। फिर मैंने एक और पेड़ चुना, इस बार पत्तों वाला और ऊपर से दिखाई न देने वाला। वहाँ मैंने अपना मचान लगाया और शाम चार बजे तक उस पर चढ़ गया, मेरे नीचे एक और बकरी बंधी हुई थी। लेकिन यह बकरी भी उतनी ही बेपरवाह या कठोर थी जितनी पिछली रात वाली बकरी संवेदनशील और घबराई हुई थी; क्योंकि उसे बांधने वाले ग्रामीण के जाते ही वह शांति से जमीन पर बैठ गई और न जाने क्या चबाने लगी, जो वह अंधेरा होने तक करती रही।

इस बार मैंने खुद को और भी गर्म कपड़ों से ढक लिया था, और आधी रात तक, अपने कंबल में अच्छी तरह लिपटा हुआ, मैं गहरी और स्वप्नहीन नींद में सो गया, और भोर होते ही जाग कर देखा कि वह सबसे शांत बकरी अभी भी कुछ चबा रही थी, पता नहीं क्या, मानो पूरी दुनिया में एक भी मांसाहारी जानवर न हो।

मैंने दोपहर में फिर से बाघिन की तलाश की, और फिर से असफल रहा; और फिर दोपहर 3 बजे तक मैं अपनी मचान पर था, इस बार मेरे नीचे एक युवा बैल चारा के रूप में था।

शाम के सात बज रहे थे और लगभग अंधेरा हो चुका था, तभी अचानक गांव से कुछ ग्रामीण जलती हुई लालटेन लिए हुए गांव से आए और मुझे बताया कि बाघिन ने सिर्फ आधे घंटे पहले ही गांव से एक फर्लांग दूर, लेकिन विपरीत दिशा में स्थित एक छोटे तालाब के तटबंध के पास एक और गाय को मार डाला था और उस समय वह उसे खा रही थी।

वहाँ रुकना समय की बर्बादी समझते हुए, मैं नीचे उतरा और अपने साथियों को निर्देश दिया कि वे चारा वहीं छोड़ दें, इस उम्मीद में कि शायद रात में बाघिन उस दिशा से गुज़रे। मैं उनके पीछे गाँव और तालाब की ओर तेज़ी से चल पड़ा। गाँव पहुँचते ही मैंने उन्हें लालटेन बुझाने का निर्देश दिया। फिर मैंने उनमें से केवल एक को मार्गदर्शक बनाकर तालाब की ओर बढ़ना शुरू किया। मेरे साथी ने फुसफुसाते हुए बताया कि गाय सड़क के बाईं ओर मारी गई थी, खाने लायक तो बिल्कुल नहीं थी। वह किनारे से पचास गज और गाँव से मात्र एक फर्लांग दूर थी।

अब चारों तरफ घना अंधेरा हो चुका था, और ग्रामीण मेरे ठीक पीछे सड़क के बीचोंबीच चल रहा था, इसलिए मैंने अपनी राइफल पर लगी टॉर्च चालू की और उसे अपनी बाईं ओर घुमाना शुरू कर दिया।

एक गुर्राहट और भौंकने की आवाज़ आई, और फिर दो बड़े, लाल-सफेद गोले मेरी ओर चमके, जो लगभग 200 गज की दूरी पर और थोड़ी ऊँचाई पर स्थित थे। मैं इस आखिरी बात से हैरान था, तभी एक ग्रामीण ने फुसफुसाकर बताया कि बाघिन छोटे तालाब के बांध के ऊपर खड़ी थी।

मैं अपने रबर के जूतों में चुपचाप चल रहा था, और गाँववाला नंगे पैर मेरे पीछे-पीछे आ रहा था, हम ज़रा भी शोर नहीं कर रहे थे। इस बीच, बाघिन रोशनी की ओर देखती रही। इस तरह मैं सड़क पर 100 गज से अधिक आगे बढ़ा, जब तक कि मैं उस जगह पर नहीं पहुँच गया जहाँ तालाब का बांध सड़क से मिलता था। फिर हम बाईं ओर मुड़े और बांध के ऊपर की ओर हल्की चढ़ाई शुरू की।

बाघिन अब लगभग 100 गज दूर थी और गुर्राने लगी। मैं रुक गया और गोली चलाने के लिए राइफल कंधे पर उठाने ही वाला था कि तभी उसका साहस टूट गया और वह मुड़कर तीन-चार

छलांगों में बांध के ऊपर से भाग गई, जिसके बाद वह तालाब के दूसरी ओर दाहिनी तरफ उतर गई और नज़र से ओझल हो गई।

फिर हम तटबंध के ऊपर-नीचे चलते हुए टॉर्च की रोशनी झाड़ियों के घने जंगल में डालने लगे। वहाँ एक विशाल, अकेला बरगद का पेड़ था, और हमें बहुत आश्चर्य हुआ जब बाघिन की आँखें पेड़ की एक शाखा पर फिर से दिखाई दीं, जो ज़मीन से लगभग पंद्रह फीट या उससे भी अधिक ऊपर थी और उस तालाब के तटबंध के बराबर थी जिस पर मैं खड़ा था। यह आश्चर्यजनक था, क्योंकि बाघ आमतौर पर इतनी ऊँचाई तक पेड़ों पर नहीं चढ़ते, खासकर तब जब टॉर्च की रोशनी उनका पीछा कर रही हो।

अब मैं उसका रूप स्पष्ट रूप से देख पा रहा था, वह पेड़ की शाखाओं के बीच कुत्ते की तरह बैठी हुई थी। चमकती हुई आँखों के बीच सावधानीपूर्वक निशाना साधते हुए मैंने गोली चलाई। बाघिन के ज़मीन पर गिरने से ज़ोरदार आवाज़ हुई, फिर खाँसी की गुर्राहट सुनाई दी और सन्नाटा छा गया।

हम कुछ दूर तक तालाब के किनारे-किनारे चलते रहे, टॉर्च की रोशनी बांध के नीचे दाईं ओर घनी झाड़ियों में डालते रहे, लेकिन कोई आवाज़ सुनाई नहीं दी। यह जानते हुए कि मेरी गोली 'सन्यासी' को लगी है, मैंने थोड़ी देर सोने और अगली सुबह लौटने का फैसला किया। तदनुसार, हम वापस गाँव और उस जगह पर गए जहाँ मैंने कार छोड़ी थी, जो मेरे चारे से एक मील दूर थी। तुमकुर में मैंने हल्का भोजन किया, कड़क चाय पी और खूब सारा तंबाकू पिया, जिसके बाद मैं इस उम्मीद के साथ सो गया कि सुबह बाघिन को ढूंढ लूंगा।

मैं भोर होते ही गांव लौट आया और पिछली रात के अपने सहायक को साथ लेकर हम जल्द ही तालाब के किनारे पहुंच गए, जहां से हम बहुत सावधानी से ढलान वाली जमीन से नीचे उतरकर उस अकेले बरगद के पेड़ के नीचे पहुंचे, जिस पर बाघिन बैठी थी जब मैंने गोली चलाई थी।

पेड़ से गिरने पर जानवर के जमीन पर गिरने से फैले खून ने तुरंत हमारा ध्यान आकर्षित किया। चारों ओर देखने पर हमें लगभग एक वर्ग इंच क्षेत्रफल का हड्डी का एक टुकड़ा मिला, जिसमें मेरी .405 कैलिबर की गोली का एक छोटा सा हिस्सा धंसा हुआ था।

पेड़ के तने पर बने नुकीले पंजों के निशानों से हमें पता चला कि इस असाधारण बाघिन ने अपने भारी वजन को खींचकर पेड़ पर चढ़कर शाखा तक कैसे पहुंची थी। मेरा साथी भी फुर्ती से उसी जगह पर चढ़ गया और शाखा में खून की कुछ बूंदें पाईं।

फिर हमने बरगद के पेड़ से खून के निशान का बहुत सावधानी से पीछा करना शुरू किया, और जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि बाघिन के सिर पर चोट लगी थी और वह बुरी तरह घायल थी। खून के निशान टेढ़े-मेढ़े, बेतरतीब ढंग से एक संकरे घेरे में घूम रहे थे और कई बार एक-दूसरे को काट रहे थे। वह स्पष्ट रूप से स्तब्ध थी, या शायद उसकी आंखों में चकाचौंध थी, और उसे पता नहीं था कि वह क्या कर रही है या कहाँ जा रही है।

हमें अक्सर जमे हुए खून के बड़े-बड़े गड्ढे दिखाई देते थे, और अंत में हम उस जगह पर पहुँचे जहाँ बाघिन गिरी थी, या शायद रात के कुछ हिस्से तक ज़मीन पर लेटी रही थी। लगभग दस फुट व्यास का पूरा घेरा खून से लाल था। जब वह वहाँ से चली गई, जाहिर तौर पर सुबह के शुरुआती घंटों में, खून बहना लगभग बंद हो गया था, और उसके बाद केवल इक्का-दुक्का बूँदें ही उस टेढ़े-मेढ़े रास्ते का निशान छोड़ती थीं जो तटबंध के निचले हिस्से को ढकने वाली लैंटाना, घास और वेट-ए-बिट कंटीली झाड़ियों की घनी झाड़ियों में जाता था।

सबसे पहले, हमने घनी झाड़ियों के इस घेरे को चारों ओर से घेर लिया, लगभग 200 गज दूर स्थित लंबे तटबंध के अंत तक गए, और फिर उसके ऊपरी सिरे से वापस आए, लेकिन किसी भी दिशा में खून का कोई निशान नहीं मिला, न ही बाघिन के इस आवरण से बाहर निकलने का कोई संकेत मिला। इसलिए, वह स्पष्ट रूप से घनी झाड़ियों के इस घेरे में कहीं थी, जो, जैसा कि मैंने अभी कहा, लगभग 200 गज लंबी थी और जिसकी चौड़ाई लगभग पचहत्तर गज से लेकर मुश्किल से दस गज तक भिन्न थी। लेकिन क्या वह जीवित थी या मृत? यही सवाल था, और इसके जवाब पर मेरे साथी और मेरी जान और शरीर का संतुलन टिका हुआ था।

जिस स्थान पर खून की आखिरी बूंद से संकेत मिला था कि बाघिन झाड़ियों में कहाँ घुसी थी, वहाँ लौटकर हमने व्यवस्थित रूप से उस क्षेत्र को खोजना शुरू किया। मैं और मेरा साथी एक साथ खड़े होकर घनी झाड़ियों में पत्थर फेंकते रहे, लेकिन हमारे प्रयासों का फल केवल पूर्ण सन्नाटा और खामोशी के रूप में मिला।

हम झाड़ियों की पट्टी के किनारे-किनारे इसी तरह आगे बढ़ते रहे। बाघिन को प्रकट करने की उम्मीद में, मैंने लैंटाना पर कुल पाँच गोलियाँ चलाईं, लेकिन बाघिन की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। इस पट्टी के लगभग तीन-चौथाई हिस्से पर, बारह फीट ऊँचा एक छोटा पेड़ आसपास की झाड़ियों से अलग दिखाई दे रहा था। मेरा साथी चुपके से उसकी ओर बढ़ा और बेहतर दृश्य प्राप्त करने के उद्देश्य से उस पर चढ़ने लगा, तभी अचानक, बाघिन एक दहाड़ के साथ बाहर निकली और उसके पीछे से उस पर चढ़ गई।

वह आदमी डर से चीख उठा, और मैं वहाँ से, लगभग बीस गज की दूरी से, उस भूरे रंग के शरीर पर तीन गोलियाँ चलाकर उसे लैंटाना की झाड़ियों में पीछे की ओर गिरा दिया। अंततः 'सन्यासी' मर गया।

मेरी समझ के मुताबिक, बाघिन बूढ़ी थी और उसके दांत कुंद हो चुके थे। शायद बुढ़ापे ने उसे मनुष्य के आस-पास आसान जीवन की तलाश करने पर मजबूर कर दिया था, जहाँ बकरियाँ, कुत्ते और मवेशी आसानी से शिकार करने के लिए मौजूद थे। भूख और बुढ़ापा शायद उसके उग्र और हिंसक स्वभाव का कारण थे, लेकिन साहस की कमी और मनुष्य के प्रति जन्मजात घृणा ने उसे वास्तव में आदमखोर बनने से रोक दिया था, हालाँकि मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगर उसे बिना रोक-टोक के अपना जीवन जीने दिया जाता तो वह अंततः आदमखोर बन ही जाती। संयोग से, पिछली रात मेरी गोली उसकी नाक की हड्डी पर लगी थी, लेकिन काफी ऊपर, जिससे हड्डी का वह टुकड़ा निकल गया जो हमें मिला था, लेकिन साथ ही वह जानवर के सिर में इतनी गहराई तक नहीं घुसी थी कि उसे मार सके। दरअसल, गोली उछलकर वापस आ गई थी और हड्डी का टुकड़ा अपने साथ ले गई थी, इसलिए यह संभव था कि इतनी अधिक मात्रा में खून बहने के बावजूद वह बूढ़ी बाघिन ठीक हो जाती, अगर उसने पेड़ पर चढ़ते समय मेरे साथी पर हमला करके खुद को उजागर न किया होता।

10

बायरा, पूजारी

जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने केवल एक लुंगोटी पहन रखी थी, जो लगभग तीन इंच चौड़ी कपड़े की एक पट्टी होती है जो जांघों के बीच से गुजरती है और आगे और पीछे एक गंदी गांठदार डोरी से जुड़ी होती है जो कमर को घेरे रहती है; लेकिन वे दिल से एक सज्जन व्यक्ति थे, और वे मेरे मित्र थे, और हैं।

बायरा से मेरी पहली मुलाकात को पच्चीस साल बीत चुके हैं, और यह मुलाकात इस तरह हुई।

मुथुरमलाई की ऊँची पहाड़ी की तलहटी में बसे मुथुर के छोटे से वन बंगले को घेरने वाली पहाड़ियों के ऊपर पूर्वी आकाश में भोर की हल्की रोशनी फैल रही थी। इस रोशनी के कारण चिनार नदी नामक घुमावदार वनधारा घने जंगल से होकर धीरे-धीरे बहती हुई अपना रास्ता बदलकर दक्षिण की ओर एक तीखा मोड़ ले लेती है और होगेनैकल में चट्टानी जलप्रपात में कावेरी नदी से मिलने से पहले अपने अंतिम सात मील का सफर निर्जन क्षेत्र से पूरा करती है। ग्रीष्म ऋतु का मध्य था और उस समय चिनार नदी पूरी तरह सूखी थी।

मैं सुबह जल्दी निकल आया था और चिनार की सुनहरी रेत पर चुपचाप दबे पांव चल रहा था, इस उम्मीद में कि शायद मुझे कोई भालू दिख जाए। उस समय बड़ी संख्या में भालू नदी के किनारे आते थे और जुमलम के पेड़ के रसीले, बैंगनी, लेकिन थोड़े कसैले फल को जी भरकर खाते थे, जो उस इलाके में बहुतायत में उगता था। अगर भालू नहीं मिला, तो मुझे उम्मीद थी कि रात भर शिकार करने के बाद घर लौटते हुए किसी तेंदुआ से मुलाकात हो जाएगी। मैं जानता था कि ये जानवर नदी के किनारे झाड़ियों में छिपकर शिकार की तलाश में रहते हैं, जो नदी पार कर सकता है। उन दिनों में सांभर, जंगली भेड़ और खूबसूरत चीतल जैसे हिरण काफी संख्या में पाए जाते थे, लेकिन उस सुबह मेरा लक्ष्य ऐसे सुंदर शिकार करना नहीं था।

मैं बंगले से लगभग एक मील दूर चला गया था, और भोर की झूठी रोशनी तेजी से अंधेरे के उस नए दौर में फीकी पड़ रही थी, इससे पहले कि असली भोर जंगली मुर्गे की आवाज और मोर की कर्कश आवाज से घोषित हो, तभी अचानक मुझे अपने बाईं ओर धारा के किनारे उगी मेहंदी की झाड़ियों के एक झुंड से एक दबी हुई लेकिन स्पष्ट सरसराहट सुनाई दी।

उस दिन मेरे पास टॉर्च नहीं थी, इसलिए मैं सावधानी से मेहंदी के पास लगभग दस फीट की दूरी तक गया और रुक गया। तभी मैंने देखा कि मेरे ठीक सामने लगभग तीन फीट व्यास और उतनी ही गहराई का एक बड़ा गड्ढा खोदा गया था, जिसमें लगभग एक फीट पानी सूखी रेत से

रिसकर नीचे की मिट्टी से बह रहा था। मैं समझ गया कि यह किसी शिकारी का काम था, प्यासे हिरणों को अपनी प्यास बुझाने के लिए आकर्षित करने का, ताकि एक सटीक गोली या बंदूक से दागी गई गोलियों की बौछार से उनकी जान जा सके। और जो आवाज़ मैंने सुनी थी, वह निस्संदेह उसी शिकारी की थी, शायद मुझे देखकर, या शायद रात भर जागने के बाद नींद में करवट बदलते हुए।

मैंने तमिल में उस आदमी को बाहर आने के लिए पुकारा, वरना मैं गोली मार दूंगा, लेकिन पहले तो मुझे कोई जवाब नहीं मिला। कुछ कदम आगे बढ़ने पर, झाड़ियों से एक छोटा सा व्यक्ति उठा और नदी की रेत पर कदम रखते हुए मेरे सामने लेट गया, और तीन अलग-अलग तरह से प्रणाम करते हुए अपना माथा ज़मीन से छुआ।

उसे खड़े होने के लिए कहकर मैंने पूछा कि वह कौन है। उसने सीधा-सादा जवाब दिया, 'बायरा, एक पुजारी।' मैंने पूछा, 'तुम्हारी बंदूक कहाँ है?' उसने कहा, 'बंदूक, कैसी बंदूक? मुझ जैसे गरीब, सीधे-सादे आदमी के पास बंदूक कैसे हो सकती है? मुझे तो गोली चलाना भी नहीं आता, मालिक। मैं एक मुसाफिर हूँ और कल रात रास्ता भटक गया था, और बहुत थका हुआ होने के कारण इन झाड़ियों में सो गया था। महाराज, अभी आपने मुझे आवाज़ दी, जिससे मेरी नींद खुली, और आप मेरी बंदूक माँग रहे हैं! मैंने तो ऐसी चीज़ कभी देखी भी नहीं।' मैंने आदेश दिया, 'उसे उठाओ और यहाँ लाओ।' वह कुछ पल झिझका, फिर नीचे झुका और एक पुरानी सी बंदूक ले आया, जो कुछ गज लंबी थी, और जिसका बट सबसे चौड़े हिस्से पर मुश्किल से तीन इंच चौड़ा था।

और इसी तरह मेरी मुलाकात बायरा से हुई, जो पुजारी थीं और पच्चीस वर्षों से मेरी दोस्त हैं, जिन्होंने मुझे जंगल और उसके जंगली, बेफिक्र, उग्र, लेकिन प्यारे और सबसे अद्भुत जीव-जंतुओं के बारे में वह सब कुछ सिखाया है जो मैं अब जानता हूं।

मैंने उससे पूछा, 'तुमने क्या मारा?' उसने जवाब दिया, 'कुछ नहीं। कल रात कोई जानवर पानी के पास नहीं आया।' मैंने और सख्त स्वर में पूछा, 'तुमने क्या मारा?' उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया और नदी के विपरीत किनारे की ओर तिरछे चलने लगा। मैंने नदी की रेत पर एक काला ढेर देखा, जो पास जाने पर एक सांभर हिरणी निकली, जिसकी गर्दन में एक बड़ा सा छेद था, जिससे खून बहकर साफ सफेद रेत को रंग रहा था।

मैंने बायरा को गुस्से और आक्रोश से भरी निगाहों से देखा। उसने सरल शब्दों में कहा, 'मालिक, हम भूखे हैं, और अगर मैं शिकार नहीं करूंगा तो हम खा नहीं पाएंगे, और अगर हम नहीं खाएंगे तो हम मर जाएंगे।'

कुछ गज की दूरी पर रेत पर बैठकर, मैंने बायरा को अपने पास बैठने के लिए आमंत्रित किया और अपनी थैली से कुछ पाइप-तंबाकू निकालकर उसे दे दिया। उसने हथेली पर मुझसे तंबाकू लेकर उसे संदेह भरी नजरों से सूंघा और फिर खुशी और संतुष्टि से झूमते हुए, अपना सिर पीछे झुकाकर उसे मुंह में डाल लिया। अगले कुछ मिनट खामोशी में बीते, बायरा मेरी तंबाकू चबाने में इतना मग्न था!

फिर उसने घबराते हुए कहा, 'मालिक वन रक्षक को मेरी बंदूक के बारे में नहीं बताएंगे। यही मेरी आजीविका का एकमात्र साधन है, और अगर रक्षक को पता चल गया तो वह आकर इसे छीन लेगा। साथ ही मुझे जेल भेज दिया जाएगा, और मेरी पत्नी और चार बच्चे भूखे मरेंगे।'

मेरे सामने एक जटिल समस्या खड़ी हो गई थी। वन लाइसेंस धारक होने के नाते मेरा कर्तव्य था कि मैं शिकारियों को अधिकारियों के हवाले कर दूं। दरअसल, लाइसेंस की शर्तों के अनुसार

मुझे ऐसे व्यक्तियों की गिरफ्तारी में सहायता करने का अधिकार भी था। इसके अलावा, मेरा अंतरात्मा मुझे इस बदमाश के प्रति कोई सहानुभूति न रखने के लिए कह रही थी, जो गर्मी के महीनों में प्यास बुझाने के लिए आने वाली मादा हिरणों को बेरहमी से, सबसे निर्दयी तरीके से मार रहा था। फिर भी, उस छोटे से जीव में कुछ तो अच्छा था, और हमारी संक्षिप्त जान-पहचान के बाद वह मुझ पर जो भरोसा जताने लगा था, वह भी सराहनीय था। या शायद मेरे तेज तंबाकू के सेवन ने ही उसके इस भरोसे को बढ़ाया था।

सवाल और सीधे जवाब से बचते हुए, मैंने उससे पूछा कि वह कहाँ रहता है। उसने जवाब दिया, 'हमारे पास न घर है, न झोपड़ी, न खेत। हम दिनभर जंगल में मधुमक्खी के छत्ते की तलाश में भटकते रहते हैं। अगर हमें एक छत्ता मिल जाता है, तो हम खुद को भाग्यशाली समझते हैं, क्योंकि हम उससे कीमती शहद इकट्ठा करते हैं और उसे सात मील दूर पेन्नाग्राम गाँव के बाज़ार में ले जाते हैं। शहद के एक छोटे बर्तन के लिए हमें शायद एक रुपया मिलता है। इससे हम रागी (एक अनाज) खरीदते हैं, जिससे शायद हमारा चार दिन का पेट भर जाए। अगर हमें शहद नहीं मिलता, तो हम शायद एक 'ऊडुम्बु' (एक बड़ी साँप-छिपकली) पकड़ लें। यह और भी बड़ा सौभाग्य है, क्योंकि हम न केवल 'ऊडुम्बु' खाएँगे, जिसका मांस हमारी ताकत के लिए बहुत अच्छा होता है, बल्कि हम उसकी पूंछ पेन्नाग्राम के स्थानीय वैद्य को बेच देंगे। वह वैद्य बहुत ही अद्भुत व्यक्ति है। वह पूंछ को पकाकर उसमें कोई अद्भुत औषधि मिलाता है। फिर वह पूरे मिश्रण को बारीक पीसकर पाउडर बना लेता है, जिसे वह कागज़ के पैकेटों में बाँटकर आठ आना प्रति पैकेट के हिसाब से बेचता है।' ये पैकेट प्रेमियों को बेचे जाते हैं और बेहद कारगर होते हैं। अगर कोई पुरुष अपनी प्रेमिका के बाएं कंधे पर इस पाउडर की एक चुटकी छिड़क दे, तो वह उसका विरोध नहीं कर पाएगी।

यहाँ उसने तिरछी नज़र से मेरी ओर देखा। 'यदि महाराज अपनी प्रेमिका का दिल नहीं जीत सकते,' उसने विश्वासपूर्वक कहा, 'तो मैं इस देसी वैद्य से आपके लिए यह पाउडर निःशुल्क मंगवा दूँगा, क्योंकि वह मेरा घनिष्ठ मित्र है और साथ ही ओडुम्बु की पूंछें निरंतर पहुँचाने के लिए मेरा ऋणी भी है। आपको बस इतना करना है कि अपनी प्रेमिका के बाएँ कंधे पर थोड़ा सा पाउडर छिड़क दें, और वह हमेशा के लिए आपकी हो जाएगी।'

मैंने जल्दी से उसे बताया कि मैं उस समय इतना प्यार में नहीं थी कि मुझे ओडुम्बु की पूंछों का सहारा लेना पड़े, और मैंने उसे अपने काम जारी रखने के लिए कहा।

कभी-कभी, जब हमें बहुत भूख लगती है, तो हम जंगली शकरकंद की जड़ें खोदते हैं, जो इन इलाकों में तीन शाखाओं वाले पत्तों वाली लता के रूप में उगती है। ये शकरकंद, या जड़ें, आग में भूनने पर या नमक-पानी और करी पाउडर के साथ उबालने पर बहुत स्वादिष्ट और खाने में अच्छी लगती हैं। रात में मैं, मेरी पत्नी और बच्चे अन्नाइबिद्दाहल्ला नदी के किनारे खोदे गए एक गड्ढे में सोते हैं, जो चिनार नदी की एक छोटी सहायक नदी है, जैसा कि आप जानते होंगे, महोदय। गर्मी के मौसम में मैं शिकार करने जाता हूँ, जैसा कि मैंने आज रात किया है। ऐसे समय में मेरी पत्नी या बच्चों में से कोई एक बारी-बारी से पूरी रात जागता रहता है, ताकि हाथियों के आने पर चेतावनी दे सके, जिससे वे गड्ढे से निकलकर किनारे या हमारे आश्रय के पास उगने वाले बड़े पेड़ पर चढ़ जाते हैं। क्योंकि ये हाथी बहुत खतरनाक होते हैं और कभी-कभी हम पर हमला कर देते हैं। एक साल पहले ही एक हाथी ने एक पुजारी महिला को सोते हुए इसी तरह के आश्रय से खींचकर बाहर निकाला और उसे कुचल कर रख दिया था। अगर हमें कुछ शिकार मिलता है, तो हम उसका कुछ मांस खा लेते हैं और कुछ को धुएँ में सुखा लेते हैं। बाकी को हम पेन्नाग्राम में बेच देते हैं और शायद पंद्रह रुपये मिल जाते हैं। उस पैसे से हम परिवार के लिए पूरे महीने का

अनाज खरीद लेते हैं। यह जानते हुए,' उसने शरमाते हुए कहा, 'मुझे पूरा यकीन है कि महाराज, आप मेरे पास मौजूद बंदूक के बारे में वन रक्षक को नहीं बताएंगे। वैसे, यह बंदूक मेरे पिता की थी, और उनसे पहले उनके पिता की, जिन्होंने, जैसा कि हमें बताया गया है, इसे उन दिनों तीस रुपये में खरीदा था।'

फिर उस बदमाश ने मुझे बड़ी मोहब्बत से देखा, उसके होंठों के कोनों पर एक प्यारी सी मुस्कान थी, हालाँकि उसकी आँखों में चिंता झलक रही थी। लाइसेंस धारक होने के नाते मेरा कर्तव्यबोध गायब हो गया; मैंने उसी क्षण अपने अंतरात्मा को दबा दिया और एक ऐसी आवाज़ में जवाब दिया जिसे मैंने टालमटोल दिखाने की नाकाम कोशिश की, बल्कि वह स्पष्ट रूप से शर्मिंदगी भरी थी, 'नहीं, बायरा, मैं नहीं बताऊंगा, मैं तुमसे वादा करता हूँ।'

वह उछलकर खड़ा हो गया और मेरे सामने प्रणाम किया, उसका माथा एक बार फिर तीन बार ज़मीन से छू गया, जो पुजारियों द्वारा अभिवादन का एकमात्र ज्ञात तरीका है। उसने सरल शब्दों में कहा, "हे स्वामी, मैं आपको हृदय से और अपने परिवार की ओर से धन्यवाद देता हूँ। अब से हम आपके आदेशों का पालन करेंगे।"

बायरा से उस दिन बाद में वन लॉज में आने का वादा लेने के बाद, क्योंकि मैं उससे इलाके में मांसाहारी जानवरों की उपस्थिति और गतिविधि के बारे में पूछताछ करना चाहता था, मैं अपने रास्ते चला गया, मृत सांभर हिरणी पर दूसरी नज़र डालने से पूरी तरह बचते हुए, इस डर से कि कहीं मेरा विवेक फिर से जागृत न हो जाए और मुझे इस समझदार साहसी व्यक्ति से किए गए अपने जल्दबाजी वाले वादे पर पछतावा न हो।

बायरा अपने वादे के मुताबिक उस सुबह करीब दस बजे वहाँ पहुँच गया, और गहन पूछताछ से पता चला कि महज दो रात पहले, जब वह चिनार नदी से लगभग दो मील नीचे की ओर स्थित अरेमनवोड्डू नामक स्थान पर सांभर खाने बैठा था, जहाँ एक अन्य सहायक नदी चिनार नदी से मिलती है, तब एक बाघ उसके पाँच फीट के भीतर से गुजरा था। उसने बताया कि यह जानवर उसी इलाके में रहता था, एक बूढ़ा बाघ था, और उसकी उम्र के कारण उसका इलाका बहुत सीमित था।

फिर उसने एक अनोखी कहानी सुनाई, कि एक महीने पहले वह इसी जगह के पास छिपा हुआ था, तभी एक चीतल प्रकट हुआ, जिसे उसने अपनी बंदूक से एक ही गोली में मार गिराया। वह चांदनी रात थी, और चीतल वहीं गिर पड़ा था। बायरा ने अपनी बंदूक में गोलियां भर ली थीं और बाकी रात सोने की तैयारी कर रहा था, तभी एक बड़ा बाघ झाड़ियों से निकला, मरे हुए चीतल के पास से गुजरा, रुका, उसे सूंघा, और अंत में शांति से उसे उठाकर ले गया। बायरा ने बाघ से उस पर अधिकार जताने की हिम्मत नहीं की, क्योंकि उसके पास एक ऐसी बंदूक थी जिसे भरने में काफी समय लगता था।

उस समय मेरे पास कोई जीवित चारा नहीं था, और एक बछिया लाने का मतलब था पेन्नाग्राम भेजना, और शायद अगले दिन तक का इंतज़ार करना। इसलिए मैंने उस रात बायरा के साथ अरेमनवोड्डू नदी के किनारे बैठने का फैसला किया, और उसे साफ-साफ बता दिया कि कम से कम जब तक वह मेरे साथ है, किसी भी तरह के हिरण के अवैध शिकार को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

शाम छह बजे तक हम बायरा द्वारा जंगल की दो धाराओं के संगम पर उगी सरकंडों में बनाए गए एक बेहतरीन और बेहद आरामदायक ठिकाने पर बैठ गए थे। रातें गर्म थीं और बायरा ने अपने लंगोटी के अलावा कुछ नहीं पहना था। उस दिन मुझे धैर्य का एक सबक मिला, क्योंकि

बायरा के सरकंडों में बैठने के बाद से वह पूरी रात अपनी कोहनी तक भी नहीं हिला। उस रात कुछ नहीं हुआ, और रात के दो बजे तक मैं अधीर हो गया और आखिरकार सो गया। भोर होते ही मेरी नींद खुली तो बायरा अभी भी मेरे बगल में स्थिर बैठा था।

मेरी निराशा देखकर उसने सुबह बाद में मेरे साथ शिकार के लिए चलने का प्रस्ताव रखा। स्नान और नाश्ते के लिए बंगले में लौटने के बाद, हम सुबह 9 बजे से कुछ ही पहले फिर से अरेमनवोड्डू पहुँच गए। बायरा के आगे-आगे चलने के साथ हम नदी के ऊपर की ओर चले, और लगभग आधा मील ही चले थे कि हमें एक बड़े नर बाघ के पदचिह्न दिखाई दिए, जो रात के दौरान रेत पार करके पनापत्ती रिज की पथरीली ढलान पर चढ़ रहा था, जो लगभग एक मील दूर थी। ज़मीन इतनी सूखी थी कि शिकार के निशान ढूँढना मुश्किल था, लेकिन बायरा ने कहा कि उसे कुछ संभावित स्थान पता हैं जहाँ बाघ छिपा हो सकता है।

तो हम एक के बाद एक पहाड़ियों को पार करते हुए आगे बढ़ते रहे, उनके बीच फैली झाड़ियों और घने बांसों की छोटी-छोटी घाटियों का अन्वेषण करते रहे। एक बार हमें हाथी के विशाल पेट में पाचन क्रिया से उत्पन्न गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई दी। जहाँ वह आराम कर रहा था, उस जगह से दूर हटकर, हम अपनी यात्रा जारी रखते हुए लगातार ऊपर की ओर पनापत्ती रिज की ओर चढ़ते चले गए।

अब हम झाड़ियों वाले जंगल के स्तर पर पहुँच चुके थे, और चारों ओर चट्टानी टीले दिखाई दे रहे थे। बायरा ने बताया कि बाघ उन विशाल चट्टानों के बीच बनी कई गुफाओं में से एक में रहता है, और भालू भी वहीं रहते हैं। पथरीली, धूप से तपती ज़मीन पर किसी भी तरह के पदचिह्न न होने के कारण मैं वापस लौटने को तैयार था, लेकिन मेरा साथी अब वास्तव में उत्सुक हो गया था, और उसने आगे बढ़ने, पहाड़ी की चोटी को पार करने की वकालत की।

तेज़ धूप में पसीने से तरबतर होकर हम आखिरकार शिखर पर पहुँचे और विपरीत ढलान से नीचे उतरने लगे। इस ढलान पर चट्टानें उससे भी कहीं अधिक बिखरी हुई थीं, जिस पर हम अभी चढ़े थे। अंत में हम विशाल चट्टानों की एक श्रृंखला के पास पहुँचे, जिनसे कई गुफाएँ बनी हुई थीं। बायरा ने सुझाव दिया कि मैं एक लटकती हुई चट्टान की थोड़ी सी छाया में बैठ जाऊँ, जबकि वह आसपास का नजारा देखे। मैंने खुशी-खुशी उसकी बात मान ली और सिगरेट पीते हुए ठंडक पाने के लिए बैठ गया, जबकि मेरा साथी चट्टानों के समुद्र में चुपके से निकल गया।

दस मिनट के भीतर ही वह वापस आ गया और उत्तेजित होकर कहने लगा कि उसने बाघ की गंध महसूस की है और उसे पूरा यकीन है कि वह पास की ही किसी गुफा में छिपा हुआ है। तब तक मैं काफी नाराज़ और अविश्वास में था, और मैंने बायरा को कुछ कड़े शब्दों में कहा कि वह झूठ बोलना बंद करे। उसने हैरानी से मेरी ओर देखा, और फिर मुझे उसके मोटे चेहरे पर स्पष्ट रूप से दया भाव दिखाई दिया। उसने संक्षेप में कहा, 'आओ और खुद देख लो,' और मेरे जवाब का इंतज़ार किए बिना, वह उसी रास्ते से चला गया जिससे वह आया था।

अपनी राइफल लिए हम पत्थरों के ढेर के बीच बनी कई गुफाओं के पास पहुँचे। सबसे नज़दीकी गुफा से बीस गज की दूरी पर पहुँचकर बायरा रुक गया और मुझे चुपचाप पास आने का इशारा किया। उसने फुसफुसाते हुए पूछा, 'क्या तुम्हें इसकी गंध आ रही है?' मैंने ध्यान से सूंघा, लेकिन कुछ भी गंध नहीं आई। चिड़ियाघर या सर्कस जैसी कोई गंध तो थी ही नहीं। मैंने सिर हिलाकर मना किया। थोड़ा और पास आकर बायरा फिर रुक गया। 'अब तो तुम्हें गंध आ ही रही होगी?' मैंने अपनी सूंघने की शक्ति का पूरा इस्तेमाल किया और मुझे एक अजीब सी गंध महसूस हुई, जिसे बेहतर शब्द न मिलने के कारण मैं 'हरी' कह सकता हूँ—वह अस्पष्ट सी गंध जो थोड़ी सड़ी हुई वनस्पति की होती है। कई वर्षों बाद अब मुझे समझ आया कि यह गंध किसी बाघ

की होती है।

बायरा ने ऊपर की ओर देखा और विशाल चट्टानों के बीच दिखाई देने वाले पाँच अलग-अलग छेदों का जायजा लिया। उसने कुछ देर चुपचाप उनका अध्ययन किया, और फिर हममें से चौथे छेद की ओर इशारा करते हुए—जो मेरी राय में लगभग सबसे कम संभावना वाला था—फुसफुसाया, 'मुझे लगता है कि बाघ अंदर है।'

मैंने अविश्वास भरी निगाहों से उसकी ओर देखा, लेकिन मेरी हैरानी को नज़रअंदाज़ करते हुए उसने मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया। आखिरकार, चुपचाप और अत्यंत सावधानी से आगे बढ़ते हुए, हम उस पथरीली चट्टान पर पहुँच गए जो उसके बताए गए छेद के ठीक नीचे थी और हमारे सिर के ठीक ऊपर थी। अंदर झाँकने के लिए मैं पैर की उंगलियों पर खड़ा हुआ, मुझे कुछ नहीं दिखा, और फिर अगले ही पल, बिना किसी आवाज़ के और मानो जादू से, एक विशाल बाघ का सिर प्रकट हुआ, जिसके चेहरे पर हल्का आश्चर्य झलक रहा था।

मेरी गोली लगभग आठ फीट की दूरी से ठीक उसकी आँखों के बीचोंबीच लगी। बाघ एक अजीबोगरीब फिसलती हुई गति से आगे बढ़ा और हमारे चेहरों के सामने आकर रुक गया, उसका विशाल सिर उसके अगले पंजों के बीच आराम से टिका हुआ था, उसकी पीली-हरी आँखें मृत्यु के निकट होने के कारण आधी बंद थीं, और उसके माथे पर बने छेद से गहरे लाल रंग के खून की एक पतली, टपकती हुई धारा बह रही थी।

यह बायरा के जंगल संबंधी ज्ञान के मेरे अनेक अनुभवों में से पहला अनुभव था। यह कहना कि मुझे उसे पाकर बेहद खुशी हुई, बहुत कम होगा, और जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए और एक-दूसरे पर हमारा विश्वास बढ़ता गया, मुझे अतीत के उस क्षण का कभी पछतावा नहीं हुआ जब मैंने अपने अंतरात्मा को शांत कर दिया था।

अब मैं उन कई रोमांचक घटनाओं में से केवल दो के बारे में बताऊंगा जो हमने साथ मिलकर अनुभव की हैं, अर्थात् तलवाड़ी के भालुओं की कहानी, जिसमें बायरा ने मेरे लिए अपनी जान की कुर्बानी दे दी, और मुंडाचिपल्लम के आदमखोर बाघ की कहानी।

तलवाड़ी उस चौड़ी घाटी का नाम है, जिसके बीचोंबीच से उसी नाम की पहाड़ी धारा बहती है। यह उस स्थान से लगभग ग्यारह मील उत्तर में स्थित है जहाँ मेरी पहली मुलाकात बायरा से हुई थी, और यह सेलम नॉर्थ फॉरेस्ट डिवीजन के सबसे दुर्गम स्थानों में से एक है।

तलवाड़ी नदी ऐयूर के वन पठार से निकलती है, जहाँ से यह एक पहाड़ी दर्रे में तेज़ी से उतरती है, जिसे स्थानीय रूप से तोलुवाबेट्टा दर्रे के नाम से जाना जाता है, लेकिन मैंने इसका नाम बदलकर 'मकड़ी घाटी' रख दिया है, क्योंकि यहाँ लाल और पीले रंग की विशालकाय मकड़ियाँ संकरे जंगल के रास्ते पर अपने विशाल जाले बुनती हैं। ये जाले कुछ अंडाकार आकार के होते हैं और कभी-कभी बीस फीट से भी अधिक चौड़े होते हैं। मकड़ी खुद बीच में लटकी रहती है, जिसकी लंबाई अक्सर नौ इंच होती है। अपने आकार के बावजूद, यह बहुत फुर्तीली और बेहद खूंखार जीव है, और इसका शिकार - जंगल के बड़े-बड़े पतंगे, सुंदर तितलियाँ और कीड़े - एक बार इस विशाल जाले में फंस जाने पर बच नहीं पाते। ये मकड़ियाँ एक-दूसरे को खा भी सकती हैं, और अपने ही जाले में अपने ही कबीले के किसी दूसरे सदस्य की मौजूदगी बर्दाश्त नहीं करतीं। मैं कभी-कभी इन भयंकर जीवों में से एक को छड़ी के सिरे पर बांधकर उसी प्रजाति के दूसरे जीव के जाले तक ले जाकर अपना मनोरंजन करता था, जिसके बाद तुरंत एक भयंकर लड़ाई शुरू हो जाती थी, जो अक्सर आधे घंटे तक चलती थी, लेकिन हमेशा एक या दूसरे जीव की मौत के साथ समाप्त होती थी, जिसका खून फिर विजेता द्वारा तब तक चूसा जाता था जब

तक कि वह घिनौना कीड़ा इतना भर न जाए कि वह केवल रेंगकर अपने जाले के केंद्र तक वापस आ सके।

तलवाड़ी धारा इस घाटी से होकर बहती है और फिर दो भागों में बंट जाती है। इसका छोटा हिस्सा दक्षिण की ओर बहता है, जिसके किनारे पर गुथैरैन पर्वत की विशाल चोटी और केम्पेकराई का छोटा सा गांव स्थित है। यह धारा अन्नाइबिद्दाहल्ला की धारा में चिनार नदी से मिल जाती है। यह क्षेत्र कभी केम्पेकराई के कुख्यात हाथी का अड्डा हुआ करता था, जिसने सात मनुष्यों, दो-तीन मवेशियों को मार डाला था, आधा दर्जन बैलगाड़ियों को चकनाचूर कर दिया था और कटे हुए बांस से लदे तीन टन के ट्रक को पलट दिया था। हालांकि, यह एक अलग कहानी है। धारा का मुख्य भाग कुछ मील तक पश्चिम की ओर बहता है और मानची के वन क्षेत्र की सीमा से लगते हुए दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ जाता है, और तलवाड़ी की पूर्वोक्त घाटी में अंचेटी से मुथुर और पेन्नाग्राम जाने वाली वन सड़क को पार करता है।

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, यह पूरा इलाका घने जंगलों से आच्छादित है। इसके ऊंचे इलाकों में मीलों तक फैले ऊंचे-ऊंचे बांस के पेड़ हैं, जबकि निचले इलाकों में प्राचीन जंगल हैं, जिनके बीच-बीच में पथरीले इलाके आते हैं, और अंत में यह बिलिगुंडलू के मछली पकड़ने वाले गांव के पास कावेरी नदी में मिल जाती है। उद्गम से लेकर मुहाने तक का पूरा इलाका जंगली हाथियों के झुंडों, कुछ बाइसन और अक्सर एक-दो बाघों का घर है, जो नदी के किनारे नियमित रूप से शिकार करते हैं। तलवाड़ी घाटी, जो चट्टानों और बहुत लंबी घास से भरी है, बड़े तेंदुओं, कई भालुओं, जंगली सूअर, सांभर, हिरण और मोरों का निवास स्थान है, जितने मैंने कहीं और नहीं देखे।

मेरी कहानी उस समय से शुरू होती है जब बायरा ने मुझे पेन्नाग्राम के पोस्टमास्टर द्वारा लिखे एक पत्र में बताया कि घाटी में एक असाधारण आकार के पैंथर ने अपना डेरा जमा लिया है और वह मुथुर-अंचेट्टी सड़क पर nवें से iवें मील के पत्थर तक लगातार मवेशियों को मार रहा है। पत्र में दावा किया गया था कि पैंथर का आकार बहुत बड़ा था, 'सामान्य बाघ से कहीं अधिक बड़ा'।

लगभग पाँच दिन का समय बचा था, इसलिए मैं डेनकनिकोटा से एंचेटी और तलवाड़ी घाटी से होते हुए मुथुर तक जंगल के शॉर्टकट रास्ते से गाड़ी चलाकर गया, जहाँ मेरी मुलाकात बायरा से हुई। वहाँ से हम 15वें मील के पत्थर पर वापस लौटे, जो घाटी में ही था। सड़क बहुत ही खराब थी, कई छोटी-छोटी नदियाँ पार करनी पड़ती थीं, बैलगाड़ी के पहियों से बने गड्ढे थे और जगह-जगह बड़े-बड़े पत्थर बिखरे हुए थे, जिससे गाड़ी और उसके स्प्रिंग पर बहुत दबाव पड़ रहा था। कैंप लगाने के बाद, हम पास के मवेशी बाड़े में गए, जो लगभग तीन-चौथाई मील दूर था, जहाँ मुझे इस पैंथर के हमलों के बारे में खुद सुनने का मौका मिला। बताया जाता था कि यह आम तौर पर शाम लगभग 5:30 बजे बाड़ों की ओर लौट रही गायों पर हमला करता है और शिकार के लिए पीछे छूट गई गायों में से सबसे बड़ी गाय को चुनता है। कई चरवाहों ने वास्तव में उस जानवर को देखा था और उसे उसके शिकार से दूर भगाने की कोशिश की थी, लेकिन उन्हें पैंथर के गुर्राने और असाधारण क्रूरता का सामना करना पड़ा। यह जानवर किसी विशेष स्थान पर नहीं रहता था, लेकिन जैसा कि मैंने बताया, वह सड़क के किनारे लगभग चार मील तक घूमता रहता था।

इन चरवाहों को जीवित शिकार बेचने के लिए मनाना मुश्किल था, क्योंकि यद्यपि वे जानते थे कि पैंथर को मारने से उन्हें सीधा लाभ होगा, फिर भी उनकी जाति और धार्मिक कट्टरता ऐसी थी कि वे जानबूझकर इस तरह किसी जीव की बलि देने के घोर विरोधी थे। फिर भी, विभिन्न तरीकों से अंततः मैं दो लगभग वयस्क पैंथर खरीदने में सफल रहा, जिनमें से एक को मैंने सड़क से

लगभग एक मील नीचे नदी के किनारे से प्राप्त किया, और दूसरे को 14वें मील के पत्थर से कुछ ही दूरी पर।

अब इंतजार करने के अलावा और कोई चारा नहीं था, और चूंकि मुझे वहां बहुतायत में मौजूद मोर और जंगली मुर्गों का शिकार करके ग्रामीण इलाकों को परेशान करना बुद्धिमानी नहीं लगी, इसलिए मैंने सुबह और शाम दोनों समय जंगल में अलग-अलग दिशाओं में टहलकर ही संतोष कर लिया, इस उम्मीद में कि शायद संयोग से मुझे कोई पैंथर या कावेरी से भटकता हुआ बाघ मिल जाए।

संयोगवश, तीसरे दिन शाम लगभग 7 बजे मुझे खबर मिली कि उसी शाम एक तेंदुए ने तीन मील दूर स्थित एक अन्य पशुपालनशाला की एक गाय को मार डाला था, जब झुंड घर लौट रहा था। जैसे ही नुकसान का पता चला, मुझे सूचित करने के लिए एक संदेशवाहक भेजा गया था, जिसके कारण कुछ समय बीत गया।

राइफल, टॉर्च और ओवरकोट लेकर, बायरा और मैं तेज़ी से उस जगह की ओर बढ़े, और जब अभी कुछ ही दूरी बची थी, मैंने अपनी टॉर्च बुझा दी और खबर लाने वाले चरवाहे के पीछे-पीछे रेंगते हुए चलने लगा, बायरा मेरे पीछे-पीछे आ रही थी। पूर्वी क्षितिज पर फैली जंगल की पहाड़ियों की ऊबड़-खाबड़ रेखा के ऊपर अर्धचंद्र अभी-अभी निकल ही रहा था, तभी हमने मवेशियों के रास्ते में एक तीखा मोड़ लिया और रास्ते में पड़े मृत बैल के पीछे दुबके एक पैंथर को देखा।

मैंने नज़दीकी लड़ाई के लिए अपनी .12 शॉटगन से खुद को लैस कर लिया था, जबकि मेरे पीछे बायरा ने विनचेस्टर राइफल ले रखी थी, लेकिन इससे पहले कि मैं बंदूक उठा पाता, पैंथर शव से उछलकर दूर झाड़ियों में गायब हो गया।

मैंने जल्दी से बायरा और चरवाहे से फुसफुसाते हुए कहा कि वे धीरे-धीरे उसी रास्ते से लौट जाएं जिससे हम आए थे, और आपस में सामान्य स्वर में बात करते हुए ताकि पैंथर को लगे कि हम जा चुके हैं, मैं लगभग बीस कदम दूर उगने वाली एक जंगली बेर की झाड़ी के पीछे छिप गया, इस उम्मीद में कि जानवर वापस आ जाएगा।

पैंथर ने अपनी उपस्थिति का संकेत देने में देर नहीं लगाई, कुछ ही मिनटों में मुझे अपने सामने जंगल से उसकी चीख सुनाई दी। आवाज़ धीरे-धीरे उस दिशा में दूर होती चली गई जिधर बायरा और चरवाहा गए थे, जिससे मैंने यह अनुमान लगाया कि वह कुछ दूरी पर उनका पीछा कर रहा था, शायद यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे सचमुच चले गए हैं। उसके बाद लगभग एक घंटे तक तनावपूर्ण सन्नाटा छाया रहा, कोई आवाज़ नहीं आई। और फिर, मानो कहीं से अचानक, सूखे पत्तों की हल्की सरसराहट या टूटी हुई टहनी की चटकने की आवाज़ के बिना, एक विशाल पैंथर प्रकट हुआ, अपने शिकार के ऊपर खड़ा था, लेकिन फिर भी उस रास्ते पर संदेह भरी नज़रों से देख रहा था जिस पर हम अभी-अभी चले थे।

धुंधलेपन में जितना हो सके कंधे के पीछे निशाना साधते हुए, बंदूक की गर्जना के बाद पैंथर लगभग एक गज हवा में उछला। बिना ज़मीन पर पैर रखे ही वह उछल पड़ा और दूसरी गोली चलने से पहले ही गायब हो गया। उसके जाने की सूचना एक घायल पैंथर की धीमी, कर्कश गुर्राहट से मिली। कुछ मिनट तक आवाज़ के शांत होने का इंतज़ार करने के बाद, और यह समझते हुए कि उस रात और कुछ नहीं किया जा सकता, मैं वापस मवेशी बाड़े और शिविर की ओर चल पड़ा।

अगली सुबह भोर होते-होते, बायरा और मैं उस जगह पहुँच गए जहाँ मेरा सामना हुआ था।

जहाँ जानवर गायब हुआ था, वहाँ खोजबीन करते हुए, बायरा को झाड़ियों के पत्तों पर खून के निशान ढूंढने में ज़्यादा समय नहीं लगा, जहाँ से जानवर भागा था। यह देखकर हौसला बढ़ा कि कम से कम मेरी कुछ एल.जी. गोलियाँ निशाने पर लगी थीं, मैंने राइफल लेकर आगे बढ़ना शुरू किया, बायरा मेरे ठीक पीछे चल रहा था और मुझे निशानों का मार्गदर्शन कर रहा था। इस स्थिति में, मेरा काम जानवर पर पैनी नज़र रखना और हमला होने पर उससे निपटना था, जबकि बायरा, जो मेरे पीछे थोड़ी सुरक्षित स्थिति में था, अपने पीछा करने पर ध्यान केंद्रित कर सकता था।

पहले सौ गज के भीतर ही हम उस स्थान पर पहुँच गए जहाँ जानवर लेटा हुआ था, घास पर फैले गहरे लाल धब्बे और शरीर की स्पष्ट आकृति से यह पता चल रहा था। यहाँ से जानवर एक संकरे नाले के किनारे रेंगता हुआ चला गया, जिसके दोनों ओर घनी झाड़ियाँ उगी हुई थीं, और वहाँ उसका पीछा करना बेहद मुश्किल और खतरनाक हो गया।

हम दबे पांव आगे बढ़ते रहे, बीच-बीच में रुककर सुनते रहे। मैंने अपने सामने की हर झाड़ी को गौर से देखा, उसकी गहराई में धब्बेदार खाल की झलक पाने की कोशिश की, चाहे वो ज़िंदा हो या मरी हुई, हमें पता नहीं था। मैंने झाड़ियों के बीच उगी घनी जंगली घास को भेदने की कोशिश की, और पेड़ों और चट्टानों के तनों के पीछे देखने का प्रयास किया, जो सौभाग्य से वहाँ बहुत कम थे। इस तरह हम कुछ ही कदम आगे बढ़े थे कि अचानक, मेरे सामने ज़मीन में बने एक छेद से एक काली, घनी आकृति उठी, और उसके बगल में एक छोटी सी वैसी ही आकृति लुढ़कती हुई दिखाई दी। हम एक मादा भालू और उसके बच्चे के सामने आ गए, जो रात भर में नाले के तल में खोदे गए छेद में सो रही थी, जड़ों की तलाश में!

जैसे ही वह आधी उठी, मुझे उसकी छाती पर बना सफेद V का निशान साफ दिखाई दिया। उसकी छोटी-छोटी काली आँखों में हैरानी और फिर गुस्सा झलक रहा था। वह फिर से चारों पैरों पर नीचे झुक गई और सीधे हमारी ओर बढ़ने लगी। मैंने विंचेस्टर राइफल का मुंह लगभग उसके मुंह के पास लाकर ट्रिगर दबा दिया। तभी वह निर्णायक क्षण आया, जो शिकारी के जीवन और अपमानजनक मृत्यु का फैसला करता है: गोली चूक गई!

मादा भालू ने अपने जबड़े मेरे थूथन पर कसकर बंद कर लिए, और अपने लंबे पंजों वाले अगले पंजे से एक ही झटके में हथियार को मेरे हाथ से छीन लिया, जिससे वह कुछ पल के लिए उसके मुंह से हास्यास्पद रूप से लटका रहा, फिर उसने उसे ज़मीन पर गिरा दिया। अनजाने में ही मैं पीछे की ओर लड़खड़ा गया, और जैसे ही भालू मेरे चेहरे पर हमला करने के लिए उठी—जो कि मानव शरीर का वह हिस्सा है जिसे ये जानवर सबसे पहले काटते हैं—बायरा ने अपनी जान की कुर्बानी देने का प्रयास किया।

उसने फुर्ती से खुद को मेरे और उस क्रोधित जानवर के बीच में डाल दिया और आखिरी क्षण में उसके हमले को रोकने के लिए पूरी ताकत से चिल्लाया। वह केवल इतना ही सफल हुआ कि जानवर ने अपना ध्यान उसकी ओर मोड़ लिया, मानो कुछ पल के लिए वह मेरी मौजूदगी को भूल गया हो।

जैसे ही उसने आखिरी समय में अपना सिर झुकाया, भालू ने अपने नुकीले दांत बायरा के दाहिने कंधे में गाड़ दिए, जबकि उसके अगले पैरों के लंबे पंजे उसकी छाती, बगल और पीठ पर बुरी तरह से घायल हो गए। बायरा भालू के साथ नीचे गिर पड़ा। मैं गिरी हुई राइफल की ओर दौड़ा। मिसफायर कारतूस को निकालने के लिए नीचे वाले लीवर को चलाते हुए, मैंने देखा कि गिरने की वजह से राइफल का एक्शन जाम हो गया था। यह सब कुछ ही सेकंड में हो गया। बायरा दर्द से चीख रहा था, जबकि भालू बेरहमी से गुर्रा रहा था। लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ते हुए और राइफल को लाठी की तरह इस्तेमाल करते हुए, मैंने पूरी ताकत से जानवर के सिर के पिछले

हिस्से पर वार किया। सौभाग्य से मेरा निशाना सही लगा, क्योंकि भालू ने बायरा को छोड़ दिया और बिजली की गति से राइफल को अपने मुंह में पकड़ लिया, इस बार बट से, और फिर से मेरे हाथ से हथियार छीन लिया। फिर वह बेरहमी से राइफल के बट को काटने लगा। ईश्वर की कृपा से, वह शावक, जो इतने समय तक पृष्ठभूमि में एक आश्चर्यचकित और स्पष्ट रूप से भयभीत गवाह के रूप में मौजूद था, अचानक डर के मारे सिसकियाँ और चीखें निकालने लगा। मानो जादू से, गुस्सैल माँ का ध्यान अपने बच्चे पर केंद्रित हो गया, क्योंकि उसने राइफल छोड़ दी और उसके पास दौड़ पड़ी। वहाँ उसने उसे सूंघकर यह सुनिश्चित किया कि सब ठीक है, और जिस अचानक से यह अवांछित जोड़ा वहाँ प्रकट हुआ था, उसी अचानक से वे गायब हो गए। अब आश्वस्त हो चुके उस शावक की कुछ अंतिम सिसकियाँ उस भयावह दृश्य की अंतिम ध्वनि बन गईं, जिससे उबरने में मुझे कई दिन लग गए।

बायरा घुटनों के बल ज़मीन पर पड़ा था, उसके शरीर से खून बह रहा था और वह ज़ाहिर तौर पर बहुत दर्द में था। मैं उसके पास गया, अपना कोट और कमीज़ उतारी, कमीज़ को फाड़कर उसके ज़्यादा गंभीर ज़ख्मों पर पट्टी बाँधने और खून बहना रोकने की कोशिश की। फिर, उसे अपनी पीठ पर लादकर और अपनी क्षतिग्रस्त राइफल को साथ लेकर, मैं लड़खड़ाते हुए मवेशी बाड़े तक पहुँचा, जहाँ मैंने उसे एक चारपाई पर लिटाया। चार चरवाहे उसे मेरे शिविर तक ले गए, जहाँ मैंने उसके ज़ख्मों पर कच्ची आयोडीन डाली। शिविर में पहुँचकर कुछ ही पलों में मेरी गाड़ी 15 मील का सफ़र तय करते हुए पेन्नाग्राम गाँव के लिए रवाना हो गई, जहाँ औषधालय में उसे प्राथमिक उपचार दिया गया। तब तक बेचारा खून की कमी से कमज़ोर हो चुका था और लगभग बेहोश हो गया था। उसे वापस गाड़ी में बिठाकर, मैंने 61 मील का सफ़र लगभग रिकॉर्ड समय में तय किया, जहाँ एक बेहतरीन अस्पताल था।

उन पुराने दिनों में पेनिसिलिन का कोई नामोनिशान नहीं था, और बायरा ने अस्पताल में जो पहला हफ्ता बिताया, जब वह जीवन और मृत्यु के बीच जूझ रहा था और मैं उसके साथ था, वह बहुत चिंताजनक समय था। लेकिन उसके मजबूत शरीर ने उसका साथ दिया और पहले कुछ दिनों के बाद डॉक्टरों ने उसे पूरी तरह से खतरे से बाहर घोषित कर दिया। मैं पेन्नाग्राम लौट आया, जहाँ बायरा की पत्नी और बच्चे आए हुए थे और बेसब्री से खबर का इंतजार कर रहे थे। उन्हें कुछ आर्थिक सहायता देने के साथ ही मुझे एक आश्चर्य भी हुआ जब मुझे उस पैंथर की कीड़े लगी खाल सौंपी गई, जिसे मैं बाद की घटनाओं के उत्साह और दबाव में पूरी तरह से भूल गया था। ऐसा प्रतीत हुआ कि एक शव पर गिद्धों को देखकर तलवाड़ी के मवेशी बाड़े के कुछ चरवाहे आकर्षित हुए थे, जिन्होंने भालू के साथ हुई घटना स्थल से 200 गज के भीतर जानवर का शव पाया था। बताया गया कि वह एक विशाल नमूना था, लेकिन जैसा कि मैंने कहा, खाल कीड़े लगी हुई थी और उसे संरक्षित करना संभव नहीं था।

सलेम लौटते समय, मैंने बायरा के इलाज, खर्चों और मुथुर में उसके पैतृक स्थानों पर अंतिम वापसी के लिए पर्याप्त धन छोड़ दिया था, लेकिन क्षतिग्रस्त मांसपेशी के सिकुड़ने के कारण उसके दाहिने पैर में एक हल्का स्थायी लंगड़ापन रह जाने और घटना की याद दिलाने वाले कई स्थायी निशानों के साथ, उसे अपने परिवार के पास वापस जाने में दो महीने से अधिक समय लग गया।

मेरी राइफल को एक नए बट की ज़रूरत थी, और आज भी, उसके मुंह से छह इंच की दूरी पर, उस पर मादा भालू के दांतों के निशान मौजूद हैं। इस तरह उस साहसिक यात्रा का अंत हुआ जिसने बायरा और मेरे बीच एक तरह से रक्त-भाईचारा स्थापित किया, जो उसके द्वारा किए गए प्रसन्नतापूर्ण बलिदान और 'इससे बड़ा प्रेम किसी के पास नहीं हो सकता कि वह किसी दूसरे के

लिए अपना प्राण न्योछावर कर दे' शब्दों की लगभग शाब्दिक पूर्ति पर आधारित था।

इस घटना के कई वर्षों बाद मेरी अगली कहानी, मुंडाचिपल्लम के आदमखोर बाघ की कहानी, लिखने का अवसर आया।

मुंडाचिपल्लम, जिसका तमिल में शाब्दिक अनुवाद मुंडाची की घाटी या धारा है, घाट खंड के निचले हिस्से से होकर बहने वाली एक छोटी सी नदी मात्र है। यह नदी पेन्नाग्राम गांव के 2,000 फुट ऊंचे पठार और कावेरी नदी के तल के बीचोंबीच स्थित है, जो समुद्र तल से लगभग 700 फुट ऊपर है। यह नदी घाट रोड को पार करती है, जो पेन्नाग्राम से कावेरी नदी तक खड़ी ढलान पर उतरती है। सड़क के अंत में लगभग चार मील की दूरी पर ऊतैमलाई का मछली पकड़ने वाला गांव है, जो होगेनैकल के प्रसिद्ध झरनों के ऊपर स्थित है। वन विभाग ने सड़क के किनारे मुंडाचिपल्लम के तट पर एक कुआं बनवाया है, ताकि मवेशियों, विशेष रूप से भैंसों और बैलों को पानी पिलाया जा सके। ये बैल लकड़ी और बांस से लदे भारी डिब्बों को खींचते हुए पेन्नाग्राम तक छह मील की खड़ी चढ़ाई शुरू करने से पहले पानी पीते हैं।

यह छोटा सा कुआँ, जो घने जंगल से घिरा हुआ है, सिवाय सड़क की संकरी पट्टी और मुंडाचिपल्लम की छोटी चौड़ाई के, जो समकोण पर एक दूसरे को काटते हैं, वह स्थान है जहाँ मेरी कहानी शुरू होती है और, अजीब बात है, समाप्त भी होती है, हालांकि कई मौतों के बाद, और मेरे शिकारी रंगा के बाल-बाल बचने के बाद।

सुबह के लगभग 7:30 बजे थे, और ओस की बूँदें घास पर ऐसे टिमटिमा रही थीं मानो अनगिनत हीरे दूर-दूर तक बिखरे हों, जैसे वे आपस में मिल रही हों, झिलमिला रही हों और नवउदित सूर्य की किरणों को प्रतिबिंबित कर रही हों, जो विशाल 'मुथी' वृक्षों की पत्तीदार शाखाओं और जंगली कपास के पेड़ों के लंबे सीधे तनों से छनकर आ रही थीं, जो मुंडाचिपल्लम के उथले किनारों पर स्थित थे।

एक पुरुष और दो स्त्रियाँ, कावेरी नदी में रात भर पकड़ी गई मछलियों से भरी गोल बाँहों को लिए हुए, कुएँ के पास पहुँचे और अपना भारी बोझ कुएँ के चारों ओर बनी नीची दीवार पर रख दिया। पुरुष ने अपनी कमर के चारों ओर लिपटी एक पतली रस्सी खोली और उसका एक सिरा एक महिला द्वारा पकड़े गए पीतल के गोल लोटे के संकरे गले में डालकर उसे कुएँ में डाल दिया, जहाँ से उसने तुरंत ठंडा, ताज़ा पानी निकाला। गाँव की सामान्य प्रथा के अनुसार, जहाँ पुरुष स्त्री से पहले आता है, उसने पानी को धीरे-धीरे चांदी जैसी धारा में पीना शुरू कर दिया, अपने होंठों को बर्तन के मुँह से छूने नहीं दिया, क्योंकि ऐसा करना अस्वच्छ माना जाता था।

मछलियों को पेन्नाग्राम के बाज़ार ले जाया जा रहा था, और मंज़िल तक की कठिन चढ़ाई से पहले यही आखिरी पानी का स्रोत था। जी भरकर पानी पीने के बाद, उस आदमी ने लोटा कुएँ में लौटा दिया और अपने साथ आई दो युवतियों के लिए उसे दो बार फिर से भर दिया। वे बीस वर्ष की थीं और कमर के ऊपर उन्होंने अपने सुंदर साड़ी के आखिरी तह के अलावा कुछ नहीं पहना था, जो एक कंधे पर तिरछी पड़ी थी। सुबह की ठंडक के बावजूद, उनकी चिकनी काली त्वचा पसीने से चमक रही थी, क्योंकि वे बड़ी नदी से चार मील तक मछलियों का भारी बोझ ढोकर लाई थीं।

शराब पीने के बाद, सभी लोग कुछ मिनटों के लिए बैठ गए। हर सदस्य ने एक छोटा सा कपड़े का थैला निकाला, जिसमें से कुछ पान के पत्ते, सुपारी के टूटे हुए टुकड़े और गाढ़ा चूने का पेस्ट निकाला गया। सुपारी के कुछ टुकड़ों को एक खुले पत्ते में रखा गया, जिस पर खूब सारा चूने का लेप लगाया गया था, और फिर उन्हें बड़े चाव से चबाया गया। कुछ ही मिनटों में सभी सदस्यों के

मुँह से खून जैसा लाल लार निकलने लगा, जिसे उन्होंने बाद में चारों ओर थूक दिया।

तभी कुएं के किनारे उगी झाड़ियों से सरसराहट और चटकने की आवाज सुनाई दी। ये आवाजें रुक-रुक कर फिर से शुरू हो रही थीं। इसके अलावा कोई और आवाज नहीं थी।

तीनों ने आपस में इन आवाज़ों के कारण का अनुमान लगाया और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यह हिरण परिवार का कोई सदस्य था, जो शायद गोली लगने से या जंगली कुत्तों या किसी अन्य जानवर के हमले से घायल हो गया था और उठने के लिए संघर्ष कर रहा था। आसानी से मांस मिलने की उम्मीद में और निस्संदेह दल की महिलाओं को प्रभावित करने के लिए, वह आदमी उठा और हाथ में पत्थर लेकर जंगल की ओर चल पड़ा।

शोर कुछ देर के लिए थम गया, और वह गड़बड़ी का कारण जानने के लिए और आगे बढ़ा। झाड़ियों के बीच उगे एक बबूल के पेड़ के पास से गुजरते हुए, वह उस समय भयभीत हो गया जब वह लगभग दो बाघों के सामने आ गया, जो संभवतः मैथुन कर रहे थे।

वैसे तो बाघ एक ऐसा जानवर है जिसके साथ मनमानी की जा सकती है। एक बार जब मैं मछली पकड़ने गया था, तो अचानक एक बाघ मेरे सामने से निकला, जो मुझसे मुश्किल से पंद्रह कदम दूर था; उस समय यह कहना मुश्किल था कि हम दोनों में से कौन ज़्यादा डरा हुआ था। खैर, वह बाघ तो बस उसी रास्ते से भाग गया जिससे वह आया था, और हालांकि उस समय मेरे पास कोई हथियार नहीं था, फिर भी जिज्ञासा और स्वाभाविक उत्साह ने मुझे उसका पीछा करने के लिए प्रेरित किया, ताकि मैं यह पता लगा सकूँ कि कहीं उसने कोई शिकार तो नहीं किया है। लेकिन वह मेरे सामने किसी गाँव के आवारा कुत्ते की तरह भागता रहा, जब तक कि आखिरकार वह आसपास उगी झाड़ियों में खो नहीं गया।

लेकिन बाघों के साथ कुछ ऐसे पल भी आते हैं जब वे भी निजता की मांग करते हैं। या शायद यह प्रजाति की मादा को प्रभावित करने की इच्छा रही हो, एक ऐसी इच्छा जो मैंने शांत स्वभाव के पुरुषों को भी बड़े आश्चर्यजनक तरीके से प्रभावित करते देखा है। खैर, इस बाघ को दखलंदाजी बिल्कुल पसंद नहीं आई और एक छोटी सी दहाड़ के साथ वह उस बेचारे मछली बेचने वाले पर टूट पड़ा, अपने दांत उसकी गर्दन के पिछले हिस्से में गाड़ दिए और लगभग रीढ़ की हड्डी को ही काट डाला। आदमी के मुंह से एक भी आवाज नहीं निकली जब वह जमीन पर गिरा, बाघ अभी भी उस पर गुर्रा रहा था। दोनों महिलाओं ने वह छोटी सी दहाड़ सुनी और बाघ की आवाज पहचानकर उसी रास्ते से ऊतैमलाई की ओर भाग गईं जिससे वे आई थीं। इस बार शिकार को खाया नहीं गया, यह प्रयास केवल गलत समय पर परेशान किए जाने पर नाराजगी का एक संकेत था, लेकिन इसने उस बाघ को मनुष्य की स्पष्ट लाचारी का सबक सिखा दिया।

कुछ सप्ताह बाद, जंगल से अपना सामान लेकर लौट रहे एक लकड़हारे का रास्ते के मोड़ पर उसी बाघ से सामना हुआ। फिर वही छोटी सी दहाड़, उसके बाद जानलेवा छलांग, और एक और आदमी बेवजह मरा पड़ा था। बाघ ने फिर भी कुछ नहीं खाया।

दो महीने बीत गए, और कुछ औरतें घाटी में बहुतायत से उगने वाले जंगली इमली के पेड़ों के फल इकट्ठा करने के लिए जंगल में गईं। उनमें से एक बाकी लोगों से थोड़ी दूर भटक गई। टोकरी को सिर पर उठाने के लिए वह झुकी ही थी कि ऊपर देखते ही उसकी नज़र उस विशालकाय बाघ की तीक्ष्ण आँखों से मिली। उसके मुँह से एक तीखी चीख निकली, इससे पहले कि तीसरी बार वह छोटी सी दहाड़ सुनाई दे और उसके क्रूर दाँत उसके गले में धंस जाएँ। इस बार उसकी गर्दन की नस कट गई और नमकीन खून बाघ के मुँह में बह गया; इस तरह मुंडाचिपल्लम के आदमखोर बाघ का जन्म हुआ। उस औरत को झाड़ियों में घसीटकर ले जाया गया और वहाँ उसे खा लिया

गया, सिवाय उसकी खोपड़ी, हथेलियों और पैरों के तलवों के।

इसके बाद तीन और सुनियोजित हत्याएं हुईं, एक सड़क के सातवें मील के पत्थर पर, दूसरी चिनार नदी के किनारे, कावेरी नदी के संगम के पास, और तीसरी ऊतैमलाई गांव से महज एक मील दूर। तीनों ही मामलों में पीड़ितों को खाया गया, या आंशिक रूप से खाया गया।

इस आखिरी हत्या ने सबसे ज्यादा दहशत पैदा कर दी, जिसके चलते ऊतैमलाई गांव के लोग प्रतिनिधिमंडल बनाकर पेन्नाग्राम गए और अधिकारियों से गुहार लगाई कि वे उनके गांव को खतरे में डालने वाले इस खतरे से छुटकारा दिलाने के लिए कोई कदम उठाएं। उस समय मेरा शिकारी रंगा भी वहीं था और उसने उनसे वादा किया कि वह मुझे मदद के लिए मना लेगा। वादा करने के बाद वह बस से लगभग सौ मील की दूरी तय करके बैंगलोर पहुंचा और देर शाम को अपनी रिपोर्ट पेश की।

अब इस समय रंगा के बारे में कुछ कहना उचित होगा। संयोगवश, मेरी मुलाकात उससे भी मुथुर में हुई थी, जहाँ कुछ साल पहले मेरी मुलाकात बायरा से हुई थी। रंगा बांस ढोने वाली गाड़ी का किराए का ड्राइवर था, जिसका इस्तेमाल जंगल से कटा हुआ बांस पेन्नाग्राम तक ले जाने के लिए किया जाता था। वह बहुत ही उद्यमी स्वभाव का था और अपने खाली समय में बायरा की तरह ही शिकार करता था, जिसके लिए वह किराए पर बंदूक रखता था। हालाँकि, शारीरिक और व्यक्तिगत रूप से वह बायरा से बिल्कुल अलग था। बायरा के दुबले-पतले शरीर की तुलना में वह लंबा और बलवान था, और अपने हर काम में दृढ़ और सकारात्मक व्यक्तित्व का परिचय देता था। उसने अपनी पहली पत्नी की हत्या के प्रयास के आरोप में एक साल जेल में बिताया था, जिसे उसने ईर्ष्या के झगड़े में गर्दन में चाकू मार दिया था। जेल से लौटने के बाद उसने दोबारा शादी कर ली थी, और जब मेरी उससे पहली मुलाकात हुई थी, तब उसके तीन बच्चे थे। संतुष्ट न होकर उसने बाद में एक और पत्नी से शादी कर ली और अब उसके कुल बारह बच्चे थे, और वह दादा भी बन चुका था। बायरा की तुलना में उसकी संगठनात्मक क्षमता कहीं बेहतर थी और ज़रूरत पड़ने पर वह काम करवा लेता था। मैंने उसे निर्देश न मानने वाले एक अड़ियल आदिवासी की जमकर पिटाई करते देखा है। उसके चरित्र का एक लाभप्रद पहलू भी है; वह जंगल में बाबुलबार्क और अन्य सामग्रियों से अवैध रूप से शराब बनाता है। मैंने उसकी बनाई शराब चखी है और मैं आपको बता सकता हूँ कि यह मेरे अनुभव में सबसे ज़्यादा तीखी शराब है। अंत में, वह बायरा से कहीं ज़्यादा बेईमान है और छोटी-मोटी चोरियाँ करता है, खासकर .12 बोर कारतूस। वह बायरा से घृणा करता है और उसे अर्ध-जंगली समझता है। मुझे लगता है कि वह छोटी पुजारी के प्रति मेरे स्नेह से ईर्ष्या करता है। लेकिन रंगा एक बहादुर आदमी है, खतरे के सामने अडिग और भरोसेमंद है, और निश्चित रूप से वह किसी भी जंगली जानवर या भूत से नहीं डरता, जैसा कि अधिकांश अन्य आदिवासी शिकारी डरते हैं।

दुर्भाग्यवश, रंगा ऐसे समय आया जब मैं बहुत व्यस्त था और अगले दो सप्ताह तक स्टेशन से बाहर नहीं जा सकता था। इसलिए मैंने उसे कई पते लिखे लिफाफे देकर और यह निर्देश देकर कि वह हर दूसरे दिन मुझे पत्र लिखे, चाहे कुछ भी हो जाए, पेनाग्राम वापस भेज दिया।

रंगा के पहले बुलावे का जवाब न दे पाने की मेरी असमर्थता शायद दो नई त्रासदियों के लिए अप्रत्यक्ष रूप से ज़िम्मेदार थी, जो अंततः पेन्नाग्राम में अपनी कार से रंगा को लेने, मुथुर होते हुए बायरा जाने और ऊतैमलाई पहुँचने से पहले घटीं। ऊतैमलाई में मेरा तीसरा साथी, सौरी, मुझसे मिला। यह सौरी, रंगा की तरह ही काफी बहुमुखी प्रतिभा का धनी था, और खुद भी शिकार के दौरान अपनी बंदूक से एक जंगली हाथी को गोली मारकर हत्या करने के आरोप में तीन महीने जेल में बिता चुका था। हाथी अधेड़ मादा थी और उस जगह के पास आ गई थी जहाँ सौरी छिपा

हुआ था। इस डर से कि कहीं वह सचमुच उसे कुचल न दे, सौरी ने अपनी बंदूक हाथी के बाएँ कान के पीछे तान दी। गोली ने अपना काम बखूबी किया और हाथी वहीं गिर पड़ा। दुर्भाग्य से, वह रंगे हाथों पकड़ा गया। मैं उस समय कोयंबटूर नदी के किनारे शिकार कर रहा था, और मैंने हाथी को देखा और उसकी तस्वीर खींची थी, और संयोग से इसी तरह मेरी सौरी से मुलाकात हुई।

मुझे इन तीनों व्यक्तियों की सेवाएं प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, क्योंकि अपने विविध क्षेत्रों और क्षमताओं में वे जंगल के अनुभव और कौशल का विशाल भंडार प्रस्तुत करते थे। बायरा ने तुरंत पड़ोसी जंगल और कोयंबटूर तट के किनारे बाघ के तत्काल ठिकाने का पता लगाने के लिए खोजबीन करने की पेशकश की। मैंने उसे ऐसा करने से साफ मना कर दिया, क्योंकि यह आत्मघाती था। अंततः हमने समझौता किया और तय किया कि उसके साथ सोवरी, मेरी .12 बोर बंदूक लेकर, और एक अन्य व्यक्ति, जिसका नाम आश्चर्यजनक रूप से लुकास था और जो सरकारी मत्स्य विभाग में 'निगरानीकर्ता' था, जाएगा। रंगा को तीन चारे लाने और उन्हें संभावित स्थानों पर बांधने का काम सौंपा गया। जानवरों को पकड़ने में हमेशा की तरह कठिनाई आई, लेकिन चतुर रंगा ने धमकियों और अन्य उपायों से जल्दी ही इस पर काबू पा लिया, जिनके बारे में मुझे पता नहीं होना था।

तीनों चारे में से पहला चिनार नदी में उस स्थान से एक मील ऊपर बांधा गया था जहाँ वह कावेरी में मिलती है, और दूसरा उससे लगभग तीन मील आगे, जहाँ मुंडाचिपल्लम चिनार नदी से मिलता है। तीसरा उस कुएँ से 100 गज की दूरी पर बांधा गया था जहाँ पहली त्रासदी हुई थी। एक दिन छोड़कर, बायरा और उनके साथी कावेरी के एक किनारे के जंगलों की छानबीन करते थे, जबकि मैं, एक स्थानीय गाइड के साथ, दूसरे किनारे की छानबीन करता था। जैसा कि मैंने बताया, रंगा चारे को खिलाने-पिलाने का काम करता था।

इस तरह हमने चार दिन बिताए, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। कई जगहों पर बाघ के पंजे मिले, लेकिन वे ताजे नहीं थे, और कोई भी निश्चित रूप से यह नहीं कह सका कि वे आदमखोर बाघ के थे या किसी अन्य जानवर के।

ग्रामीणों को जंगलों में प्रवेश करने या पेन्नाग्राम जाने वाली सड़क का उपयोग करने से रोककर, उस खूंखार बाघ को भुखमरी से बचने के लिए मवेशियों को मारने पर मजबूर करना संभव नहीं था। वैसे भी, इस सड़क पर काफी यातायात रहता था, क्योंकि यह कावेरी नदी के दूसरी ओर बसे कई छोटे गांवों के लिए मुख्य मार्ग थी। इसके अलावा, जंगलों में, विशेष रूप से कोयंबटूर की ओर, भरपूर मात्रा में जंगली जानवर थे, जिनका बाघ आवश्यकता पड़ने पर उपयोग कर सकता था।

इस बीच मैंने हर संभव प्रयास किया कि मेरी उपस्थिति और उद्देश्य की खबर आसपास के सभी गांवों तक पहुंच जाए, ताकि मुझे किसी भी ताजा शिकार की सूचना जल्द से जल्द मिल सके। बायरा की कुशल सहायता से, उस जानवर का पता लगाने की कुछ उम्मीद जगी थी कि वह कहां छिपा है, या शायद उसकी मांद तक भी पहुंच सकता है। उसे पीटना तो बिल्कुल असंभव था, भले ही इसके लिए कोई स्वयंसेवक होता, लेकिन कोई नहीं था, क्योंकि हम एक बहुत ही साहसी और चालाक जानवर से निपट रहे थे, जो पीटने वालों में से ही किसी एक को अपना शिकार बना सकता था।

पाँचवें दिन सुबह-सुबह मुझे खबर मिली कि पिछली शाम को लगभग चार मील दूर पानापत्ती के पशु बाड़े में एक आदमी की हत्या कर दी गई थी। वह अपने कुत्ते को बुलाने के लिए अपनी झोपड़ी से 100 गज बाहर गया था, जो लापता था, और उसके बाद उसका कोई पता नहीं चला।

हम तुरंत घटनास्थल पर पहुँचे और बायरा उस जगह का पता लगाने में सफल रही जहाँ उस आदमी पर हमला हुआ था: चिनार नदी के रेतीले तल पर बाघ के फैले हुए बड़े-बड़े पंजे साफ दिखाई दे रहे थे, क्योंकि वह अपने शिकार को घसीटते हुए बीच में उगी झाड़ियों के बीच से होते हुए ढलान वाले बाँस के जंगल की सीमा तक ले गया था। यहाँ हमें लगभग पूरी तरह से खाए हुए शव के अवशेष मिले।

वहाँ कोई पेड़ नहीं था, सिवाय एक विशाल बांस के झुंड के जो अवशेषों से लगभग तीस फीट दूर उगा हुआ था। इसके अंदर मैंने बायरा को निर्देश दिया कि वह मेरे लिए एक उपयुक्त छिपने की जगह बनाए। इसके लिए उसे बांस के लगभग आठ-नौ मजबूत तने निकालने थे, उन्हें जमीन से लगभग चार फीट ऊपर से और फिर जमीन के स्तर पर काटकर बीच के चार-चार फीट के हिस्से निकाल लेने थे। बांस के तनों के ऊपरी हिस्से झुंड के बीच में होने के कारण जमीन पर नहीं गिर रहे थे, क्योंकि उनके ऊपरी सिरे आस-पास के तनों और अन्य झुंडों की पत्तियों से बुरी तरह उलझे हुए थे।

अपना काम पूरा करने के बाद, बायरा ने मेरे लिए बांस के झुंड के बीचोंबीच एक खोखली गुफा जैसी जगह बना दी थी। इसके बीचोंबीच बैठकर मुझे पता था कि मैं बाघ के हमले से पूरी तरह सुरक्षित रहूंगा, चाहे वह पीछे से हमला करे या अगल-बगल से, क्योंकि बीच में मौजूद अनगिनत बांसों की वजह से वह मुझ तक पहुंच ही नहीं सकता था। वह मुझ तक सिर्फ सामने से ही पहुंच सकता था, और मुझे पूरा यकीन था कि अगर मैं रात भर जागता रहूं तो मैं उसका सामना कर सकता हूं। वफादार पुजारी मेरे साथ बैठने की जिद पर अड़ा रहा, जब तक कि मुझे उसे सख्ती से जाने का आदेश नहीं देना पड़ा। मुझे सचमुच उसकी संगति से खुशी होती, लेकिन बांस के झुंड के बीचोंबीच हमने जो जगह बनाई थी, उसमें सिर्फ एक व्यक्ति के बैठने की जगह थी। इस जगह को बढ़ाने के लिए और बांस काटने का मतलब था कि हम झुंड के बाहरी किनारे तक पहुंच रहे थे और बिना सहारे के बांस के तने ज़मीन पर गिर जाते, जिससे न सिर्फ गिरने की आवाज़ से काफी शोर होता, बल्कि आसपास मलबा भी बिखर जाता, जो शायद बाघ को डराकर भगा देता।

रात अंधेरी होगी, चाँद नहीं होगा, इसलिए मैंने एहतियात के तौर पर अपनी अतिरिक्त शूटिंग लाइट को अपनी शॉटगन पर लगा लिया, जिसे मैं अपने साथ छिपने की जगह पर ले गया था, साथ ही विनचेस्टर राइफल भी, जिसमें रोशनी की व्यवस्था थी। बाँस के घने जंगल में होने के कारण, मुझे पता था कि मैं ओस और जंगल की ठंडी हवा से लगभग पूरी तरह सुरक्षित हूँ, और साँपों से भी काफी हद तक सुरक्षित हूँ, या कम से कम मुझे ऐसा ही लगा।

मैं दोपहर 1 बजे तक अपनी जगह पर पहुँच गया और अपने अनुयायियों को विदा कर दिया। बायरा अभी भी विरोध कर रही थी, और मैंने उन्हें निर्देश दिया कि अगली सुबह चिनार की गोद से मुझे पुकारें, तभी वे मेरे पास आएँ। उनके जाने के बाद अगले सत्रह घंटे मुझे अपने हाल पर छोड़ दिए गए।

आप समझ सकते हैं कि बांस के घने झुरमुट के बीच मेरी स्थिति से मेरा दृश्य चारों ओर से पूरी तरह से सीमित था, सिवाय मेरे ठीक सामने जंगल की संकरी गली के, जिसके अग्रभाग में मानव शव पड़ा था। हालाँकि मैं चाहता था कि मेरा दृश्य और विस्तृत हो, मुझे पता था कि अंधेरा होने पर मैं राहत महसूस करूँगा, क्योंकि दिन में जितना अधिक मैं देख पाऊँगा, अंधेरा होने पर उतना ही अधिक मैं आदमखोर के सामने आ जाऊँगा, जब स्थिति उलट जाएगी और वह देख पाएगा जबकि मैं नहीं देख पाऊँगा।

ऊपर लटकते बांसों के घने आवरण से ढके होने के कारण मानव अवशेषों को गिद्धों ने परेशान

नहीं किया। हालांकि, मक्खियों के झुंड ने उन्हें घेर लिया और दुर्गंध जल्द ही असहनीय रूप से असहनीय होने लगी।

मैं आपको जंगल की शाम और जंगल के दिन के अंत की आवाज़ों के वर्णन से बोझिल नहीं करूंगा, बस इतना उल्लेख करूंगा कि वे लगभग सभी उस अवसर पर मौजूद थीं और मेरे जंगल-प्रेमी कानों को मधुरता प्रदान कर रही थीं।

अंधेरा छाने से पहले कुछ नहीं हुआ, और अंधेरा तेज़ी से छा गया, यहाँ तक कि मैं घोर अंधकार में डूब गया, जो मेरे ऊपर खड़े ऊँचे-ऊँचे बांस के तनों की अतिरिक्त छायाओं से और भी गहरा हो गया था। इतना अँधेरा था कि मेरी गोद में रखे मेरे हाथ भी दिखाई नहीं दे रहे थे; मुझे ट्रिगर और टॉर्च का स्विच, और वास्तव में, सब कुछ महसूस करना पड़ रहा था। बस मेरी घड़ी का चमकता हुआ डायल दिखाई दे रहा था, जिसमें पौने आठ बज रहे थे। सुबह होने में अभी दस लंबे घंटे बाकी थे।

मैं जानता था कि इस दौरान मुझे अपनी पूरी ताकत लगानी होगी, अपनी साधारण, मानवीय और शहरी कौशल का इस्तेमाल जंगल के राजा के कौशल के खिलाफ करना होगा, जिसमें वह माहिर था, जिसके पीछे दशकों से कुशल पूर्वज थे; यानी, सुनने और समझने का कौशल। क्योंकि मैं अपने सामने एक इंच भी नहीं देख सकता था, जबकि वह साफ-साफ देख सकता था। न ही मैं उसे सूंघ सकता था, और न ही वह मुझे सूंघ सकता था। सफलता के लिए मुझे पूरी तरह से उसकी धीमी आहट सुनने पर निर्भर रहना होगा, और मैं अपने लंबे अनुभव से अच्छी तरह जानता था कि एक सतर्क बाघ कितनी खामोशी से आ सकता है। मुझे खुद भी बिल्कुल चुप रहना होगा; इससे भी बुरा, मेरी जरा सी भी हरकत या आवाज उसकी तेज कानों को मेरी मौजूदगी का पता दे देगी, और एक बार जब उसे पता चल गया कि मैं वहां हूं, तो केवल दो ही बातें हो सकती थीं। या तो उसका साहस जवाब दे देगा और वह शिकार छोड़ देगा, या वह मेरे आने से पहले ही मेरे सामने के खुले रास्ते से अचानक मुझ पर हमला कर देगा। मैं निश्चित रूप से उसके भोजन का अगला शिकार नहीं बनना चाहता था।

इसलिए, मैं बिल्कुल स्थिर बैठने के अलावा कुछ नहीं कर सकता था। मच्छर उस झाड़ी के अंदर भी घुस आए और मुझे बुरी तरह परेशान किया। एक बार कोई ठंडी, रेंगने वाली चीज़ मेरी गोद से गुजरी। वह लंबी तो थी लेकिन उसके पैर नहीं थे और निस्संदेह एक साँप था। उस समय हिलना मतलब काटना और अगर वह ज़हरीला साँप होता, तो शायद मौत भी हो सकती थी। बड़ी मुश्किल से मैंने अपनी कांपती नसों को काबू किया और साँप सरक कर चला गया। मैं बस उसकी सरसराहट महसूस कर सका जब वह बीच में मौजूद बाँस के तनों के बीच से फिसलकर गायब हो गया।

धीरे-धीरे मेरे गले में खुजली होने लगी और मुझे खांसी आने की तीव्र इच्छा हुई। मैंने इस इच्छा से ध्यान हटाने के लिए भेड़ें गिनीं, जब तक कि यह इच्छा धीरे-धीरे शांत नहीं हो गई।

रात के 10:25 बजे, मुझे अपने पीछे जंगल में एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। हल्की सी सरसराहट, फिर सब शांत हो गया। मिनट धीरे-धीरे बीतते गए। फिर वही आवाज़ आई, मेरे दाहिनी ओर और ठीक उसी जगह पर जहाँ मैं बैठा था। भारी साँसें साफ़ सुनाई दे रही थीं। एक बहुत धीमी सी गुर्राहट, सन्नाटा, फिर एक और गुर्राहट, और फिर मेरे सामने एक भारी, कोमल शरीर तेज़ी से दौड़ा। क्या वह शिकार करने आया था, या फिर घोर अंधेरे में मुझे घूर रहा था, शायद उसी क्षण अपने शक्तिशाली पिछले पैरों को अपने लचीले पेट के नीचे खींचकर मुझ पर झपटने की तैयारी कर रहा था? और मैं अपनी नाक का सिरा तक नहीं देख पा रहा था।

मैंने अपनी राइफल को पहले ही लोड कर लिया था और ट्रिगर पर उंगली रखकर धीरे-धीरे उसका मुंह ऊपर उठा लिया था, ताकि सामने से आ रहे हमले का सामना कर सकूं। घोर भय से मेरे चेहरे से पसीना बह रहा था और घबराहट के मारे मेरा पूरा शरीर कांप रहा था।

मैंने टॉर्च का स्विच दबाया और तेज़ रोशनी एक विशाल लकड़बग्घे पर पड़ी, जो शिकार के ऊपर खड़ा था और यह जानकर गुर्रा रहा था कि वहाँ एक मरा हुआ आदमी पड़ा है। वह कुछ सेकंड तक रोशनी को घूरता रहा और फिर गायब हो गया। राहत की साँस लेते हुए और यह सोचकर कि कम से कम अभी के लिए मैं फिर से सुरक्षित हूँ, मैं ज़ोर से हँस सकता था।

खैर, मेरी स्थिति कुछ समय के लिए उजागर हो गई थी और मैं बस यही उम्मीद कर सकता था कि आदमखोर आसपास न हो और उसे इसका पता न चल जाए। मैंने जल्दी से इस गड़बड़ी का फायदा उठाते हुए अपने साथ लाए थर्मस से गर्म, ताज़ा चाय का एक घूंट पिया और अपने जकड़े हुए अंगों को जल्दी से हिलाया-डुलाया, फिर अपनी निगरानी के बाकी समय के लिए आराम से बैठ गया। मैं फिर से घोर अंधेरे में था, लेकिन काफी तरोताज़ा और उस भयानक घबराहट से मुक्त था जो कुछ मिनट पहले मुझ पर हावी होने की धमकी दे रही थी।

बारह बजने में दस मिनट पहले मुझे दूर से एक बाघ के गुर्राने की आवाज़ सुनाई दी। यह आवाज़ पाँच से दस मिनट के अंतराल पर फिर से सुनाई दी, आखिरी बार बारह बजने में बीस मिनट पर, और मेरी समझ से यह आवाज़ लगभग एक चौथाई मील दूर से आ रही थी। इस घने जंगल वाले इलाके में आवाज़ की सही दूरी का अंदाज़ा लगाना मुश्किल था, लेकिन मैंने ईश्वर की कृपा और अपने भाग्य को धन्यवाद दिया कि बाघ ने चुपचाप आने के बजाय शोर मचाते हुए आने का फैसला किया, जैसा कि मुझे डर था।

पंद्रह मिनट बीत गए और कोई हलचल नहीं हुई। इसी बीच आधी रात की जानी-पहचानी जंगल की हवा चलने लगी, जिससे बांस के तने आपस में अजीब तरह से टकराकर चरमराने लगे। इससे मेरे मन में एक नया और भयावह विचार आया। मान लीजिए कि मेरे सिर के ऊपर सीधा खड़ा हुआ कई कटे हुए बांस के तनों में से एक अपनी जगह से हटकर अपने ही वजन से नीचे गिर जाए। उसका कटा हुआ सिरा मुझे जमीन पर ऐसे चुभो देगा जैसे किसी संग्रहकर्ता के डिब्बे में कोई दुर्लभ कीड़ा हो। यह विचार बहुत ही अप्रिय था और एक पल के लिए इसने आदमखोर सांप और उसकी निकटता के विचार को भी ढक लिया।

तभी मुझे अपने सामने अंधेरे में पड़े शव की हड्डी टूटने की आवाज़ सुनाई दी। धीरे से मैंने राइफल को कंधे तक उठाया, उसे स्थिर किया और उस रात दूसरी बार टॉर्च का स्विच दबाया। लेकिन कुछ नहीं हुआ। मैंने स्विच को बार-बार दबाया, लेकिन फिर भी कुछ नहीं हुआ। शायद बल्ब फ्यूज हो गया था या कोई कनेक्शन ढीला हो गया था। अब मेरे पास दो विकल्प थे: या तो बाघ के खाना खाकर चले जाने तक चुपचाप बैठा रहूँ, या अपनी राइफल को स्मूथ बोर राइफल से बदलकर निशाना लगाऊँ। मैंने तुरंत बंदूक चलाने का फैसला किया। मैंने राइफल को बहुत धीरे से ज़मीन पर उतारा और फिर अंधेरे में चुपचाप .12 बोर राइफल को ढूँढा। उसे पाकर मैंने उसे अपनी ओर खींचा और फिर हथियार को कंधे तक लाने लगा। मैं बस यही उम्मीद कर सकता था कि बाघ मुझसे दूर देख रहा हो, या अपने भोजन में इतना मग्न हो कि बाँस के झुंड के बीच हो रही हलचल पर ध्यान ही न दे। और तभी दुर्भाग्य मुझ पर आ पड़ा। बंदूक की नली हल्के से, लेकिन काफी स्पष्ट रूप से, बांस के तने के संपर्क में आई और एक सुनाई देने वाली खटखटाहट हुई।

खाने की आवाज़ अचानक बंद हो गई, उसके बाद एक गहरी और गड़गड़ाहट भरी दहाड़ सुनाई दी। मैंने जल्दी से बंदूक को सही जगह पर रखा और नई टॉर्च का स्विच दबाया। सौभाग्य से टॉर्च

खराब नहीं हुई, और रोशनी से एक विशाल धारीदार आकृति साफ दिखाई दी, जो लाश से उछलकर मेरे बगल वाले बांस के झुंड के पीछे चली गई। वहाँ से धरती को हिला देने वाली दहाड़ों की एक श्रृंखला ने सन्नाटे को चीर दिया, क्योंकि आदमखोर ने स्पष्ट रूप से यह दिखाया कि उसे परेशान किए जाने पर कितनी नाराजगी है, और उसने अपने आस-पास एक इंसान को देख लिया है।

टॉर्च को जलाए रखते हुए और उसके अचानक हमले पर पैनी नज़र रखते हुए, मैंने एक हाथ से अपनी जेब में हमेशा रखे रहने वाले अतिरिक्त बल्ब को टटोला। मैंने उसे निकाला और अपनी गोद में रख लिया। एक हाथ से काम करते हुए, मैंने अपनी राइफल की टॉर्च का ढक्कन खोला, खराब बल्ब निकाला और नया बल्ब लगा दिया। सौभाग्य से, टॉर्च आगे से नहीं बल्कि पीछे से फोकस एडजस्ट करने वाली थी, और चूंकि राइफल की टॉर्च अब फिर से काम कर रही थी, मैंने उसे स्मूथ बोर पर बुझा दिया, हालांकि मैंने किसी भी आपात स्थिति के लिए बंदूक को अपने घुटनों पर तैयार रखा।

बाघ अभी भी अपना प्रदर्शन कर रहा था, लेकिन मेरे पीछे आ गया था। मुझे पता था कि सामने से हमले को छोड़कर मैं काफी हद तक सुरक्षित हूँ। इससे बचने के लिए मुझे टॉर्च लगातार जलाए रखनी पड़ती, लेकिन चूंकि सुबह होने में अभी भी पाँच घंटे से अधिक का समय था, इसलिए यह निश्चित था कि लगातार जलाने पर दोनों टॉर्च की बैटरी भी खत्म हो जाएँगी। इसलिए मैंने रोशनी बंद कर दी और अपनी सुनने की शक्ति पर भरोसा किया। जब काफी देर तक सन्नाटा छा जाता, तो मैं रोशनी की बीम चालू कर देता, इस उम्मीद में कि बाघ रेंगता हुआ मेरी ओर आ रहा होगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ और वह मुझसे दूर ही रहा, सुबह 2:30 बजे तक लगातार प्रदर्शन करता रहा, जब मुझे दूर से उसकी गुर्राहट सुनाई दी। निस्संदेह वह नाराज़ था, लेकिन इस समय तक मैं उसकी नाराज़गी का स्वागत कर रहा था।

आप यकीन मानिए कि मैंने पूरी रात बाघ की वापसी के डर से चौकसी बरती, क्योंकि आदमखोर बाघों का व्यवहार अक्सर अप्रत्याशित होता है; लेकिन सुबह के सर्द घंटे बिना किसी घटना के बीतते चले गए, आखिरकार चांदी जैसे पंखों वाले जंगली मुर्गे की मधुर आवाज ने मुझे भोर और एक नए दिन के उजाले के लिए आभारी बना दिया, जिसे मैंने उन भयानक घंटों के दौरान कई बार देखने की कल्पना भी नहीं की थी।

चिनार नदी के किनारे से आती हुई कुछ अनुयायियों की आहट मेरे थके हुए कानों में संगीत की तरह गूंजी, और मैंने उन्हें आगे बढ़ने का इशारा किया, क्योंकि रास्ता साफ था। उनके आने पर मैं रात भर की अपनी तंग जगह से लड़खड़ाते हुए बाहर निकला, अपनी थर्मस में बची हुई चाय खत्म करने और काफी समय से पेंडिंग पाइप पीने के लिए, साथ ही रात की घटनाओं को उनके साथ साझा करने लगा।

वे तीनों आदमी मुझे बहुत अच्छी तरह जानते थे, लेकिन हालांकि उन्होंने खुलकर ऐसा नहीं कहा, यह स्पष्ट था कि वे मुझे जीवित देखकर आश्चर्यचकित थे, क्योंकि हताश आदमखोर की दहाड़ें और प्रदर्शन उन्हें स्पष्ट रूप से सुनाई दे रहे थे, जहां उन्होंने पनापत्ती के कांपते चरवाहों के साथ रात बिताई थी।

बायरा ने अब कहा कि वह चिनार नदी के किनारे-किनारे मुथुर तक, जो मात्र चार मील दूर था, थोड़ी देर पैदल चलकर जाना चाहता है और वहाँ से अपने शिकारी कुत्ते को लाना चाहता है, जो उसे बाघ के निशान का पीछा करने में बहुत मददगार लगता था। यह कुत्ता एक साधारण सा सफेद और भूरे रंग का गाँव का कुढ़काऊ कुत्ता था, जिसका नाम कुश-कुश-कारिया था। मुझे आज तक समझ नहीं आया था कि उसका यह अजीब नाम कैसे पड़ा। कुत्ते को बुलाते समय,

बायरा पहले दो अक्षरों को सामान्य स्वर में बोलता था, लेकिन तीसरे अक्षर को ज़ोर देकर एक अजीब सी ऊँची आवाज़ में पुकारता था, जो रात के बगुले की आवाज़ जैसी लगती थी। मैं कभी भी उसकी नकल नहीं कर पाया था, और पहले मैं केवल कुश-कुश कहकर ही संतुष्ट हो जाता था, जिसे कुत्ता बिना किसी झिझक के मान लेता था।

कम से कम सौरी को साथ ले जाने की ज़िद करते हुए, मैं रंगा के साथ ऊतैमलाई लौट आया और वहाँ गरमागरम नाश्ता किया, कावेरी नदी में स्नान किया और फिर बहुत देर बाद नींद ली। दोपहर 2 बजे मैं बायरा, सौरी और प्यारे कुश-कुश-कारिया के लौटने पर जागा, जिसने खुशी से अपनी पूंछ हिलाकर मुझे पहचाना और अपनी ठंडी थूथन मेरे कंधे से सटा दी।

जल्दी-जल्दी दोपहर का भोजन और ढेर सारी गर्म चाय पीने के बाद, हम उस जगह की ओर चल पड़े जहाँ हमने रात भर रोमांच का अनुभव किया था, हमारे साथ मृतक के रिश्तेदार भी थे, जो उसके अवशेषों को ले जाना चाहते थे लेकिन असुरक्षित रूप से उस स्थान पर जाने से बहुत डरते थे।

जैसा कि आप कल्पना कर सकते हैं, शव से तब तक बहुत दुर्गंध आ रही थी, इसलिए उन्होंने उसे केवल चिनार नदी तक ले जाने और किनारे पर दफनाने का फैसला किया। उनके जाने के बाद, बेचारे कुश-कुश ने बाघ के ठंडे पदचिह्नों का पीछा करने की बहादुरी भरी कोशिश की, लेकिन वह 100 गज भी आगे नहीं बढ़ पाया। शायद वातावरण में फैली दुर्गंध और शांत शाम की हवा में घुली दुर्गंध ने कठोर जमीन पर बाघ के पदचिह्नों की हल्की सी भी गंध को दबा दिया था। हम सूर्यास्त से ठीक पहले शिविर में लौट आए, बहुत निराश होकर।

अगले दिन कुछ नहीं हुआ, लेकिन उसके अगले दिन सुबह रंगा लगभग मौत के मुंह से बच निकला।

जैसा कि मैंने पहले ही बताया है, बायरा, सौरी और मैं हर दिन बाघ को खोजने की उम्मीद में जंगल में विपरीत दिशाओं में छानबीन करते थे, जबकि रंगा का काम हमारे तीन शिकारों को खाना-पानी देना था, जिनमें से किसी को भी उस समय तक मारा नहीं गया था। वह उस सुबह जल्दी निकल पड़ा था, उसके साथ एक और ग्रामीण भी था, और वह मुंडाचिपल्लम के कुएँ पर रखे शिकार को देखने गया था, जो उम्मीद के मुताबिक अछूता पाया गया। अपने साथी द्वारा लाए गए कुछ भूसे को डालने के बाद, रंगा ने जानवर को पानी पिलाया और फिर दोनों मुंडाचिपल्लम की ओर बढ़े, ताकि चिनार नदी के संगम पर बंधे दूसरे शिकार को देख सकें। ग्रामीण आगे चल रहा था, रंगा पीछे-पीछे। वे सड़क से लगभग एक मील दूर ही आए थे कि सूखी धारा के बीचोंबीच, उनसे पचास गज की दूरी पर बाघ खड़ा था।

ग्रामीण ने भूसे का गट्ठा नीचे गिरा दिया और सामने मौजूद इकलौते पेड़ पर चढ़ गया। कुछ ही सेकंड में वह थोड़ी ऊँचाई तक पहुँच पाया और इस दौरान उसने रंगा का रास्ता रोक दिया। कुछ ही सेकंड में आदमखोर बाघ पेड़ के आधार तक पहुँच गया, अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और अपने अगले पंजे से एक झटके में रंगा की कमर पर बंधी हुई धोती उतार दी, जिसका सिरा चढ़ते समय नीचे लटक रहा था। बाघ थोड़ी देर के लिए रुका और धोती को खींचने लगा, जबकि रंगा, बिना धोती के, पूरी ताकत से चढ़ने लगा और अपने साथी को लगभग पेड़ से गिराते हुए, ऊँची डालियों और सुरक्षा तक पहुँचने की कोशिश में जुट गया। निराश बाघ नीचे ही खड़ा रहा, ऊपर की ओर देखता रहा और भयानक गुर्राता रहा, जबकि रंगा और उसका साथी मदद के लिए ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते रहे, मानो दुनिया को बता रहे हों कि उन्हें मारा जा रहा है और खाया जा रहा है।

सौभाग्यवश, सुरक्षा के लिए बड़ी संख्या में यात्रा कर रहे लोगों का एक समूह पेन्नाग्राम से आ

रहा था और उस समय वे कुएँ के पास ही थे, जहाँ से उन्होंने आवाज़ें सुनीं और संदेश को पहचान लिया। तुरंत ही पूरा समूह, जिसमें सभी उम्र के पुरुष, महिलाएं और बच्चे शामिल थे, शेष चार मील की दूरी तय करके ऊटामलाई में मेरे पास यह खबर लेकर पहुँच गया।

मुझे पता नहीं था कि हमला रंगा पर हुआ है, और बायरा और सौरी अभी तक नहीं लौटे थे, इसलिए मैं अकेले ही दौड़ता हुआ कुएँ तक पहुँचा और रिकॉर्ड समय में वहाँ पहुँच गया। यहाँ से मुझे चीखने की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी। तब तक बाघ पेड़ के नीचे से उतरकर जंगल में गायब हो चुका था, लेकिन दोनों आदमी नीचे उतरने से डर रहे थे, क्योंकि उन्हें डर था कि कहीं बाघ कहीं छिपा न हो और उन पर हमला न कर दे। आदमखोर बाघ को अचानक पकड़ने की उम्मीद में, मैंने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया और सावधानी बरतते हुए तेज़ी से आगे बढ़ा। जब मैं पेड़ के पास पहुँचा, तो मुझे देखकर केवल रंगा और उसका साथी ही हैरान हुए, जब तक कि मैंने उन्हें सारी बात नहीं समझाई। फिर हमने बाघ का पीछा करने की कोशिश की, लेकिन ज़मीन पर उसका कोई निशान नहीं मिला; इसलिए हमने कोशिश छोड़ दी और बाकी शिकारों को देखने के लिए वापस लौट गए। मैं उन आदमियों के साथ गया, और हमने पाया कि दोनों जानवर बिल्कुल ठीक थे। दोपहर हो चुकी थी जब हम इस निराशाजनक जानकारी के साथ ऊतैमलाई लौटे कि जिस बाघ का हम पीछा कर रहे थे, वह हमारे शिकारों में से किसी को भी नहीं मारने वाला था। और, मेरे अनुभव के आधार पर, ऐसा लगता था कि वह दोबारा शिकार करने नहीं लौटेगा। मेरी अत्यधिक निराशा और हताशा को शब्दों में बयां करना भी कम होगा। मुंडाचिपल्लम का वह धूर्त आदमखोर बाघ उन बाघों में से एक लग रहा था जो लंबे समय तक यहीं टिके रहेंगे, अगर वह अपनी मर्जी से कहीं और जाकर अपना आतंक न फैलाए।

और फिर, दो दिन बाद सुबह लगभग 7 बजे, वह घटना घटी जिससे यह कहानी समाप्त होती है। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, संयोगवश यह घटना उन घटनाओं से काफी मिलती-जुलती थी जिनसे कहानी शुरू हुई थी।

एक बार फिर, सुरक्षा के लिहाज से दस लोगों के एक समूह ने पेन्नाग्राम के लिए मछलियों से लदी अपनी टोकरियाँ जमीन पर रख दीं, ताकि मुंडाचिपल्लम के पास स्थित कुएँ पर पानी पी सकें और थोड़ी देर आराम कर सकें।

दल में महिलाएं भी थीं, इसलिए एक आदमी शौच करने के लिए पास के पेड़ के पीछे चला गया। एक हल्की सी दहाड़ सुनाई दी, काले धारियों वाला एक लंबा सुनहरा शरीर मानो कहीं से प्रकट हुआ और वह आदमी गायब हो गया। सौभाग्य से, बायरा, रंगा, सौरी और मैं अपने शिकार के लिए निकले थे और दस लोगों के दल से मुश्किल से एक मील पीछे थे। जल्द ही हम उन नौ लोगों से मिले जो उस एक व्यक्ति की दुखद खबर लेकर लौट रहे थे। हम जितनी तेज़ी से दौड़ सकते थे, दौड़े और कुएँ तक पहुँचे, जहाँ मैंने रंगा और सौरी से फुसफुसाकर कहा कि वे पास के पेड़ों पर चढ़ जाएँ और मेरी अगली ज़रूरत का इंतज़ार करें। बायरा और मैं रेंगते हुए आगे बढ़े और उस पेड़ के पीछे, जिसे उस दुर्भाग्यशाली आदमी ने शौच के लिए चुना था, हमने उसके खून के निशान देखे जो बाघ के जबड़ों में रिस गए थे।

बायरा उसका पीछा कर रहा था, और मैं राइफल कंधे पर रखे, हर झाड़ी को ध्यान से देखते हुए उसके पीछे-पीछे चल रहा था। हम अभी कुछ सौ गज ही आगे बढ़े थे कि हमें भोजन कर रहे बाघ के मुंह में हड्डी के चटकने की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ हमारे आगे बाईं ओर से आ रही थी। मैंने अपना कांपता हुआ हाथ बायरा पर रखा और उसे वहीं रुकने का इशारा किया, जबकि मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ा, यह जानते हुए कि ऐसी परिस्थितियों में एक साथी एक अतिरिक्त जीवन बन जाता है जिसकी देखभाल करनी होती है।

जंगल एकदम शांत और स्थिर था, और कुतरने और चबाने की आवाज़ अब और भी स्पष्ट सुनाई दे रही थी। बहुत सावधानी से और चुपचाप, झुकी हुई निगाहों से हर कदम को देखते हुए, इस डर से कि कहीं कोई पत्ता न हिल जाए, कोई टहनी न टूट जाए या कोई ढीला पत्थर न गिर जाए, मैं धीरे-धीरे पास बढ़ा। मुझे केवल पंद्रह गज आगे बढ़ने में काफी समय लग गया। वहाँ से मुझे लगा कि मैं हत्यारे को देख सकता हूँ, जो ज़मीन पर दुबका हुआ था। कुछ कदम और पास आते ही, वह अचानक उठा और मेरे सामने आ गया, उसके कंधे से कटा हुआ एक टपकता हुआ मानव हाथ उसके मुँह पर था। उसकी दुष्ट आँखें मुझे खाली आश्चर्य से घूर रही थीं, फिर एक गुर्राहट उस विशाल चेहरे पर फैलने लगी, जो उसके शरीर पर पड़े भयानक अवशेषों के कारण और भी भयावह लग रहा था।

नरम नोक वाली विंचेस्टर बुलेट के पीछे 300 ग्रेन कॉर्डाइट ने मिसाइल को 35 टन प्रति वर्ग इंच से अधिक की ताकत से विशाल गर्दन के ठीक नीचे जा गिराया। इंसान का हाथ धड़ाम से घास में गिर गया। जानवर घुरघुराहट के साथ आगे की ओर लड़खड़ाया। पुरानी, भरोसेमंद राइफल के अंडरलीवर को तेजी से घुमाते हुए, दूसरी मिसाइल उस क्रूर दिल में जा लगी। उसका दिल धड़कना बंद हो गया। मुंडाचिपल्लम का आदमखोर बाघ लगभग उसी जगह पर अपनी मौत की ओर लड़खड़ाते हुए बढ़ा, जहाँ से उसने कुछ महीने पहले अपने क्रूर जीवन की शुरुआत की थी। एक विशाल नर, वह बेदाग था। निःसंदेह स्वभाव से एक क्रूर बाघ, वह स्पष्ट रूप से एक दुर्भाग्यपूर्ण संयोग से आदमखोर बन गया था। ऐसे ही मामूली हालातों पर अक्सर भाग्य की डोर टिकी होती है।

मेरी भलाई को लेकर चिंतित मेरी पत्नी ने उसी दोपहर बैंगलोर से अपनी कार में आकर मुझे आश्चर्यचकित कर दिया और मुझसे पूछा कि क्या मुझे कभी याद आता है कि मेरा एक घर और परिवार है, और क्या अब समय नहीं आ गया है कि मैं उसमें लौटने के बारे में सोचूं।

हम बायरा को पेन्नाग्राम होते हुए वापस मुथुर के पास बने उनके घर तक ले गए, जहाँ हम ठीक समय पर उनके पाँचवें बच्चे के जन्म के शुभ अवसर पर उपस्थित हुए। जन्म इस प्रकार हुआ। चिनार नदी की रेत में एक उथला गड्ढा, झूले के आकार का और लगभग उसी माप का, खोदा गया था, और फिर उसे ताजे तोड़े गए मुलायम हरे पत्तों से भर दिया गया था। इसी झूले में प्रसव पीड़ा से ग्रस्त माँ लेटी हुई थी। पति ने दाई का काम किया। न कोई दवा, न कोई मरहम, न गर्म पानी, न रुई! केवल कोमल हरे पत्ते, और एक तेज चकमक पत्थर, जिससे नाभि की नाल काटी गई, और खून बहने वाले नाल के ठूंठ को साधारण लकड़ी की आग की राख से बुझाया गया। जन्म के कुछ घंटों बाद माँ अपने बच्चे के साथ उठी और अन्नाइबिद्दाहल्ला के किनारे बने उस गड्ढे में गई जहाँ वे रहते थे। पति ने झूले जैसे गड्ढे को भर दिया; चिनार नदी की ढीली रेत में पत्तियां, नाल समेत सब कुछ बिखरा पड़ा है। जंगल के बायरा इसी सरल और दृढ़ स्वभाव से जन्म लेते हैं। वे इसी तरह जीते हैं और इसी तरह मरते हैं, प्रकृति और जंगल के सच्चे बच्चे। वे सभ्यता से अछूते और बेदाग, लंबे समय तक अस्तित्व में रहें, पहाड़ों, दलदलों और वन घाटियों में अपनी इच्छा अनुसार खुशी और स्वतंत्रता से विचरण करते रहें, जब तक कि मृत्यु उन्हें अपने पास न बुला ले और वे सादगी से धरती माता में विलीन न हो जाएं, जहां से वे इतनी सादगी से उत्पन्न हुए हैं।

उस दिन सुबह मैंने एक मोर का शिकार किया था, और हमने उसे जंगल के पारंपरिक तरीके से तैयार करके रात के खाने में खाया। सारे पंख, आंतें, सिर और गर्दन निकाल दिए जाते हैं। चाकू से पक्षी के मांस में चीरे लगाए जाते हैं, जिनमें स्वादानुसार नमक, मसाले, लौंग और करी पाउडर डाला जाता है। फिर पूरे शरीर पर नदी के किनारे से लाई गई ताज़ी, साफ़ मिट्टी की एक

इंच से ज़्यादा मोटी परत चढ़ा दी जाती है, जिससे वह अंत में गीली मिट्टी के गोले जैसा दिखता है। अंगारों की आग जलाई जाती है, गोले को उस पर रखा जाता है, और चारों ओर और ऊपर से और भी अंगारे डाल दिए जाते हैं। लकड़ी डालकर आग को लगातार जलता रखा जाता है, लेकिन उद्देश्य धधकती आग के बजाय सुलगते अंगारे रखना होता है। कुछ समय बाद मिट्टी चटकने लगती है, और अंत में टुकड़ों में गिर जाती है। तब पक्षी को जलने से पहले निकालने का समय आ जाता है। मिट्टी में भूनने की कला में थोड़ा अभ्यास करने से, रात के खाने के लिए एक शानदार भुना हुआ मोर या जंगली मुर्गा तैयार किया जा सकता है, जो कई गृहिणियों को शर्मिंदा कर सकता है।

11

टैगार्थी के बाघ

मैसूर राज्य के शिमोगा जिले की पश्चिमी सीमा की यात्रा करने पर, आपको बैंगलोर और राज्य के पूर्वी हिस्सों के दृश्यों से बिल्कुल अलग दृश्य देखने को मिलेगा। यहाँ आप सदाबहार वनों के घने क्षेत्र में हैं, जो मूसलाधार मानसूनी वर्षा से पोषित होते हैं। शिमोगा शहर के पश्चिम में औसतन 120 इंच से अधिक वार्षिक वर्षा होती है और पश्चिमी घाट पर स्थित मैसूर राज्य की अंतिम सीमा, अगुम्बे गाँव में यह वर्षा 250 इंच से भी अधिक हो जाती है। विशाल वृक्ष, जिनकी पत्तियाँ आकाश तक पहुँचती हैं, और बड़े-बड़े वृक्ष-फर्न, जंगल और घाटियों से निकलने वाली असंख्य धाराओं के किनारे उगते हैं, जो सड़क के किनारे ताजे पानी का बारहमासी स्रोत हैं। यहाँ हर जगह घनी वनस्पति दिखाई देती है, जिसमें मध्य और पूर्वी दक्षिण भारत के जंगलों की कंटीली किस्में बिल्कुल नहीं पाई जातीं। इन जंगलों में घूमना-फिरना मुश्किल है, क्योंकि यहाँ पगडंडियाँ नहीं हैं। घनी झाड़ियाँ हर खुली जगह को ढके रहती हैं और सूरज की किरण पाने के लिए ऊपर की ओर बढ़ती रहती हैं। ऊँचे-ऊँचे पेड़ों के नीचे सब कुछ नम और अँधेरा है; आपको सिर्फ़ जंगली झींगुर की चहचाहट और मेंढक की टर्राहट ही सुनाई देगी। पत्तियों के नीचे चिपकी हुई जोंकें लचीली होकर फैलती हैं और पास से गुज़रने वाले किसी भी जीव को जकड़ लेती हैं। वे आपके कपड़ों में घुस जाएँगी, आपके जूतों, मोज़ों या मोज़ों के बीच से अपना रास्ता बना लेंगी और आपको पता भी नहीं चलेगा कि वे आपको दर्द दे रही हैं, जब तक कि आप नीचे न देखें और आपको अपने शरीर के किसी हिस्से से खून रिसता हुआ न दिखे। उन्हें हटाने की कोशिश करने पर वे एक भयंकर घाव छोड़ जाएँगी जो आमतौर पर मवाद बनकर बड़ा हो जाता है। इन इलाकों में हमेशा अपने पास रखने वाले साधारण नमक की थोड़ी सी मात्रा या तंबाकू का रस लगाने से वे अपने आप मुड़कर गिर जाएँगी। इसके बाद घाव बिना किसी देखभाल के अपने आप ठीक हो जाएगा।

यह हमद्र्याद या किंग कोबरा का घर है, जिसे 'नाया हन्ना' के नाम से जाना जाता है। यह कोबरा परिवार का एक विशालकाय सांप है जिसकी लंबाई पंद्रह फीट या उससे भी अधिक होती है। गहरे जैतून हरे रंग का, जिसके शरीर पर हल्के पीले-सफेद घेरे होते हैं, उसके काले, अंडाकार फन पर कोई स्पष्ट निशान नहीं होता। अपनी विशाल लंबाई के बावजूद, यह अविश्वसनीय रूप से तेज गति से चलता है और अन्य सांपों का शिकार करता है। यह आक्रामक होता है और कहा जाता है कि देखते ही हमला कर देता है। अपने बच्चों की रक्षा करने वाली मादा कोबरा विशेष रूप से गुस्सैल स्वभाव की मानी जाती है। मैं दो बार किंग कोबरा से उसके इलाके में मिला हूँ, एक बार जब मैं अगंबे के बाहर जंगल की धाराओं में रहने वाली सुंदर लाल और हरे रंग की चित्तीदार मछलियों के नमूने एकत्र कर रहा था; और दूसरी बार जब मैं ऑर्किड इकट्ठा कर रहा था। लेकिन

दोनों ही बार उन्होंने आक्रामक व्यवहार नहीं किया। दोनों ही सांप मुझे देखकर रुक गए, अपना सिर जमीन से लगभग चार फीट ऊपर उठाया और अपने अंडाकार फन को थोड़ा फैलाकर अपनी चमकीली काली आँखों से मुझे ध्यान से और जिज्ञासा से देखते रहे। फिर वे बिना किसी नुकसान के अपने रास्ते चले गए।

ऊंचे वृक्षों की चोटियाँ सुंदर ऑर्किडों का घर हैं, जिनमें डेंड्रोबियम परिवार की छड़ी के आकार की शाखाएँ विशेष रूप से पाई जाती हैं। गर्मियों में उनके गुलाबी, पीले, सफेद या बैंगनी रंग के फूलों के गुच्छे ऊपरी छतों को रंग-बिरंगे ढंग से सजा देते हैं।

यह जिला शिरावती नदी से घिरा हुआ है, जिसका जल चार अलग-अलग धाराओं में भव्यतापूर्वक बहता है, और गेरसप्पा या जोग जलप्रपात में 950 फीट की सीधी ऊंचाई से गिरता है। यहां, चांदनी रात में, जल की भाप से बनी फुहारों के बीच इंद्रधनुष का दुर्लभ नजारा देखा जा सकता है।

सागर नामक छोटे कस्बे से ग्यारह मील दक्षिण-पूर्व में स्थित टैगार्थी गाँव सदाबहार वनों की पूर्वी सीमा पर बसा है, जहाँ वनों की कटाई करके खेती की जाती है। भारी वर्षा और उपजाऊ मिट्टी के कारण इस क्षेत्र में कृषि कार्य अत्यंत लाभदायक है। खुले मैदानों में घास भी खूब उगती है और प्रचुर चराई के कारण आसपास के गाँवों और बस्तियों में मवेशियों के विशाल झुंड पाले जाते हैं।

बाइसन के अलावा, सदाबहार जंगलों में अपेक्षाकृत कम जंगली जानवर रहते हैं, क्योंकि वहां झाड़ियाँ घनी होती हैं और जोंक व कीड़े पाए जाते हैं, जो उन्हें परेशान करते हैं। इसी कारण और शिकार की कमी के चलते, उन घने जंगलों में मांसाहारी जानवर कम ही दिखाई देते हैं। लेकिन जैसे-जैसे इलाका खुलता है और मवेशियों के विशाल झुंड दिखाई देते हैं, मांसाहारी जानवर बड़ी संख्या में इकट्ठा होकर उन पर भोजन करते हैं और मोटे हो जाते हैं।

टैगार्थी एक ऐसा ही इलाका था, और मेरी तमाम यात्राओं में मैंने देखा कि वहाँ स्थायी रूप से चार से कम बाघ कभी नहीं रहे। फरवरी 1939 में मेरे अनुभव का चरम आंकड़ा सामने आया, जब टैगार्थी के आसपास विभिन्न स्थानों पर एक ही दिन में आठ मवेशियों को मार डाला गया। इससे संकेत मिलता है कि आठ अलग-अलग बाघ सक्रिय थे, क्योंकि शिकार की सूचनाएँ दूर-दूर के स्थानों से मिली थीं।

इस इलाके में बाघों की अधिकता के कारण, तेंदुओं का दिखना दुर्लभ है। एक-दो तेंदु गांवों के आस-पास ही अपना जीवन गुजारते हैं और कुत्तों, बकरियों और कभी-कभी घरेलू मुर्गियों को खाकर अपना पेट भरते हैं। बाघ अपने छोटे चचेरे भाई को बर्दाश्त नहीं करता और अगर तेंदुआ उसके हमले की सीमा तक आ जाए तो वह बिना किसी संकोच के उसे मार डालता है और कभी-कभी खा भी जाता है।

चित्तीदार हिरणों को छोड़कर, टैगार्थी के आसपास शिकार के जानवर अपेक्षाकृत कम हैं, और उस क्षेत्र के बाघ मुख्य रूप से मवेशियों को चुराने वाले हैं। उनमें से अधिकांश भारी-भरकम और मोटे-ताज़े जानवर हैं, जिनमें असली शिकारी बाघों जैसी सुगठित और आकर्षक बनावट का अभाव है।

आइए, मैं आपको टैगार्थी के शाम राव बापट की कहानी सुनाता हूँ, और उस बाघ की कहानी सुनाता हूँ जिसे उन्होंने अपने घर के पास ही अपने बगीचे में मार गिराया था। शाम राव उस समय लगभग बाईस वर्ष के थे; लेकिन एकमात्र पुरुष वारिस होने के नाते, उन्होंने अपने घर के चारों ओर फैली जागीर का कुशलतापूर्वक और एक सच्चे किसान के प्रेम से प्रबंधन किया। निचले,

कीचड़ भरे इलाकों में चावल उगता था, जबकि ऊँचे इलाकों में रागी की सूखी फसल उगाई जाती थी। उनके पास सुपारी और नारियल के पेड़ों का एक बाग भी था, जिनकी शाखाओं पर पान की बेल चढ़ी हुई थी। इसके अलावा, शाम राव के पास मवेशी और अन्य पशुधन भी थे, और वास्तव में वे एक समृद्ध जमींदार थे।

एक दिन एक मोटे बाघ ने इस समृद्धि में हिस्सा लेने का फैसला किया और शाम राव के झुंड के जानवरों को एक-एक करके मारना शुरू कर दिया। शाम राव के पास केवल एक साधारण बोर वाली बंदूक थी, और उसमें गोलियां भरकर वह बाघ के लौटने की प्रतीक्षा में शिकार के पास बैठ गया। लेकिन किसी न किसी कारण से ऐसा कभी नहीं हुआ, अंततः यह अनुमान लगाया जाने लगा कि यह बाघ अनुभवी था, जिसे शायद पहले भी गोली मारी गई थी और इसलिए वह अपने शिकार पर दोबारा नहीं लौटेगा।

फिर बाघ और भी निडर हो गया। एक अंधेरी रात को वह शाम राव के बगीचे की बाड़ फांदकर अंदर घुस गया और मवेशी बाड़े के प्रवेश द्वार पर कसकर लगी बांस की मजबूत जाली को हटाने की कोशिश करने लगा। शाम राव अपने मवेशियों के बेचैन होकर गुर्राने और पैर पटकने की आवाज सुनकर जाग गए थे। तभी उन्हें खरोंचने की आवाज सुनाई दी और जब वे बाहर गए तो उन्होंने देखा कि बाघ जबरदस्ती अंदर घुसने की कोशिश करने के बाद कूदकर भाग रहा था।

अगली रात शाम राव ने अपने मवेशी बाड़े की छत पर छोटी-छोटी कटी हुई टहनियाँ रखीं और बाड़े के प्रवेश द्वार पर ज़मीन से छह फीट ऊपर पेट के बल लेट गए। यह प्रवेश द्वार बंद था। रात दस बजे बाघ प्रकट हुआ और दरवाज़ा खरोंचने लगा। शाम राव ने अपनी पिस्तौल की दोनों नालें बिल्कुल नज़दीक से चलाईं और बाघ लगभग खामोशी से ज़मीन पर गिर पड़ा। वह मवेशियों को मारने वाले भारी-भरकम बाघों का एक उत्कृष्ट उदाहरण था।

दृश्य बदल गया। सुबह के 11:30 बज रहे थे और टैगार्थी से लगभग ढाई मील दूर स्थित छोटे से जंगल बंगले पर सूरज की तेज रोशनी पड़ रही थी। दोपहर का खाना लगभग तैयार था और मेरी पत्नी कुछ आखिरी काम निपटा रही थी। तभी बंगले की बाड़ से सटे जंगल से एक काकर ने कर्कश आवाज निकाली। बार-बार आवाज आ रही थी, छोटे हिरण की उत्तेजित आवाज उसके तीव्र खतरे को दर्शा रही थी। रबर के जूते पहनकर और राइफल लेकर, मैं जंगल की सीमा रेखा पार करके घने पत्तों वाले जंगल में घुस गया। काकर अभी भी आवाज निकाल रहा था और मैं कम से कम शोर करते हुए जितनी जल्दी हो सके आगे बढ़ा। मैं एक खुले मैदान में पहुँचा, जिसके बीच में छोटा काकर मुझसे मुंह फेरकर खड़ा था और रुक-रुक कर भौंक रहा था। वापस जंगल में घुसकर, मैं चुपके से उस खुले मैदान के चारों ओर घूमा, इस बात का ध्यान रखते हुए कि मैं उस डरे हुए हिरण की सीधी नजर में न आ जाऊं। यहां कुछ सागौन के पेड़ लगाए गए थे और उनके विशाल पत्ते, जो इस मौसम में सूखे और कुरकुरे हो चुके थे, वहीं गिरे पड़े थे, मानो जंगल की ज़मीन पर कालीन बिछा रहे हों। मैं जानता था कि उन्हें पार करने की कोशिश करना खुद को प्रकट कर देना होगा। इसलिए मैं सागौन के किनारे उग रहे एक मजबूत अंजीर के पेड़ के तने के पीछे छिप गया और उनकी छाया में झाँकने की कोशिश करने लगा। मैंने जितना हो सके घूरा, कुछ देर तक मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। फिर थोड़ी दूरी पर कुछ हलचल हुई, और ऐसा करते ही मेरी मौजूदगी का पता चल गया। मैंने अपनी नज़रें उस जगह पर टिका दीं और वहाँ मुझे एक बाघ दिखाई दिया, जो बेफिक्र होकर अपनी पीठ के बल लेटा हुआ था, उसके चारों पैर हवा में थे और वह गहरी नींद में सो रहा था। समय-समय पर उसकी पूंछ का सिरा फड़कता था, और यही हरकत मेरी नज़र में आई और उसकी मौजूदगी का पता चल गया।

सोते हुए जानवर को गोली मारना खेल भावना के विरुद्ध होता। इसके अलावा, वह अपने

जायज़ भोजन को मारने के अलावा कोई नुकसान नहीं कर रहा था, इसलिए मैं उसे कोई चोट पहुँचाना नहीं चाहता था। मैंने अपनी राइफल और खुद को पेड़ से टिका दिया, और लगभग बीस मिनट तक उस बाघ को पीठ के बल गहरी नींद में सोते हुए देखता रहा। तभी जंगल में बने लॉज से मेरी पत्नी की आवाज़ आई, जो मुझे दोपहर के भोजन के लिए बुला रही थी। बाघ ने आवाज़ सुनी और उठ बैठा, अपना सिर आवाज़ की ओर घुमाया, उसकी आँखें अभी भी नींद से आधी बंद थीं।

मैं चुपचाप छिपने की जगह से बाहर निकला, राइफल हर स्थिति के लिए तैयार थी। बाघ ने मेरी आवाज सुनी, उछल पड़ा और घूमकर उस इंसान को हैरानी से देखने लगा जो उसके इतने करीब बिना किसी को पता चले आ गया था। फिर एक धीमी सी गुर्राहट के साथ वह आराम से चलने लगा। मैंने उसे शांति से जाने दिया और जल्द ही वह मेरी नजरों से ओझल हो गया।

एक बार मेरी पत्नी और मैंने एक बैलगाड़ी किराए पर ली और रात में मशालें जलाकर यह देखने निकले कि क्या दिखाई देता है। हम एक मील चल चुके थे और एक गहरी ढलान के आधे रास्ते पर थे, जहाँ बैलगाड़ी का रास्ता एक नाले को पार करता था, तभी हमारी दाहिनी ओर घने जंगल में, मशाल की रोशनी में हमारी पत्नी को आँखों का एक जोड़ा दिखाई दिया। हमने बैलगाड़ी रोकी और नीचे उतरे, पत्नी मशाल लेकर आगे-आगे चल रही थी और मैं राइफल लेकर उसके पीछे था। आँखें गायब हो चुकी थीं, इसलिए हम एक संकरे रास्ते पर चले जो उस जगह की ओर तिरछे कोण पर जाता था जहाँ आँखें थीं। थोड़ी देर बाद हमें वे फिर से दिखाई दीं, बड़ी-बड़ी लाल-सफेद आँखें, रात के अंधेरे में स्पष्ट रूप से चमक रही थीं। सौभाग्य से वहाँ झाड़ियाँ कम थीं और हम सीधे आँखों की ओर बढ़ सके। कुछ कदम आगे बढ़ते ही एक बाघ बाहर निकला, जिसने हमें देखा और फिर उस जगह की ओर देखा जहाँ से वह अभी निकला था। इस विचित्र व्यवहार का रहस्य जल्द ही सुलझ गया, क्योंकि रिट्रीवर के आकार के दो शावक झाड़ियों से बाहर निकले और उछलते-कूदते अपनी मां के पास पहुंच गए।

कुछ क्षणों तक वह हमें टकटकी लगाकर देखती रही और फिर धीमी सी म्याऊं की आवाज निकालते हुए जंगल में चली गई, मानो शावकों को अपने पीछे आने का संकेत दे रही हो। शावकों ने भी वैसा ही किया और तीनों जंगल में खो गए, सिवाय झाड़ियों की सरसराहट के जो कभी-कभार झाड़ियों के बीच से उनके आगे बढ़ने का संकेत दे रही थी।

मेरी पत्नी ने टॉर्च की रोशनी उस दिशा में डाली जहाँ से हमें उनके चलने की आवाज़ आ रही थी, इस डर से कि कहीं बाघिन हमारी मौजूदगी से नाराज़ होकर अपना इरादा न बदल ले और हम पर हमला न कर दे। तभी हमें अपने सामने एक ज़ोरदार गुर्राहट सुनाई दी। रोशनी उस नई आवाज़ की ओर घुमाते ही हम चौंक गए जब हमने एक और बाघ को देखा, इस बार एक बड़ा नर बाघ, लगभग उसी जगह पर जहाँ कुछ सेकंड पहले बाघिन खड़ी थी। ज़ाहिर है, हम एक परिवार के पास आ गए थे जो नदी में प्यास बुझाकर लौट रहा था। मैं यह कहना चाहूँगा कि यह बहुत असामान्य बात है कि एक नर बाघ, इतने बड़े शावकों वाली बाघिन के साथ हो। आम तौर पर, बाघिन अपने बच्चों को तब तक अपने साथी के पास नहीं आने देती जब तक वे अच्छे से बड़े न हो जाएँ।

हालात बेहद तनावपूर्ण हो गए थे, क्योंकि किसी न किसी वयस्क जानवर के हम पर हमला करने की पूरी संभावना थी। हालांकि, मेरी पत्नी ने सराहनीय धैर्य बनाए रखा और बाघ धीमी आवाज़ में गुर्राते हुए अपने परिवार के पीछे झाड़ियों में चला गया।

उसी समय कहानी का एक मनोरंजक अगला भाग घटित हुआ, जिसका अंत अप्रिय हो सकता था, लेकिन सौभाग्य से ऐसा नहीं हुआ। अँधेरे में अकेला रह गया बेचारा बैलगाड़ीवाला, बाघिन

की म्याऊँ और उसके साथी की दहाड़ सुनकर चौंक गया। शायद उसके बैलों ने उनकी गंध पहचान ली हो, या उन्हें देख भी लिया हो, क्योंकि अचानक वे बैलगाड़ी लेकर भागे और नदी के किनारे की ओर दौड़ पड़े, जहाँ पहिए नरम रेत और पानी में फंस गए। बैलगाड़ीवाले की चीखें सुनकर, और यह सोचकर कि उस पर या उसके बैलों पर हमला हुआ है, हम मौके पर दौड़े, तो पाया कि सब ठीक था, सिवाय इसके कि वह बुरी तरह डर गया था। हम दोनों इस बात से खुश थे कि हालात ने हमें उस खुशहाल परिवार के किसी भी सदस्य को नुकसान पहुँचाने के लिए मजबूर नहीं किया।

कुछ समय के लिए मेरे मित्र, मैसूर चिकित्सा सेवा के डॉ. स्टेनली, अपने विभाग द्वारा टैगार्थी में तैनात थे, मुख्य रूप से मलेरिया के प्रकोप को रोकने के प्रयास में, जो वहां व्यापक रूप से फैला हुआ था और लगभग सभी निवासियों को प्रभावित कर रहा था। डॉक्टर एक उद्यमी व्यक्ति थे, जिन्हें शिकार का बहुत शौक था, और उन्होंने अपनी सेवा के दौरान कई बाघों का शिकार किया था।

एक रात देर से उन्हें बेलंदुर नामक एक छोटे से गाँव से प्रसूति संबंधी सूचना मिली, जो लगभग छह मील दूर था। अपने पेशे के अनुरूप, वे बैलगाड़ी से निकल पड़े, अपने साथ दवाइयों, इंजेक्शनों और पट्टियों से भरा थैला लिए हुए; उनकी 'गेको' स्मूथ बोर राइफल और एक पाँच सेल वाली टॉर्च ने उनके कर्तव्य में शिकार का स्पर्श जोड़ दिया।

वे एक घाटी से गुजर रहे थे तभी एक बाघ अचानक रास्ते के पार कूद पड़ा और किनारे पर अपने पिछले पैरों पर बैठकर गुजरती हुई गाड़ी को देखने लगा। स्टैनली ने जानवर पर गोली चलाई, जिसने जोर से दहाड़ मारी और गायब हो गया।

वह शांति से अपने गंतव्य की ओर बढ़ा, माँ को उसके बच्चे से मुक्त कराया और बाकी रात मरीज के साथ बिताई, अगली सुबह अपने एक परिचित छोटे लड़के के साथ लौटा ताकि वह और गाड़ीवान उस बाघ का पीछा करने में उसकी मदद कर सकें जिसे उसने पिछली रात घायल किया था।

मौके पर पहुँचकर उन्हें खून के निशान दिखाई दिए, जिनका पीछा करते हुए वे आगे बढ़ने लगे। गाड़ीवान ने यह बहाना बनाकर अपनी गाड़ी की ओर रुख किया कि वह अपने बैलों को अकेला नहीं छोड़ सकता। स्टेनली और लड़का कुछ दूर जाकर एक खोखले स्थान में प्रवेश कर गए, तभी अचानक उन्हें एक बाघ अपने सामने एक तरफ लेटा हुआ मिला। यह सोचकर कि वह मर गया है, लेकिन निश्चित होने के लिए स्टेनली ने उसकी पीठ पर एक एल.जी. (लॉन्ग-लेवल गन) से गोली चलाई। तभी बाघ उछल पड़ा, पलटकर उन पर हमला कर दिया। जैसे ही वह कूदा, स्टेनली ने अपनी बची हुई कारतूस की गोली, इस बार एक छोटी गोली, बाघ के मुंह में मार दी। तभी बाघ उस पर टूट पड़ा, उसे गिरा दिया और उसकी खोपड़ी का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त कर दिया। उसी क्षण लड़का चीखता हुआ भाग गया, जिससे निस्संदेह स्टेनली की जान बच गई, क्योंकि बाघ ने उसे छोड़कर लड़के का पीछा किया और उस पर झपट्टा मारकर उसकी बगल में काट लिया। सिर में लगे घाव से बेसुध स्टेनली किसी तरह उठा और अपनी बंदूक में गोलियां भरने की कोशिश करने लगा, तभी अचानक बाघ लड़के को छोड़कर जंगल में कूद गया।

उस युवक की पीठ और बगल में गंभीर चोटें आई थीं, और उसके दो बड़े दांतों से बने गहरे घावों से खून बह रहा था। इसके अलावा, उसकी तीन पसलियां भी टूट गई थीं। स्टेनली ने अपनी फटी हुई कमीज को पट्टी की तरह इस्तेमाल करते हुए उसे जितना हो सके ठीक किया और बैलगाड़ी तक ले गया। फिर सत्रह मील की लंबी यात्रा सागर कस्बे के लिए शुरू हुई, और डॉक्टर की खुद की हालत लगातार खराब होती जा रही थी। वहां से वे शिमोगा के लिए ट्रेन में सवार हुए,

जो लगभग पैंतीस मील दूर था, जहां एक जिला अस्पताल था।

यह बताना ही पर्याप्त होगा कि दोनों अपने इस साहसिक कार्य से उबर गए, हालांकि स्टेनली को अपने वरिष्ठ चिकित्सक से कड़ी फटकार मिली, जिन्होंने उसे याद दिलाया कि उसे टैगार्थी में एक डॉक्टर के रूप में तैनात किया गया था, न कि बाघों का शिकार करने के लिए।

उनकी जान बच जाना निस्संदेह इस तथ्य के कारण था कि बाघ बुरी तरह घायल हो गया था। स्टैनली द्वारा उसके मुंह में मारी गई आखिरी गोली ने संभवतः उसके निचले जबड़े को चकनाचूर कर दिया था, क्योंकि यह स्पष्ट था कि इसके बाद के दोनों हमलों में उसने केवल अपने ऊपरी नुकीले दांतों का ही इस्तेमाल किया था। यदि उसका निचला जबड़ा सही सलामत होता, तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि स्टैनली और लड़का दोनों अगली सुबह देखने के लिए जीवित नहीं रहते।

हुआ यूं कि उसके बाद एक सप्ताह तक कई ग्रामीणों ने घायल जानवर की दिन-रात दर्द भरी दहाड़ें सुनीं। फिर सन्नाटा छा गया, और पूरी संभावना है कि वह रेंगकर जंगल की गहराई में जाकर मर गया होगा, क्योंकि उसका शव कभी नहीं मिला।

स्टैनली ने मुझे टैगार्थी में हुए दो अन्य अनुभवों के बारे में भी बताया। एक बार, सूर्यास्त के समय, जब वह शिकार के ऊपर मचान पर बैठा था, तभी एक हमादरायद (सांप) उस पेड़ पर चढ़ गया जिस पर वह बैठा था। उसने उसे डराकर भगा दिया; लेकिन जैसे ही अंधेरा छाने लगा, उसे लगा कि वह बड़ा सांप वापस आ सकता है और वह बहुत बेचैन महसूस कर रहा था, इसलिए वह गाँव लौट आया। एक अन्य अवसर पर, जब वह शिकार के ऊपर पूरी तरह से छिपा हुआ नहीं था, तभी बाघ ने उसे देख लिया और पूरी रात, सुबह के शुरुआती घंटों तक, पेड़ के चारों ओर चक्कर लगाता रहा और लगातार दहाड़ता रहा। हल्की बारिश शुरू होने से यह परेशानी का कारण बन गया था, लेकिन भले डॉक्टर ने बड़ी समझदारी से काम लेते हुए, इतने आक्रामक बाघ से निपटने के लिए अंधेरे में अकेले वापस जाने का जोखिम नहीं उठाया।

टैगार्थी के आसपास के उन कुछ इलाकों में घूमते हुए, जहाँ जंगल में कुछ हद तक प्रवेश किया जा सकता है, मैंने खुद एक अधेड़ बाघिन को एक खुले मैदान में मृत पाया, जिसके चेहरे और छाती में तेईस साही के कांटे धंसे हुए थे। उनमें से एक कांटा उसकी दाहिनी आँख में पूरी तरह घुस गया था और उसे मंद कर दिया था। बाघिन बेहद कमजोर हालत में थी। कुछ ही फीट की दूरी पर एक पैंथर का आधा खाया हुआ शव पड़ा था। इस त्रासदी को समझना मुश्किल नहीं था। जाहिर है, बाघिन ने साही का शिकार करने की कोशिश की थी, जिसने पीछे की ओर हमला करते हुए उसके चेहरे पर वार किया, जैसा कि ये जानवर करते हैं, जिससे उसके कांटे उसके सिर और छाती में धंस गए और उसकी एक आँख मंद हो गई। अंधी, भूखी और पिछली मुठभेड़ के कांटों से लदी बाघिन भोजन की तलाश में बेताब भटक रही थी। फिर उसका सामना पैंथर से हुआ, जिस पर उसने हमला किया, उससे लड़ाई की, उसे मार डाला और खाना शुरू कर दिया, तभी किसी अज्ञात कारण से उसकी मृत्यु हो गई, संभवतः पैंथर द्वारा पेट या अन्य चोटों के कारण, जो मुझे उसके सड़े हुए शव से स्पष्ट रूप से पता नहीं चल पाईं।

बेलंदूर गाँव में बुद्धि नाम का एक रहस्यमय व्यक्ति रहता था, जिसे स्थानीय लोग जादू-टोने और काला जादू में माहिर मानते थे। कहा जाता था कि वह लोगों पर जादू करके उनकी मृत्यु करवा देता था। वह मेरा बहुत अच्छा दोस्त था और एक रात देर से हुई हमारी कई अंतरंग बातचीत के बाद उसने मुझे चार इंच व्यास का एक घेरा भेंट किया, जो रहस्यमय पौधों से बना था, जो उसके अनुसार जंगल के भीतर गहराई में उगते हैं। उसने मुझसे कहा कि मैं इसे हमेशा अपने साथ शिकार यात्राओं पर रखूँ और अगर कभी मैं किसी ऐसे इलाके में जाऊँ जहाँ शिकार न मिले, तो सूर्यास्त होने तक प्रतीक्षा करूँ और फिर उस घेरे को अपनी बंदूक की नली पर तीन बार

घुमाऊँ। उसने गारंटी दी कि चौबीस घंटे के भीतर मैं उस हथियार से किसी न किसी जानवर को मार गिराऊँगा। वह घेरा आज भी मेरे पास है और मुझे यह स्वीकार करते हुए शर्म आती है कि मैंने इसे कई बार तब इस्तेमाल किया है जब शिकार कम मिला है, इसके देने वाले के निर्देशों के अनुसार। इसे संयोग कहो या भाग्य, जैसा चाहो, लेकिन इसने हमेशा परिणाम दिए हैं।

अफसोस, बूढ़े बुद्धिया अब इस दुनिया में नहीं रहे, मलेरिया की भयानक बीमारी के शिकार हो गए, जिससे उनकी जादुई शक्तियां भी उनकी रक्षा नहीं कर सकीं।

अब मैं आपको गौजा के बाघ के बारे में बताता हूँ। गौजा एक छोटा सा गाँव है, जो टैगार्थी से छह मील से अधिक दूर है और आमलीगोला की वन चौकी के आधे रास्ते में पड़ता है। यह करादिबेट्टा के विशाल बाघ अभ्यारण्य की सीमा पर स्थित है, जिसे मैसूर के महाराजा ने अपने शिकार के लिए बड़ी सावधानी से संरक्षित किया है। बाघ इतने चतुर नहीं होते कि वे यह जान सकें कि उन्हें कुछ सीमाओं के भीतर ही रहना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि करादिबेट्टा अभ्यारण्य में मवेशियों को प्रवेश की अनुमति नहीं है और बाघ मवेशियों को खाना बहुत पसंद करते हैं। इस पवित्र परिसर के ठीक बाहर सैकड़ों मवेशी हैं, इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि अभ्यारण्य के अंदर की तुलना में बाहर अधिक बाघ हों।

लगभग सन् 1938 में एक बेहद साहसी बाघ अभयारण्य से बाहर निकल गया और अमलिगोला के आसपास मवेशियों को मारने लगा। बाद में वह वापस अभयारण्य लौट आता था, जहाँ वह सुरक्षित और बेखबर रहता था। इस तरह वह खूब मोटा हो गया और सुंदर गायों को खाने वाले बाघ के रूप में उसकी प्रसिद्धि पूरे क्षेत्र में फैल गई।

फिर, जैसा कि मनुष्यों के साथ होता है, निरंतर सफलता ने अधिक दुस्साहस, परिणामों की अवहेलना और अंततः उस घोर लापरवाही और अति आत्मविश्वास को जन्म दिया जो बाघों और मनुष्यों दोनों के लिए विनाशकारी साबित होता है।

हमारा बाघ अभी तक इस अंतिम चरण तक नहीं पहुँचा था, हालाँकि वह उस ओर तेज़ी से बढ़ रहा था, क्योंकि वह करादिबेट्टा के सुरक्षित गढ़ों से दूर भटकता चला गया और दिन के समय वहाँ लौटने से इनकार कर दिया, जैसा कि वह अब तक करता आया था। इस तरह वह गौजा पहुँचा, जहाँ उसने गाँव से लगभग डेढ़ मील दूर स्थित एक गहरे नाले के किनारे अपना अस्थायी ठिकाना बनाया। इस आश्रय से वह मवेशियों के झुंडों पर हमला करता, उन्हें सुबह-शाम परेशान करता और हर हफ्ते कम से कम दो मोटे-ताज़े मवेशियों को मार डालता।

मुझे इस शिकारी के बारे में चिट्ठियाँ लिखी गई थीं, लेकिन मैंने उसकी गतिविधियों पर कभी ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि आख़िरकार बाघों को जीने के लिए खाना तो चाहिए ही और यह बूढ़ा बाघ इंसानों को कोई नुकसान नहीं पहुँचा रहा था। कुछ कम मवेशियों से उन विशाल झुंडों को कोई फ़र्क नहीं पड़ता था।

समय बीतने के साथ-साथ उसकी हिम्मत और भी बढ़ती गई, और आखिरी रिपोर्टों से पता चला कि वह अपने शिकार को छोड़ने को तैयार नहीं था। जब चरवाहे उसे भगाने की कोशिश करते, तो वह जोर-जोर से दहाड़ता और उन पर झपट्टा मारता। यह सच था कि अब तक उसने किसी को चोट नहीं पहुंचाई थी, लेकिन शुरुआती संकेतों से मुझे पता चल गया था कि ऐसा किसी भी दिन हो सकता है। देर-सवेर कोई दूसरा आदमखोर ज़रूर सामने आएगा।

एक सुबह 9:30 बजे, मैं बैंगलोर से आने वाली मालगाड़ी से अदेरी के रेलवे स्टेशन पर उतरा। यहाँ से साढ़े तीन मील पैदल चलकर मैं टैगार्थी पहुँचा। वहाँ पुराने मित्रों ने मेरा स्वागत किया और मुझे बड़े सत्कार के साथ कॉफ़ी पिलाई, जबकि मेरे लिए गरमागरम भोजन तैयार किया जा रहा

था। मैंने जितना हो सके उतनी खबरें इकट्ठा करने में समय बिताया, लेकिन इससे मुझे बाघों की मौजूदगी के सामान्य विवरण के अलावा कुछ खास जानकारी नहीं मिली; गौजा के साहसी बूढ़े बाघ ने विशेष प्रसिद्धि हासिल कर ली थी। भोजन के बाद मैं कार से गौजा के लिए लगभग छह मील की दूरी तय करने के लिए निकला, जहाँ सड़क की खराब हालत के कारण हम शाम 6 बजे तक नहीं पहुँच पाए। निवासियों से बातचीत करते हुए, मैंने अपना तम्बू लगभग तीन फर्लांग दूर, मुख्य धारा में मिलने वाले एक छोटे नाले के किनारे लगाया। बाघ लगभग एक मील आगे रहता था।

मुझे बताया गया था कि बाघ ने दो दिन पहले शिकार किया था। उसके बाद से कुछ नहीं हुआ था, लेकिन अगले अड़तालीस घंटों के भीतर अगला शिकार निश्चित रूप से होने वाला था।

अगले दिन दोपहर 1 बजे खबर आई कि बाघ ने एक और शिकार कर लिया है। मैं तुरंत मौके पर पहुँचा और पाया कि बाघ ने खुले मैदान के बीचोंबीच, सबसे नज़दीकी आश्रय से लगभग 300 गज दूर, एक गाय पर हमला किया था, उसे मार डाला और अपने छिपने की जगह पर ले गया, जो वही नाला निकला जिसमें मेरा तंबू लगा था। नाले की नरम रेत में बाघ के रेंगने के निशान थे, जहाँ से वह किनारे से कूदकर गाय की ओर भागा था। गाय ने बचने की कोशिश में थोड़ी दूर तक दौड़ लगाई, लेकिन बाघ ने उसे पकड़ लिया और मार डाला। फिर बाघ ने गाय को अपनी पीठ पर उठाया और नाले में लौट गया, जैसा कि घसीटने के निशान न होने से स्पष्ट था, हालाँकि वजन के कारण बाघ के पंजे मजबूत हो गए थे और जुते हुए खेत की खुरदरी मिट्टी में गहरे धंस गए थे।

मैंने जानवर या उसके शिकार को देखने की उम्मीद में सावधानीपूर्वक पदचिह्नों का पीछा किया। आखिरकार मुझे वह मिल भी गया, लेकिन उसने मेरी उम्मीद के मुताबिक खुद को प्रकट नहीं किया। जंगल के जीवों को ऐन समय पर चेतावनी देने वाली उस अवर्णनीय छठी इंद्री ने स्पष्ट रूप से इस बाघ को यह एहसास दिलाया कि यहाँ एक इंसान है जिसे उसे खुद को नहीं दिखाना चाहिए। जब वह अभी भी कुछ गज की दूरी पर झाड़ियों में छिपा हुआ था और मुझे दिखाई नहीं दे रहा था, तभी उसे मेरी उपस्थिति का एहसास हुआ, उसने धीमी आवाज में गुर्राया और खिसक गया।

पास ही एक उपयुक्त पेड़ था और मैंने अपनी चारपाई मचान लगा ली। मैं शाम चार बजे तक वहाँ पहुँच गया था। बाघ आठ बजे आया, लेकिन सीधे मेरी मचान के नीचे और उस पेड़ के पास खड़ा हो गया जिस पर मैं बैठा था। मुझे उसके कदमों की हल्की आहट से उसके आने का आभास हो गया। सूखे पत्तों की सरसराहट से उसके आने का पता नहीं चला, लेकिन खामोश रात की शांति में उसके कोमल, भारी कदमों की आहट साफ सुनाई दे रही थी। वह खुद को चाटने लगा, उसकी खुरदरी जीभ उसके चमकदार फर पर फिर रही थी, जिससे हल्की सी खरखराहट की आवाज आ रही थी। फिर वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हुआ और पेड़ के तने पर अपने अगले पंजों के पंजों को साफ और तेज करने लगा। ऐसा करते हुए, उसने ऊपर मचान देखी। एक धीमी सी गुर्राहट के साथ वह चला गया, और उस रात फिर कभी नहीं लौटा।

अगले दिन कुछ नहीं हुआ, इसलिए दोपहर में मैंने एक बछिया को मुख्य नाले के तल में बांध दिया, जहाँ माना जाता था कि वह रहती थी, और नाले के ऊपर 60 डिग्री के कोण पर झुके हुए एक पेड़ पर बने मचान पर बैठ गया।

मैं दोपहर 3 बजे अपनी जगह पर तैनात था। शाम 5:30 बजे मुझे घसीटने की आवाज़ सुनाई दी और मैंने देखा कि बाघ झुंड से एक और गाय को खींचकर किनारे पर ला रहा था। वह लगभग 80 गज दूर था। मैंने उसकी गर्दन पर निशाना साधकर गोली चलाई, लेकिन जैसे ही मैंने गोली

चलाई, बाघ आगे बढ़ गया और गोली उसे जानलेवा चोट के लिए ज़रूरी दूरी से काफी पीछे लगी। गोली लगने पर उसने खांसते हुए गुर्राया और उछलकर नाले की तलहटी में जा गिरा। मैं पेड़ से नीचे उतरा, अपना चारा डाला और विपरीत दिशा में गौजा की ओर लौट गया। मुझे पूरा भरोसा था कि अगली सुबह मैं उसे बिना किसी परेशानी के ढूंढकर मार डालूंगा। लेकिन मैं बुरी तरह गलत था, जैसा कि आगे होने वाली घटनाओं से पता चला।

भोर होते ही मैं गाँव के दो भरोसेमंद स्थानीय लोगों के साथ घटनास्थल पर वापस पहुँच गया। हमने नाले के तल पर बाघ के खून के निशान देखे, जो नाले के तल पर काफी दूर तक फैले हुए थे और फिर दूसरी तरफ चढ़ गए थे। हमने पूरी सावधानी से उनका पीछा किया, लेकिन जल्द ही पता चला कि जानवर आगे बढ़ता रहा, क्योंकि इस बात का कोई सबूत नहीं था कि वह अपने घाव से आराम करने के लिए बैठा था। लगभग दो मील चलने के बाद वह पहली बार रुका, गोली का असर महसूस करते हुए। फिर वह उठा और आगे बढ़ गया, और मैंने अनुमान लगाया कि वह अमलीगोला और उसके आगे बाघ अभ्यारण्य की ओर जा रहा था। वहाँ पहुँचते ही मुझे पता चल गया कि वह रास्ता भटक गया है, क्योंकि अभ्यारण्य में हथियार ले जाना, यहाँ तक कि घायल बाघ का पीछा करते समय भी, सख्त मना था। वह हमसे पूरी रात आगे निकल चुका था, और अपने घाव के बावजूद ऐसा लग रहा था कि वह आखिरकार अभ्यारण्य की शरण में पहुँच जाएगा।

आगे बढ़ते हुए, हमें दो और स्थान मिले जहाँ उसने विश्राम किया था। इनमें से पहले स्थान पर काफी खून था, और जहाँ वह लेटा था वहाँ घास दबी हुई थी। दूसरे स्थान पर खून काफी कम था, और उसके बाद निशान का पीछा करना कठिन हो गया। स्पष्ट रूप से खून का बहाव रुक रहा था; शायद बाहरी त्वचा के नीचे की वसा की परत गोली के छेद में समा गई थी और अत्यधिक रक्तस्राव को रोक दिया था।

हम जल्द ही अमलिगोला के इलाके में पहुँच गए और मुझे पता था कि बाघ को अभयारण्य की पश्चिमी सीमा पर बनी जंगल की आग की रेखा तक पहुँचने में अब बस एक मील का ही रास्ता बचा है। यहाँ हमारा भाग्य साथ दिया, क्योंकि हमें एक धारा मिली, जिसमें उस समय पानी के कुंड भरे हुए थे। नरम रेत पर बाघ के पैरों के निशान बता रहे थे कि उसने अभयारण्य की ओर जाने का इरादा बदल दिया था और पानी की तलाश में धारा के विपरीत दिशा में चला गया था। हमने उसका पीछा किया और पहले कुंड पर पहुँचे, जहाँ उसने पानी पिया था और उसके बाद काफी देर तक वहीं पड़ा रहा था, क्योंकि उस जगह से निकलने वाले पैरों के निशान अपेक्षाकृत ताज़े थे और एक घंटे के भीतर ही बने थे। इस तथ्य ने हमारी कम होती उम्मीदों को फिर से जगा दिया और हम एक फर्लांग आगे बढ़े, फिर हमें दूसरा कुंड मिला, जहाँ बाघ भी रुका हुआ था। पैरों के निशानों से अभी भी पानी रिस रहा था, और अब यह स्पष्ट था कि वह बस थोड़ी ही दूरी पर आगे था। हो सकता है उसने हमें आते हुए सुन लिया हो और बस आगे बढ़ गया हो।

मैंने उसके पीछे-पीछे चलने के बजाय रणनीति अपनाने का निश्चय किया, क्योंकि मुझे बहुत डर था कि वह दुम दबाकर पास ही स्थित अभयारण्य की ओर भाग जाएगा। मैंने अपने दोनों साथियों को पेड़ पर चढ़ने का इशारा किया और चुपचाप नाले के किनारे चढ़ गया। फिर मैं नाले के आधे मील आगे जाकर उससे मिला और बाघ को चौंकाने की उम्मीद में दबे पांव पीछे हटने लगा। पर मेरी यह कोशिश नाकाम रही, क्योंकि उसने मुझे देख लिया या सुन लिया और मेरी आशंका के मुताबिक वह किनारे से होते हुए अभयारण्य की ओर भाग गया।

मैंने उसके खून के निशान का पीछा करते हुए उस जगह तक पहुँचा जहाँ वह घनी झाड़ियों के एक हिस्से में घुस गया था। मैंने उस हिस्से का चक्कर लगाया और दूसरे छोर पर एक पेड़ के तने

के पीछे रुक गया। मैं वहाँ इंतज़ार करता रहा, लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया। अगर मैं अपने आदमियों को बुलाने की कोशिश करता तो बाघ सतर्क हो जाता, और मैं दुविधा में था कि आगे क्या करूँ। तभी उसने बड़ी मेहरबानी से हिलकर रास्ता दिखाया, क्योंकि मैंने देखा कि उसके आगे बढ़ने पर मेरे सामने की घास लहरा रही थी, हालाँकि उसका शरीर ज़रा भी दिखाई नहीं दिया। जैसे-जैसे वह एक कोण पर रेंगता हुआ आगे बढ़ा, घास लहराती रही, इसलिए मैंने अपने सुरक्षात्मक पेड़ को छोड़ दिया और खुद भी आगे बढ़ गया। फिर घास कम होने लगी, और आखिरकार मैंने उसे देख लिया, ठीक वैसे ही जैसे उसने मुझे देखा। मैंने उसकी बगल में गोली चलाई और वह दहाड़ते हुए मुझ पर झपटा। लेकिन पाँच कदम के भीतर ही उसका साहस टूट गया और वह तीसरी गोली खाने के लिए मुड़ गया, जिसने उसे उसी झाड़ी में गिरा दिया जहाँ से वह अभी निकला था।

मैंने उन आदमियों को सीटी बजाकर बुलाया, जिन्होंने गोलियों की आवाज़ सुनी थी और बहादुरी से आगे आ रहे थे। जब वे मेरे पास आ गए, तो मैंने उन्हें स्थिति समझाई और बाघ को खोजने के लिए आस-पास के पेड़ों की चोटियों पर चढ़ने को कहा। उन्होंने ऐसा किया, लेकिन इशारा किया कि उन्हें कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। फिर मैंने उन्हें लगभग पचास गज की दूरी पर दो अलग-अलग पेड़ों पर तैनात कर दिया और उनसे कहा कि अगर उन्हें हमारा शिकार दिखाई दे तो सीटी बजा दें। मैं खुद नाले में लौट गया, इस उम्मीद में कि कहीं बाघ वापस न चला गया हो।

उस संकरी खाई को पार करना बेहद जोखिम भरा काम था, क्योंकि पता नहीं कब बाघ ऊपर किनारे से या रास्ते में बिखरे पत्थरों के पीछे से मुझ पर हमला कर दे। किसी घायल बाघ का पीछा करते समय एक बुनियादी नियम यह है कि नदी के तल पर कभी अकेले न चलें, क्योंकि घायल जानवर ऊपर घात लगाए बैठा हो सकता है। लेकिन मैं हताश था, क्योंकि मैंने पूरा दिन इस घायल जानवर का पीछा करने में बिताया था, और मुझे डर था कि कहीं आखिरी क्षण में वह मुझसे बचकर करादिबेट्टा में जाकर मर न जाए।

तो सांस रोककर, राइफल तैयार करके, ट्रिगर पर उंगली रखे हुए, मैं उस नाले को पार करने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन पाया कि बाघ ने नाला पार नहीं किया था और अभी भी उसी झाड़ी में छिपा हुआ था जिसमें वह कूदा था। अब समस्या यह थी कि उसे बाहर कैसे निकाला जाए।

वापस आकर हमने अपने साथियों को बुलाया और युद्ध की योजना बनाई। बाघ का लगभग स्थान जाने बिना उसका पीछा करते हुए घने जंगल में जाना आत्मघाती होता। तभी मुझे एक विचार आया। नदी के पास लौटकर मैंने अपनी कमीज़ उतारी, आस्तीनों को आपस में बांधा और गले को भी बांध दिया। उसे थैली की तरह इस्तेमाल करते हुए हमने उसमें कंकड़ भर दिए, लगभग फटने ही वाले थे। फिर एक साथी उसे उठाकर उस जगह ले गया जहाँ मैंने आखिरी बार बाघ पर गोली चलाई थी। इस गोला-बारूद के भंडार से हमने चारों ओर घने जंगल पर पत्थर बरसाना शुरू कर दिया, जब तक कि अंत में हमें उस जगह से लगभग तीस गज दूर दाईं ओर की झाड़ियों से एक चेतावनी भरी गुर्राहट सुनाई नहीं दी।

जाहिर तौर पर बाघ बुरी तरह घायल हो गया था और हिल-डुल नहीं पा रहा था, क्योंकि वह हम पर झपटा नहीं, बल्कि अपने पास गिरने वाले हर पत्थर का जवाब लगातार गुर्राहट से देता रहा।

मैंने अपने साथियों को बीच-बीच में पत्थर फेंकने का आदेश दिया ताकि बाघ का ध्यान भटकाया जा सके। फिर मैं झाड़ियों के बीच से घूमकर नाले की तरफ से बाघ में प्रवेश करने लगा। मुझे सामने बाघ की दहाड़ सुनाई दे रही थी, और मेरे साथियों द्वारा फेंके गए नदी के पत्थरों के गिरने की आवाज़ भी आ रही थी। जब तक मुझे बाघ की दहाड़ सुनाई देती रही, मैं आगे बढ़ता

रहा, हालांकि झाड़ियाँ घनी थीं, क्योंकि मैं जानता था कि उसका ध्यान कहीं और लगा हुआ है। लेकिन फिर, जैसे ही मैं उसके करीब पहुँचा, उसने मुझे सुन लिया, क्योंकि उसकी दहाड़ बंद हो गई। मेरे साथियों ने भी यह देखा और अनुमान लगाया कि उसने पीछे से मेरे आने की आहट सुन ली है या महसूस कर ली है। उसका ध्यान भटकाने के लिए उन्होंने पत्थर ऊँचे, दूर और तेज़ी से फेंके, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ, क्योंकि बाघ ने खुद को प्रकट नहीं होने दिया।

मुझे पता था कि मुझे बेहद सावधान रहना होगा, क्योंकि वह किसी भी क्षण मुझ पर हमला कर सकता था। मैं रुक गया, मेरी सारी इंद्रियां सतर्क थीं, मैं अपने कान लगाकर उसके आखिरी जोरदार हमले से पहले की हल्की सी सरसराहट भी सुनने की कोशिश कर रहा था। कुछ नहीं हुआ, और जैसे-जैसे सेकंड खामोशी में बीतते गए, केवल गिरते पत्थरों की आवाज ही सुनाई दे रही थी, मेरा तनाव बढ़ता गया और मुझ पर आने वाले खतरे का गहरा आभास हावी हो गया। मैंने चारों ओर देखा, लेकिन कोई हलचल नहीं दिखी। मैंने अपने कान लगाए, लेकिन कुछ सुनाई नहीं दिया। फिर भी आने वाले खतरे का वह आभास और भी गहरा होता गया, यहाँ तक कि मैं उस अस्वाभाविक सन्नाटे को तोड़ने के लिए जोर से चिल्ला सकता था, या फिर दुम दबाकर भाग सकता था।

फिर मैंने पीछे मुड़कर देखा। दो झाड़ियों के बीच घायल बाघ था, अपने ही खून से लथपथ, वह पेट के बल रेंगता हुआ अपनी आखिरी छलांग से मुझे चौंकाने के लिए आगे बढ़ रहा था। हमारी नज़रें मिलीं, वह दहाड़ा और हवा में उछल पड़ा, तभी विंचेस्टर राइफल से दो बार गोलियां चलीं और उसकी शक्तिशाली गोलियां सीधे उस भयंकर बाघ के चेहरे पर जा लगीं। जैसे ही उसका भारी शरीर मेरे सामने गिरा, मैं एक तरफ हट गया, वह हवा में बेतहाशा उछला और फिर शांत हो गया, तभी मैंने एक और गोली बिल्कुल करीब से उसके दिल में दाग दी।

गौजा का वह उपद्रवी बूढ़ा बाघ करादिबेट्टा अभयारण्य तक पहुंचने में असफल रहा और अब वह मर चुका है।